साहित्यिक संस्मरण

मैक्सिम गोर्की

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
एम. एम. रोड, नई दिल्ली १.

* * *

लेव तोल्सतोय

यह पुस्तक उन संस्मरणों का संग्रह है जो मैंने ओलेइज़ में अपने आवास काल में समय-समय पर लिखे थे। लेव तोल्सतोय उन दिनों गास्प्रा में थे। पहले वह बहुत बीमार थे, बाद में धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधार कर रहे थे। मैं समझता था कि रद्दी-सद्दी कागज के टुकड़ों पर लापरवाही से लिखे गये ये संस्मरण कभी के खो चुके हैं, किन्तु हाल ही में इनमें से कुछ मुझे मिल गये। इनमें मैंने एक अधूरा पत्र भी जोड़ दिया है जो मैंने तोल्सतोय के यास्नाया पोल्याना से "प्रयाण" और उनकी मृत्यु के समय लिखा था। इस पत्र को मैं, बिना एक भी शब्द बदले, ज्यों का त्यों दे रहा हूं। इस पत्र को मैंने समाप्त नहीं किया क्योंकि समाप्त कर नहीं सका ...

संस्मरण

१

स्पष्ट ही, किसी अन्य विचार से अधिक उनकी मानसिक शांति को कोई विचार भंग करता है तो वह ईश्वर का विचार है। कभी-कभी तो यह विचार ही नहीं मालूम होता। यह किसी ऐसी वस्तु का तीव्र प्रतिरोध मालूम होता है जिसका वह अपने ऊपर बोझ अनुभव कर रहे

हैं। ईश्वर के सम्बंध में वह उतनी बातें नहीं करते, जितनी संभवतः करना चाहते हैं— लेकिन सोचते लगातार रहते हैं। मैं नहीं मानता कि यह बुढ़ापे के या मृत्यु की सन्निकटता के कारण है, संभवतः यह सहज मानवीय गर्व के कारण है, संभवतः यह पीड़ा की कुछ-कुछ इस भावना के कारण है कि—मैं, तोल्सतोय, किसी के सामने लज्जा से झुकूं ? यदि वह प्रकृतिवादी होते तो निश्चय ही उन्होंने ओजस्वी कल्पनाओं का निर्माण किया होता, महान खोजें की होतीं।

२

उनके हाथ बड़े अद्भुत हैं—भद्दे, सूजी हुई नसों से कुरूप, फिर भी असाधारण व्यंजनात्मक और निर्माण शक्ति से भरपूर। संभवतः ल्योनार्दो द' विन्सी के हाथ भी ऐसे ही थे। ऐसे हाथ कुछ भी कर सकने में समर्थ हैं। बातें करते समय कभी-कभी वह जब कोई विशेष शब्द कहते हैं तो उनकी उंगलियां चलती रहती हैं। कभी वह उन्हें मोड़ते, कभी सीधा करते हैं। वह एक देवता के समान हैं। सैबाथ, या ओलम्पिक के देवता के समान नहीं, वरन् किसी रूसी देवता के समान, जो "सुनहरे नींबू के वृक्ष के नीचे, मैपुल लकड़ी के सिंहासन पर, बैठा रहता है।" भले ही वह देवता की तरह गरिमामय न हों, तो भी संभवतः सभी देवताओं की सम्मिलित चतुरता से उनमें अधिक चतुरता है।

३

सुलेरज़ित्स्की के प्रति उनके हृदय में नारी सुलभ कोमलता है। चेखोव के लिए पिता तुल्य प्यार है। इस प्यार में सृजनकर्ता का गौरव निहित है। किन्तु सुलेर के प्रति उनकी भावना कोमलता की अनवरत उत्सुकता की तथा ऐसी प्रशंसा की है जो इस अद्भुत व्यक्ति को कभी थकाती नहीं जान पड़ती। इस भावना में कुछ मूर्खता भी हो सकती है, जैसी किसी बूढ़ी नौकरानी में अपने तोते, बिल्ली या कुत्ते के लिए होती

हैं। सुलेर किसी विचित्र अज्ञात प्रदेश के अद्भुत, मुक्त पंछी के समान है। उस जैसे सौ व्यक्ति किसी प्रादेशिक नगर के स्वरूप और उसकी आत्मा को बदल सकते हैं, उसके स्वरूप को नष्ट-भ्रष्ट कर सकते हैं, उसकी आत्मा में अशांति और विद्रोह की भावना भर सकते हैं। सुलेर को प्यार करना सरल और सुखद है, और जब मैं देखता हूं कि स्त्रियां उसका तिरस्कार कर रही हैं, तो मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूं, मेरा खून खौल उठता है। सम्भवतः तिरस्कार के पीछे चतुरतापूर्ण सावधानी छिपी रहती है। कारण, सुलेर का कोई भरोसा नहीं! कल वह क्या करेगा, कोई नहीं जानता। शायद, वह कहीं बम फेंक दे। या, किसी होटल में गवैयों की मंडली में शामिल हो जाय। उसमें तीन युगों तक के लिए प्रचुर शक्ति है। जीवन की उसमें इतनी आग है कि लोहे की लाल सलाख की तरह चिनगारियां उगलता मालूम होता है।

लेकिन एक बार वह सुलेर पर बहुत नाराज हुए। सदा से अराजकता की ओर झुकाव होने के कारण सुलेरज़ित्स्की व्यक्ति-स्वतंत्र्य के बारे में गरमागरम बहस पर उतारू रहता और एलः एनः (तोल्सतोय) ऐसी बहस में सदा उसका मजाक उड़ाते थे।

मुझे याद है कि एक बार सुलेरज़ित्स्की को प्रिंस क्रोपोटकिन की छोटी-सी पुस्तिका मिल गयी। उससे उत्साहित होकर दिन भर वह अराजकता के गुणगान करता रहा, बेचारे श्रोता के लिए असह्य उद्दंडता से उसका दर्शन बघारता रहा।

"चुप भी हो जाओ, ल्योवुश्का! मैं तो सुनते-सुनते आजिज आ गया हूं," एल. एन. ने झुंझलाकर कहा। "तोते की तरह बस स्वतंत्रता, स्वतंत्रता, रटे जा रहे हो! स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ क्या है? मान लो जिन अर्थों में तुम चाहते हो, जिस रूप में तुम सोचते हो—स्वतंत्रता मिल जाती है। अब क्या फल होगा इसका? दार्शनिक रूप से कहा जाय तो—अंधे कुयें जैसी सांय-सांय। जीवन में, व्यवहार में, निकम्मे हो जाओगे, भिखमंगे बनकर रह जाओगे।

"तुम अपनी ही भावना के अनुरूप स्वतंत्र हो जाओ तो तुम्हें जीवन से, मानवों से, सम्बंधित रखनेवाली कौन सी चीज रह जायगी? देखो

न — चिड़ियां स्वतंत्र हैं, लेकिन वे भी घोंसले बनाती हैं। तुम घोंसले नहीं बनाओगे। तुम तो जहां भी मौका मिला अपनी कामेच्छा की तृप्ति कर लोगे, इधर-उधर घूमते अवारा बिल्ले की तरह। दो घड़ी के लिए गंभीरता से सोचो तो तुम्हें पता चल जायेगा, तुम अनुभव करोगे, कि अंततोगत्वा स्वतंत्रता शब्द से किसी चीज का बोध होता है तो शून्य का, आकारहीनता का, सीमारहित अन्तराल का।"

नाराजगी से अपनी भवों को सिकोड़ते हुए वह कुछ देर के लिए रुके। फिर, अधिक नम्रता से कहा :

"ईसा मसीह स्वतंत्र थे, भगवान बुद्ध स्वतंत्र थे, और उन दोनों ने अपने ऊपर संसार के पापों को ओढ़ लिया, स्वयमेव सांसारिक जीवन की कारा के बंदी बन बैठे। उनसे आगे कोई नहीं बढ़ा, कोई नहीं। तुमने और हमने आखिर किया ही क्या है अब तक ? अपने पड़ोसी के प्रति अपने कर्तव्य पालन से हम सभी छुटकारा चाहते हैं, हालांकि कर्त्तव्य पालन की यह भावना ही हमें मानव बनाती है। कर्तव्य की यह भावना हम में न हो तो हम सब पशुओं की भांति न हो जायें ?"

वह थोड़ी दबी हंसी हंसे।

"इतने पर भी हम इस समय बहस कर रहे हैं इस बात पर कि उच्च, आदर्शपूर्ण, जीवन कैसे बिताया जाय। ऐसी बहस से कोई सार नहीं निकलता। ऐसा भी नहीं कि कुछ निकलता ही नहीं। अब देखो ! मुझसे बहस करते-करते तुम्हारा मुंह लाल अंगारा हो जाता है, लेकिन तुम मुझे मारते नहीं, गालियां नहीं देते। अगर तुम अपने को सचमुच स्वतंत्र समझते तो जरूर मेरा कत्ल कर देते — जरूर !"

फिर कुछ रुककर :

"स्वतंत्रता — इसका तो अर्थ यही होगा कि हर कोई, हर व्यक्ति, मुझसे सहमत है ! लेकिन तब तो मेरा अस्तित्व ही न रह जायगा। निज का बोध तो संघर्ष और विरोध में ही होता है।"

४

गोल्डेनवीजर ने शौपें का संगीत बजाया। इस पर लेव निकोलायेविच ने निम्नलिखित टिप्पणी की :

"किसी जर्मन राजकुमार ने कहा था : 'यदि तुम बहुत से दासों के स्वामी बनना चाहते हो तो जितनी भी हो सके संगीत रचना करो।' ठीक ही कहा था उसने। बिल्कुल सच्ची बात। संगीत दिमाग को सुन्न कर देता है। कैथोलिक लोगों से ज्यादा अच्छी तरह दूसरा कोई इस बात को नहीं समझता। हमारे आध्यात्मिक पुरखों ने गिरजाघर में कभी मेंडलसोन के संगीत की इजाजत नहीं दी। तूला के एक पादरी ने खुद मुझे आश्वासन दिया है कि ईसामसीह यहूदी नहीं थे, हालांकि एक हेब्रू देवता उनके पिता थे और हेब्रू स्त्री उनकी माता। उसने यह तो माना। लेकिन तुरन्त घोषणा की : 'यह असंभव है।' 'फिर?' मैंने पूछा। उसने कंधे बिचकाये और बोला : 'यही तो मेरे लिए रहस्य है।'

५

"अब तक असली बुद्धिजीवी कोई हुआ है तो गैलिक का राजकुमार व्लादिमिरको। बारहवीं सदी में ही उसमें यह कहने का साहस था कि : 'चमत्कारों का जमाना बीत चुका है।' तब से छः सौ वर्ष गुजर चुके हैं और बुद्धिजीवी एक दूसरे को यही आश्वासन दे रहे हैं : 'चमत्कार नाम की कोई चीज नहीं।' लेकिन अब भी लोग चमत्कारों में उतना ही विश्वास करते हैं जितना बारहवीं सदी में करते थे।"

६

"अल्पमत को भगवान की जरूरत इसलिए होती है कि उसके पास भगवान को छोड़ बाकी सब कुछ होता है, बहुमत को इसलिए कि उसके पास भगवान के अलावा और कुछ नहीं होता।"

या फिर मैं कहूंगा : भगवान में बहुमत का विश्वास होता है कायरता के कारण। केवल कुछ गिने-चुने ही आत्मा की पूर्णता से उसमें विश्वास करते हैं।*

"क्या तुम्हें हैंस एंडरसन की कहानियां पसंद हैं?" विचारों में डूबे हुए उन्होंने पूछा। "ये कहानियां जब मार्को वोवचोक के अनुवाद के रूप में छपीं तो मैं उन्हें समझ ही नहीं पाया, लेकिन दस साल बाद मैंने फिर किताब उठाई और उन्हें पढ़ा। अचानक मेरी समझ में आया कि हैंस एंडरसन बड़ा एकाकी व्यक्ति था। बहुत ही अकेला। उसके जीवन के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम। मेरा विचार है कि वह बड़ा फक्कड़ और घुमक्कड़ था। किन्तु इससे तो मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ होता है कि वह एकाकी था। इसीलिए वह बच्चों की तरफ मुखातिब हुआ—यह सोचकर कि बच्चों में बड़ों से ज्यादा प्रेम-भावना होती है (लेकिन यह उसकी भूल थी)। बच्चे किसी पर तरस नहीं खाते, वे जानते ही नहीं कि तरस खाना क्या चीज होती है।"

७

उन्होंने मुझे बौद्ध प्रश्नोत्तरी पढ़ने की सलाह दी। ईसा मसीह और बौद्ध धर्म के बारे में वह जिस ढंग से बातें करते हैं, उसमें विचित्र भावुकता रहती है—उनके शब्दों में न तो उल्लास होता है, न पीड़ा, न ही अन्तर्ज्वाला की एक भी चिनगारी। मैं समझता हूं कि ईसा को वह एक निरीह प्राणी, दया का पात्र, मात्र समझते हैं और यद्यपि किसी-किसी रूप में वह उनकी उपासना करते हैं, किन्तु यह कम सम्भव है कि वह उन्हें प्यार करते हैं। लगता है, उन्हें इस बात का भय है कि ईसा मसीह यदि रूस के गांवों में गये तो लड़कियां उन्हें देख कर हंस पड़ेंगी।

---

* गलतफहमी से बचने के लिए मैं कह दूं कि धार्मिक कृतियों को मैं केवल साहित्यिक रचनाएं मानता हूं; बुद्ध, ईसा मसीह, मोहम्मद की जीवनियों को काल्पनिक साहित्य मानता हूं।

८

ग्रांड ड्यूक निकोलाई मिखाइलोविच, जो बड़े चतुर ग्रादमी मालूम होते हैं, ग्राज यहां उपस्थित थे। देखने में विनम्र, बोलते बहुत ग्रधिक नहीं हैं। ग्रांखें बड़ी सुन्दर और शरीर सुडौल है। भाव-भंगिमा बहुत संतुलित। एल. एन. उन्हें देखकर मुसकरा रहे थे और कभी फ्रांसीसी, कभी ग्रंग्रेजी भाषा में बातें कर रहे थे। रूसी में उन्होंने कहा :

"कारामजिन जार के लिए लिखते थे, सोलोव्योव बहुत ग्रधिक लिखते थे, जी ऊब उठता था, और क्लीयूचेवस्की स्वांतः सुखाय लिखते थे। उनमें गहरायी थी। पढ़ो तो लगेगा कि प्रशंसा कर रहे हैं। लेकिन गहराई से देखो तो पता चलेगा कि गालियां दे रहे हैं।"

किसी ने ज़ाबेलिन का नाम लिया।

"उसके क्या कहने। छोटा ग्रफसर समझो। प्राचीन वस्तुग्रों का प्रेमी। हर चीज जमा कर लेता है, ग्रांखें बन्द करके, बिना देखे-भाले। भोजन के बारे में लिखेगा तो ऐसे मानो कभी भरपेट खाना न मिला हो। लेकिन है बहुत दिलचस्प, बहुत दिलचस्प !"

९

उन्हें देखकर उन तीर्थ-यात्रियों की याद हो ग्राती है जो हाथों में कमंडल लिये जीवन भर पृथ्वी की परिक्रमा किया करते हैं। हर वस्तु, हर प्राणी से विमुख, नितान्त एकाकी, एक चट्टी से दूसरी चट्टी, एक मंदिर से दूसरे मंदिर, हजारों मीलों का चक्कर लगाते रहते हैं। यह संसार उनके लिए नहीं है, न ही ईश्वर के लिए। ईश्वर की प्रार्थना वे ग्रादतन करते हैं, किन्तु ग्रन्तरतम में उससे घृणा करते हैं; वह क्यों उन्हें सारे संसार में भटकाता रहता है, कभी दुनिया के इस छोर पर, कभी उस छोर पर—क्यों ? मानव-प्राणियों को वे सड़क पर पड़े झाड़-झंखाड़, खर-पत्तर, ईंट-रोड़े मात्र समझते हैं—ग्रादमी उनसे टकरा जाता है, कभी-कभी चोट भी खा जाता है। उनके बिना भी काम

चल सकता था — लेकिन कभी-कभी उनसे असमानता दिखाकर लोगों को चकित कर देना, उन पर अपनी असहमति प्रकट करना, बड़ा सुखद लगता है।

१०

"फ्रेडरिक महान् ने एक बड़ी चातुर्यपूर्ण बात कही थी : 'प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए — बतौर फैशन के।' उन्होंने यह भी कहा था : 'जो मन में आये सोचो, लेकिन अनुशासन मानो।' मरते समय उन्होंने स्वीकार किया : 'दासों पर शासन करते-करते मैं ऊब गया हूं !' तथाकथित महान व्यक्ति सदा बड़ी अंतर्विरोधी बातें कहते हैं, किन्तु दूसरी तमाम भूलों के साथ इसे भी क्षमा कर दिया जाता है। अपनी ही बात की विरोधी बात कहना मूर्खता नहीं है, — मूर्ख व्यक्ति जिद्दी होता है, किन्तु कभी अपनी ही बात की विरोधी बात नहीं कहता। हां, फ्रेडरिक एक विचित्र व्यक्ति थे — जर्मन उन्हें अपना सबसे अच्छा सम्राट मानते थे, तो भी जर्मन उन्हें पसंद न थे, गेटे और वीलैंड भी नहीं।"

११

"सत्य को निर्भीकता से देख सकने के भय का नाम ही रोमांसवाद है" — बामों की कविताओं के विषय में बातें करते समय कल उन्होंने कहा। सुलेर उनसे सहमत न था। उसने अत्यंत रसविभोर होकर बड़ी तन्मयता से उनकी कविताएं सुनायीं।

"यह कवित्व नहीं है ल्योवुश्का। यह कोरी बनावट है, बकवास है, निरर्थक शब्द-जाल मात्र। कविता में बनावट नहीं होती। जब फेट ने लिखा :

"ज्ञात नहीं मैं क्या गाऊंगा,
किन्तु गीत उर में उमड़ायेगा।"

तो कवित्व के बारे में वह लोगों की सच्ची भावना व्यक्त कर रहा था। किसान भी नहीं जानता कि वह क्या गाता है। वह बस गाता है—हां-आं-आं-हे-हे-ए-ए! और आत्मा की गहराई से सच्चा गान फूट निकलता है। वैसे ही जैसे चिड़ियां गाती हैं। तुम्हारे नये कवि तो बस आविष्कार करते हैं। तुम जानते ही हो कि 'पेरिस का माल' नाम की मूर्खतापूर्ण चीजें बाजार में मिलती हैं, तुम्हारे तुक्कड़ कवि भी इन्हें बनाने में व्यस्त रहते हैं। नेक्रासोव ने कुछ नहीं बस तुकबंदियों का आविष्कार किया।

"बेरैंगर के बारे में आपका क्या मत है?" सुलेर ने पूछा।

"बेरैंगर की बात दूसरी है। हम में और फ्रांसीसियों में समानता ही क्या? वे आनंदजीवी हैं— आत्मा का जीवन उनके लिए उतना महत्व-पूर्ण नहीं, जितना इन्द्रियों का जीवन। किसी फ्रांसीसी के लिए सबसे महत्वपूर्ण वस्तु होती है: स्त्री। वे लोग हारे-थके और पंगु राष्ट्र हैं। डाक्टरों का कहना है कि सभी क्षय-ग्रस्त रोगी विषयी होते हैं।"

अपनी सुपरिचित स्पष्टबादिता से सुलेर ने तर्क आरम्भ किया और बिना रुके सहस्रों शब्दों की बौछार कर गया। एल. एन. ने उसकी ओर देखा, फिर होंठों पर बड़ी सी मुसकान लिए हुए बोले:

"आज तो तुम ब्याह के लिए पकी युवती की तरह चिड़चिड़ा रहे हो— जब उसे प्रेमी नहीं मिलता..."

१२

बीमारी ने उन्हें सुखा दिया है, उनके अन्दर कुछ जलाकर राख कर दिया है, वह कुछ हलके, कुछ अधिक पारदर्शी, भीतर से जीवन के प्रति अधिक व्यवस्थित लगते हैं। उनके नेत्र अधिक तीक्ष्ण व दृष्टि पैनी हो गयी है। हर बात वह ध्यान से सुनते हैं। लगता है मानो किसी भूली बात का स्मरण कर रहे हों अथवा अब तक अज्ञात किसी एकदम नयी वस्तु की बड़े विश्वास से प्रतीक्षा कर रहे हों। यास्नाया पोल्याना में वह मुझे एक ऐसे व्यक्ति के समान लगे थे जो सभी जानने योग्य बातों को जान चुका है, अपने सभी प्रश्नों का उत्तर पा चुका है।

१३

यदि वह मछली होते तो निश्चय हो उनका निवास सागर में होता। वह कभी खाड़ियों में न तैरते, नदियों में तो बिलकुल नहीं। एक छोटी मछली उनके निकट तीव्र गति से चक्कर लगा रही है; जो कुछ वह कहते हैं उसमें उसे दिलचस्पी नहीं, उसकी उसे आवश्यकता नहीं। उनका मौन न तो उसे भयभीत करता है, न कोई दूसरा प्रभाव डालता है। वह बहुत ही गरिमामय तथा कौशलपूर्ण मौन धारण करना जानते हैं—एक सच्चे तपस्वी की भांति। यह सच है कि उन विषयों पर वह बहुत अधिक बातें करते हैं जो उनके मस्तिष्क पर छाये रहते हैं, किन्तु ऐसा लगता है कि अभी भी बहुत कुछ है जो वह नहीं कह रहे हैं, ऐसी भी बातें हैं जो वह किसी से कह नहीं सकते। सम्भवतः उनके कुछ विचार ऐसे भी हैं जिनसे वह स्वयं डरते हैं।

१४

ईसा द्वारा दीक्षा प्राप्त बालक की कहानी का किसी ने उनके पास एक बहुत ही मजेदार संस्करण भेजा। बड़े उत्साह से उन्होंने उसे सुलेर और चेखोव को सुनाया। बड़े ही आकर्षक ढंग से पढ़कर सुनाया। उन्हें इस बात में बड़ा आनंद आया कि बौने पिसाचों ने किस प्रकार जमींदारों को सताया। इसमें कुछ ऐसा था जो मुझे अच्छा नहीं लगा। उनसे कपट नहीं हो सकता। किन्तु, यदि उनकी भावना निष्कपट थी तो और भी बुरा है।

फिर उन्होंने कहा :

"देखो न, किसान कितनी अच्छी तरह किस्सा कहते हैं। सब-कुछ सरल, शब्द थोड़े, भावानुभूतियों का बाहुल्य। सच्चा विवेक सदा संक्षिप्त होता है, जैसे 'हे भगवान, दया करो।'"

लेकिन यह बड़ी भयंकर कहानी है।

१५

मेरे प्रति उनकी दिलचस्पी जातिवृत्तात्मक है। उनके लिए मैं एक ऐसे कबीले का सदस्य हूं जिसके बारे में वह बहुत कम जानते हैं। बस, इससे अधिक और कुछ नहीं।

१६

मैंने उन्हें 'दि बुल' (बैल) नामक अपनी कहानी पढ़कर सुनायी। बहुत हंसे। 'भाषा के पैंतरे' जानने के लिए मेरी प्रशंसा की।

"लेकिन तुम शब्दों का प्रयोग करना नहीं जानते। तुम्हारे सभी किसान बड़े शानदार ढंग से बातें करते हैं। वास्तविक जीवन में किसान मूर्खों की तरह, बड़े ही भोंड़े तरीके से, बोलते हैं। तुम पहले समझ ही नहीं सकोगे कि वे कहना क्या चाहते हैं। ऐसा वे जान-बूझकर करते हैं। उनके शब्दों से प्रकट होनेवाली मूर्खता के नीचे सदा दूसरे को भुलावा देने की भावना छिपी रहती है। सच्चा किसान कभी सीधे-सीधे नहीं बताता कि उसके मन में क्या है। ऐसा करना उसके स्वभाव से मेल नहीं खाता। वह जानता है कि मूर्ख व्यक्ति के पास लोग निराडंबर और निश्छल बनकर जाते हैं। यही वह चाहता भी है। आप उसके सामने बिल्कुल निरावरण हो जाते हैं। वह तुरन्त आपकी सब कमजोरियां ताड़ लेता है। किसान बड़ा अविश्वासी होता है। अपनी पत्नी तक से अपने मन की बात कहने में डरता है। किन्तु, तुम्हारी कहानी में सब-कुछ सीधा और साफ-साफ होता है। तुम्हारी हर कहानी में बुद्धिधरों का जमाव होता है। पात्र चुटकुलों में बोलते हैं। यह भी सही नहीं हैं। चुटकुले रूसी भाषा में नहीं फबते।

"कहावतों और मुहावरों के बारे में आपकी क्या राय है?"

"उनकी बात अलग है। उनका आविष्कार कल-परसों तो हुआ नहीं था!"

"आप स्वयं बहुधा चुटकुलों में बातें करते हैं।"

"नहीं, कभी नहीं। फिर, तुम हर चीज को, जनता को, प्रकृति को, सभी को सजाने-संवारने का प्रयत्न करते हो, विशेषत: जनता को। लेस्कोव भी यही करते थे। उनमें कृत्रिमता और आडंबर बहुत था। अरसा हुआ, लोगों ने उनकी रचनाएं पढ़ना बन्द कर दिया है। किसी के सामने झुको नहीं, किसी से डरो नहीं — तभी तुम ठीक लिखोगे..."

१७

उन्होंने मुझे अपनी डायरी पढ़ने को दी थी। उसमें एक वाक्य मुझे बड़ा विचित्र लगा: "ईश्वर है मेरी इच्छा।"

आज जब मैंने उन्हें डायरी वापिस की तो इस वाक्य का अर्थ भी पूछा।

आंखें सिकोड़कर डायरी के उस पन्ने को देखते हुए उन्होंने कहा: "एक अपूर्ण विचार है। मैं शायद कहना चाहता था — ईश्वर है मेरी इच्छा उसे जानने की... नहीं-नहीं, यह नहीं...।" वह हंसे, नोट बुक मोड़ी और मिरजई की लम्बी-चौड़ी जेब में ठूंस ली। ईश्वर से उनके संबंध बड़े अनिश्चित हैं। कभी-कभी "एक मांद में दो भालू" वाली बात याद आ जाती है।

१८

विज्ञान के सम्बंध में:

"विज्ञान किसी मायावी रसायन-शास्त्री द्वारा निर्मित सोने का कुंदा है। तुम उसे सरल बनाना चाहते हो जिससे कि सभी उसे समझ सकें —दूसरे शब्दों में यह कि तुम अपरिमित जाली मुद्रा ढालना चाहते हो। निश्चय ही, लोग जब इस मुद्रा की असली कीमत जानेंगे तो तुम्हें धन्यवाद नहीं देंगे!"

१९

हम लोग युसुपोव पार्क में टहल रहे थे। बड़े उन्मुक्त भाव से वह मास्को के कुलीन घरानों की नैतिकता के बारे में बातें कर रहे थे। फूलों की एक क्यारी पर लगभग पूरी झुकी हुई एक प्रौढ़ रूसी युवती अपनी हाथी जैसी टांगों को खोले, भारी-भरकम स्तनों को झुलाती, काम कर रही थी। तोल्सतोय उसकी ओर बड़े ध्यान से देखते रहे।

"कुलीनों का समस्त वैभव और ऐश्वर्य इस जैसी स्तम्भ-बालाओं के बूते पर ही टिका था; केवल किसानों, किसान-युवतियों, उनके लगान आदि पर ही नहीं, वरन् शब्दशः जनता के रक्त पर टिका था। ये कुलीन समय-समय पर यदि इस जैसी घोड़ियों से समागम न करते तो वे कभी के नष्ट हो गये होते। मेरे युग के नौजवानों की भांति अब बिना आत्म-हानि के जवानी का अपव्यय नहीं किया जा सकता। किन्तु जवानी के मजे लेने के बाद कुलीनों में से बहुतों ने किसान बालाओं से विवाह कर लिया और अच्छी सन्तानें पैदा कीं। इस प्रकार, यहां भी किसान की शक्ति ही काम आयी। हर जगह यह काम आती है। कुलीनों की आधी पीढ़ी आत्म-सुख में अपनी शक्ति गंवा देती है, बाकी आधी देहाती जनता के गाढ़े खून में अपना खून मिलाती है, ताकि वह भी थोड़ा पतला हो जाय। उनकी जाति के लिए यही अच्छा भी होता है।

२०

फ्रांसीसी उपन्यासकारों की भांति स्त्रियों के बारे में बातें करने में उन्हें बड़ा आनन्द आता है, किन्तु सदा रूसी किसान की उस भोंड़ी शब्दावली में जो मेरे कानों को अप्रिय लगती है। आज बादाम के कुंज में घूमते हुए उन्होंने चेखोव से पूछा :

"जवानी में क्या तुम बहुत विषयी रहे हो ?"

ए. पी. बड़ी मासूमियत से मुसकराये और कुछ बुदबुदाते हुए अपनी छोटी-सी दाढ़ी सहलाने लगे। तोल्सतोय ने सागर पर ही दृष्टि गड़ाये हुए स्वीकार किया :

"मैंने तो हद कर दी थी —"

अपने वाक्य को उन्होंने एक चटपटा देहाती शब्द प्रयोग करते हुए कुछ दु:ख के साथ समाप्त किया। पहली बार मैंने अनुभव किया कि इस शब्द का उन्होंने बहुत सरलता से प्रयोग किया था, मानो इस शब्द का पर्यायवाची दूसरा कोई शब्द था ही नहीं। उनकी दाढ़ी से ढके होठों से निकले ऐसे सभी शब्द बड़े साधारण और स्वाभाविक लगते हैं — इन शब्दों का फौजी भोंड़ापन और उनकी गंदगी दाढ़ी से छनते-छनते दूर हो जाती है। मुझे उनसे पहली भेंट याद आती है, जब मैंने उन्हें "वारेन्का ओलेसेवा" तथा "२६ मर्द और एक औरत" सुनायी थी। उन्होंने जो कुछ कहा था वह भी मुझे याद है। साधारण दृष्टि से उनकी बातचीत "अश्लील शब्दों" की बौछार मात्र थी। मैं हक्का-बक्का रह गया था। मुझे बुरा भी लगा था। मुझे लगा कि शायद तोल्सतोय सोचते हैं कि मैं अश्लील शब्दों के अलावा और कोई भाषा समझ ही नहीं सकता। अब मैं समझ गया हूं कि मेरा बुरा मानना मूर्खता थी।

२१

सरो वृक्ष के नीचे एक पत्थर की बेंच पर दबे-सिकुड़े हुए, कुंडली मारे, बुढ़ापे से दबे, तो भी सैबाथ देवता के समान, वह बैठे थे। वह कुछ थके हुए थे और एक नन्हीं चिड़िया के गीत की नकल करते हुए मन बहलाने का प्रयत्न कर रहे थे। गहरे हरे पत्तों के आवर्तों में छिपी चिड़िया गा रही थी और तोल्सतोय अपनी छोटी-छोटी पैनी आंखें सिकोड़े पत्तियों के बीच झांककर नन्हें बच्चे की भांति होंठ आगे निकाले सीटी बजा रहे थे।

"नन्हा-सा पक्षी दीवाना हुआ जा रहा है! जरा सुनो तो! यह है कौन सी चिड़िया ?"

मैंने उस पक्षी और पक्षियों की आपसी ईर्ष्या के बारे में बताया।

"आजीवन केवल एक गीत — और उस पर ईर्ष्या! मनुष्य के हृदय में सैकड़ों गीत होते हैं, तो भी उस पर ईर्षालु होने का आरोप

लगाया जाता है। क्या यह उचित है?" फिर, कुछ सोचते हुए मानो अपने से ही प्रश्न कर रहे हों, कहा: "कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जब पुरुष नारी को अपने विषय में वे सब बातें बता देता है, जो नारी को नहीं जाननी चाहिएं। बाद में वह भूल जाता है कि उसने ये बातें बतायी हैं। किन्तु नारी को वे याद रहती हैं। ईर्ष्या — सम्भवतः दूसरे की नजरों में अपने को गिरा देने के भय से उत्पन्न होती है, जलील किये जाने, हास्यास्पद लगने के भय से। खतरनाक वह औरत नहीं होती जो तुम्हारा — पकड़ती है, बल्कि वह जो तुम्हारी आत्मा को पकड़ती है।"

जब मैंने उनकी इस बात और "क्रुजेर सोनाटा" में असंगति बतायी तो उनकी दाढ़ी प्रभावपूर्ण मुसकराहट से खिल उठी।

"मैं चिड़िया नहीं हूं" — उन्होंने उत्तर दिया।

शाम को टहलते समय उन्होंने यकायक कहा:

"मनुष्य भूचालों, महामारियों, खौफनाक बीमारियों और सभी तरह की मानसिक यातनाओं को झेल लेता है, किन्तु सबसे दुखद यातना जो उसे झेलनी पड़ती है वह सदा से ही रही है — स्त्री के पास सोने की यातना!"

यह बात उन्होंने विजयोल्लासपूर्ण मुसकराहट से कही। कभी-कभी उनकी मुसकराहट उस मनुष्य की विशद और सौम्य मुसकराहट के समान होती है जिसने किसी दुरूहतम कठिनाई को पार कर लिया है, या उस मनुष्य जैसी जो एक लम्बे अरसे से दुखदायी दर्द से पीड़ित था और जिसका यह दर्द अचानक गायब हो गया है। प्रत्येक विचार उनकी आत्मा को जोंक की तरह कुरेदा करता है। या तो वह उसे फौरन निकाल फेंकते हैं या उसे पूरी तरह रक्त चूस लेने का अवसर देते हैं, जिससे वह अपने आप ही, लस्त होकर, गिर पड़े।

एक अन्य अवसर पर, वैराग्यवाद पर बड़ी ही गम्भीर वार्ता के बीच यकायक उन्होंने भौहें सिकोड़ीं, कुड़बुड़ाये और कड़ककर बोले:

"पैबन्द लगी, सिली नहीं ..."

स्पष्ट ही इन शब्दों का वैराग्यवाद के दर्शन से लेशमात्र सम्बंध

नहीं था। मुझे आश्चर्य में डूबा देख उन्होंने दूसरे कमरे में खुलनेवाले दरवाजे की ओर देखा और सिर हिलाते हुए तेजी से कहा :

"सब कहते रहते हैं—सिली चादर चाहिए, सिली चादर..." फिर कहने लगे : "वह रेनान ... चटपटचंद-चटरबंद्द है !"

मुझसे कहा : "तुम चीजों का अच्छा वर्णन करते हो—अपने शब्दों में, विश्वास के साथ, किताबी ढंग से नहीं।"

किन्तु लगभग सदा ही मेरी वार्ता में उन्हें लापरवाही दिखायी देती है। अन्दर ही अन्दर वह बुदबुदाते, मानो अपने से ही कह रहे हों :

"एक अच्छे रूसी शब्द का प्रयोग करते हो और फिर उसी वाक्य में 'नितांत' का !"

कभी-कभी वह मुझे फटकारते : "तुम विरोधी भावोंवाले शब्दों को एक साथ ला रखते हो। ऐसा कभी न किया करो।"

कभी-कभी विशेष ध्वन्यात्मक शब्दों के बारे में उनकी भावुकता मुझे बड़ी दूषित मालूम होती।

एक बार उन्होंने कहा :

"एक बार एक किताब में एक ही वाक्य में मुझे 'बिल्ली' और 'साहस' शब्द साथ-साथ मिले। घृणास्पद ! मेरा तो जी खराब हो गया।"

"मैं भाषा शास्त्रियों से चिढ़ता हूं," वह कहते, "सबके सब सूखे झांखरों जैसे रूखे पंडित होते हैं। किन्तु भाषा के सम्बंध में उनके सामने महान कार्य है। हम ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें समझते नहीं। हमारी बहुत सी 'क्रियाओं' का जन्म कैसे हुआ इसका भी हमें पता नहीं।"

दोस्तोयेव्स्की की भाषा के सम्बंध में वह सदा बातें किया करते।

"बहुत निकृष्ट लिखते थे—जान-बूझकर अपनी शैली को कुरूप बनाया ! हां, जान-बूझकर ! मुझे विश्वास है, सिर्फ बनावट के लिए। उनको दिखावा बहुत पसंद था। "महामूर्ख" में एक साथ उन्होंने 'गाल,' 'झलक,' 'आडम्बरपूर्ण सुपरिचय' घुसेड़ रखा है। मैं समझता हूं कि उन्हें बोलचाल के रूसी शब्दों के साथ विदेशी भाषाओं से लिये

गये शब्दों का प्रयोग करने का शौक था। किन्तु उनकी रचनाओं में तुम्हें अक्षम्य चूकें मिलेंगी। महामूर्ख कहता है, 'गधा एक सुयोग्य और हितैषी व्यक्ति है,' लेकिन किसी को हंसी नहीं आती, हालांकि इन शब्दों पर हंसी आनी चाहिए थी या पाठक कुछ टिप्पणी करने पर मजबूर हो जाता। यह बात वह उन तीन बहनों के सामने कहता है, जिन्हें उसका मजाक बनाने का शौक था, विशेषतः अगलाया को। वह किताब बुरी समझी जाती है, लेकिन उसका मुख्य दोष यह है कि राजकुमार मिश्किन मिर्गी का रोगी है। यदि वह स्वस्थ व्यक्ति होता तो उसकी सच्ची सरलता, उसके हृदय की निश्छलता, हमें अवश्य आन्दोलित कर देती। लेकिन दोस्तोयेव्स्की में उसे स्वस्थ बनाने का साहस नहीं था। इसके अलावा, उन्हें स्वस्थ पुरुष पसन्द भी नहीं थे। उन्हें विश्वास था कि चूंकि वह स्वयं रोगी हैं, इसलिए समस्त संसार रोगी है ..."

उन्होंने सुलेर को और मुझे पिता सर्गियस के पतन का दृश्य पढ़कर सुनाया। बड़ा निर्मम दृश्य है वह। सुलेर उत्तेजना से तड़फड़ा रहा था और कुछ बड़बड़ा रहा था।

"बात क्या है ? क्या तुम्हें पसंद नहीं ?" एल. एन. ने पूछा।

"सचमुच बड़ी क्रूरता है—बिलकुल दोस्तोयेव्स्की के अनुरूप। वह सड़ांध भरी लड़की और उसके लिजलिजे स्तन ! फिर वह सब ! किसी सुन्दर, स्वस्थ नारी के साथ क्यों नहीं पाप किया उसने ?"

"तब वह ऐसा पाप होता जिसका कोई औचित्य न होता। अब लड़की के प्रति दया की दुहाई तो दी जा सकती है। उस बेचारी को दूसरा छूता ही कौन ?"

"मेरी समझ में नहीं आया ..."

"समझ में तो तुम्हारी बहुत कुछ नहीं आता, ल्योवुश्का। तुममें चालाकी जो नहीं है।" इसी बीच आन्द्रेई ल्वोविच की पत्नी आयी और हमारी बातचीत वहीं टूट गयी। जब सुलेर और वह बगलवाले कमरे में चले गये, तो एन. एल. ने मुझ से कहा :

"मेरी नजरों में ल्योवुश्का पवित्रतम व्यक्ति है। वह खुद इसी तरह का है—किसी के साथ गलती करता भी है, तो दया के कारण।"

२२

उनकी बातचीत के प्रिय विषय हैं : ईश्वर, किसान और नारी। साहित्य के सम्बंध में वह कभी-कभी ही, और बहुत कम बोलते हैं— मानो यह विषय उनके लिए पराया हो। जहां तक मैं समझ पाया हूं, नारी जाति के प्रति उनका रवैया विकट शत्रुता का है। यदि वे किटी और नताशा रोस्तोवा जैसी साधारण स्त्रियां नहीं हैं,—तो उन्हें दंड देने में ही तोल्सतोय को आनन्द आता है। क्या यह एक ऐसे पुरुष की प्रतिशोध भावना है जो उतना सुख प्राप्त नहीं कर सका जितना वह कर सकता था या यह "इन्द्रियों की निर्लज्ज भावनाओं" के प्रति आत्मा की शत्रुता है ? कुछ भी हो, यह शत्रुता है, बहुत कटु शत्रुता है—जैसी कि "अन्ना करेनिना" में दिखायी देती है। चेखोव और येल्पात्येव्स्की से रूसो की "स्वीकृतियों" के सम्बंध में बातें करते समय इतवार को वह "इन्द्रियों की निर्लज्ज भावनाओं" के सम्बंध में बहुत मार्मिक बातें कह रहे थे। सुलेर ने उनके शब्दों को लिख लिया था। किन्तु बाद में, कॉफी बनाते समय, उसने उन्हें लैंप में जला दिया। इससे पहले वह इबसन के सम्बंध में एल. एन. की टिप्पणियां जला चुका था। और विवाह के रीति-रिवाजों के सम्बंध में एल. एन. की बहुत ही अधार्मिक टिप्पणियों को, जो कहीं-कहीं रोजानोव की बातों से बहुत कुछ मिलती थीं, खो दिया था।

२३

आज प्रातःकाल फ्योदोसिया से कुछ स्तंदवादी* यहां आये थे। सारे समय वह बड़े उत्साह से किसानों के बारे में बातें करते रहे।

दोपहर में भोजन के समय उन्होंने कहा :

"तुमने देखा होता उन्हें। दोनों खूब गोल-मटोल और हट्टे-कट्टे थे। उनमें से एक बोला : 'हम बिना बुलाये चले आये हैं।' दूसरे ने कहा :

---

* एक धार्मिक सम्प्रदाय।— अनु०

'क्या बिना डाट-फटकार खाये जा सकते हैं ?'" तोल्सतोय बच्चों की तरह खिलखिलाकर हंस पड़े।

भोजन के बाद, बरांडे में :

"हम लोग जल्द ही जनता की भाषा समझना भूल जायेंगे। अब हम 'प्रगति के सिद्धांत,' 'इतिहास में व्यक्ति की भूमिका,' 'विज्ञान के विकास,' 'पेचिश' की बातें करते हैं और किसान कहता है : 'भूसे के इस ढेर में सुई खोजना बेकार है।' बस तमाम सिद्धांत और इतिहास और विकास व्यर्थ हो जाते हैं, हास्यास्पद बन जाते हैं, क्योंकि किसान उन्हें समझता ही नहीं, उनकी उसे आवश्यकता ही नहीं। लेकिन किसान हमसे अधिक बलशाली है। उसमें अधिक टिकाऊपन है। हो सकता है कि हम सब (कौन जाने) अतसुरी कबीले की तरह नष्ट हो जायें जिसके बारे में किसी विद्वान को बताया गया था कि 'सब अतसुरी तो नष्ट हो गये, लेकिन एक तोता बाकी है जो उनकी भाषा के कुछ शब्द जानता है।'"

२४

"शारीरिक रूप से नारी पुरुष से अधिक ईमानदार होती है। किन्तु उसके विचार झूठे होते हैं। नारी झूठ बोलती है, किन्तु उस पर स्वयं विश्वास नहीं करती, जबकि रूसो झूठ बोलता था और उस पर विश्वास भी करता था।"

२५

"दोस्तोयेव्स्की ने मानसिक रुग्णतावाले अपने एक पात्र के सम्बंध में लिखा था कि जीवन भर वह अपने को और दूसरों को इसीलिए दंड देता रहा कि वह वही सब कुछ करता था जिसमें उसे विश्वास नहीं था। यह उन्होंने अपने बारे में ही लिखा था, या बड़ी सुगमता से अपने बारे में लिख सकते थे।"

२६

"बाइबिल की कुछ कहावतें बहुत गूढ़ हैं। मिसाल के लिए, 'धरती प्रभु की है और उसकी पूर्णता भी !' इसका क्या अर्थ है ? इन शब्दों का धर्म-पुस्तकों से कोई सम्बंध नहीं। इनमें साधारण वैज्ञानिक भौतिकवाद की बू आती है।"

"आपने कहीं इन शब्दों के भाव की विवेचना की है।" सुलेर ने कहा।

"इससे क्या ! भाव हो सकता है, लेकिन मैं उसकी तह तक नहीं पहुंचा।"

और उनके होठों पर चतुरायी भरी मुसकराहट नाच गयी।

२७

उन्हें चतुराई-भरे अटपटे प्रश्न करना बहुत प्रिय है :

"अपने बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"क्या तुम अपनी पत्नी को प्यार करते हो ?"

"क्या तुम मेरे बेटे लेव को बुद्धिमान समझते हो ?"

"तुम्हें सोफिया आंद्रेयेवना* अच्छी लगती हैं ?"

उनसे झूठ बोलना असंभव है।

एक बार उन्होंने पूछा :

"एलेक्सी मैक्सिमोविच —क्या तुम मुझे प्यार करते हो ?"

यह एक रूसी बोगातीर‡ जैसा खिलवाड़ है। नोवगोरोद का दुस्साहसी वासिली बुस्लायेव भी इसी प्रकार के खेलों में रस लेता था। वह पहले एक प्रश्न करते हैं, फिर दूसरा—मानो लड़ने की तैयारी कर रहे हों। यह सब बहुत दिलचस्प है, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि मैं इसकी

---

* उनकी पत्नी। —अनु०

‡ बलिष्ठ शरीरवाला पौराणिक रूसी वीर। —अनु०

परवाह करता हूं। वह एक दैत्य हैं और मैं अभी निरा बालक। उन्हें मुझ पर दया करनी चाहिए।

२८

किसान तो मानो उनके लिए एक ऐसी दुर्गंधि हैं, जिसे वह कभी नहीं भूल सकते और जिसके बारे में बातें करने के लिए उन्हें बार-बार मजबूर होना पड़ता है।

कल रात मैंने उन्हें जनरल कोरनेट की विधवा से अपनी मुठभेड़ का किस्सा सुनाया। वह इतना हंसे, इतना हंसे, कि आंखों में आंसू आ गये, पसलियां दुखने लगीं, कराहने लगे। तेज आवाज में वह दोहराते रहे :

"फावड़े से! उसके — पर! फावड़े से? वाह! बिल्कुल उसके — पर! बड़ा था फावड़ा?"

फिर, एक क्षण रुककर, गंभीरता से :

"तुमने बड़ा रहम किया। तुम्हारी जगह दूसरा होता तो उसकी खोपड़ी पर दे मारता। बड़े दयालु हो। क्या तुम समझ गये थे कि वह तुम्हें चाहती है?"

"याद नहीं। शायद मैं नहीं समझा था।"

"बेशक, वह तुम्हें चाहती थी। यह तो स्पष्ट है। जरूर तुम्हें चाहती थी।"

"मुझे तब उसमें दिलचस्पी नहीं थी।"

"तुम्हारी दिलचस्पी क्या थी क्या नहीं, इसे गोली मारो। यह साफ है कि तुम औरतों के लिए नहीं हो। दूसरा आदमी होता तो अपनी किस्मत सीधी कर लेता, मकान मालिक बन जाता। जिन्दगी भर उसके साथ ऐश करता!"

कुछ रुककर :

"तुम भी अजीब आदमी हो! बुरा न मानना। बहुत अजीब आदमी हो। मजे की बात यह कि तुम भले स्वभाव के हो, हालांकि तुम्हें

प्रतिशोधी बन जाने का पूरा अधिकार है। हां, तुम प्रतिशोधी बन सकते थे। तुम मजबूत आदमी हो, यह बहुत अच्छा है..."

एक बार फिर ठहरकर, कुछ विचारते हुए :

"तुम्हारा दिमाग मेरी समझ में नहीं आता। बहुत उलझा हुआ दिमाग है। लेकिन तुम्हारा हृदय बहुत सुलझा हुआ है... सच, बहुत सुलझा हुआ।"

टिप्पणी : जब मैं कज़ान में था तो जनरल कोरनेट की विधवा पत्नी के यहां माली और चौकीदार का काम करता था। वह एक फ्रांसीसी महिला थी —मोटी-ताजी जवान युवती; स्कूली लड़कियों जैसे गोल-मटोल पैर; आंखें बड़ी सुन्दर, बहुत चंचल, सदा खुली-खुली और लालच से कुछ खोजती हुयीं। मुझे पूरा विश्वास है कि विवाह से पहले वह किसी दूकान पर विक्रेता या रोटी बनानेवाली रही होगी —या शायद वेश्या भी रही हो। सबेरे से ही वह पीना शुरू कर देती। नारंगी रंग के ड्रेसिंग-गाउन के नीचे सिर्फ एक चोली पहनकर खेत में या बाग में निकल आती। पैरों में लाल चमड़े के तातारी सलीपर होते। पीछे के घने बालों को समेटकर वह जूड़े की तरह बांध लेती; बाल बड़ी असावधानी से बंधे होते, उसके गुलाबी गालों पर झूमते हुए कंधों को चूमते रहते। जवान चुड़ैल समझो। बाग में टहलती हुयी फ्रांसीसी गीत गाया करती, मुझे ताकती रहती और बार-बार रसोईघर की खिड़की पर जाकर कहती :

"पॉलिन ! कुछ हो तो दे मुझे।"

"कुछ" का अर्थ सदा एक ही होता —शराब का ठंडा गिलास।

उसके मकान के नीचेवाले हिस्से में तीन अनाथ राजकुमारियां रहती थीं। उनके पिता एक कमिसारी जनरल थे और सदा बाहर रहते थे। मां का देहान्त हो चुका था। फ्रांसीसी विधवा को ये युवतियां फूटी आंखों न सोहातीं। वह हर प्रकार की गंदी हरकतों द्वारा उन्हें तंग करने की कोशिश किया करती। रूसी तो वह अच्छी तरह नहीं जानती थी, तो भी गालियां देने में गजब ढाती थी; बिलकुल इक्के-तांगोंवालों की तरह गालियां देती थी। इन निरीह लड़कियों के साथ

वह जैसा व्यवहार करती उसे देखता-देखता मैं आजिज आ चुका था। वे बेचारी बेहद दुःखी, अरक्षित और सतायी हुयी थीं। एक बार, दोपहर के समय, उनमें से दो लड़कियां बागीचे में टहल रही थीं। इतने में ही जनरल की विधवा सदा की भांति पिये हुए आ पहुंची और लगी उन पर चिल्लाने और उन्हें बागीचे से निकालने। वे बेचारी बिना कुछ बोले बाहर जाने लगीं। लेकिन मादाम कोरनेट फाटक पर राह रोककर खड़ी हो गयी और ऐसी-ऐसी गालियां बकने लगी कि घोड़ा भी सुनता तो कान दबाकर भाग जाता। मैंने उससे कहा —गाली बेना बन्द कर और लड़कियों को निकल जाने दे। लेकिन वह मुझ पर चिल्लायी :

"मैं तुझे अच्छी तरह जानती हूं! रात को इनकी खिड़की में घुसता है तू ..."

मैं अपने आपे न रहा। उसके कंधे पकड़े और ठेलकर फाटक से हटा दिया। लेकिन उसने अपने को छुड़ा लिया, मेरी तरफ घूमी और यकायक ड्रेसिंग-गाउन खोलकर चोली हटाती हुई चिल्लायी :

"अरे देख! उन हड़ैल चुहियों से ज्यादा खूबसूरत हूं मैं!"

अब तो मैं कतई आपे में न रहा। उसे पकड़कर मैंने घुमाया और उसके चूतड़ों पर फावड़ा दे मारा। अब तो वह बड़े आश्चर्य से तीन बार "दैया! दैया! दैया!" चिल्लायी और फाटक से निकलकर खेत में जा खड़ी हुई।

इसके बाद मैंने बावर्चिन से अपना पासपोर्ट लिया। वह भी एक ही पियक्कड़ दुष्टा थी; लेकिन थी बड़ी चतुर। मैंने बगल में बिस्तर दबाया और वहां से चल दिया। जनरल की विधवा, हाथ में रूमाल लिए, खिड़की पर खड़ी चिल्ला रही थी :

"लौट आओ! लौट आओ! मैं पुलिस को खबर नहीं करूंगी। लौट आओ! डरो नहीं। लौट आओ ...।"

२९

मैंने उनसे पूछा :

"क्या आप पोजनिशेव के इस विचार से सहमत हैं कि डाक्टरों ने लाखों को मारा है और अब भी मार रहे हैं ?"

"क्या मेरा मत जानने को बहुत उत्सुक हो ?"

"हां।"

"तो मैं नहीं बताऊंगा !"

अंगूठे हिलाते हुए वह प्रसन्नता से मुसकराये।

मुझे याद था कि अपनी एक कहानी में उन्होंने डाक्टर की तुलना जोंक से की है।

"क्या 'सार' 'बवासीर,' 'रक्त स्राव' शब्द 'शिरा,' 'गठिया,' 'काठी' के ही लिए दूसरे शब्द नहीं है ?"

यह सब जेनर, बेहरिंग, पाश्चर के बाद ! इसे कहते हैं—दैत्य !

३०

बड़े आश्चर्य की बात है कि उन्हें ताश खेलने का शौक है। ताश वह बड़ी गम्भीरता से खेलते हैं; कभी-कभी तो बहुत उत्तेजित हो जाते हैं। पत्तों को वह इतनी घबराहट से पकड़ते हैं मानो उंगलियों के बीच पत्ते नहीं, कोई जीवित चिड़िया हो।

३१

"डिकेंस ने एक बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण बात कही : 'जीवित रहना है तो इस शर्त पर रहो कि अंत तक जीवन के लिए कठिन संघर्ष करना है।' वैसे वह बहुत भावुक और बकवासी लेखक था; बहुत बुद्धिमान नहीं। हां, उपन्यास रचना में उसका सानी नहीं था; निश्चय ही वह बालज़ाक से बहुत बढ़-चढ़कर था। किसी ने कहा है : 'किताबें लिखने

का भूत तो बहुतों पर सवार रहता है, लेकिन इस पर शर्मिंदा बहुत कम हाते हैं। न तो डिकेंस और न बालज़ाक इस पर शर्मिंदा थे, हालांकि दोनों ने बहुत कुछ ऐसा लिखा है जो बुरा है। फिर भी बालज़ाक महान विभूति था — मेरा मतलब है कि वह ऐसा था जिसे महान विभूति ही कहा जा सकता है ..."

कोई उनके पास तिखोमिरोव की पुस्तक "मैं क्रांतिकारी क्यों नहीं बना" ले आया था। तोल्सतोय ने उसे उठाया और नचाते हुए बोले :

"राजनैतिक हत्या के विषय पर इसमें बहुत अच्छी तरह लिखा गया है। इसमें दिखाया गया है कि इस प्रकार के प्रतिरोध का कोई सुनिश्चित उद्देश्य नहीं होता। इस सुधरे हुए हत्यारे के अनुसार इस प्रकार का विचार व्यक्ति की अराजकतावादी निरंकुशता और समाज तथा मानवता के प्रति घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। यह सब उसने बहुत ठीक लिखा है। किन्तु 'अराजकतावादी' शब्द गलत छप गया है। उसके स्थान पर 'राजवादी' होना चाहिए था। विचार अच्छा और सच्चा है। सभी आतंकवादी, मेरा मतलब ईमानदार आतंक-वादियों से है, यहां ठोकर खायेंगे। हां, जिसका स्वभाव ही हत्या करना हो, वह इससे न हिचकेगा। यहां उसके लिए कोई रोक-टोक नहीं। वह निरा हत्यारा है और आतंकवादियों के बीच धोखे से आ पड़ा है।"

३२

कभी-कभी वह वोल्गा क्षेत्र के धार्मिक-मतवादियों की भांति आत्म-तुष्ट और असहिष्णु लगते हैं, और चूंकि किसी घंटे-घड़ियाल की तरह ही उनकी टंकार भी विश्व भर में सुनायी देती है, इसलिए बात और भयानक हो जाती है। कल उन्होंने मुझसे कहा :

"मैं तुमसे अधिक किसान हूं और किसानों के बारे में तुमसे अधिक अच्छी तरह अनुभव कर सकता हूं।"

हे भगवान ! उन्हें इतना गर्व नहीं करना चाहिए। सचमुच, नहीं।

मैंने उन्हें "लोग्रर डेप्थ्स" (निचली गहराइयां) से कुछ दृश्य पढ़कर सुनाये। बड़े ध्यान से सुने। फिर पूछा :

"तुमने यह सब लिखा क्यों!"

जैसा कुछ मैं बता सकता था, बताया।

"तुम तो किसी चीज के पीछे मुर्गे की तरह दौड़ पड़ते हो। एक बात और। तुम सभी दरारों और गढ़ों में अपना ही रंग भरकर उन्हें सपाट करना चाहते हो। हैंस एंडरसन ने अपनी एक कहानी में कहा है : 'पालिश उतर जाती है, चमड़ा रह जाता है।' किसान कहते है : 'हर चीज मिट जाती है, सिर्फ सच्चाई बनी रहती है।' अच्छा हो कि रंग न पोतो। बाद में तुम्हारे लिए और भी हानिप्रद होगा। तुम्हारी भाषा बहुत भड़कीली है, मुरकियों-पेंचों से भरी हुई। इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हें चाहिए कि सरल लिखो। साधारण लोग सरलता से बोलते हैं। शुरू-शुरू में उनकी बातें असम्बद्ध मालूम हो सकती हैं, लेकिन उनकी व्यंजना बड़ी ऊंची होती है। किसान इस तरह नहीं पूछता कि, 'यह कैसे हुआ कि जब चार तीन से बड़ा है तो तिहाया चौथाई से बड़ा होगा?'—जैसे कि किसी विदुषी महिला ने कभी पूछा था। पेंचों-मुरकियों वाली भाषा की कोई जरूरत नहीं।"

वह अप्रसन्न मालूम हो रहे थे। स्पष्ट ही जो मैंने पढ़कर सुनाया था उन्हें तनिक भी पसंद नहीं आया था। कुछ रुककर मुझसे परे देखते हुए रुखाई से बोले :

"तुम्हारे बूढ़े से प्यार नहीं किया जा सकता। किसी को उसकी भलमनसाहत पर विश्वास नहीं होता। अभिनेता अच्छा है। 'ज्ञान के फल' पुस्तक पढ़ी है तुमने? तुम्हारे अभिनेता की तरह का एक बावर्ची उसमें है। नाटक लिखना बहुत कठिन होता है। तुम्हारी वेश्या भी अच्छी है। शायद वे होती ही ऐसी हैं। कभी इस तरह की वेश्या से मिले हो?"

"हां।"

"सो तो साफ जाहिर है। सच्चाई सिर पर चढ़कर बोलती है। लेकिन तुम लेखक के दृष्टिकोण से बहुत अधिक कहते हो। तुम्हारे नायक सच्चे पात्र नहीं होते। सभी एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। औरतें शायद तुम्हारी समझ में ही नहीं आतीं। तुम्हारे सभी नारी पात्र असफल हैं —हरेक। याद में नहीं टिकते ..."

आन्द्रेई ल्वोविच की पत्नी चाय के लिए आमंत्रित करने कमरे में आयीं। वह उठ खड़े हुए और शीघ्रता से बाहर चले गये—मानो बात-चीत खत्म होने से बड़े प्रसन्न हों।

३४

"तुमने सबसे भयानक सपना कौन सा देखा है ?"

सपने मुझे कभी-कभी ही आते हैं। उन्हें याद रखना तो और भी कठिन है। लेकिन दो मेरी स्मृति में हैं। संभवतः जीवन भर मैं उन्हें न भुला सकूंगा।

एक बार सपने में मैंने बीमार, गंदा-मैला, हरा-पीला सा आसमान देखा, जिसमें बुझे-बुझे से, आभाहीन, गोल-सपाट सितारे भुखमरे आदमी के शरीर पर घावों की तरह छाये थे। गंदले आसमान की पृष्ठभूमि में रक्तिम प्रकाश उनके बीच रेंग रहा था; यह प्रकाश एक सर्प के समान था और जब भी वह किसी सितारे को डसता तो वह फूलकर ग्रह बन जाता और बिना ध्वनि के फूट जाता। उसके स्थान पर धुयें के गुब्बारे जैसा एक दाग रह जाता, जो धीरे-धीरे गंदले, नीले आसमान में विलीन हो जाता। एक-एक करके सभी सितारे फूटने लगे और आसमान और भी अधिक अंधकारमय तथा भयावह हो गया—फिर सिमटकर उबलने लगा और टूक-टूक होकर मेरे सिर पर काले सिरके की तरह गिरने लगा। उसकी बूंदों के बीच काली पृष्ठभूमि चमक रही थी।

एल. एन. ने कहा :

"जरूर ही तुम खगोल विद्या की कोई पुस्तक पढ़ रहे होगे। तुम्हारा दुःस्वप्न उसी की उपज है। दूसरा स्वप्न क्या था ?"

दूसरा सपना था : एक बर्फीला मैदान। कागज के ताव जैसा सपाट। न तो उस पर कोई टीला, न पेड़, न झाड़ी। कहीं-कहीं बरफ से झांकती सिर्फ एक कोंपल दीखती थी। जीवनहीन रेगिस्तानी बरफ पर इस क्षितिज से उस क्षितिज तक धुंधली सड़क की एक पीली रेखा दीख रही थी जिस पर भूरे बूटों का एक जोड़ा अकेला, अपने-आप, चला आ रहा था।

उन्होंने बौनों जैसी अपनी खुरदुरी भौंहें तानीं और ध्यान से मेरी ओर देखा। कुछ ठहरकर बोले :

"बड़ा भयंकर सपना था। क्या तुमने सचमुच यह सपना देखा था ? मन से बनाकर तो नहीं कह रहे ? इसमें कुछ किताबीपन है।"

और यकायक लगा कि वह आपे से बाहर हो गये हैं। एक उंगली से अपने घुटने को टिपटिपाते हुए बड़े रूखेपन से जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया :

"तुम पीते तो नहीं हो ? तुम्हें देखकर तो नहीं लगता कि पीते होगे। फिर भी तुम्हारे सपनों में शराबियों जैसा फितूर है। एक जर्मन लेखक था; नाम था : हाफमैन। उसको ताश की मेजें सड़क पर इधर से उधर दौड़ती हुई और न जानें क्या-क्या दिखायी देता था। वह बड़ा पियक्कड़ था, या 'ठर्रेबाज', जैसा गाड़ीवान कहते हैं। बूटों का जोड़ा ! अपने-आप चल रहा था ? सचमुच बड़ा भयंकर सपना है ! तुमने उसे मन से ही गढ़ा है, तो भी वहुत बढ़िया है। सचमुच भयानक !"

सहसा मुसकराहट से उनकी दाढ़ी फैल गयी, गालों की हड्डियां चमक उठीं।

"जरा सोचो : अचानक त्वेर्सकाया सड़क पर ताश की मेजें दौड़ती चली आ रही हैं—लकड़ी के मुड़े हुए पैर, तख्ते पर फड़फड़ाते हुए, खड़िया मिट्टी उड़ती हुई, हरे मेजपोश पर लिखे अक्षर भी तुम पढ़ सकते हो। वह इसलिए भाग आती हैं कि किसी आबकारी के अफसर ने तीन दिन तीन रात लगातार पत्ते खेले थे और बेचारी मेज अब ज्यादा बर-दाश्त न कर सकती थी।"

वह हंसे, किन्तु जरूर उन्होंने भांप लिया होगा कि उनके अविश्वास के कारण मुझे बुरा लगा है। बोले :

"तुम्हें बुरा लगा क्योंकि तुम्हारे सपने मुझे किताबी लगते हैं। बुरा न मानो। मैं जानता हूं कि लोग अचेतन रूप से कभी-कभी ऐसी बातें गढ़ लेते हैं जो इतनी अजीब होती हैं कि उन पर कोई विश्वास कर ही नहीं सकता। फिर, आदमी सोचने लगता है कि अवश्य ये बातें उसने सपने में देखी होंगी। एक बार एक जमींदार ने मुझे बताया कि उसने सपना देखा कि वह जंगल में टहल रहा है; टहलते-टहलते स्तेपी में आ गया। वहां उसने देखा कि स्तेपी पर दो पहाड़ियां हैं। यकायक दोनों पहाड़ियां चूंचियां बन गयीं और उनके बीच से काला चेहरा उभर आया। आंखों की जगह दो चांद थे—सपाट। और, जमींदार खुद एक औरत की टांगों के बीच खड़ा था। उसके ठीक सामने एक गहरी अंधेरी दरार थी जो उसे अपने अन्दर खींचे ले रही थी। इस सपने के बाद से जमींदार के बाल सफेद होने शुरू हो गये। उसके हाथ कांपने लगे और वह इलाज के लिए डा० नीप के पास विदेश चला गया। उस जैसे व्यक्ति ऐसे ही सपने देख सकते थे— वह नम्बरी व्यभिचारी था।"

मेरे कंधे थपथपाये।

"लेकिन तुम न तो शराबी हो, न व्यभिचारी! फिर तुम्हें ऐसे सपने क्यों दीखते हैं?"

"मालूम नहीं।"

"हम लोगों को अपने बारे में कुछ नहीं मालूम।"

उन्होंने गहरी सांस ली, आंखें सिकोड़ीं और धीरे से बुदबुदाये :

"कुछ नहीं।"

आज संध्या समय जब हम लोग टहलने निकले तो उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोले :

"चलते हुए बूट! भयंकर! है न? अपने आप चलते हुए! खटखट-खटखट! और उनके नीचे बरफ की चरर-चरर! हां, बहुत अच्छा है। तो भी, तुम बहुत किताबी हो! बहुत! नाराज न होना— लेकिन यह बुरा है! समझे? तुम्हारी राह में रोड़ा बनेगा।"

मैं नहीं मानता कि मैं उनसे अधिक किताबी हूं। और, इस समय वह—जो भी वह कहें— मुझे बड़े तर्कवादी लगते हैं।

३५

कभी-कभी ऐसा लगता है मानो वह अभी-अभी कहीं बहुत दूर से आये हैं, किसी ऐसी जगह से जहां लोग दूसरी ही तरह से सोचते-अनुभव करते हैं, जहां एक-दूसरे के साथ मनुष्यों का व्यवहार बिलकुल भिन्न है, जहां वे शायद उस तरह चलते-फिरते भी नहीं जैसे हम लोग चलते-फिरते हैं और भाषा भी दूसरी बोलते हैं। वह एक कोने में थके-थके, धूल-धूसरित से बैठ रहते हैं, मानो दूसरे देश की मिट्टी बदन पर फैली हो, और हर आदमी की तरफ गूंगे-बहरे की तरह अनजान आंखों से घूरते रहते हैं।

कल रात भोजन से पहले जब वह बैठक में आये तो ऐसे से ही लग रहे थे। मालूम होता था मानो वह कहीं दूर, बहुत दूर हैं। फिर, एक क्षण के लिए, सोफा पर चुपचाप बैठे रहकर, यकायक हथेलियों से पैर के घुटनों को रगड़ते हुए, मुंह सिकोड़कर, इधर-उधर झूमते हुए बोले :

"नहीं, नहीं, यहीं उसका अंत नहीं होता।"

किसी व्यक्ति ने, जो बिल्कुल ही निर्बुद्धि और चपटे लोहे जैसा ठस था, पूछा :

"क्या मतलब है आपका ?"

उन्होंने उसकी ओर गौर से देखा। फिर जरा आगे झुककर बरांडे में झांकते हुए, जहां मैं और डाक्टर निकितिन और येल्पातेव्स्की बैठे थे, पूछा :

"किस सिलसिले में बातें कर रहे हो तुम लोग ?"

"प्लेव के बारे में।"

"प्लेव ...? प्लेव ...?" कुछ सोचते हुए रुक-रुककर उन्होंने शब्द दोहराये, मानो उन्होंने पहले यह नाम सुना ही न हो, फिर एक पक्षी की तरह अपने को फड़फड़ाकर प्रसन्नता से कहा :

"सबेरे से ही कुछ अर्थहीन बातें मेरे दिमाग में धंस गयी हैं। किसी ने मुझे बताया कि एक समाधि पर ये पंक्तियां लिखी हैं :

यह समाधि है सौम्य इवान यगोर्येव की,
जो चमार था; खाल कमाना जिसकी रोजी!
परिश्रमी था वह, दयालु था, किन्तु हाय अब
चला गया परलोक, सौंप पत्नी को ही सब!
वृद्ध न था वह, मेहनत रख सकता था जारी,
किन्तु बुलावा आया परमपिता का भारी :
'मृत्यु लोक को छोड़ बनो परलोक निवासी,'
शुक्रवार की रात्रि; चल दिया वह विश्वासी!

वह चुप हो गये। फिर अपना सिर हिलाकर धीरे से मुसकराये और कहा :

"मनुष्य की मूढ़ता में भी बहुत कुछ छू जानेवाली, मधुर बातें होती हैं—हमेशा, बशर्ते कि वह दुष्टतापूर्ण न हो।"

अब हम लोग खाने पर बुला लिये गये।

३६

"मुझे पियक्कड़ लोग नहीं भाते। लेकिन मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जो एक या दो गिलास चढ़ाकर बहुत दिलचस्प हो जाते हैं। उनमें बुद्धि, विचार-सौंदर्य, औचित्य और भाषण-वैचित्र्य आ जाता है, जो उनमें दूसरे समय नहीं रहता। ऐसी दशा में मैं मदिरा को आशीर्वाद देने को तैयार हूं।"

सुलेर ने मुझे बताया कि जब वह और तोल्सतोय त्वेर्सकाया सड़क पर टहल रहे थे तो उन्होंने दूर पर दो घोड़सवार फौजी देखे। उनके तांबे के कवच सूर्य के प्रकाश में जगमग-जगमग कर रहे थे, रकाब झुन-झुना रहे थे, दोनों एक दूसरे से सटे हुए साथ-साथ आ रहे थे मानो एक

साथ ही बढ़े-पनपे हों। तरुणाई की ज्योति और शक्ति से उनके चेहरे चमक रहे थे।

तोल्सतोय उन्हें गालियों देने लगे :

"कितनी शाहाना मूर्खता है! हंटर मार-मारकर तैयार किये गये जानवरों जैसे। बस ...!"

लेकिन जब घोड़सवार पास से गुजरे तो वह चुपचाप खड़े हो गये और प्यार-भरी निगाहों से उन्हें देखते रहे, फिर प्रशंसा करते हुए कहा :

"कितने खूबसूरत हैं! पुराने रोमन लगते हैं। है न, ल्योवुश्का ? शक्ति, सौंदर्य — हे भगवान! सुन्दर इन्सान भी कितना ऐश्वर्यवान लगता है!"

३७

उस दिन बड़ी गरमी थी। उन्होंने मुझे एक पगडंडी पर पकड़ लिया। एक छोटे से, शांत तातार घोड़े पर सवार थे वह; लिवादिया की दिशा में जा रहे थे। कुकुरमुत्ते के आकार का एक पतला सफेद फेल्ट हैट पहने; थके-थके; बाल पके। देवपुरुष लगते थे वह।

उन्होंने घोड़े की लगाम खींची और मुझसे बातें करने लगे। मैं उनकी बगल में चल रहा था। दूसरी बातों के साथ ही मैंने वी. जी. कोरोलेन्को के पत्र का जिक्र किया जो मुझे थोड़ी देर पहले मिला था। तोल्सतोय ने क्रोध से दाढ़ी हिलायी।

"वह भगवान में विश्वास करता है ?"

"मैं नहीं जानता।"

"बस तुम सबसे जरूरी बात नहीं जानते। वह भगवान में विश्वास करता है, लेकिन अनीश्वरवादियों के समान उसे यह कबूल करते लज्जा आती है।"

क्रोध से आंखें सिकोड़कर, कर्कस-स्वर में, वह शिकायत सी कर रहे थे। मैं समझ गया कि मैं उनकी राह में आ गया हूं, लेकिन जब मैं ऐसे चलने लगा मानो उन्हें छोड़कर जा रहा हूं, तो उन्होंने मुझे रोका :

"क्या बात है ? धीरे-धीरे तो चल रहा हूं।"

फिर बड़बड़ाये :

"तुम्हारा आन्द्रियेव अनीश्वरवादियों से भी डरता है, किन्तु भगवान में भी विश्वास करता है। और वह भगवान से डरता है।"

ग्रैंड ड्यूक ए. एम. रोमानोव की रियासत की सरहद पर तीनों रोमोनोव सड़क पर एक-दूसरे से सटे खड़े थे — आई-तोदोर रियासत के मालिक, जार्जी, और द्यूलबेर का प्योत्र निकोलायेविच — मेरा खयाल है, ये सभी सुंदर और स्वस्थ पुरुष थे। एक घोड़ागाड़ी और जीनकसा घोड़ा सड़क रोके खड़े थे। तोल्सतोय आगे नहीं बढ़ सके। उन्होंने रोमानोवों की ओर तीखी निगाह से देखा। लेकिन उनकी पीठें हमारी ओर थीं। इसी बीच सवारी वाला घोड़ा कुछ हिला, एक ओर को हट गया। तोल्सतोय का घोड़ा आगे निकल गया।

मिनट-दो-मिनट शान्ति से आगे बढ़ने के बाद बोले :

"बदमाशों ने मुझे पहचान लिया!" फिर क्षण भर बाद : "घोड़ा समझ गया कि तोल्सतोय के रास्ते से हट जाना चाहिए।"

३८

"पहले, सबसे पहले, अपनी देखभाल करो — अपने लिए। तभी तुम दूसरों के लिए बहुत कुछ कर सकोगे।"

३९

"जब हम कहते हैं कि हम 'जानते' हैं, तो हमारा क्या तात्पर्य होता है ? मैं जानता हूं कि मैं तोल्सतोय हूं, एक लेखक हूं, मेरे एक पत्नी है, बच्चे हैं, मेरे बाल पक गये हैं, चेहरा भद्दा है, दाढ़ी है। यह सभी मेरे पासपोर्ट में भी है। किन्तु पासपोर्ट में लोग आत्मा तो नहीं लिख सकते। अपनी आत्मा के बारे में मैं इतना ही जानता हूं कि वह ईश्वर के सामीप्य के लिए उत्सुक रहती है। किन्तु ईश्वर क्या है ? वही,

जिसका मेरी आत्मा एक कण है। बस। जिस किसी ने भी विचार करना सीख लिया है, उसके लिए विश्वास करना कठिन हो जाता है। ईश्वर में कोई रम सकता है तो विश्वास के आधार पर। तरतूलियन ने कहा है : 'विचार ही पाप है।'"

४०

अपने उपदेशों की एकरसता के बावजूद इस अलौकिक व्यक्ति में निस्सीम अनेकरूपता है।

पार्क में आज गास्प्रा के मुल्ला से बातें करते समय वह बिलकुल सीधे-सादे गंवार लग रहे थे जिसके जीवन की अंतिम घड़ी आ पहुंची है। छोटे तो वह हैं ही। उस शक्तिशाली, बलिष्ठ तातार की बगल में खड़े उस बूढ़े बौने की तरह लग रहे थे जिसने अभी-अभी जीवन के रहस्य पर विचार करना आरम्भ किया है और जो जीवन की समस्याओं से ऊब हो उठा है। आश्चर्य से अपनी खुरदुरी भवें उठाकर, दबे भाव से पैनी आंखों को मिचमिचाते हुए उन्होंने उनकी असह्य, तेज चमक को धुंधला बना लिया। सदा चंचल सतर्क निगाहें मुल्ला के चेहरे पर निश्चल हो गयीं। आंखों की पुतलियों की वह तेजी कहीं खो गयी जो लोगों को इतना अशांत बना देती थी। जीवन, आत्मा और भगवान के अर्थों के सम्बंध में वह मुल्ला से "बचकाने" प्रश्न पूछ रहे थे, साथ ही कुरान, बाइबिल और दूसरे धार्मिक ग्रन्थों के श्लोक और आयतें आदि जोड़ते जाते थे। दरअसल वे नाटक कर रहे थे। ऐसी आश्चर्यजनक नाटकीयता केवल महान कलाकार अथवा योगी में ही हो सकती है।

अभी कुछ दिन पहले तनेयेव और सुलेर से गान-विद्या के सम्बंध में बातें करते हुए उसके सौंदर्य पर वह बचकाने हर्षातिरेक में मग्न हो गये। कोई भी देख सकता था कि वह स्वयं अपने ही हर्षातिरेक का—या कहिए कि उसे अनुभव कर सकने की अपनी क्षमता का— मजा ले रहे है। उन्होंने बताया कि संगीत विद्या के सम्बंध में शोपेनआवर से अधिक अच्छा और अधिक निखार के साथ किसी ने नहीं लिखा। जिस समय वह

यह सब चर्चा कर रहे थे, तभी उन्होंने फेट के बारे में एक मजाकिया कहानी सुनायी और संगीत को "आत्मा की मूक प्रार्थना" बताया।

"मूक क्यों ?" सुलेर ने पूछा।

"क्योंकि उसमें शब्द नहीं होते। आत्मा विचारों से अधिक ध्वनियों में निवास करती है। विचार एक ऐसी थैली है, जिसमें तांबे के सिक्के भरे होते हैं। ध्वनि पूर्ण रूप से दोष-मुक्त होती है, आन्तरिक रूप से शुद्ध !"

बड़े ही रस-विभोर होकर उन्होंने बचकाने शब्द कहे। यकायक ही अच्छे से अच्छे और कोमलतम शब्द उन्हें याद हो आये थे। फिर दाढ़ी में ही मुसकराते हुए बड़े कोमल स्वर में, मानो दुलराते हुए, कहा :

"सभी संगीतज्ञ मूर्ख होते हैं। जो संगीतज्ञ जितना पहुंचा हुआ होगा, उतनी ही संकीर्ण मनोवृत्ति का होगा। आश्चर्य तो यह है कि लगभग सभी संगीतज्ञ धार्मिक होते हैं।"

४१

टेलीफोन पर चेखोव से :

"आज का दिन मेरे लिए बड़ा सुखद है। मैं इतना खुश हूं कि चाहता हूं कि तुम भी खुश हो। खास तौर से तुम। तुम सचमुच बड़े मीठे आदमी हो, बड़े मीठे।"

४२

कोई जब गलत बात कहता है तो वह न तो उसकी सुनते हैं, न उस पर विश्वास करते हैं। सच पूछो तो वह उससे प्रश्न नहीं पूछते; उसका इम्तहान लेते हैं।

अलभ्य वस्तुओं के संग्राहक की भांति वह केवल उसी वस्तु को स्वीकार करते हैं जो उनके संग्रहालय के सामंजस्य को नष्ट न करे।

४३

अपनी डाक देखते हुए :

"बड़ा शोर मचाते हैं ये लोग। पत्र पर पत्र लिखते रहते हैं। जब मैं मर जाऊंगा तो साल भर बाद ये लोग कहेंगे : 'कौन तोलसतोय ? वही काउन्ट न, जो जूते सीता था और फिर मर गया ?'"

४४

कई बार मैंने उनके चेहरे पर और उनकी दृष्टि में उस व्यक्ति की चालाकी भरी और संतोषपूर्ण मुसकराहट देखी जिसे अचानक वह चीज मिल गयी हो जिसे उसने स्वयं कहीं छिपा रखा था। उन्होंने मानो कोई चीज छिपा दी हो और फिर भूल गये हों। कई दिनों तक वह मन ही मन बहुत परेशान रहते और लगातार सोचते रहते : कहां रख दी मैंने ? अब इतनी जरूरत आ पड़ी है! उन्हें डर लगता कि लोग उनकी परेशानी भांप लेंगे, उनके नुकसान का राज समझ जायेंगे और कोई ऐसी अरुचिकर बात कह बैठेंगे जो उन्हें भली न लगेगी। और अचानक उन्हें उस वस्तु का स्थान याद हो आता; वह उन्हें मिल जाती। अब आनन्द-विभोर, उस वस्तु को छिपाने का प्रयत्न किये बिना, वह हरेक की ओर चंचल दृष्टि से देखते, मानो कह रहे हों :

"बोलो ? अब कैसे हानि पहुंचाओगे मुझे ?"

किन्तु इस विषय में वह एक शब्द भी न कहते कि उन्हें क्या मिल गया है और कहां मिल गया है।

उनकी सराहना करते कोई नहीं अघाता। किन्तु कोई भी उनसे बार-बार नहीं मिलना चाहेगा। एक ही कमरे की बात छोड़िये, मैं तो एक ही मकान में उनके साथ नहीं रह सकता। उनके साथ रहना एक ऐसे मैदान में रहना है जहां सूर्य ने सब कुछ जलाकर राख कर दिया है, और जहां वह खुद, अर्थात स्वयं सूर्य, अपने को अनवरत रूप से जला रहा है और अनन्त अन्धकार की आशंका पैदा कर रहा है।

पत्र

मैंने आपको एक पत्र डाला ही था कि तार से "तोल्सतोय के प्रयाण" का समाचार मिला। जैसा कि आप देख रहे हैं, जब तक मुझे आपसे मानसिक सम्बंध अनुभव हो रहा है, मैं आपको फिर पत्र लिख रहा हूं।

निःसन्देह, इस समाचार से सम्बंधित हर बात जो मैं कहना चाहता हूं, उलझी हुई होगी, सम्भवतः कटु और अनुदार भी। इसके लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूं। मुझे ऐसा लग रहा है मानो किसी ने मेरा गला पकड़ लिया है और मेरा दम घोट रहा है।

वह मुझ से बहुत बातें किया करते थे; काफी विस्तारपूर्वक। क्रीमिया में जब मैं गास्प्रा में रहता था तो अक्सर उनसे मिलने जाता था। उन्हें भी मेरे यहां आने का चाव था। उनकी पुस्तकों को मैं बड़े ध्यान से, बड़े प्यार से पढ़ता। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि उनके बारे में मैं जो कुछ भी सोचता हूं वह कहने का मुझे अधिकार है, फिर चाहे यह मेरा दुःसाहस ही क्यों न समझा जाय और मेरी बातें उनके सम्बंध में प्रचलित धारणाओं के प्रतिकूल ही क्यों न हों। दूसरे किसी भी व्यक्ति की भांति मैं भी जानता हूं कि अब तक कोई ऐसा दूसरा व्यक्ति नहीं हुआ जिसे महापुरुष कहलाने का अधिकार हो, जो उनसे अधिक रहस्यमय और अन्तर्विरोधी हो, जो उनसे अधिक गुण-सम्पन्न हो — हर प्रकार से, हां हर प्रकार से। वह विशिष्ट रूप में और व्यापक रूप में — दोनों ही रूपों में गुण-सम्पन्न थे; कुछ ऐसे रूप में कि इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनमें कुछ ऐसा है जो सदा ही मेरे मन में यह इच्छा जगाता रहा है कि मैं सबसे चिल्लाकर कहूं : देखो हमारी इस धरती पर कितना प्रतिभाशाली व्यक्ति मौजूद है! सच कहा जाय तो वह सर्व-ग्राही हैं। सर्व प्रथम वह इंसान हैं : इंसानों में इंसान!

लेकिन मुझे सदा ही उनकी हठपूर्ण कोशिशों से चिढ़ रही है जिनसे वह काउन्ट लेव निकोलायेविच तोल्सतोय के जीवन को "सन्त-पिता लेव के जीवन" में बदल देना चाहते थे। आप जानते हैं, वह लम्बे अर्से

तक अपने को "यातनाएं सहने" के लिए तैयार करते रहे थे। एवजेनी सोलोव्योव और सुलेर को उन्होंने बताया भी था कि वह अभी तक इसमें सफल नहीं हो सके और इसका उन्हें बड़ा दुःख है। किन्तु दुःख वह केवल अपनी इच्छाशक्ति को परखने की स्वाभाविक उत्सुकता के कारण ही नहीं उठाना चाहते, स्पष्टतः— मैं फिर दोहराता हूं— अपने इस हठ के कारण कि इसके द्वारा वह अपने सिद्धान्तों को अधिक शक्तिशाली बना सकेंगे, अपनी शिक्षाओं को दूसरों से मनवा सकेंगे, यातनाएं सहकर साधारण इंसानों की निगाह में उनको पवित्र बना सकेंगे और उन्हें स्वीकार करने के लिए, उन्हें समझने के लिए लोगों को मजबूर कर सकेंगे। आप समझे ? **मजबूर कर सकेंगे !!** कारण यह कि वह भली भांति जानते थे कि उनकी शिक्षाएं बहुत विश्वासोत्पादक नहीं हैं। जब उनकी डायरियां प्रकाशित होंगी तो आपको उनमें शंकाओं की बहुत सी मिसालें— अपने व्यक्तित्व और अपनी शिक्षाओं के प्रति शंकाओं की मिसालें— मिलेंगी। वह जानते हैं कि "शहीद और दुःख भोगी निरपवाद रूप से सदा ही आततायी और दमनकर्ता रहे हैं।" वह सब कुछ जानते हैं। फिर भी वह कहते हैं : "यदि मैं अपने विचारों के लिए दुःख भोगूंगा तो निश्चय ही उनका प्रभाव भिन्न होगा।" उनकी इस बात के लिए सदैव मैंने उनसे घृणा की है। इसमें मुझे अपने ऊपर बेजा दबाव डालने की भावना, मेरी आत्मा को अपने बोझ से दबाने की भावना, शहीद के रक्त से उसे चौंधिया देने की भावना, मेरे गले में रूढ़िवाद का जुआ पहनाने की भावना, दिखायी दी है।

उन्होंने सदा ही और सब जगह परलोक में अमरता की वन्दना की है; लेकिन इस दुनिया में अमरता उनकी इच्छा के अधिक अनुरूप है। वह सच्चे अर्थों में एक राष्ट्रीय लेखक हैं और उनकी महान आत्मा में राष्ट्र के सभी दुर्गुण विद्यमान हैं। हमारे राष्ट्र पर इतिहास की जो-जो निर्ममताएं बलपूर्वक लादी गयी हैं और जिन्होंने उसको विकृत किया है, वे सभी उसमें विद्यमान हैं...। उनमें सब कुछ राष्ट्रीय है, उनकी शिक्षाएं केवल प्रतिक्रिया हैं, राष्ट्र की परंपरा की प्रतिमूर्ति, जिससे हम अलग होना शुरू कर चुके थे, जिस पर हम विजय पाने लगे थे।

१९०५ में उनके लिखे पत्र, "बुद्धिजीवी, राज्य और जनता" का स्मरण कीजिए। ओह, कितना कुरुचिपूर्ण, कितना विद्वेषपूर्ण था वह। समूचे पत्र में "मैंने पहले ही तुम से कहा था" की विद्वेष-भावना भरी थी। मैंने उसी समय उन्हें उत्तर लिखा था। यह उत्तर मेरे लिए कहे गये उन्हीं के शब्दों पर आधारित था। उत्तर था यह कि उन्होंने "बहुत पहले ही जनता के विषय में और उसके नाम पर बोलने का अधिकार खो दिया है।" मैं इस बात का साक्षी हूं कि उन्होंने उन लोगों की बातें सुनने और समझने से इनकार कर दिया जो दिल खोलकर उनसे बातें करना चाहते थे। मेरा पत्र बहुत कटु था; मैंने उसे नहीं भेजा।

और अब शायद वह अपने विचारों को महत्व के ऊंचे से ऊंचे शिखर पर पहुंचाने के लिए आखिरी छलांग भर रहे हैं। वासिली बुस्लायेव की तरह वह ऐसी छलांगों के बड़े शौकीन हैं। लेकिन ऐसी छलांगों द्वारा वह सदा ही अपनी पवित्रता और अपने यश को दृढ़ बनाना चाहते हैं। इसमें अन्वेषण की बू आती है, हालांकि उनकी शिक्षाएं रूस के अर्वाचीन इतिहास तथा किसी महान व्यक्तित्व के दुःख झेलने की क्षमता को देखते हुए पूर्णतः उचित हैं। पाप के मनन द्वारा, तथा जीवित रहने की इच्छा को बंदी बनाकर ही, पवित्रता प्राप्त की जा सकती है।

लेव निकोलायेविच में ऐसा बहुत कुछ है जिसे जानकर मुझमें बहुधा ऐसी भावनाएं जागृत हुई हैं, जो घृणा जैसी हैं, बहुत कुछ ऐसा है जो मेरी आत्मा पर भारी बोझ की तरह आ गिरता है। उनका असीम, वृहदाकार अहम बड़ी भयंकर वस्तु है, बड़ा भयानक चिह्न है! इसमें कुछ-कुछ बोगातीर स्वीयातोगोर जैसी वस्तु है, जिसका भार पृथ्वी नहीं संभाल सकती। हां, वह महान हैं! मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जो कुछ उन्होंने कहा है उसके अतिरिक्त बहुत कुछ ऐसा है जिसके बारे में वह मौन हैं—अपनी डायरियों तक में मौन हैं—जिसके बारे में वह शायद कभी किसी से कुछ भी न कहेंगे। यह "मौन" कभी-कभी ही उनकी बातचीत में अपनी कुछ-कुछ झलक दिखा देता है। यह उन दो डायरियों में भी मौजूद है जो उन्होंने मुझे और सुलेर को पढ़ने को दी थीं। मुझे यह सब "जो कहा गया है उस पर पानी फेरना" लगता

है। यह सबसे गहन और निपट रूप का नकारवाद (निहिलिज्म) है जो नितान्त दुर्बलता और एकाकीपन की धरती पर पनपा और विकसित हुआ है, जिसका किसी प्रकार विनाश नहीं किया जा सका और जिसे संभवतः और किसी ने इतनी नग्न स्पष्टता से अनुभव नहीं किया। वह मुझे प्रायः ऐसे अदम्य पुरुष के समान लगे हैं जो अपने अन्तरतम में मानव प्राणियों की ओर उदासीन है—एक ऐसे पुरुष के समान जो अन्य सबसे इतना अधिक ऊंचा और इतना अधिक शक्तिशाली है कि उन्हें मक्खी-भुनगे समझता है और उनके क्रिया-कलापों को हास्यास्पद तथा दयनीय मानता है। वह उनसे बहुत दूर कहीं ऐसे रेगिस्तान में चले गये हैं, जहां अपनी आत्मा की समस्त शक्तियों को संकेन्द्रित करके वह एकान्त मृत्यु को ही "सर्वाधिक महत्वपूर्ण" समझते हैं।

आजीवन वह मृत्यु से भयाक्रांत रहे और उससे घृणा करते रहे। आजीवन वह अरजामा-अकाल के भूत से भागते रहे। क्या उन्हें—तोल्सतोय को—मरना होगा ? समस्त विश्व की, ब्रह्मांड की आंखें उन पर टिकी हैं। चीन, भारत, अमरीका—सभी देशों के जीवन्त झंकृत तार उन्हें अपने से सम्बद्ध किये हैं। उनकी आत्मा सभी मानवों के लिए है, सर्वकालीन है। क्या प्रकृति अपने नियमों में अपवाद मानकर उन्हें—मानवों में एकमात्र उन्हें ही—शारीरिक अमरता का वरदान नहीं दे सकती ? अचम्भों में विश्वास न करें इतनी उनमें बुद्धि और सतर्कता है। तो भी वह एक विद्रोही हैं, अन्वेषक हैं, अपरिचित बैरकों में पहली बार घुसनेवाले डरे और असहाय रंगरूट की भांति हैं। गास्प्रा में उनकी तबीयत अच्छी हो जाने पर एक बार लेव शेस्तोव की "नीत्शे और तोल्सतोय की शिक्षाओं में भला और बुरा" पुस्तक पढ़ने की याद है। चेखोव की इस टिप्पणी के उत्तर में कि : "मुझे यह पुस्तक अच्छी नहीं लगी," उन्होंने कहा :

"मुझे यह बड़ी दिलचस्प लगी। यह दोषपूर्ण है, किन्तु बुरी नहीं। सचमुच बड़ी मजेदार है। ईमानदार हों तो मुझे निन्दा करनेवाले व्यक्ति भी अच्छे लगते हैं। इसने ही कहीं और कहा है : 'सत्य की

आवश्यकता नहीं होगी !' और यह बात बिलकुल सही है। उसके लिए सत्य है क्या ? अन्ततः उसे तो मरना ही है।"

और स्पष्टतः यह देखकर कि उनके शब्द समझे नहीं जा सके, उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा :

"मनुष्य को एक बार विचार करना आ गया, तो फिर उसके सभी विचार उसकी मृत्यु के विचार से जुड़ जाते हैं। सभी दार्शनिक इस प्रकार के होते हैं। यदि मृत्यु निश्चित है, तो फिर सच्चाइयों से लाभ ही क्या ?"

उन्होंने समझाने का प्रयत्न किया कि सत्य सभी के लिए समान है। सत्य है ईश्वर से प्रेम। किन्तु इस विषय पर वह बड़ी उदासीनता और उकताहट से बोले। दोपहर के भोजन के बाद बरामदे में आकर उन्होंने वह किताब फिर उठा ली और उस जगह खोलकर जहां लेखक ने कहा है, "तोल्सतोय, दोस्तोयेव्स्की और नीत्शे अपने प्रश्नों के उत्तर के बिना नहीं रह सकते थे, और कोई उत्तर न होने से बेहतर था कि कोई न कोई उत्तर दे ही दिया जाय," वह हंसे और बोले :

"कितना हिम्मती नाई है यह। साफ-साफ कहता है कि मैं अपने को धोखा देता हूं, यानी मैं दूसरों को भी धोखा देता हूं। स्पष्ट ही कोई भी यही नतीजा निकालेगा ..."

सुलेर ने पूछा : "लेकिन आपने उसे 'नाई' क्यों कहा ?"

"भई," कुछ सोचते हुए उन्होंने कहा, "अभी-अभी मेरे मन में विचार उठा कि वह कोई फैशनेबुल छैला है। मुझे एक गांव में अपने किसान चाचा की शादी में गये मास्को के एक नाई की याद हो आयी। बड़ा तहजीबदार था, बड़ों-बड़ों को नचा सकता था, इसीलिए हर व्यक्ति से घृणा करता था।"

मैंने यह बातचीत शब्दशः लिखी है; मुझे बहुत अच्छी तरह याद है। इसे भी मैंने उन बातों की तरह, जो मुझे मार्के की लगती हैं, लिख लिया था। सुलेर और मैंने उनकी बहुत सी बातें लिख ली थीं। किन्तु सुलेर ने उन्हें अरजामा जाते समय खो दिया। वहीं वह मुझ से मिला था। बहुत लापरवाह था वह। तोल्सतोय के प्रति उसका प्यार यद्यपि

स्त्रियों जैसा था तो भी उसका रवैया कुछ विचित्र-सा था — ऐसा मानो तोल्सतोय पर दया करता हो। मैंने भी अपने नोट्स कहीं रख दिये थे। अब वे मुझे नहीं मिल रहे — शायद रूस में होंगे। तोल्सतोय का मैंने बहुत निकट से अध्ययन किया है। कारण कि मैं सदा ही एक सच्चे, जीवित विश्वासवाले, व्यक्ति की खोज में रहा हूं। ऐसे व्यक्ति को मैं अपने जीवन के अंत तक खोजता रहूंगा। मैंने उनका इसलिए भी निकट से अध्ययन किया है कि एक बार चेखोव ने हमारी संस्कृति-हीनता की शिकायत करते हुए कहा था :

"देखो न, गेटे ने जो भी कहा, एक-एक शब्द लिख लिया गया। लेकिन तोल्सतोय के शब्दों को कोई नहीं लिख रहा। बड़ी भारी रूसी मूर्खता है यह, दोस्त ! बाद में लोग जागेंगे और तब संस्मरण पर संस्मरण लिखेंगे, जिनमें तमाम झूठ-सच भरा होगा।"

लेकिन हम आगे बढ़ें। हां, शेस्तोव के विषय में उन्होंने कहा :

"'कोई सदा भी भयावह दुःस्वप्नों पर टकटकी बांधे जीवित नहीं रहता !' कोई कैसे जान सकता है कि वह क्या कर सकता है और क्या नहीं ? यदि वह जान पाता, यदि वह दुःस्वप्न देख पाता— तो वह ऐरी-गैरी चीजें लिखने में समय नहीं गंवायेगा — वह कुछ गंभीर कार्य करेगा जैसा कि बुद्ध ने जीवन भर किया ..."

किसी ने कहा कि शेस्तोव यहूदी था।

"नहीं !" एल. एन. ने अविश्वासपूर्ण स्वर में कहा। "वह यहूदी नहीं लगता। कोई यहूदी अनीश्वरवादी नहीं है। बताओ किसी का नाम ! न, कोई नहीं है।"

कभी-कभी लगता है कि यह वृद्ध जादूगर मृत्यु से खेल कर रहा है, उसके साथ आंख-मिचौनी कर रहा है, कल उस पर विजय पाने का यत्न कर रहा है और कह रहा है : मैं तुमसे भयभीत नहीं, मैं तुम्हें प्यार करता हूं, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं। और हर समय उसकी छोटी-छोटी आंखें इधर-उधर कुछ खोजा करती हैं मानो पूछती हों : कैसा है तुम्हारा रूप ? तुम्हारे पीछे क्या है ? क्या तुम मुझे बिलकुल ही विनष्ट कर देना चाहती हो — या मेरा कुछ बचेगा भी ?

उनके ये शब्द : "मैं प्रसन्न हूं, बहुत-बहुत प्रसन्न हूं," मन पर एक विचित्र छाप छोड़ते हैं। और तुरंत बाद ही : "आह, दुख झेलना !" हां, दुःख झेलना — उसके प्रति भी वह ईमानदार हैं। यद्यपि वह अभी-अभी बीमारी से उठे हैं, तो भी मेरे मन में तनिक संदेह नहीं कि यदि उन्हें जेल जाना पड़े या देश-निकाला हो जाय तो वह बहुत प्रसन्न होंगे। एक शब्द में यह कि शहीद का ताज पहनकर वह बहुत प्रसन्न होंगे। क्या वह सोचते हैं कि शहादत उनकी मृत्यु को किंचित औचित्य प्रदान करेगी, उसे बाह्य दृष्टि से, लौकिक रूप से, अधिक ग्राह्य, अधिक बोध-गम्य बना देगी ? मुझे विश्वास है कि वह कभी भी प्रसन्न नहीं रहे। न तो "ज्ञान की पुस्तकों में," न "घोड़े की पीठ पर," न ही "किसी सुन्दरी की बाहों में" उन्होंने "लौकिक स्वर्ग" के सुख का पूर्ण रसा-स्वादन किया है। इस सबके लिए उनका मस्तिष्क अत्यधिक तर्करत है, वह जीवन और जनता को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। उनके कुछ और शब्द ये हैं :

"खलीफा अब्दुर्रहमान के जीवन में कुल चौदह दिन सुख के थे। मैं समझता हूं कि मेरे जीवन में इतने भी दिन नहीं मिले। इसका कारण यह है कि मैं कभी अपने लिए, अपनी आत्मा के लिए, नहीं जिया — मैं उस तरह जीना जानता ही नहीं। मैं तो सदा दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए, दूसरों के लिए, जिया हूं।"

जब हम उनके पास से चलने लगे, तो चेखोव ने कहा : "मुझे विश्वास नहीं होता कि इन्हें कभी सुख नहीं मिला।" किन्तु मुझे विश्वास है। हां, वह कभी सुखी नहीं रहे। किन्तु यह सत्य नहीं है कि वह दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए जिये हैं। दूसरों को उन्होंने भिखारियों की ही तरह सदा अपना "बचा-खुचा" दिया है। उन्हें दूसरों से कुछ "करवाने" का शौक था — दूसरे पढ़ें, टहलें, साग-सब्जी पर जीवित रहें, किसान से प्यार करें और लेव तोल्सतोय के तर्कपूर्ण और धार्मिक विचारों की सत्यता पर विश्वास करें ! तुम उनसे छुटकारा पा सको इसलिए लोगों को बताने के लिए तुम्हारे पास कुछ होना चाहिए। लोगों को संतुष्ट करने के लिए या व्यस्त रखने के लिए कुछ तो चाहिए ही ताकि तुम

उनसे पीछा छुड़ा सको। लोग तोल्सतोय को उनके स्वाभाविक, यातना-पूर्ण, किन्तु कभी-कभी सुखदायी एकान्त में क्यों नहीं छोड़ देते — ताकि वह सीमाहीन दलदल में "महान रहस्य" का चिन्तन करते रह सकें।

अवाकूम और संभवतः तिखोन ज़ादोन्स्की को छोड़कर सभी रूसी दार्शनिक बड़े नीरस व्यक्ति रहे हैं। उनमें सक्रिय, जीवन्त श्रद्धा की कमी थी। अपनी "निचली गहराइयों" में मैंने इसी प्रकार के एक बूढ़े व्यक्ति —लूका— के चित्रण का प्रयत्न किया है। उसकी जनता में नहीं, वरन् "हर प्रकार के उत्तरों" में रुचि थी। उसे लोगों से टकराये बिना चैन नहीं पड़ता था। वह उन्हें दिलासा देता था—किन्तु केवल इस उद्देश्य से कि वे उसकी राह से हट जायें। ऐसे लोगों का समूचा दर्शन, उनकी शिक्षाओं का सार, उस भिक्षा के समान होता है जो भिखारियों को अन्त-र्निहित घृणा के साथ दी जाती है। उनकी शिक्षाओं के नीचे ये दीनता-पूर्ण और घृणास्पद शब्द सुने जा सकते हैं :

"मुझे अकेला छोड़ दो! ईश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करो, लेकिन मुझे अकेला छोड़ दो। ईश्वर को कोसते हो तो कोसो! जो दूर हैं उनसे प्यार करो, लेकिन मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे अकेला छोड़ दो क्योंकि मैं भी मनुष्य हूं... मुझे भी एक दिन मरना है।"

आह! जीवन ऐसा रहा है और दीर्घ काल तक ऐसा ही रहेगा। वह न तो इससे भिन्न था, न भिन्न हो सकता है। कारण यह कि मानव प्राणी त्रस्त, दुखी और भयंकर अलगाव से पीड़ित हैं। सभी एक ऐसे भयंकर एकाकीपन में जकड़े हुए हैं, जो उनकी आत्मा का रक्त चूसता रहता है। यदि एल. एन. का गिरजा से फिर समझौता हो जाय तो मुझे तनिक भी आश्चर्य न होगा। इसका भी अपना एक तर्क होगा — सभी मानव समान रूप से नगण्य हैं; महन्त भी और पादरी भी। सच तो यह है कि यह समझौता न होगा; व्यक्तिगत रूप से उनके लिए यह एक और तर्क-संगत कदम होगा: "जो मुझ से घृणा करते हैं, मैं उन्हें क्षमा करता हूं।" ईसाइयत का काम! लेकिन इसके नीचे एक हल्का, तीखा मजाक है। इसे किसी बुद्धिमान व्यक्ति का बेवकूफों पर प्रतिशोध ही कहना चाहिए।

किन्तु मैं जिस प्रकार लिखना चाहता था अथवा जिन बातों पर लिखना चाहता था, लिख नहीं रहा हूं। मेरे भीतर कोई कुत्ता भूंक रहा है और मेरी आंखों के सामने सर्वनाश नाच रहा है। अभी-अभी समाचार-पत्र आये हैं और मैं समझ गया हूं कि क्या होनेवाला है। आपके देश में एक कथा गढ़ी जा रही है: "बहुत समय पहले यहां निकम्मे और आलसी लोग रहते थे और उन्हीं के बीच एक संत ने जन्म लिया।" अब जरा सोचिए कि हमारे देश को इससे कितनी हानि पहुंचेगी — वह भी ऐसे समय जब लोगों के भ्रम टूट रहे हैं, जब बहुमत की आत्माएं शून्य तथा निर्जन हैं और जो समझदार हैं उनकी आत्माएं शोकाकुल हैं। ये तमाम भूखी और सतायी आत्माएं किसी उपाख्यान की खोज में हैं। जनता अपने दर्द से राहत पाने, अपनी पीड़ाओं से मुक्ति पाने, को बेताब है। और वे यही उपाख्यान चाहते थे! कितना अनिष्टकर है — एक पवित्र मानव, संत का जीवन। उनकी महानता और पवित्रता यही है कि वह **मानव हैं**, पगला देनेवाले, पीड़क सौंदर्यवाले मानव — मानवों में मानव। आप कहेंगे कि मैं अपनी ही बात काट रहा हूं, किन्तु छोड़िए। वह ऐसे मानव हैं जो भगवान को अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए ढूंढ़ रहे हैं, जिससे वह उस निर्जन स्थान में शांति से रह सकें, जिसे उन्होंने स्वयं चुना है। हमको उन्होंने 'नया टेस्टामेंट' दिया है और स्वयं ईसू मसीह के अंतर्विरोधों को भुलाने के लिए ही, उनकी कल्पित मूर्ति को सरल कर दिया है, उनमें जो कंटीले तत्त्व हैं, उन्हें काट-छांटकर चिकना कर दिया है, और "जिसने मुझे भेजा है, उसकी इच्छा का पालन," उनके स्थान पर रख दिया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि तोल्सतोय के 'नये टेस्टामेंट' को अधिक स्वीकृति प्राप्त होगी। रूसी जनता के "रोगों" के लिए वह अधिक लाभप्रद है। इन लोगों को कुछ देना था, क्योंकि ये शिकायत करते हैं, इनकी कराह धरती को हिला देती है और मानवता का ध्यान "महान वस्तु" की ओर से हटा देती है। "युद्ध और शांति" तथा उस ओर जानेवाली हर चीज शोकाकुल रूसी धरती को दुःख और उसकी असहायता से मुक्ति दिलाने में सहायक नहीं होती।

"युद्ध और शांति" के बारे में उन्होंने स्वयं कहा था : "झूठी नम्रता को अलग करके देखा जाय तो वह दूसरा 'इलियड' है।" चाइ-कोव्स्की ने स्वयं तोल्सतोय के मुंह से उनके "बचपन" और "शैशव" के विषय में यही सुना था।

कुछ पत्रकार अभी नेपुल्स से लौटे हैं। उनमें से एक तो रोम से भागा हुआ आया है। वे मुझ से पूछते हैं कि तोल्सतोय के "प्रयाण" के विषय में—वे उसे "प्रयाण" ही कहते हैं—क्या सोचता हूं। मैंने उनसे कुछ कहने से इनकार कर दिया। आप तो जानते ही हैं कि मेरे अन्दर भारी उथल-पुथल मची है। मैं नहीं चाहता कि तोल्सतोय संत बना दिये जायें। उन्हें पापी ही रहने दो, पापी दुनिया के हृदय के निकट ही रहने दो, हम सब लोगों के हृदय के निकट रहने दो। पुश्किन और तोल्सतोय—इन दो से बढ़कर महान और प्रिय हमारे पास और कुछ नहीं है...

लेव तोल्सतोय इस संसार में नहीं रहे।

एक तार आया है। साधारण भाषा में उसमें लिखा है—उनकी मृत्यु हो गयी।

मेरे हृदय पर किसी ने हथौड़ा चला दिया। दुःख और पीड़ा से मैं रो उठा।

और अब, अर्द्ध-विक्षिप्त अवस्था में, मैं उनकी कल्पना करता हूं जैसा कि मैं उन्हें जानता था, जैसा मैंने उन्हें देखा। उनके विषय में बातें करने की मुझ में तीव्र भावना जाग रही है। मैं उन्हें ताबूत में लेटा हुआ देखता हूं। वह सरिता की धारा में चिकने पत्थर के समान लेटे हैं। निस्संदेह, उनके चेहरे पर वही धोखे भरी मुसकराहट है—एकदम निरलस, उनकी सफेद दाढ़ी में चुपचाप छिपी हुई। आखिर उनके हाथ शांति से बैठ गये हैं—उन्होंने अपना कठिन कार्य पूरा कर लिया है।

मुझे उनकी पैनी आंखें याद आती हैं,—जो हर चीज को भेद सकती थीं। मुझे उनकी उंगलियों की याद आती है जो सदा हवा में कुछ न कुछ गढ़ा करती थीं। मुझे उनकी बातें, उनकी ठिठोली, उनकी

किसान शब्दावली, उनकी वह आवाज याद आती है जिसमें विचित्र निस्सीमता थी। मैं देख सकता हूं, उस मनुष्य में कितना जीवन था, कैसी मानवोपरि बुद्धिमता थी -- कितनी विलक्षणता थी।

एक बार मैंने उन्हें उस रूप में देखा जिस रूप में संभवतः किसी और ने न देखा होगा।

मैं गास्प्रा की ओर समुद्र के किनारे-किनारे चला जा रहा था। युसुपोव की जागीर के निकट, चट्टानों के बीच, सहसा मुझे उभरे हुए चेहरेवाली उनकी लघु काया दिखायी पड़ी, जो एक भूरे सूट और पिचके हुए हैट से ढंकी थी। वह हथेली पर ठोढ़ी टिकाये बैठे थे, उंगलियों के बीच से दाढ़ी के उड़ते सफेद बाल खेल रहे थे। दृष्टि समुद्र पर टिकी थी। उनके पैरों के पास सागर की छोटी-छोटी लहरें प्यार और श्रद्धा से किलोलें कर रही थीं। ऐसा लगता था मानो वे बूढ़े जादूगर को अपनी कहानी सुना रही हों। धूप उस दिन आंख-मिचौनी खेल रही थी। बादलों की छाया कभी चट्टानों को ढक लेती, कभी हट जाती, फलतः तोल्सतोय और चट्टानें क्रमशः प्रकाश और छाया में दिखायी देते। चट्टानें बहुत बड़ी-बड़ी थीं। बीच-बीच में उनमें गहरी दरारें थीं और तेज गंधवाली काई से वे ढंकी थीं। एक दिन पहले ही बहुत जोरों का तूफान आया था। तोल्सतोय मुझे किसी पुरानी चट्टान के सदृश लग रहे थे, जो सहसा प्राणवान हो उठी हो, जो प्रत्येक वस्तु के आदि स्रोत और कारण को समझती हो और इसी चिन्तन में लीन हो कि धरती की इन चट्टानों और घास-फूस का, समुद्र के अथाह जल का, मनुष्य और समस्त सृष्टि का, चट्टानों से लेकर सूर्य तक का न जाने क्या अन्त होगा। सामने का अथाह समुद्र मानो उनकी आत्मा का ही अंश था, उन्हीं से चारों ओर मानो उसकी उत्पत्ति हुई हो और उन्हीं का वह एक अंग हो। गहन चिन्तन में डूबे बूढ़े तोल्सतोय को देखकर किसी देवात्मा की याद हो आती थी जो अपने नीचे के अन्धकार में अत्यंत गंभीर, भाव-मग्न है, और जो सहसा पृथ्वी से ऊपर नील गगन की ऊंचाइयों में किसी वस्तु की खोज में विलीन हो जाता है, जो मानो स्वयं ही—अर्थात अपनी महान इच्छा शक्ति से—लहरों का उत्थान-पतन

नियंत्रित कर रहा है, बादलों और उनकी छायाओं को, जो चट्टानों को स्थानान्तरित करती और जगाती सी लग रही थीं, संचालित कर रहा है। विक्षिप्तावस्था के उस क्षण में सहसा मुझे लगा कि वह ऊपर उठने-वाले हैं और वह सहसा हाथ हिलायेंगे और तब समुद्र निश्चल हो जायेगा, शीशे की भांति शांत हो जायगा, चट्टानें हिल उठेंगी और चिल्लाने लगेंगी, सम्पूर्ण वातावरण जीवनमय हो जायेगा, हर चीज बोल उठेगी, अपने विषय में लाख-लाख जिह्वाओं से —उनके पक्ष में और उनके विरोध में—आवाजें उठने लगेंगी। उस क्षण मुझे कैसा लगा, यह शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। मेरी आत्मा में हर्षोन्माद और भय दोनों थे। फिर सब-कुछ इस आनन्दमय विचार में लीन हो गया :

"जब तक इस संसार में यह व्यक्ति है तब तक मैं अनाथ नहीं हो सकता!"

तब, बड़ी सावधानी से, जिससे पैरों के नीचे कंकड़ों की आवाज न हो, मैं घूम पड़ा। मैं उनके चिन्तन में विघ्न नहीं डालना चाहता था।

किन्तु अब? अब मुझे लगता है कि मैं अनाथ हो गया हूं! इन पंक्तियों को लिखते समय मेरे आंसू बह रहे हैं। पहले मैं कभी इतनी पीड़ा, इतनी निराशा, इतने दुःख से नहीं रोया था। मैं नहीं कह सकता कि मैं उन्हें प्यार करता था। किन्तु इससे क्या कि मेरे हृदय में उनके प्रति प्रेम था अथवा घृणा! उन्होंने सदा ही मेरी आत्मा को अभिभूत किया है—व्यापक, विशद भावना से अभिभूत किया है। जो भी अप्रिय अथवा विरोधी भावना वह जगाते, वह ऐसे रूप धारण करती थी जो बोझिल नहीं थे, वरन् जिनका आत्मा के भीतर विस्फोट हो जाता, जो आत्मा को और भी अधिक विस्तारपूर्ण, भावुक तथा शक्तिशाली बना देते थे। वह उस समय बड़े ही गरिमामय लगते जब मन्थर गति से—मानो भूमि के ऊबड़खाबड़पन को जूतों की ऐड़ी से बराबर करते हुए—यकायक किसी दरवाजे के पीछे से आकर खड़े हो जाते, या फिर किसी कोने से छोटे-छोटे, हल्के, तेज कदमों से आपकी ओर आते उस आदमी के समान लगते जो निरन्तर पृथ्वी का भ्रमण करते रहने का आदी हो गया हो। उनके अंगूठे पेटी में खुंसे होते। क्षण

भर के लिए रुककर वह अपने चारों ओर तीव्र दृष्टि डालते और हर नयी चीज को भांप लेते — उसके महत्व को आत्मसात कर लेते।

"कहो, कैसे हो ?" वह पूछते और सदा ही मैं इन शब्दों का अर्थ लगाता : "कहो कैसे हो ? मैं जानता हूं कि इस प्रश्न को पूछने में मुझे कोई खुशी नहीं, न ही इसका जवाब देने में तुम्हें कोई तुक दीखती है। तो भी, कहो कैसे हो ?"

वह कमरे में प्रवेश करते — साधारण सा, लघुकाय व्यक्तित्व। सहसा ऐसा लगता कि सभी उनसे छोटे दीखने लगे हैं। उनकी किसानों जैसी दाढ़ी, खुरदुरे किन्तु असाधारण हाथ, मामूली कपड़े — उनका सुखकर लौकिक वाह्य आवरण — बहुतों को भुलावे में डाल देता। बहुधा कोई साधारण रूसी व्यक्ति, जो गुलामी की पुरानी आदत के अनुसार कपड़े देखकर व्यक्तियों का अभिनन्दन करने का आदी होता है, "स्वतःस्फूर्त" परिचय की मादक वाक्-धारा में — जिसे "नैकट्य" की संज्ञा देना अधिक उपयुक्त होगा — अपने को बह जाने देता।

"ओहो, दोस्त ! तो तुम हो तोल्सतोय ? हां तो अपनी धरती के सबसे बड़े सपूत को मैं जी भरकर देख सकता हूं ! नमस्कार, नमस्कार, मेरा नमस्कार स्वीकार करो।"

यही है मास्को-रूसी तरीका; सरल और स्नेहसिक्त। किन्तु एक और रूसी तरीका है — "स्वतंत्र-चिन्तन" का।

"लेव निकोलाइविच ! यद्यपि मैं तुम्हारे धार्मिक और दार्शनिक विचारों से असहमत हूं, किन्तु तुम्हारे व्यक्तित्व में एक महान कलाकार है। उसके प्रति मुझे गहरी श्रृद्धा है ..."

और तुरन्त ही उनकी किसानों जैसी दाढ़ी और सलवट पड़े साधारण अंगरखे के नीचे से पुराना रूसी भद्र पुरुष — गौरव-गरिमा से आच्छादित कुलीन — निकल पड़ता। उनकी निर्मम, तीव्र, निगाहों के नीचे इन स्पष्टवादियों, सुशिक्षित विद्वानों तथा अन्य सबका खून नीला पड़ जाता। इस शुद्ध रक्तवाले व्यक्ति को देखना, उनकी भाव-भंगिमाओं की भद्रता और सौन्दर्य को निहारना, उनके भाषण की ऐश्वर्यपूर्ण अल्पता को सुनना, उनके तीक्ष्ण शब्दों की अद्भुत सूक्ष्मता को देखना बड़ा ही

भला लगता। दासों से निबटने के लिए उनमें यथेष्ट कुलीनता विद्यमान थी। और जब ये दास तोल्सतोय में एक महान स्वामी का आह्वान करते तो वह बड़ी सरलता से ऐसे स्वामी बन जाते और इन लोगों को इतना दबाते कि ये लोग चिचियाने-घिघियाने के सिवा और कुछ न कर पाते।

एक बार मैं यासनाया पोल्याना से मास्को तक एक ऐसे ही "साधारण" रूसी के साथ यात्रा कर रहा था। उसे अपना सन्तुलन ठीक करने में काफी समय लग गया। होठों पर दयनीय मुस्कान लादे वह विक्षिप्तों की भांति बार-बार यही दोहराये जा रहा था :

"ओह, कितनी निर्ममता से रौंद डाला मुझे! बाप रे बाप! भयानक!" फिर उसने पछतावे के साथ कहा :

"मैं समझता था कि वह सचमुच अराजकतावादी हैं। सभी लोग उन्हें अराजकतावादी कहते हैं और मैंने इन लोगों की बातों पर विश्वास कर लिया ...।"

वह एक धनवान व्यक्ति था, बड़ा भारी उद्योगपति। बड़ा-सा तोंद, ताजे गोश्त जैसे रंग का फूला-फूला चेहरा। वह भला क्यों चाहता था कि तोल्सतोय अराजकतावादी हों? यही रूसी आत्मा का "गहन रहस्य" है।

जब एल. एन. किसी को प्रसन्न करना चाहते तो यह काम वह किसी सुन्दर विदुषी से अधिक कौशल से कर सकते थे। जरा कल्पना कीजिये : वह भांति-भांति के लोगों से घिरे बैठे हैं—ग्रैंड ड्यूक निकोलाइ मिखाइलोविच, मकान पोतनेवाला इल्या, याल्टा का एक शोशल-डेमोक्रैट, स्तैंदवादी पातुसुक, एक संगीतज्ञ, काउंटेस क्लेइनमाइकेल का अमीन, कवि बुल्गाकोव—सभी उनकी ओर प्रेम-विभोर नेत्रों से देख रहे हैं; वह उन्हें लाओ-त्से का दर्शन समझा रहे हैं। वह मुझे एक आश्चर्यजनक संगीतज्ञ लगते, जो एक साथ ही बहुत से वाद्यों—पपीरी, ढोल, सारंगी, बांसूरी—आदि को बजाने की क्षमता रखते थे। मेरे नेत्र भी उन पर जम जाते। और अब फिर मैं उन्हें बार देखने के लिए तरस उठा हूं। हाय! मैं उन्हें कभी नहीं देख सकूंगा।

यहां कुछ पत्र-संवाददाता आये थे। उन्होंने बताया कि रोम में उन्हें एक तार मिला था जिसमें लिखा था कि लेव तोल्सतोय की मृत्यु का समाचार गलत है। रूस के लिए अपनी हमदर्दी दिखाने में उन्होंने बड़े भोंड़े रूप में हाय-तौबा मचाया। किन्तु रूसी अखबारों ने संदेह के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ी।

उनसे झूठ बोलना असंभव था — तरस खाकर भी। वह बेहद अस्वस्थ होते — तब भी उन पर तरस खाना असंभव था। उन जैसे लोगों पर तरस खाना मूर्खता है। उनकी देख-भाल करनी चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए — उन पर घिसे-पिटे, लापरवाही से कहे, शब्दों की राख नहीं फेंकनी चाहिए।

"तुम मुझे पसन्द नहीं करते न ?" वह पूछते। और इसके अतिरिक्त और कोई उत्तर नहीं हो सकता था : "हां, मैं आपको नहीं पसन्द करता।"

"तुम मुझे प्यार नहीं करते ? नहीं करते न ?" "नहीं मैं आज आपको प्यार नहीं करता।"

प्रश्न करते समय वह अत्यंत निर्मम होते। उत्तर देते समय अत्यंत कृपण; संत की भांति।

बीते युग के बारे में वह बड़ी अच्छी तरह बातें करते। सबसे अच्छी तरह तुर्गनेव के बारे में। फेट का नाम वह सदैव मजाकिया ढंग से हंसते हुए लेते, उनके बारे में कोई न कोई हंसी की बात उन्हें सदा याद हो आती। नेक्रासोव के बारे में वह बड़े ही निरुत्साह से, संदेहात्मक रूप से, बोलते। लेखकों के विषय में आम तौर से जब भी वह कुछ कहते तो ऐसे कि मानो वे उनके बच्चे हों और वह स्वयं एक ऐसे पिता जो उनकी तमाम कमजोरियों से परिचित थे और पूर्ण रूप दृढ़मत कि उनकी बुराइयों को अधिक उघाड़कर रखेंगे। जब वह किसी के सम्बंध में निन्दात्मक रूप से कुछ कहते तो सदा ही मुझे ऐसा लगता कि मानो वह सुननेवालों को भिक्षा दे रहे हैं; उनकी आलोचनाओं को

सुन सकना बहुत कठिन था। सुननेवाले की आंखें उनकी पैनी मुस्कराहट के सामने झुक जातीं — उसे कुछ याद न रहता।

एक बार वह बहुत जोरों से तर्क कर रहे थे कि जी. आई. उस्पेन्सकी ने तूला की आंचलिक भाषा में लिखा है और उनमें प्रतिभा नाम की वस्तु लेश मात्र भी न थी। तो भी मेरी उपस्थिति में उन्होंने चेखोव से कहा था :

"असली लेखक तो वह (उस्पेन्सकी—अ.) है! उसकी ईमानदारी को देखकर दोस्तोवस्की की याद आ जाती है। किन्तु दोस्तोवस्की को जालसाजी करने और दिखावा करने का शौक था — उस्पेन्सकी उनसे अधिक सरल और ईमानदार था। यदि वह ईश्वर में विश्वास करता था तो निश्चय ही किसी न किसी प्रकार का विरोधी रहा होगा।"

"लेकिन आपने अभी-अभी कहा था कि वह तूला का आंचलिक लेखक था और उसमें प्रतिभा नहीं थी।"

घनी भौंहों के नीचे उनकी आंखें विलीन हो गयीं और वह बोले :

"उसका लिखने का ढंग खराब था। तुम उसकी भाषा को भाषा कहोगे? शब्दों से अधिक विराम-चिन्ह आदि मिलेंगे। प्रतिभा प्रेम है। जो प्रेम करता है वही प्रतिभावान होता है। जरा देखो प्रेमियों की ओर, कितने प्रतिभावान होते हैं।"

दोस्तोवस्की के बारे में जब भी वह बातें करते, सदा अनमनेपन से, रुखाई से, टालू ढंग से — मानो किसी चीज पर पार पाना चाहते हों :

"उन्हें चाहिए था कि कनफ्यूशियस या बौद्धों के सिद्धान्त पढ़ें। इनसे उनकी आत्मा को शान्ति मिलती। यह शांति बहुत बड़ी चीज होती है। हर व्यक्ति को यह जानना चाहिए। वह बहुत अधिक भावुक थे — जब उन्हें क्रोध आता तो उनकी गंजी खोपड़ी पर गुल्म उठ आते और कान तन जाते। वह अनुभव बहुत करते थे, लेकिन सोचना नहीं जानते थे। सोचना उन्होंने सीखा फोरियरवादियों से — बुताशेविच और उसी जैसे दूसरों से। और फिर जीवन भर वह उनसे घृणा करते रहे। उनके खून में कुछ यहूदीपन था। वह अविश्वासी, दम्भी, झगड़ालू और दीन-दुखी थे। यह बड़ी अजीब बात है कि इतने अधिक लोग उनकी पुस्तकें

पढ़ते हैं। मेरी समझ में नहीं आता क्यों? बड़े दुरूह और निरर्थक हैं — उनके वे महामूर्ख, हावलदेहाय, रास्कोलनिकोव और बाकी सभी। वास्तविक जीवन में वे जरा भी उस तरह के नहीं थे; सब कुछ कहीं अधिक सरल और बोधगम्य था। अब लेस्कोव है। न जाने लोग उसे क्यों नहीं पढ़ते! वह सच्चा लेखक है — तुमने उसे पढ़ा है?"

"हां, मुझे वह प्रिय हैं; विशेषकर उनकी भाषा।"

"भाषा के तो वह पारंगत थे। भाषा से वह कुछ भी कर सकते थे। यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि वह तुम्हें प्रिय हैं। तुममें कुछ गैर-रूसीपन है। तुम्हारे विचार रूसी विचार नहीं हैं? मेरी बात का बुरा तो नहीं माना? मन को चोट तो नहीं लगी? मैं अब बूढ़ा हो गया हूं और शायद मुझ में आधुनिक साहित्य समझ सकने की क्षमता नहीं रह गयी है। लेकिन मुझे कुछ-कुछ ऐसा लगता है कि इसमें कुछ गैर-रूसीपन है। लोग अजीब तरह के छंदों में कविताएं लिखते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि ये छंद हैं क्या और किसके लिए हैं। कविता लिखना हमें पुश्किन, त्वुतचेव, शेनशिन (फेट) से सीखना चाहिए।" चेखोव की ओर घूमकर उन्होंने कहा: "तुम? हां, तुम रूसी हो। तुम बहुत-बहुत रूसी हो।"

और प्यार भरी मुस्कराहट के साथ उन्होंने चेखोव के गले में हाथ डाल दिया। चेखोव बेचारे शर्मा गये और मोटी आवाज में अपने घर और तातारों के बारे में कुछ कहने लगे।

चेखोव से उन्हें प्रेम था और वह जब उनकी ओर देखते तो उनकी सरस दृष्टि चेखोव के चेहरे को सहलाती मालूम होती। एक दिन चेखोव पार्क की एक पगडंडी पर अलेक्जान्द्रा ल्वोवना* के साथ घूम रहे थे। तोल्सतोय, जो उस समय बीमारी के कारण चल-फिर न सकते थे, बरामदे में एक आराम कुर्सी पर बैठे थे। उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो वह, अपनी समस्त अनुभूतियों सहित, चेखोव का आलिंगन करना चाहते हों।

धीमी आवाज में उन्होंने कहा: "कितना प्यारा, कितना भला

---

* तोल्सतोय की सुपुत्री। — अनु०

है यह व्यक्ति। नम्र, शान्त — बिलकुल किसी नवयुवती के समान। इसकी चाल भी लड़कियों जैसी है। बड़ा अद्भुत है यह व्यक्ति।"

एक दिन, गोधूलि बेला के समय, व्यग्रता के साथ भौंहों को ताने उन्होंने अपने "फादर सरगीयस" से एक दृश्य पढ़कर सुनाया, जिसमें एक स्त्री किसी संन्यासी को भ्रष्ट करने के लिए उसके यहां जाती है। उन्होंने उसे पूरा पढ़कर सुनाया, फिर सिर ऊपर उठाया, आंखें बन्द कीं और स्पष्ट शब्दों में कहा :

"बूढ़े ने अच्छा लिखा है, बहुत अच्छा लिखा है।" यह बात इतनी सरलता से कही गयी थी, अपनी ही कृति के सौन्दर्य की प्रशंसा इतनी सच्ची थी, कि मैं कभी भी उस प्रसन्नता को नहीं भूल सकता जिसका अनुभव मैंने उस समय किया, ऐसी प्रसन्नता जिसे मैं कभी शब्दों में व्यक्त नहीं कर सका, और जिसे छिपाने के लिए मुझे बहुत प्रयास करना पड़ा है। मुझे ऐसा लगा मानो मेरे हृदय की धड़कन रुक गयी है और दूसरे ही क्षण जैसे हर वस्तु पुनर्जीवित हो गयी है, ताजी हो गयी है, नयी हो गयी है।

उनकी वाणी का अनोखा सौन्दर्य व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनकी कही बात ऊपर से बहुत गलत लगती, कुछ शब्दों को लगातार दोहराया जाता, किसानों जैसी सरलता में वह इतनी सराबोर होती कि केवल वे ही उसे समझ सकते थे जो सुन रहे हों। उनके शब्दों की शक्ति उच्चारण और भाव-भंगिमा में नहीं थी, वरन उनके नेत्रों की कांति और चंचलता में निहित थी। ऐसे भावपूर्ण नेत्र मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। एल. एन. के दो नेत्रों में सहस्र नेत्र थे।

सुलेर, चेखोव, सर्गी ल्वोविच और एक कोई और सज्जन पार्क में बैठे स्त्रियों के विषय में बातें कर रहे थे। तोल्सतोय देर तक उनकी बातें शान्ति से सुनते रहे। फिर सहसा बोले :

"स्त्रियों के विषय में मैं सत्य तब बताऊंगा, जब मेरा एक पैर कब्र में होगा। फिर मैं ताबूत में कूद पड़ूंगा और ऊपर से ढक्कन बन्द कर लूंगा। तब पकड़ना मुझे, देखूं कैसे पकड़ते हो!" और उनके नेत्रों में

ऐसी चुनौती और विद्रोह भावना जाग उठी कि कुछ क्षणों के लिए कोई कुछ भी न बोल सका।

मैं समझता हूं कि उनमें वासिली बुसलायेव की धृष्टता और फादर अवाकुम की हठीली आत्मा का समिश्रण था, साथ ही चादायेव की अविश्वास भावना भी उनमें छिपी हुयी थी। उनमें जो अवाकुम का अंश था वह शिक्षा देता और कलाकार की आत्मा को नोचता-कचोटता, नोवगोरोद के बदमाश का अंश दान्ते और शेक्सपीयर की निन्दा करवाता और चादायेव का अंश आत्मा के इन मनोरंजनों—और यातनाओं—को देखकर मन ही मन प्रसन्न होता।

उनके अन्दर का रूढ़ि-ग्रस्त रूसी उनसे विज्ञान और राज्य के सिद्धान्त की निन्दा करवाता। वही रूसी, जीवन को मानवीय लीकों पर डालने के अनेक प्रयत्नों में असफल होने के बाद, अब निष्क्रिय अराजकतावादी बन गया था।

यह एक बड़ी रहस्यपूर्ण बात है: किसी अलौकिक अन्तःप्रेरणा के वशीभूत होकर "सिम्प्लीसिसिमस" के व्यंग्य-चित्रकार ओलेफ गुलब्रानसन ने तोल्सतोय में बुसलायेव की मुखाकृति ढूंढ़ निकाली। आप चित्र को ध्यान से देखें तो आपको पता चल जायगा कि चित्र और असली तोल्सतोय में कितना अधिक साम्य है—गहरी धंसी आंखोंवाले चेहरे का मस्तिष्क कितनी ढिठाई से आपकी ओर देख रहा है, ऐसे मनुष्य का मस्तिष्क जिसके लिए कुछ भी पवित्र नहीं, जो न तो अंधविश्वासी है, न झूठे मतवादों का प्रेमी है।

और, वह जादूगर मेरे सामने खड़ा है। सबसे अपरिचित। विचार के रेगिस्तानों में सर्व-ग्राही सत्य की निरर्थक खोज में अकेला भटकता हुआ। मैं उसकी ओर देखता रह जाता हूं। और यद्यपि उसके विछोह की पीड़ा गहन है तो भी उस व्यक्ति के दर्शन कर चुकने का गर्व इस पीड़ा और दुःख को हल्का कर देता है।

एल. एन. को "तोल्सतोयवादियों" के बीच देखना भी कम विचित्र नहीं था। उनके बीच वह विशाल घंटा-घर के समान खड़े लगते थे। इस घंटा-घर की घंटियों की ध्वनि समस्त विश्व में फैलती और उसके

चारों ओर छोटे-छोटे, लालची कुत्ते, दौड़ते-भागते और एक दूसरे को अविश्वास की दृष्टि से देखते हुए घंटियों की स्वर-लहरी पर भूंकते, मानो उनमें यही स्पर्धा हो कि देखें कौन सबसे अच्छा भूंक लेता है। मुझे ऐसा लगा कि ये लोग यासनाया पोल्याना और काउन्टेस पानिना के घर को, दोनों ही घरों को, छल, कायरता, सौदेबाजी और उत्तराधिकार की भावना से भर देते हैं। इन "तोल्सतोयवादियों" और रूस के उन तीर्थ-यात्रियों में बहुत साम्य है जो देश के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण करते हैं, कुत्तों की हड्डियों को सन्तों की पवित्र अस्थियां बताकर चुटकी-चुटकी बांटते रहते हैं और "मिश्री अंधकार" तथा "ईशु माता" के "आंसुओं" का व्यापार करते हैं। इनमें से एक संत को तो मैंने यासनाया पोल्याना में मुर्गी के प्रति दया भावना के कारण अंडा खाने से इन्कार करते देखा। लेकिन उसी ने तूला के स्टेशन पर मजे से मांस भक्षण किया और कहा :

"बूढ़ा (तोल्सतोय—अनु.) बड़ा बड़बतिया है!"

उनमें से लगभग सभी की आदत ठण्डी आहें भरने और चुम्बन लेने की है। सभी के हाथ अस्थि-रहित, पसीने से तर, होते हैं और आंखें धोखे भरी होती हैं।

साथ ही, ये लोग बहुत चतुर भी होते हैं, अपने सभी दुनियावी काम बड़ी होशियारी से पूरे करते हैं। एल. एन. अवश्य "तोल्सतोय-वादियों" की असली कीमत जानते थे। सुलेर भी, जिसे वह बहुत प्यार करते थे, उन्हें जानता था। वह सदा सुलेर के विषय में उत्साह और प्रशंसा से बातें किया करते थे। एक दिन यासनाया पोल्याना में एक सज्जन बड़े उन्मुक्त भाव से बता रहे थे कि किस प्रकार तोल्सतोय के विचारों का अनुसरण करने पर उनका जीवन सरल और आत्मा कल्मष-हीन हो गयी है। एल. एन. मेरी ओर झुके और धीरे से बोले :

"बदमाश झूठ बोल रहा है—मुझे प्रसन्न करने के लिए!"

ऐसे बहुत लोग थे जो उन्हें प्रसन्न करना चाहते थे। किन्तु मैंने किसी को इसमें सफल होते नहीं देखा। सार्वभौमिक क्षमा, अपने पड़ोसी के लिए प्यार, नये टेस्टामेन्ट और बौद्ध धर्म आदि अपने प्रिय विषयों पर

वह मुझसे कभी-कभी ही बातें करते थे। उन्होंने मानो यह शुरू से ही अनुभव कर लिया था कि यह सब "मेरे जैसे लोगों के लिए" नहीं है। मुझे यह बात बहुत पसन्द आयी।

जब वह चाहते तो बड़ी सरलता से अत्यंत चतुर, सहानुभूतिपूर्ण और मधुर हो सकते थे। और तब उनकी वक्तृता में विमुग्धकारी सरलता और सरसता आ जाती। किन्तु कभी-कभी उनकी बातें बड़ी असहनीय होतीं। स्त्रियों के बारे में जिस ढंग से वह बातें करते थे वह मुझे कभी पसन्द नहीं आया। इस सम्बंध में वह किसी बहुत "साधारण आदमी" की तरह बोलते और उनके शब्दों में कुछ अस्वाभाविकता भी होती। उनमें ईमानदारी न होती। उनकी बातें बहुत व्यक्तिगत लगतीं। ऐसा लगता मानो कभी किसी ने उनको चोट पहुंचायी है। वह न तो उस चोट को भूल सकते थे और न चोट पहुंचानेवाले को क्षमा कर सकते थे। जिस शाम हमारा उनका परिचय हुआ, वह मुझे अपने अध्ययन-कक्ष में ले गये — यह खामोवनिकी की बात है — मुझे अपने सामने बिठाया और "वारेन्का ओलेसोवा" तथा "छब्बीस पुरुष और एक स्त्री" के विषय में बातें करने लगे। उनकी बातचीत के लहजे से मुझे बहुत निराशा हुई। वह बड़े कटु और भद्दे तरीके से मुझे यह बात समझाने का प्रयत्न कर रहे थे कि किसी भी स्वस्थ नवयुवती में लज्जा होना स्वाभाविक बात नहीं है।

"यदि कोई लड़की अपना पन्द्रहवां जन्म-दिवस पार कर चुकी है और यदि वह स्वस्थ है तो वह जरूर चाहेगी कि कोई उसका चुंबन ले और उससे छेड़छाड़ करे। उसका मस्तिष्क उस चीज से झिझकता है जिस चीज को वह न तो जानती है और न समझती है। लोग इसी को सतीत्व और लज्जा कहते हैं। किन्तु उस लड़की का शरीर अच्छी तरह समझता है कि, उसके मस्तिष्क के बावजूद, अगम्य अनिवार्य है, नियमोचित है। वह इस नियम की पूर्ति चाहता है। तुम्हारी वारेन्का ओलेसोवा स्वस्थ युवती बतायी गयी है, लेकिन उसकी भावनाएं रोगियों जैसी हैं। यह गलत है।"

इसके बाद वह "छब्बीस पुरुष" वाली कहानी की लड़की के

सम्बंध में बातें करने लगे और इतनी सरलता के साथ एक के बाद दूसरी फूहड़ बात उनके मुंह से निकलने लगी कि पूछिए मत। उनकी बातें बड़ी निर्मम थीं और मुझे बुरी लगीं। बाद में मैंने महसूस किया कि इन "निन्दित" शब्दों का प्रयोग वह केवल इसलिए कर रहे थे कि ये ही सबसे ज्यादा उचित और उपयुक्त शब्द थे। किन्तु बोलते समय उनके बोलने का ढंग मुझे अरुचिपूर्ण लग रहा था। मैंने उनकी बातें नहीं काटीं। यकायक वह बहुत दयावान तथा विचारवान हो उठे और मेरे जीवन, अध्ययन आदि के बारे में पूछने लगे।

"क्या सचमुच तुम इतने पढ़े-लिखे हो जितना लोग कहते हैं? कोरोलेन्को संगीतज्ञ है?"

"शायद नहीं। मुझे नहीं मालूम?"

"तुम नहीं जानते? तुम्हें उसकी कहानियां पसंद हैं?"

"बहुत।"

"सो तो तुम दोनों में अन्तर्विरोध के कारण। वह कवि है; तुम में कवि नाम की कोई चीज नहीं। तुमने वेल्टमान का अध्ययन किया है?"

"हां!"

"अच्छा लेखक है। है न? भव्य, नपा-तुला। कभी बढ़ाकर बात न कहनेवाला। कभी-कभी वह गोगोल से भी अच्छा लिखता है। बालजाक उसे पसन्द था। गोगोल ने मार्लिस्की की नकल की है।"

जब मैंने कहा कि गोगोल पर शायद हाफमान, स्टर्न और संभवतः डिकेन्स का प्रभाव था तो उन्होंने मुझे घूरकर देखा। बोले:

"यह तुमने कहां पढ़ा? कहीं पढ़ा नहीं? यह झूठ है। मैं नहीं मानता कि गोगोल ने डिकेन्स को पढ़ा था। लेकिन तुमने सचमुच बहुत पढ़ा है। याद रखो, यह बहुत खतरनाक है। कोल्तसोव ने इसी तरह अपना सत्यानाश किया।"

जब मैं वहां से चलने लगा तो उन्होंने मेरे गले में हाथ डाला और मेरा चुंबन लिया। कहने लगे:

"तुम असली किसान हो ! लेखकों से तुम्हें डटकर मुकाबला करना होगा। लेकिन तुम घबराना नहीं। जो सोचना वही लिखना। अगर कभी कटु हो जाय तो ख्याल न करना। समझदार लोग समझ लेंगे।"

इस प्रथम मिलन का मेरे ऊपर दो प्रकार का प्रभाव पड़ा। तोल्सतोय से मिलने का मुझे गर्व भी था और प्रसन्नता भी। लेकिन उनकी बातें जिरह की तरह लगी थीं। मुझे यह नहीं लगा था कि मैं "कॉसेक", "खोल्सतोमर", "युद्ध और शांति" के लेखक से मिला हूं बल्कि एक भव्य पुरुष से मिला हूं जिसने मुझ पर कृपा की है और जिसने आमफहम जुबान में "साधारण" बातें करना आवश्यक समझा। और इससे उनके बारे में बनी हुई धारणा, जिसका मैं आदी हो गया था और जो मुझे प्रिय थी, टूट गयी।

यासनाया में मैं उनसे फिर मिला। पतझड़ का नीरस दिन था। फुहार पड़ रही थी। वह बड़ा-सा ओवरकोट और चमड़े के ऊंचे बूट, जिन्हें पहने हुए पानी के बीच से निकला जा सकता था, पहने थे। वह मुझे भोजपत्र के जंगल में टहलने के लिए ले गये। युवक सुलभ सरलता से खाइयों और गढ़ों को फांदते हुए वह टहनियों के बरसाती पानी को हिलाकर सिर पर गिराते मुझे बहुत अच्छी तरह यह बता रहे थे कि कैसे शेनशिन (फेट) ने उसी जंगल में उन्हें शापनहावर समझाया था। बड़े प्यार से उन्होंने भोजपत्र के पेड़ों के गीले रेशमी तनों को थपथपाया :

"अभी हाल ही में मैंने कुछ पंक्तियां पढ़ी हैं :

नहीं दीखते फैले हुए कुकुरमुत्ते सब ओर निर्बंध।
छाई है तो भी किन्तु सब ओर कुकुरमुत्तों की गंध॥

बहुत बढ़िया—बहुत अच्छा लिखा है।"

यकायक एक खरगोश बिलकुल हमारे पैरों के पास से निकला। एल. एन. घबड़ाकर अलग कूदे। उनके गाल लाल हो गये और वह जोरों से चिल्ला उठे : "लेना ! पकड़ना !" फिर अवर्णनीय मुसकराहट से मेरी ओर देखा और उनकी वही अति मानवीय, बुद्धिमत्तापूर्ण, हंसी गूंज उठी। उस समय उनकी मुद्रा देखने लायक थी।

एक और समय, पार्क में, उन्होंने एक चील देखी। चील ऊपर मंडरा रही थी। फिर वह आकाश में ही निश्चल हो गयी। उसके पंख धीरे-धीरे हिल रहे थे। वह मानो निश्चय न कर पा रही थी कि झपट्टा मारा जाय या कुछ देर रुका जाय। एल. एन. तुरंत चौकन्ने हो गये। अपनी आंखों को हथेली से ढंकते हुए घबड़ाकर बुदबुदाये :

"बदमाश हमारे चूज़ों पर नजर गड़ाये है! देखो! देखो! उधर! ओह! डर रही है। शायद कोचवान है वहां! बुलाओ, बुलाओ कोचवान को ..." और उन्होंने उसे बुलाया। वह चिल्लाये तो चील डरी और उड़ गयी।

एल. एन. ने ठंडी सांस ली और, मानो आत्म-भर्त्सना करते हुए, कहा :

"मुझे चिल्लाना नहीं चाहिए था! वैसे भी उड़ ही जाती ..."

एक बार तिफलिस का जिक्र करते हुए उनसे मैंने वी. वी. फ्लेरोवस्की-बेरवी के बारे में उन्हें कुछ बताया।

"क्या तुम उन्हें जानते थे?" उन्होंने उत्सुकता-से पूछा। "उनके बारे में और कुछ बताओ।"

मैंने उन्हें बताना शुरू किया कि फ्लेरोवस्की का कद लम्बा था, लंबी दाढ़ी थी, दुबले-पतले थे, आंखें बड़ी-बड़ी थीं, लंबा कुरता पहनते थे और उनकी पेटी में लाल शराब में उबले हुए चावलों का झोला लटका रहता था और वह जीन का बड़ा-सा छाता लेकर चलते थे। मैंने उन्हें बताया कि हम दोनों एक बार जब ट्रांस-काकेशिया की पहाड़ी-पगडंडियों पर साथ-साथ घूम रहे थे तब एक संकरी पगडंडी पर हमारी एक बैल से भिड़न्त हो गयी। हम लोग तभी बचे, जब खुले छाते से बैल को धमकाया। हम लोग पीछे हट रहे थे और गहरी खाई में गिर पड़ने का खतरा था। यकायक मुझे तोल्सतोय की आंखों में आंसू दिखाई दिये और मैंने अचकचाकर बातचीत बन्द कर दी :

"चिंता मत करो। कहे जाओ, कहे जाओ। ये तो एक नेक पुरुष के बारे में सुनने की प्रसन्नता के कारण हैं! ओह कितने दिलचस्प व्यक्ति रहे होंगे वह। मैंने बिल्कुल इसी प्रकार की कल्पना की थी उनके

बारे में — दूसरे लोगों जैसी नहीं। तमाम वामपक्षी लेखकों में वही सबसे अधिक बुद्धिमान और परिपक्व हैं। अपनी प्रारंभिक पुस्तक में उन्होंने बड़ी ही योग्यता से दिखाया है कि हमारी पूरी सभ्यता बर्बर है, और संस्कृति शांतिपूर्ण जातियों, कमजोर लोगों की, वस्तु है, शक्तिवानों की नहीं। उन्होंने बताया है कि जीवन-संघर्ष का झूठ पाप के औचित्य के लिए गढ़ा गया है। बेशक, तुम इससे सहमत नहीं हो। लेकिन दाउदेत सहमत है। उसके पॉल आस्तियेर की याद करो।"

"योरप के इतिहास में नारमनों की भूमिका को कोई फ्लेरोवस्की के सिद्धांत के अनुरूप कैसे बता सकता है?"

"नारमन? वह अलग बात है।"

जब कभी उनके पास कोई उत्तर न होता तो वह कह देते: "वह अलग बात है।"

मैं सदा ही अनुभव करता रहा, और मैं समझता हूं कि मेरा यह अनुभव करना गलत नहीं था, कि एल. एन. को साहित्य-सम्बंधी वार्ता पसंद नहीं थी। हां, उन्हें लेखक के व्यक्तित्व से बेहद दिलचस्पी थी। मैं अक्सर उन्हें पूछते सुनता: "क्या तुम उन्हें जानते हो? वह कैसे हैं? कहां पैदा हुए थे वह?" और अपनी वार्ता में व्यक्ति को वह सदा ही बहुत मौलिक दृष्टिकोण से पेश करते।

वी. जी. कोरोलेन्को के सम्बंध में उन्होंने कुछ सोचते हुए कहा:

"वह युक्रेनी हैं, इसलिए उन्हें हमारे जीवन को हमसे ज्यादा अच्छी तरह समझना चाहिए।"

चेखोव को वह बहुत प्यार करते थे। उनके विषय में:

"उनको तो डाक्टरी के पेशे ने बिगाड़ दिया। वह डाक्टर न होते तो और भी अच्छा लिखते।"

एक नवोदित लेखक के बारे में:

"वह अंग्रेज बनना चाहता है, लेकिन मास्कोवाले इसमें माहिर नहीं हैं।"

मुझ से उन्होंने अनेक बार कहा:

"तुम कल्पनावादी हो। तुम्हारे कुवालदा और शेष सभी चरित्र बिल्कुल काल्पनिक हैं।"

मैंने उन्हें बताया कि कुवालदा तो जीवन से लिया गया है।

"कहां मिल गया था तुम्हें?"

कजान के न्यायाधीश कोलोंतायेव के दफ्तर के दृश्य को सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द आया, वहीं पहले-पहले मैंने उस व्यक्ति को देखा था जिसे कुवालदा के रूप में चित्रित किया है।

अपनी आंखें पोंछते और हंसते हुए उन्होंने कहा: "कुलीन! कुलीन! यही बात है। लेकिन कितना दिलचस्प और कितना मोहक व्यक्ति है वह। तुम्हारी लिखित रचना से ज्यादा मजा तुम्हारी जुबानी बातों में आता है। तुम कल्पनावादी हो—आविष्कारक। तुम्हें यह बात मान लेनी चाहिए।"

मैंने कहा कि शायद सभी लेखक, एक सीमा तक, आविष्कारक होते हैं। वे पात्रों को उस रूप में उपस्थित करते हैं जिस रूप में कि वे उन्हें जीवन में देखना चाहेंगे। मैंने कहा कि मुझे सक्रिय लोग अच्छे लगते हैं, ऐसे लोग जो पूरी शक्ति से जीवन में बुराइयों का विरोध करने को तत्पर रहते हैं, भले ही इस विरोध में उन्हें हिंसा का सहारा लेना पड़े।

"लेकिन हिंसा ही तो मुख्य बुराई है।" मेरा हाथ पकड़कर वह जोर से बोले। "तुम इससे कैसे बचोगे मुंशी जी? 'माई फैलोट्रैवलर' (हमराही)—आविष्कर नहीं है। यह अच्छा है। यह अच्छा है क्योंकि आविष्कार नहीं है। यह तभी होता है, जब तुम सोचते हो कि तुम्हारे सब पात्र नाइट हों, अमाडिसेज और सीगफ्रिड् हों..."

मैंने कहा कि जब तक हम लोग बनमानुषों जैसे अपरिहार्य "हमराहियों" से घिरे रहेंगे तब तक हमारे द्वारा निर्मित हर वस्तु बालू की दीवार की तरह होगी, विरोधी वातावरण में बनी हुई।

मुझे कोहनियाते हुए उन्होंने धीरे से कहा:

"इस बात से बहुत-बहुत ख़तरनाक नतीजे निकाले जा सकते हैं। तुम सच्चे समाजवादी नहीं हो। तुम कल्पनावादी हो और कल्पनावादी को राजतंत्रवादी होना चाहिए—जैसे कि वे सदा से होते आये हैं।"

"और विक्टर ह्यूगो ?"

"विक्टर ह्यूगो ? वह बात अलग है। मुझे वह अच्छा नहीं लगता। वह बड़ा भड़भड़िया है।"

वह अक्सर मुझसे पूछा करते कि मैं क्या पढ़ रहा हूं और सदा ही मुझे इस बात के लिए फटकारते कि मैं अच्छी किताबें नहीं चुन पाता।

"गिबन तो कोस्तोमरोव से भी गया-बीता है। तुम्हें मोमसेन पढ़ना चाहिए। मोमसेन बड़ा नीरस है—लेकिन कहता ठोस बात है।"

जब उन्हें पता चला कि जो पुस्तक मैंने सबसे पहले पढ़ी थी वह 'ले फ्रेरेज जेमगानों' थी, तो वह बहुत अप्रसन्न हुए :

"सो यह बात है ! बड़ा वाहियात उपन्यास है। उसी ने तुम्हें बिगाड़ा है। फ्रांस में तीन लेखक हैं—स्तेंदहाल, बालजाक और फ्लाबर्ट। मोपासां को और जोड़ लो। लेकिन चेखोव उनसे अच्छा है। गोनकोर्ट-बन्धु तो बस भांड़ हैं। गम्भीर होने का प्रदर्शन मात्र करते हैं। जीवन के विषय में उन्होंने उन्हीं पुस्तकों से सीखा है जो उन जैसे कल्पनावादियों ने लिखी हैं। और यह सब उन्होंने गम्भीरता से किया है। उनकी पुस्तकें कोई पसंद नहीं करता।"

मैं उनसे सहमत नहीं था। वह कुछ चिड़चिड़ा भी उठे। उनकी बात का काटा जाना उन्हें सह्य नहीं था। कभी-कभी तो उनके तर्क विचित्र रूप से हठीले होते।

"अधः पतन जैसी कोई चीज नहीं होती," उन्होंने कहा, "यह सब इतालवी लोम्ब्रोसो का आविष्कार है—यहूदी नोरदाऊ ने तोते की तरह बस उसे दोहरा दिया है। इटली मूर्खों और दुस्साहसियों का देश है—वहां अरेतिनोस, कैसानोवा, काग्लिओस्त्रो जैसे लोग ही पैदा होते हैं।"

"और गैरीबाल्डी ?"

"वह राजनीति की बात है। उसकी बात अलग है।"

जब मैंने उन्हें रूस के व्यापारियों के परिवारों के इतिहास से एक के बाद एक तथ्य बताये तो उन्होंने उत्तर दिया :

"यह झूठ है। यह सब चालाकी से लिखी गयी किताबों से लिया गया है..."

मैंने उन्हें एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों की कहानी सुनायी, ऐसी कहानी जिसमें बड़ा निर्मम अधःपतन था। ताव में मेरी बांह पकड़कर उन्होंने कहा :

"यह सही है। मैं जानता हूं। तूला में इस प्रकार के दो परिवार हैं। इन परिवारों के विषय में तुम्हें लिखना चाहिए। संक्षेप में यह कि एक बड़ा उपन्यास लिखो। समझे मेरा क्या मतलब है? यही लिखने का तरीका है।"

उनकी आंखें उत्सुकता से चमक उठीं।

"लेकिन वे सब योद्धा बन जायेंगे।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। यह गम्भीर बात है। वह जो सम्पूर्ण परिवार के लिए प्रार्थना करने के लिए सन्यासी हो जाता है — बहुत बढ़िया होगा। यही सच्चा जीवन है। तुम पाप करो और मैं तुम्हारे लिए पापों से मुक्ति की प्रार्थना करूं। और वह दूसरा — वह भी सच्चा है। उसके लिए शराबी होना, पशु बन जाना, दुराचारी होना, सबको प्यार करना, फिर यकायक हत्या कर बैठना। ओह कितना बढ़िया है! चोरों और भिखारियों में से नायक ढूंढ़ते फिरने के बजाय तुम्हें इन लोगों के बारे में लिखना चाहिए। वीरों की बात झूठ है, कल्पना है! इन्सानों के अलावा कहीं और कुछ नहीं है। बस!"

वह मुझे वे अतिशयोक्तियां बताते जो मेरी कहानियों में आ जाती थीं, लेकिन एक बार "डेड-सोल्स" (मृत-आत्माएं) के दूसरे भाग के सम्बंध में बताते हुए सद्भावना से मुस्कराकर उन्होंने कहा :

"हम सभी बड़े कल्पनावादी हैं। मैं खुद भी। कभी-कभी लिखना शुरू हो जाता है और तब यकायक लगता है कि अमुक पात्र हमारी दया का भागी है। हमें दुःख होता है और हम उसमें कुछ अच्छाइयां भरने लगते हैं, या दूसरे पात्र को गिराने लगते हैं, ताकि पहला बहुत ज्यादा खराब न लगे।"

और सहसा एक न्यायाधीश की तरह कड़े स्वर में वह बोले :

"इसीलिए मैं कहता हूं कि कला झूठ है, धोखा है, मनगढ़न्त है, मानवता के लिए हानिप्रद है। लोग जीवन के बारे में वह सब नहीं लिखते जो वास्तव में जीवन है, वरन जीवन के सम्बंध में अपने विचारों को लिखते हैं, जीवन को वह क्या समझते हैं, इस बारे में लिखते हैं। किसी के लिए आखिर इस बात का महत्व ही क्या कि वह बुर्ज, वह समुद्र या वह तातार मुझे कैसा लगता है ? इसे जानना ही कौन चाहता है ? जानकर लाभ ही क्या ?"

कभी-कभी उनके विचार और उनकी भावनाएं मुझे सनक-जैसी मालूम होतीं, जान-बूझकर तोड़ी-मरोड़ी हुईं। किन्तु बहुधा वह निर्मम ईश्वर के कठोर वकील के रूप में श्रोताओं पर अपने विचारों का तीक्ष्ण प्रहार करते और उन्हें ठंडा कर देते।

एक बार उन्होंने मुझसे कहा :

"मई महीने के अन्त में मैं कीव के राजपथ पर जा रहा था। धरती पर स्वर्ग का सौन्दर्य था, कण-कण में, कोंपल-कोंपल में उल्लास था, आकाश निर्मल था, पक्षी गा और चहचहा रहे थे, मधुमक्खियां कोई मधुर राग अलाप रही थीं, धूप हल्की थी और मेरे चारों ओर का वातावरण आनन्दपूर्ण, सुखद और अलौकिक था। मेरी आंखों में आंसू भर आये। मुझे ऐसा लगा मानो मैं स्वयं एक मधुमक्खी हूं जो विश्व के सुन्दरतम पुष्पों का रस-पान कर रही है, मानो ईश्वर ही मेरी आत्मा के निकट है। यकायक मैं क्या देखता हूं ? सड़क के किनारे, कुछ झाड़ियों की ओट में दो तीर्थयात्री, एक पुरुष और एक स्त्री, एक-दूसरे से चिपटे पड़े हैं। दोनों ही घिनौने, गन्दे, बूढ़े थे। कीड़ों की तरह बिलबिलाते हुए वे कुछ बुदबुदा रहे थे और सूर्य पूरी निर्ममता से उनके नंगे पैरों और बेढंगे शरीरों पर आग बरसा रहा था। मेरे मन में एक टीस-सी उठी। हे ईश्वर ! हे सौन्दर्य निर्माता ! क्या तुझे अपने ऊपर जरा भी लज्जा नहीं आती ? मेरा हृदय बहुत खिन्न हो उठा...

"देखा तुमने क्या-क्या होता है इस दुनिया में ! प्रकृति—बोगो-

माइल्स[1] इसे शैतान की औलाद समझते हैं— मनुष्य को बड़ी निर्दयता से और खिझा-खिझाकर यातनाएं देती है। वह उसकी शक्ति तो छीन लेती है, किन्तु उसकी लालसाओं को ज्यों का त्यों छोड़ देती है। यह बात उन पर लागू होती है जिनकी आत्माएं जीवित हैं। इन यातनाओं की लज्जा और भीषणता अनुभव करना मनुष्य के भाग्य में ही—उसके शरीर पर चढ़े चमड़े के कारण—है। हम इन्हें अपने अन्दर किसी अपरिहार्य दंड के रूप में लादे रहते हैं—भला किस पाप के लिए ?"

बोलते समय उनकी आंखों की भंगिमा विचित्र रूप से बदल रही थी। कभी वे बच्चों की तरह सरल हो जातीं। कभी उनमें कठोर और शुष्क आभा चमक उठती। उनके होंठ फड़फड़ा उठते और मूछें मानो खड़ी हो जातीं। बोल चुकने के बाद उन्होंने अंगरखे की जेब से रूमाल निकाला और चेहरे को रगड़कर पोंछा, यद्यपि वह पहले से ही सूखा था। फिर उन्होंने अपने मजबूत किसानी हाथों की उंगलियों को कांटे की तरह दाढ़ी में डाला और धीरे से बुदबुदाये :

"हां, किस पाप के लिए ?"

एक दिन मैं उनके साथ द्विलवर से आइ-तोदोर जानेवाली छोटी सड़क पर टहल रहा था। किसी नवयुवक की भांति कदम बढ़ाते हुए उन्होंने असाधारण उद्विग्नता से कहा :

"शरीर को आत्मा का सुशिक्षित कुत्ता होना चाहिए। जहां कहीं भी आत्मा उसे भेजे, उसको जाना चाहिए। लेकिन हम लोगों को देखो ! शरीर बेलगाम और चंचल हो जाता है और आत्मा दयनीय, असहाय, अवस्था में उसके पीछे-पीछे भागती है।"

उन्होंने अपनी छाती को, दिल से कुछ ऊपर, जोरों से रगड़ा, भवों को उठाया और धीरे-धीरे कहते रहे :

"मास्को में, सुखारेव बुर्ज के निकट मैंने एक बार नशे में धुत एक औरत को देखा। शरद ऋतु थी। वह एक नाली में पड़ी थी। ठीक उसकी गर्दन और पीठ के नीचे किसी अहाते से गंदा कीचड़ बहकर

---

१. बलगारिया की एक धार्मिक सम्प्रदाय —अनु.

आ रहा था। ठंडे पानी में पड़ी वह बड़बड़ा रही थी, कीचड़ में लिथड़ी हाथ-पैर फटफटा रही थी, लेकिन उठ न पाती थी।"

वह कांप उठे। एक क्षरण के लिए आंखें बन्द कर लीं, सिर हिलाया और फिर धीरे-धीरे कहने लगे :

"आओ यहां बैठें। शराबी औरत से ज्यादा भयानक और घिनौनी दूसरी चीज नहीं। मेरे मन में आया कि जाऊं और उसे वहां से निकालूं। लेकिन मैं ऐसा न कर सका। मेरे पैर आगे न बढ़े। वह कीचड़ में लथपथ और गीली थी। उसे छूने के बाद तुम महीने भर अपने हाथ साफ नहीं कर सकते थे। भयानक! उसके पास ही, एक पत्थर पर, भूरी आंखों व सुन्दर बालोंवाला एक नन्हा बच्चा बैठा था। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और वह हिचकियां भरता हुआ असहायवस्था में चिल्ला रहा था :

"'अम्मां-आं-आं! अम्मां-आं-आं! उठो न ...'

"बार-बार वह हाथ-पैर हिलाती, गुर्राती, सिर उठाती, और फिर — उसी कीचड़ में डूब जाती।"

वह चुप हो गये। फिर चारों ओर देखते हुए परेशानी से बुद-बुदाये :

"भयानक! भयानक! क्या तुमने कई शराबी औरतें देखी हैं? जरूर देखी होंगी! हे प्रभो! उनके बारे में मत लिखना! समझे? बिल्कुल न लिखना!"

"क्यों?"

उन्होंने मेरी आंखों में देखा और मुस्कराये। फिर बोले :

"पूछते हो — 'क्यों'!"

फिर कुछ सोचते हुए धीरे-धीरे बोले :

"मैं खुद नहीं जानता। बात यह है — पशुता के बारे में लिखना मुझे शर्मनाक लगता है। लेकिन फिर भी, क्यों न लिखा जाय? लेखक को हर चीज के बारे में लिखना चाहिए ..."

उनकी आंखों में आंसू भर आये थे। उन्होंने मुस्कराते हुए आंसू पोंछ डाले। फिर अपने रूमाल को देखा। आंसू अब भी झुर्रियों पर ढुलक रहे थे।

"मैं रो रहा हूं।" उन्होंने कहा। "मैं बूढ़ा हूं। जब भी मैं किसी भयंकर चीज के बारे में सोचता हूं, मेरा दिल धड़कने लगता है।"

फिर मुझे धीरे से कोहनियाते हुए :

"तुम्हारी जीवन लीला भी एक दिन समाप्त हो जायगी। और तब भी हर चीज ज्यों की त्यों बनी रहेगी। और तुम मुझ से भी ज्यादा दुःख से, या जैसा किसान औरतें कहती हैं, मुझ से भी ज्यादा 'फूट-फूट कर' रोओगे... हां, हर चीज के बारे में लिखना चाहिए, हर चीज के बारे में! नहीं लिखोगे तो सुन्दर बालोंवाले उस छोटे से लड़के की आत्मा को दुःख होगा। वह तुम्हारी निन्दा करेगा और कहेगा—'इसने सत्य नहीं लिखा।' वह कहेगा कि 'यह सम्पूर्ण सत्य नहीं है।'" अपने को झटका देते हुए, मानो फुसलाते हुए, उन्होंने कहा : "अब तुम मुझे कुछ बताओ। तुम बातें बहुत अच्छी करते हो। कुछ भी; किसी बच्चे के बारे में, अपने बारे में। मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम भी कभी बच्चे थे—ऐसे बेढब आदमी हो तुम। तुम तो जैसे बड़े होकर ही पैदा हुए थे। तुम्हारे विचारों में बहुत कुछ बचकानापन है, अपरिपक्वता है। लेकिन तो भी तुम जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ जानते हो। अब तुम्हें और ज्यादा जानने की जरूरत नहीं। सुनाओ, कुछ सुनाओ..."

और वह देवदार की खुली जड़ों पर आराम से बैठ गये और पत्तियों पर चींटियों के चलने-फिरने को देखते रहे।

यहां, दक्षिण के इस रमणीक स्थान में, जो उत्तर के किसी भी आदमी को इतना नया मालूम होता है, इस शानदार, निर्लज्ज, विषयोत्तेजक जंगली जीवन के बीच लेव तोल्सतोय,[1] जिनका नाम ही उनकी आंतरिक शक्ति का द्योतक है, विराजमान हैं। छोटा सा कद; शरीर कुछ अकड़ा हुआ और गुत्थियों भरा, मानो जमीन में धंसी उन जड़ों का ही बना हुआ हो। क्रीमिया की इस रमणीक भूमि पर वह एक साथ ही अपने सही स्थान पर और एकदम विपरीत मालूम होते थे; एक बहुत ही अर्वाचीन व्यक्ति की तरह, जो समूची देहात का मालिक था

---

१. 'लेव' का अर्थ है 'सिंह' और 'तोल्सतोय' का 'पराक्रमी'। —अनु.

—मालिक और निर्माता, जो सौ वर्षों के बाद अपनी ही बनायी हुई अर्थ-व्यवस्था में लौट कर आया हो, जो बहुत कुछ भूल चुका है और बहुत कुछ ऐसा है जो उसके लिए नया है। चीजें ऐसी हैं जैसी कि उन्हें होना चाहिए। लेकिन वे बिलकुल ही वैसी नहीं हैं। और उसे फौरन ही मालूम करना चाहिए कि कौन चीज वैसी नहीं है जैसी कि होनी चाहिए थी और क्यों।

एक अनुभवी विश्व-यात्री की तेज चाल से वह पगडंडियों और सड़कों पर चलते जाते हैं। उनकी तेज निगाहों से एक भी कंकड़, एक भी विचार नहीं छूटता। निगाहें जमाये, नापते-जोखते, परखते, तुलना करते हुए वह चलते हैं और अपने दृढ़ विचारों के जीवित बीजों को चारों ओर बिखेरते जाते हैं। उन्होंने सुलेर से कहा था :

"सुलेर! तुम कभी नहीं पढ़ते और यह बहुत बुरी बात है। यह घमंड है। गोर्की बहुत पढ़ता है, यह भी गलत है। यह अपने में विश्वास की कमी है। मैं लिखता बहुत हूं। यह भी सही नहीं है, क्योंकि यह वृद्धावस्था के गर्व के कारण है — इस इच्छा के कारण कि हर आदमी वैसा ही सोचे जैसा मैं सोचता हूं। अलबत्ता मेरा सोचने का तरीका मेरे लिए सही है, यद्यपि गोर्की उसे अपने लिए गलत समझता है और तुम तो कुछ सोचते ही नहीं। बस ताक-झांक में रहते हो कि किसी चीज पर झपट्टा मार दो। तुम ऐसी चीजों को पकड़कर बैठ जाते हो जिनसे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं — तुमने अक्सर ऐसा किया है। तुम चीज को पकड़ते हो, उससे चिपक जाते हो और जब वह चीज गिरने लगती है तो तुम उसे गिर जाने देते हो। चेखोव की एक बड़ी अच्छी कहानी है — 'दि डार्लिंग' (प्रियतमा)। तुम उस कहानी की नायिका जैसे हो।"

"वह किस तरह?" सुलेर हंसा।

"तुम सदा ही प्यार करने को तैयार रहते हो। लेकिन तुम नहीं जानते कि प्रेमी कैसे चुनना चाहिए और तुम अपनी शक्ति छोटी-छोटी बातों में गंवाया करते हो।"

"क्या हर आदमी ऐसा नहीं होता?"

"हर आदमी ?" एल. एन. ने दोहराया। "नहीं, नहीं! हर आदमी ऐसा नहीं होता!"

और यकायक वह मेरे ऊपर बरस पड़े :

"तुम भगवान में विश्वास क्यों नहीं करते ?"

"एल. एन., मुझे विश्वास नहीं है।"

"यह सच नहीं है। तुम प्रकृति से ही विश्वासी हो। भगवान के बिना तुम्हारा काम चल ही नहीं सकता। तुम शीघ्र ही इसे अनुभव करने लगोगे। तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम जिद्दी हो, क्योंकि तुम इस बात से नाराज हो कि यह दुनिया वैसी नहीं बनी जैसी तुम चाहते हो। कुछ लोग भगवान में अविश्वास शर्म के मारे करते हैं। बहुधा युवक इस तरह के होते हैं। वे किसी नारी की पूजा करते हैं, किन्तु उसका प्रदर्शन वे सह नहीं सकते। उन्हें भय लगा रहता कि कोई उन्हें गलत न समझ बैठे। इसके अलावा उनमें साहस भी नहीं होता। प्यार की तरह विश्वास को भी साहस चाहिए, हिम्मत चाहिए। तुम्हें अपने-आप से कहना चाहिए : 'मैं विश्वास करता हूं' और हर चीज ठीक हो जायेगी। हर चीज वैसी ही लगेगी जैसी तुम उसे देखना चाहोगे। हर चीज का रहस्य स्पष्ट हो जायगा; वह तुम्हें आकर्षित करेगी। बहुत कुछ है जिसे तुम प्यार करते हो, और विश्वास केवल प्यार की प्रगाढ़ता है। तुम और अधिक प्यार करो; प्यार विश्वास में बदल जायगा। प्रत्येक मानव दुनिया की सबसे अच्छी औरत से ही प्यार करता है। हर प्रेमी अपनी प्रेमिका को दुनिया की सबसे अच्छी औरत समझता है। यही विश्वास है। अविश्वासी प्यार नहीं कर सकता। वह आज एक से प्यार करता है और साल भर बाद दूसरी से। ऐसे मनुष्यों की आत्मा पतित होती है, बांझ होती है और यह ठीक नहीं। तुम विश्वासी पैदा हुए हो। अपनी प्रकृति के विरुद्ध जाने की कोशिश करने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। तुम सदा कहा करते हो : 'सौन्दर्य!' और सौन्दर्य क्या है ? सबसे अधिक पूर्ण और उच्च सौन्दर्य है—भगवान।"

इससे पहले इन बातों के विषय में मुझसे कभी वार्तालाप न किया था। विषय की महत्ता, उसका इतना अप्रत्याशित रूप से सामने आना—

मैं अचकचा गया और वह मुझ पर हावी हो गये। मैं कुछ नहीं बोला। सोफे पर बैठे पैरों को नीचे खींचे वह विजयपूर्ण मुस्कराहट से खिल उठे और मेरी ओर उंगली हिलाते हुए बोले :

"बिना कुछ बोले तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता, समझे ?"

और मैंने, जिसका भगवान में विश्वास नहीं है, उनकी ओर भय-भीत और झुकी हुई निगाहों से देखा और अपने से कहा :

"यह आदमी भगवान जैसा ही है।"

सोफिया तोल्सतोया

श्री चर्तकोव की "तोल्सतोयज् रिट्रीट" को पढ़ने के बाद मैंने मन में सोचा था कि कोई न कोई अवश्य अखबारों में लिखेगा कि इस मन-गढ़ंत पुस्तक का सीधा और एक ही उद्देश्य है; वह उद्देश्य यह है कि दिवंगता सोफिया आन्द्रियेवना तोल्सतोया की स्मृति को काला किया जाय।

लेकिन अभी तक मैंने ऐसी कोई समीक्षा नहीं देखी जो इस सम्मानजनक कार्य की ओर ध्यान आकर्षित करती। मुझे पता चला कि अभी एक और पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है—और यह भी इसी उच्च मंतव्य से लिखी गयी है कि समाज के शिक्षित वर्ग को समझाया जाय कि लेव तोल्सतोय की पत्नी उनकी दुष्टात्मा थीं और उनका असली नाम जैनथिपी[1] होना चाहिए था। स्पष्ट है कि इस 'सत्य' को स्थापित करने का काम बहुत ही महत्वपूर्ण समझा जाता है—वास्तव में यह अत्यावश्यक समझा जाता है, विशेषकर, मैं समझता हूं, उन लोगों के लिए, जो आध्यात्मिक और भौतिक रूप से, मिथ्या-प्रचार पर जीवित रहते हैं।

निज्नी-नोवगोरोद का एक दर्जी गामिरोव कहा करता था :

"पोशाक मनुष्य को सजाने के लिए भी बनायी जा सकती है और उसे बदसूरत बनाने के लिए भी।"

मनुष्यों को सजाने-संवारने वाले सत्य का निर्माण कलाकारों के द्वारा होता है। प्राणी एक दूसरे को कलंकित करने के लिए, जितनी चतुराई से हो सके, शीघ्रतापूर्वक "सत्य" को गढ़ने के अतिरिक्त और

---

१. सुकरात की पत्नी जो सदा उन्हें परेशान किये रहती थी। —अनु.

कुछ नहीं कर सकते। मैं समझता हूं कि हम लोग इतनी दृढ़ता से एक दूसरे की निंदा इसलिए करते हैं कि मनुष्य मनुष्य का दर्पण है।

मैंने उन 'सत्यों' की असलियत खोजने का प्रयत्न नहीं किया जो, पुरानी रूसी रीति के अनुसार, फाटकों पर काले अक्षरों में लिखे रहते हैं। किन्तु महान तोल्सतोय की एक-मात्र नारी-मित्र के विषय में, जैसा कि मैंने उन्हें देखा और समझा, कुछ शब्दों को कहने की भावना को मैं नहीं रोक सकता हूं।

कोई व्यक्ति केवल मृत्यु को प्राप्त होने से ही भला नहीं बन जाता। इसे प्रमाणित करने के लिए इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि मृत व्यक्ति के विषय में भी हम उतनी ही नीचता और निर्दयता से सोचते हैं जितनी से जीवित के बारे में। उनकी मृत्यु के बाद महान व्यक्तियों के विषय में, उन विभूतियों के विषय में जिन्होंने हमारे कल्याण के लिए अपना समूचा जीवन और अपनी महान आत्माओं की समस्त शक्ति खपा दी, हम जब कभी कुछ लिखते हैं तो अनिवार्यतः इस प्रकार कि मानो हम अपने को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वे भी हमारे ही समान नीच थे।

किसी ईमानदार व्यक्ति द्वारा कोई अनुचित कार्य, फिर वह कितना ही साधारण और नगण्य क्यों न हो, हम लोगों को उससे कहीं अधिक उल्लसित कर देता है जितना किसी गुंडे द्वारा वीरतापूर्ण या त्यागमय कार्य। कारण यह कि ईमानदार व्यक्ति के अनुचित कार्य को हम बड़ी सरलता और निश्चितता के साथ किसी कठोर विधान की सिद्धि मान लेते हैं, जबकि किसी गुंडे का वीरत्व अथवा त्यागपूर्ण कार्य हमें असमंजस में डाल देता है। वह एक अलौकिक घटना प्रतीत होता है, मनुष्य के सम्बंध में मान्य-विचारों के नितान्त प्रतिकूल मालूम होता है।

पहली घटना पर हम अनिवार्यतः अपनी खुशी को दुःख के बनावटी भावों में छिपाते हैं और उसी ढोंग के द्वारा दूसरे पर प्रसन्न होते हैं—यद्यपि हमारे मन में भय छिपा रहता है कि यदि गुंडे ईमानदार हो जायेंगे तो हम क्या करेंगे।

यह उचित ही कहा गया है कि हममें अधिकांश लोग "नेकी और बदी के प्रति निर्लज्जता की सीमा तक उदासीन रहते हैं" और अंत तक

ऐसे ही बने रहना चाहते हैं। इसी कारण नेकी और बदी, दोनों ही, हमारी नींद हराम करती हैं और जितनी ही स्पष्ट उनकी व्यंजना होती है, उतनी ही अधिक हमारी परेशानी बढ़ जाती है। कमजोर आत्माओं की यह व्यग्रता स्त्रियों के प्रति हमारे रवैये में भी देखी जा सकती है।

जीवन की तरह, साहित्य में भी, हम घमंड से चिल्लाते हैं: "रूसी नारी विश्व की श्रेष्ठतम नारी है।"

यह चीख-पुकार मुझे मछली बेचनेवाले की याद दिलाती है जो चिल्लाता रहता है: "मछली लो! मछली! जिंदा मछली! बड़ी-बड़ी मछलियां!"

मछलियां जीवित ही उबलते पानी में डाल दी जाती हैं, और नमक, काली मिर्च और तेजपात डालकर उन्हें तब तक उबाला जाता है जब तक वे लाल नहीं हो जातीं। योरप की "सर्वश्रेष्ठ" महिलाओं के प्रति भी हमारा व्यवहार कुछ ऐसा ही है।

किन्तु, रूसी नारी को "सर्वश्रेष्ठ" मान चुकने के बाद ऐसा लगता है मानो हम घबरा गये हैं। हमारी घबराहट है यह — कहीं वह हमसे भी श्रेष्ठ निकली तो? इसीलिए जब भी अवसर मिलता है हम उसे अपनी कीचड़-भरी मूर्खता के उबलते कड़ाह में डाल देते हैं। हां, हम यह कभी भी नहीं भूलते कि उसमें स्वादिष्ट प्रशंसा की दो-चार पत्तियां भी डाल दें। यह तो सर्वविदित है ही कि नारी जितनी ही अधिक प्रतिष्ठावान होती है उतनी ही अधिक उसे लज्जित करने की हमारी इच्छा होती है।

एक-दूसरे को बदनाम करने के हमारे कौशल और दांव-पेंचों को देखकर नरक के प्रेत भी लज्जित हो जायेंगे।

मृत्यु के बाद मानव न तो अधिक अच्छा हो जाता है, न अधिक बुरा। वह बस हमारे जीवन में हस्तक्षेप करना बन्द कर देता है। और इस अहसान के प्रति अपनी जागरूकता प्रकट करने के नाते हम उसे तुरन्त ही विस्मृति के गर्त्त में धकेल देते हैं। निस्संदेह, उसके लिए हम यही

सबसे अच्छा काम कर सकते हैं। मुझे लगता है कि उन सभी लोगों को, चाहे वे मृत हों या जीवित, जो जनता को सुखी और जीवन को मानवीय बनाने की भावना से हमें निरर्थक ही चिंतित बनाये रखते हैं, भूल जाना ही श्रेयस्कर है।

किन्तु मृत को भुला देने के इस अच्छी परम्परा को अक्सर हम अपने विद्वेष, बदला लेने की अपनी घृणित लालसा, और नैतिक आचार की बनावटी स्थिति के कारण भुला देते हैं। दिवंगता सोफिया आन्द्रियेवना के प्रति हमारा रवैया इस बात का ज्वलंत प्रमाण है।

मेरा विश्वास है कि मैं उनके विषय में नितांत निष्पक्षता से बता सकता हूं, क्योंकि वह मुझे कभी अच्छी नहीं लगीं और मुझे उनका आदर कभी प्राप्त नहीं हुआ। यह एक ऐसी बात है, जो स्पष्टवादी होने के नाते उन्होंने कभी नहीं छिपाई। मेरे प्रति उनके रवैये में अक्सर मुझे कुछ कष्टकर मालूम होता था लेकिन मैंने इसका कभी बुरा नहीं माना—क्योंकि मैं भली भांति जानता था कि उस महान शहीद, अपने पति, के आस-पास मंडरानेवाले लोगों को वह मक्खी-भुनगे समझती थीं—जोंक समझती थीं।

यह बहुत सम्भव है कि कभी-कभी उनकी ईर्ष्या लेव तोलस्तोय को दुःखित करती हो। कुछ लोगों को भालू की कथा याद आ जायेगी, जो पेड़ के नीचे सोनेवाले मनुष्य के प्रति सेवा-भाव के कारण उस पर भिनभिनानेवाली मक्खियों को भगाता रहता था और एक बार उसने इतनी जोर का पंजा मारा कि सोनेवाला मर गया। यह अधिक उचित और बुद्धिमत्तापूर्ण होगा यदि ये लोग महान लेखक के चारों ओर भिन-भिनानेवाली मक्खियों की भयानक भीड़ और भनभनाहट को समझते और जान लेते कि उनकी आत्मा को चूसनेवाली ये जोकें कितनी बड़ी बाधा थीं। तोल्सतोय के जीवन और उनकी स्मृति पर हर कीड़ा अपनी निशानी छोड़ जाने के लिए प्रयत्नशील था। इनमें से कुछ इतने अधिक ढीठ थे कि असीसी के संट फ्रांसिस को भी उनके प्रति घृणा हो जाती। उनके प्रति सोफिया आन्द्रियेवना जैसी उग्र स्वभाववाली नारी का क्रोध पूर्णतः स्वाभाविक था। तमाम महान कलाकारों की तरह तोल्सतोय का

भी इन्सानों के प्रति बहुत ही मौलिक मूल्यांकन होता था जो अक्सर मान्य नैतिकताओं से मेल न खाता था। १८८२ की अपनी डायरी में उन्होंने अपने एक परिचित के विषय में लिखा :

"यदि कुत्तों के प्रति उसका प्रेम न होता तो वह नितान्त ही दुष्ट व्यक्ति होता।"

बहुत पहले ही, उन्नीसवीं शताब्दी के नौवें दशक में, उनकी पत्नी को विश्वास हो चुका था कि उनके प्रशंसकों के झुंड के कुछ लोगों और "सन्तों" से उनकी निकटता केवल उन्हें दुखद और पीड़क लगती थी। वह "तोल्सतोयवादियों" की बस्तियों में होनेवाले निंदनीय और दुखद नाटकों के विषय में भली भांति जानती थीं — मिसाल के लिए अर्खांगेल्स्की की सिम्बिर्स्क बस्ती के उस नाटक के बारे में जिसका पटाक्षेप एक किसान लड़की की आत्महत्या द्वारा हुआ और जिसकी प्रतिध्वनि कारोनिन की बदनाम कहानी "बोरकिया बस्ती" में सुनायी दी।

वह "एक तोल्सतोयवादी की डायरी" जैसी नितान्त घृणित पुस्तक के लेखक इलिच जैसे गद्दारों द्वारा प्रेरित "काउंट तोल्सतोय के पाखंड" के घृणास्पद सार्वजनिक प्रचार को भी जानती थीं। उन्होंने "तोल्सतोयवादियों" की एक बस्ती के संगठनकर्ता और तोल्सतोय के भूतपूर्व भक्त नोवोसिओलोव के लेखों को भी पढ़ा था। ये लेख गिरजाघर के मुख पत्र "प्रवोस्लावनोये ओब्ज़ूनिए" ("पुरानपंथी समीक्षा") में प्रकाशित हुए थे, जो उतना ही कट्टर पुरानपंथी पत्र था जितना पुलिस का थाना होता है।

कजान की धार्मिक अकादमी के प्रोफेसर गुसेव द्वारा तोल्सतोय पर भाषण को भी संभवतः वह जानती थीं। गुसेव "काउंट तोल्सतोय की आत्मानुरक्ति" का भंडाफोड़ करनेवालों में अपने को अग्रिम मानता था। अन्य बातों के अलावा इस प्रोफेसर ने अपने भाषण में घोषणा की कि उसने "यासनाया पोल्याना के ढोंगी साधु" के घरेलू जीवन के विषय में सूचनाएं प्राप्त की हैं और ये सूचनाएं उन व्यक्तियों से प्राप्त हुई हैं जो तोल्सतोय की निरंकुश नास्तिकता के प्रेमी थे।

अपने पति की शिक्षाओं के उत्साही प्रशंसकों में से उन्होंने मेंशिकोव को भी देखा था जिसने तोल्सतोय के प्रेम सम्बंधी विचारों की पुस्तक "आन लव" ("प्रेम के सम्बंध में") को रट डाला था और जो नीरस अन्ध-प्रेमी बन बैठा और "नोवोई व्रेम्या" ("नया युग") पत्रिका में दनादन लेख लिखने लगा था। बड़े शोर-शराबे से वह अपनी प्रतिभा को इस भ्रष्ट अखबार में प्रकट कर रहा था।

उन्होंने इस तरह के अनेक व्यक्ति देखे थे। इनमें स्वयं-शिक्षित कवि बुल्गोकाव भी था, जिसको आगे बढ़ाने में तोल्सतोय का बहुत बड़ा हाथ था। तोल्सतोय "रूस्काया मिस्ल" ("रूसी विचार") में उसकी तुकबन्दियां छापते थे। इस अर्ध-शिक्षित, रोगी और भावुक, किन्तु नीरस, तुक्कड़ ने "तोल्सतोय के नाम खुला पत्र" नामक गन्दा लेख लिखकर इस उदारता का बदला चुकाया। यह लेख इतना गन्दा, नीरस और झूठा था कि उसे छापने को कोई तैयार न हुआ। "मास्कोवस्कीए वेदोमोस्ती" के सम्पादकीय कार्यालय से भी पांडुलिपि वापिस कर दी गयी—इस टिप्पणी के साथ कि "बेहूदा फूहड़पन के कारण इसे नहीं छापा जा सकता।" इस टिप्पणी के सहित ही वह पांडुलिपि बुल्गाकोव ने तोल्सतोय के पास भेजी और मांग की कि तोल्सतोय अपने बारे में सत्य को स्वयं छापें।

प्रसिद्ध "तोल्सतोयवादी" बुलैंगर की घटना से भी सोफिया आन्द्रियेवना के हृदय को कम आघात नहीं पहुंचा और इन तमाम घटनाओं के बाद भी तोल्सतोय के "भक्तों" की नीचता, कपट और स्वार्थ समाप्त होते दिखायी न दिये।

इसलिए अपने पति के प्रशंसकों और भक्तों के प्रति उनका घोर अविश्वास बड़ी आसानी से समझ में आ जाता है। प्राप्त तथ्यों के अनुसार ऐसे व्यक्ति के निकट से, जो महान सृजनकर्ता था, इन जोकों को भगाने के उनके प्रयत्न पूर्णतः उचित लगते हैं। कारण यह कि अपने पति के वेदनापूर्ण आध्यात्मिक संघर्षों की सबसे सच्ची साक्षी वही थीं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सोफिया के कारण ही तोल्सतोय गधों के

खुरों की अनेक चोटों से बच गये और बहुत-सा कीचड़ और कूड़ा-करकट उन पर नहीं फेंका जा सका।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि नौवीं दशाब्दि में जिस निकम्मे को भी लिखना और पढ़ना आता था वही विश्व के उस महान मेधावी की धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और दूसरी गलतियों का भंडाफोड़ करना अपना कर्तव्य समझ बैठा था। इन लोगों की बकवास "सीधे-सादे लोगों" तक भी पहुंचती थी। भला कौन उस सरल वृद्धा को भूल सकता है, जो हुस के नीचे जलनेवाली आग में घी डालती थी ?

मानो कल की ही बात हो। मुझे मालोमेरकोव हलवाई की याद आती है, जो कड़ाह के पास खड़ा चाशनी तैयार कर रहा था। मिठाई और केक बनानेवाले उस हलवाई के विचारपूर्ण शब्द मानो मुझे आज भी स्पष्ट सुनाई दे रहे हैं :

"काश मैं उस जहरीले नास्तिक तोल्सतोय को इस कड़ाही में डाल सकता ..."

यदि मैं गलती नहीं कर रहा हूं, तो ज़ारित्सिन के एक नाई ने "काउंट तोल्सतोय और पवित्र मसीहे" नाम की पुस्तक लिखी थी। और एक स्थानीय पादरी ने गहरी नीली स्याही से पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर नितान्त सुन्दर अक्षरों में ये शब्द लिखे थे :

"क्रोध में कहे कुछ भद्दे शब्दों को छोड़कर — जो पूर्णतः अनुचित नहीं हैं — मैं इस पुस्तक की हर बात का समर्थन करता हूं।"

मेरा एक मित्र, टेलीग्राफ आपरेटर, युरीन, जो कुबड़ा था, किन्तु बड़ा चतुर भी था, यह पांडुलिपि हमारे पढ़ने के लिए लेखक से मांग लाया। मैंने तभी पहली बार 'पोलिकुश्का,' 'कौसेक,' 'मेरी मान्यताएं' और संभवतः 'तीन मित्रों की कहानी' पढ़ी थी। इन ग्रंथों के लेखक के विरुद्ध उस नाई की विषैली गालियों को पढ़कर मैं सन्न रह गया। लौग का एक लंगड़ा बूढ़ा कौसेक, डॉन प्रदेश की देहातों में घूमता और ग्रियाजी ज़ारित्सिन तथा वोल्गा-डॉन रेलवे स्टेशनों पर घोषणा करता फिरता कि "मास्को में काउंट तोल्सतोय धर्म और जार के विरुद्ध बगावत भड़का

रहा है", कि उसने किन्ही किसानों की जमीन छीनकर "पोस्ट आफिस के कुछ अफसरों में, जो उसके सम्बंधी हैं, बांट दी है।"

उस महापुरुष की अशांत आत्मा की तीखी आवाज के प्रत्युत्तर में उठी इन मूर्खतापूर्ण चीख-पुकारों को यासनाया पोल्याना में सोफिया ने अवश्य सुना होगा। किन्तु नौवीं दशाब्दि की यही एक चीज नहीं रही होगी जिसने इसे उनके जीवन का सबसे कठिन काल बना दिया। इस युग में उन्होंने जो भूमिका अदा की वह बहुत महत्वपूर्ण थी। लेव तोल्सतोय को इतनी अधिक बुराई और नीच बातों से सुरक्षित रखने में, जिन्हें न तो उन्हें और न किसी दूसरे को जानना चाहिए था, सोफिया को अत्यधिक आत्म-शक्ति और सतर्कता की आवश्यकता पड़ी होगी। और, इसका दूसरों के प्रति उनके रवैये पर भी प्रभाव पड़ा होगा।

प्रचार और बदनामी को कुचलने का सबसे अच्छा उपाय मौन है।

यदि हम शिक्षकों के जीवन को निष्पक्षता से देखें तो हम देखेंगे कि केवल वे ही — जैसा आम तौर पर समझा जाता है — शिष्यों को बिगाड़नेवाले नहीं होते, वरन स्वयं शिष्य भी ऐसे होते हैं जो अपने शिक्षकों के चरित्र पर धब्बा लगाते हैं — कुछ मूर्खतावश, कुछ अवज्ञा के कारण और कुछ दूसरे उनकी शिक्षाओं को भोंड़े रूप से आत्मसात करके। तोल्सतोय अपने जीवन और अपनी पुस्तकों के मूल्यांकन के प्रति सदैव ही उदासीन नहीं रहे।

अंतिम बात यह है कि तोल्सतोय की पत्नी इस बात को कभी नहीं भूलीं कि जिस देश में वे रहते हैं, वह ऐसा है जहां कुछ भी हो सकता है — जहां सरकार बिना मुकदमा चलाये प्रजा को गिरफ्तार कर सकती है और बीस-बीस वर्ष तक जेलों में सड़ा सकती है। "नास्तिक" पादरी ज़ोलोत्निस्की सचमुच तीस वर्ष तक सुजदाल गिरजा की जेल में सड़ता रहा था। उसे तभी रिहा किया गया जब उसकी विचार-शक्ति पूर्णतः उसका साथ छोड़ चुकी थी।

कलाकार सत्य को खोजता नहीं, वह उसका निर्माण करता है। मुझे इस बात का विश्वास नहीं कि तोल्सतोय जो शिक्षा देते थे, उससे

वह संतुष्ट थे। उनमें दो बुनियादी तरह के मस्तिष्क थे। संभवतः दोनों पीड़ापूर्ण संघर्ष में रत; एक कलाकार का सृजनकारी मस्तिष्क तथा दूसरा अन्वेषक का संशयवादी मस्तिष्क। "युद्ध और शांति" के लेखक ने विश्व को अपने धार्मिक सिद्धांत इसी कारण दान किये होंगे कि लोग उनके कलाकार के प्रगाढ़ और परिश्रम-शील कार्य में हस्तक्षेप न करें। बहुत संभव है कि महान कलाकार तोल्सतोय शिक्षक तोल्सतोय को दयापूर्ण मुसकराहट के साथ सिर झटककर चिढ़ाता हुआ देखता हो। उनकी "जवानी की डायरी" में विश्लेषणात्मक विचारों के प्रति विरोध का भाव देखा जा सकता है। २२ मार्च, १८५२ की तिथि में ये शब्द अंकित हैं :

"अनेक विचार एक साथ ही मस्तिष्क में रह सकते हैं, विशेषतः तब जब मस्तिष्क छूंछा हो।"

स्पष्ट ही उस प्रारम्भिक अवस्था में भी उनका हृदय और मस्तिष्क कलात्मक निर्माण के लिए छटपटाते थे और "विचार" इसमें आड़े आते थे। कल के प्रति अचेतन उत्कंठा के विरुद्ध "विचारों" के विद्रोह में ही, इन दो तात्विक शक्तियों के बीच प्रधानता के लिए संघर्ष में ही, हम निम्नांकित शब्दों का संतोषप्रद स्पष्टीकरण ढूंढ़ सकते हैं :

"...चेतन अवस्था ही उन बुराइयों में सबसे बड़ी है जिनके कारण मनुष्य को सदा हानि उठानी पड़ती है।"

अर्सेन्येवा को एक पत्र में उन्होंने लिखा था :

"बुद्धि, यदि वह बहुत अधिक मात्रा में है, तो घृणास्पद वस्तु है।"

किन्तु "विचार" तोल्सतोय पर हावी हो जाते थे। वह उन्हें एकत्र करने और एक सूत्र में पिरोकर किसी दर्शन-व्यवस्था को खड़ा करने के लिए बाध्य हो जाते थे। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह तीस वर्षों तक प्रयत्नशील रहे। और हम देख चुके हैं कि किस प्रकार यह महान कलाकार द्वारा स्वयं कला का निषेध बन गया—यद्यपि कला ही उनकी भावनाओं का मूल आधार थी।

अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उन्होंने लिखा था :

"लिखने के पाप और लालच का मैंने बड़ी तीव्रता से अनुभव

किया। दूसरों में मैंने इस भावना की निंदा की है और इस निंदा को उचित ही अपने ऊपर लागू किया है।"

मानव इतिहास में इससे अधिक दुखद दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। कम से कम मुझे याद नहीं कि किसी अन्य महान कलाकार ने इस विश्वास को अपना आलम्बन बनाया था कि कला, मानव सफलताओं में सर्वोत्कृष्ट सफलता, पापमय है।

संक्षेप में : १९ वीं शताब्दी की महानतम प्रतिभाओं में तोल्सतोय का व्यक्तित्व सबसे जटिल था। उनकी एक मात्र निकटतम मित्र, उनकी पत्नी, उनके बच्चों की मां, उनके घर की स्वामिनी, की भूमिका निस्संदेह कष्टसाध्य थी और दायित्वपूर्ण भी। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक गहराई और निर्णयात्मक रूप से सोफिया आन्द्रियेवना यह देख और अनुभव कर सकती थीं कि इस महान विभूति के लिए साधारण जीवन बिताना, तनावपूर्ण वातावरण में सांस लेना, तथा छिछले लोगों की संगति में रहना, कितना पीड़ाजनक था। किन्तु वह यह भी देख और समझ सकने में समर्थ थीं कि महान कलाकार सचमुच महान है जब वह अपनी आत्मा की आज्ञा के अनुसार काम करता है, एकान्त में और दैवी कुशलता के साथ काम करता है। लेकिन जब तोल्सतोय ताश खेलते और हार जाते —तो वह किसी साधारण आदमी की ही तरह आपे से बाहर हो जाते, कभी-कभी तो तर्कहीन क्रोध से भर जाते, अपनी गलतियों के लिए अपने साथवाले को उत्तरदायी ठहराते —बिलकुल वैसे ही जैसे साधारण लोग करते हैं, या, जैसा कि स्वयं सोफिया आन्द्रियेवना करतीं।

केवल सोफिया आन्द्रियेवना ही ऐसी न थीं जो महान उपन्यासकार के हल जोतने, अंगीठियां बनाने, जूते सीने जैसे कामों को न समझ पातीं हों। तोल्सतोय के समकालीन कुछ महान लोग भी इन्हें न समझ पाते थे। वे केवल कुतूहल का आनंद लेते, जबकि सोफिया के हृदय को दूसरी भावनायें पीड़ित करतीं। निस्संदेह उन्हें याद था कि रूसी अराजकतावाद के एक प्रणेता, त्याना के अपोलेनियस पर दिलचस्प पुस्तक के लेखक, ने घोषित किया था :

"जूते तो शेक्सपियर से भी महान हैं।"

अन्य किसी से अधिक सोफिया को ही "युद्ध और शांति" के लेखक तथा नकारवाद के मसीहे के विचारों की समता पर अत्यधिक दुःख हुआ होगा।

एक ऐसे लेखक के जो प्रूफों को सात-सात बार पढ़ता हो, जो हर बार प्रूफ पढ़ने पर नये सिरे से मैटर लिखने लगता हो, जो स्वयं पीड़ित होता हो और दूसरों को पीड़ा पहुंचाता हो, जिसने स्वयं एक विश्व की रचना की हो, साथ रहनेवाले के जीवन की समस्याओं को समझना हरेक के बस की बात नहीं।

कोई नहीं जानता कि तोलसतोय की पत्नी ने जब सबसे पहले "युद्ध और शांति" के परिच्छेद सुने होंगे तो उन्होंने क्या कहा अथवा अपनी प्रतिक्रिया किस रूप में व्यक्त की। उस महान कलाकार की असाधारण क्षमता को बिना एक क्षण के लिए भी भुलाये मैं यह सोचने पर बाध्य हूं कि उनके इस विशाल उपन्यास के नारी पात्रों के जीवन के कुछ पहलू ऐसे हैं जिन्हें कोई नारी ही जान सकती थी और सम्भव है कि ये पहलू उपन्यासकार को उनकी पत्नी ने ही बताये हों।

जीवन के उलझे हुए ताने-बाने को और भी उलझा बनाने के उद्देश्य से ही मानो हम सब एक-दूसरे के लिए पैदायशी शिक्षक बन जाते हैं। मुझे अभी भी ऐसे व्यक्ति से मिलना है जो अपने पड़ोसी को शिक्षा देने की अनधिकार चेष्टा से अछूता हो। यद्यपि मुझे समझाया जाता है कि सामाजिक विकास की दृष्टि से यह अनिवार्य है, तो भी मैं इस विचार पर दृढ़ हूं कि लोग शिक्षा कम दें और सीखें अधिक तो सामाजिक विकास की गति और अधिक तीव्र होगी और यह विकास मानवीय उपायों से हो सकेगा तथा लोगों में रूढ़िवाद निश्चय ही कम हो जायगा।

कलाकार तोल्सतोय के महान हृदय पर विश्लेषणात्मक "विचारों" की गहरी छाप पड़ती थी। यह छाप उन्हें अंततः बाध्य कर देती कि वह "जीवन के शिक्षक" की कष्टसाध्य तथा अप्रिय भूमिका अदा करें। कलाकार के कृतित्व पर इस अप्रिय भूमिका का दुष्प्रभाव बार-बार बताया गया है। मेरा यह मत है कि तोल्सतोय के इस महान ऐतिहासिक

उपन्यास पर कलात्मकता के ऊपर "दार्शनिकता" अवश्य ही हावी हो जाती—यदि इस नारी का प्रभाव न होता। यह प्रभाव उपन्यास में आद्योपान्त पाया जाता है। सम्भव है कि यह बात नारी के प्रभाव के कारण ही हो कि "युद्ध और शांति" का दार्शनिक भाग पुस्तक के अन्त में रखा गया है, अर्थात ऐसे स्थान पर जहां न तो वह किसी घटना पर और न ही किसी व्यक्ति पर अपना प्रभाव डाल सकता है।

नारी जाति निश्चय ही इस बात के लिए बधाई की पात्र है कि जहां उसने दार्शनिकों को जन्म दिया है, वहां दर्शन की ओर कभी उत्साह नहीं दिखाया। कला में स्वयं ही बहुत सा दर्शन निहित रहता है। निरावरण विचारों को सुन्दर रूपकों में सजाने की कलाकार में विशेष क्षमता होती है। जब भी जीवन की किसी गूढ़ पहेली के सम्मुख दर्शन निःसत्व सिद्ध होता है तो कलाकार बड़े कौशल से उसकी पुंसत्व-हीनता को छिपा लेता है। बच्चों को कड़वी गोलियां सदा ही मिठाई के पर्त में लपेटकर दी जाती हैं — यही बुद्धिमत्तापूर्ण भी है और इससे कष्ट भी नहीं होता।

सैबाथ ने संसार को इतना असुंदर इसीलिए बनाया कि वह क्वांरा था—इस उक्ति में किसी अनीश्वरवादी की पैनी चुटकी से अधिक गंभीरत है। इन शब्दों द्वारा कला की प्रेरक और जीवन में सामंजस्य लानेवाली नारी की महत्ता में अडिग विश्वास प्रकट किया गया है। 'आदम के पतन' की पुरानी कथा का आज भी गम्भीर महत्व है—विश्व के समस्त सुखों का श्रेय नारी की कुतूहल भावना को है और विश्व के तमाम दुःख मनुष्य की — जिनमें नारी भी सम्मिलित है — सामूहिक मूर्खताओं के कारण हैं।

मानव मात्र के दुःखों के समस्त इतिहास के लिए यही सबसे सच्चा और सर्वोचित सूत्र है :

"संसार में प्रेम और भूख का शासन है!" जहां प्रेम का शासन है, वहां हम लोगों के पास, जो अभी थोड़े समय पहले वन्य पशु थे,

संस्कृति, कला और वह सब कुछ है, जो महान है, तथा जिस पर हमें उचित ही गर्व है। किन्तु जहां हमारे कार्यों की प्रेरक शक्ति भूख है, वहां हमारे पास सभ्यता तथा उससे जुड़ी-मिली तमाम विपत्तियां हैं, वे तमाम बोझे और बन्धन हैं जो उन जीवों के लिए नितान्त आवश्यक हैं जो कुछ ही दिनों पहले तक वन्य पशु थे। मूर्खता का सबसे भयंकर पहलू है लिप्सा — एक पाशविक प्रवृत्ति। यदि लोग अधिक लोभी न होते तो अधिक भूखे भी न होते; वे कुछ अधिक बुद्धिमान होते। यह कोई विरोधाभास नहीं है। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि हमने जीवन को इस समय अधिक बोझिल बनानेवाली अपनी बहुलताओं को आपस में बांटना सीख लिया होता तो विश्व अधिक सुखमय होता और इसके निवासी अधिक बुद्धिमान होते। किन्तु केवल कलाकार और वैज्ञानिक ही ऐसे होते हैं जो विश्व को अपनी आत्मा की संपूर्ण निधि लुटा देते हैं, जो मृत्यु के उपरान्त, दूसरों की ही भांति, कीड़ों का भोजन बनते हैं और अपने जीवन-काल में आलोचकों और नैतिकतावादियों का भोजन बने रहते हैं। ये लोग उनकी खालों से वैसे ही चिपके रह जाते हैं जैसे फलदायक वृक्षों से जंगली बेल चिपकी रहती है।

नंदन-कानन में विषधर की भूमिका इरोज ने अदा की थी, जिसे तोल्सतोय मानते भी थे और जिसकी पूर्ण श्रद्धा से सेवा भी करते थे। मैं "क्रुजेर सोनाटा" के लेखक को नहीं भूला हूं, किन्तु मुझे यह भी याद है कि निझनी-नोवगोरोद के बहत्तर वर्ष के बूढ़े व्यापारी ए. पी. बोल्शेकोव ने अपनी खिड़की के नीचे सड़क पर जानेवाली स्कूली बालिकाओं को देखकर क्या कहा था। उसने कहा था :

"आह ! मैं इतनी जल्दी क्यों बूढ़ा हो गया ? जरा उन सुन्दर तरुण बालिकाओं को तो देखो ! हाय ! अब वे मेरे किसी काम की नहीं। उन्हें देखकर अब मैं केवल आह-कराह भर सकता हूं, बस दांत किटकिटा सकता हूं।"

मुझे विश्वास है कि मैं उस महान लेखक की भव्य प्रतिमा को किसी भांति कलंकित न करूंगा यदि मैं कहूं कि "क्रुजेर सोनाटा" में भी इसी प्रकार की प्राकृतिक एवं स्वाभाविक ईर्ष्या प्रतिबिम्बित है। तोल्स-

तोय ने स्वयं ही प्रकृति की इस निर्लज्ज विडंबना पर आक्षेप किया था कि वह हमारा पौरुष तो छीन लेती है किन्तु हमारी लालसाओं को ज्यों का त्यों बना रहने देती है।

यह ध्यान में रखने की बात है कि यद्यपि कलाकार तोल्सतोय स्वभाव से बड़े भावुक थे तो भी ५० वर्षों तक उनके जीवन को केवल एक ही नारी —सोफिया आन्द्रियेवना — ने प्रभावित किया। मैं समझता हूं, वह उनकी निकटतम, वफादार, एकमात्र, सच्ची मित्र थीं। अपनी महान आत्मा की उदारता के वशीभूत तोल्सतोय बहुत से व्यक्तियों को अपना मित्र कहते थे, किन्तु ये व्यक्ति वास्तव में केवल उनके विचारों के समर्थक थे। इस बात को मानते देर न लगेगी कि सोफिया आन्द्रियेवना के अलावा शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा मिले जो तोल्सतोय का मित्र कहलाने के गौरव के उपयुक्त हो।

तोल्सतोय के साथ दीर्घकालीन तथा अविच्छिन्न सम्बंध ही सोफिया को उस महान प्रतिभा के कृतित्व तथा स्मृति के उपासकों —सच्चे और झूठे दोनों तरह के उपासकों — के आदर का पात्र बनाने के लिए यथेष्ट हैं। कुछ नहीं तो इसी बात को ध्यान में रखकर तोल्सतोय के "घरेलू जीवन की समस्याओं" के यशस्वी उद्घाटकों को अपनी जहरीली जुबानों पर लगाम लगा लेनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे बुरा मानने और बदला लेने की संकुचित प्रवृत्ति को भूल जायें और "मनोवैज्ञानिक खोज-बीन" के, छिछोर खुफियों जैसे, गंदे काम को बन्द कर दें। उस महान लेखक के जीवन को — उंगलियों के पोरों से ही सही — ढिठाई तथा नीचता से कुरेदने का घृणित कार्य न करें।

उन सुखद दिनों के अपने संस्मरणों में, जब मुझे तोल्सतोय से परिचित होने का महान गौरव प्राप्त हुआ था, मैंने जान-बूझकर सोफिया आन्द्रियेवना के विषय में कुछ नहीं लिखा। वह मुझे कभी पसंद नहीं थीं। मुझे उनमें अपने पति के जीवन में अपनी भूमिका को जाहिर करने की — जो निस्संदेह महान भूमिका थी — ईर्ष्यापूर्ण, तनाव से भरी, बड़ी तीव्र इच्छा दिखायी दी। उन्हें देखकर मुझे गांव के सर्कस के उस आदमी की याद हो आती थी जो एक बूढ़े शेर का खेल दिखाता था।

उस वन्य पशु की शक्ति के प्रदर्शन से वह जान-बूझकर दर्शकों को डराया करता था। दर्शकों को मानो वह यह जताना चाहता था कि संसार में वही एक ऐसा व्यक्ति है जिसे सिंह प्यार करता है और जिसका वह अनुशासन मानता है। मेरे विचार से सोफिया के ऐसे प्रदर्शन नितान्त निरर्थक। वे बहुधा हास्योत्पादक तथा उनके सम्मान के विरुद्ध लगते। इसके अलावा उनको अपनी भूमिका पर जोर देने की आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि उस समय तोल्सतोय को घेरे रहनेवालों में कोई भी सोफिया से अधिक बुद्धिमान और योग्य नहीं था। अब, उनके प्रति चर्तकोव जैसे लोगों के रवैये को देखने और समझने के बाद, मुझे लगता है कि बाहरी लोगों के प्रति सोफिया की ईर्ष्या उचित थी। उनके और अपने पति के बीच में आने की उनकी स्पष्ट भावना तथा उनकी कुछ और अप्रिय प्रवृत्तियां, सभी उस व्यवहार के कारण उचित थीं जो उनके जीवन-काल में, और मृत्यु के बाद भी, उनके प्रति अपनाया गया।

सोफिया का अध्ययन मैंने गास्प्रा और क्रीमिया में उन दिनों किया, जब तोल्सतोय भयंकर रूप से अस्वस्थ थे, जब किसी भी दिन उनके मर जाने की दुराशा से, सरकार ने सिम्फ्रोपोल के नोटरी अफसर को लेखक के कागज-पत्र जब्त करने के लिए भेजा था, जो याल्टा में आ टिका था। तोल्सतोय और उनकी पत्नी काउंटेस पानिना की जिस रियासत में रहती थीं वह खुफियों से घिरी थी और ये खुफिये हर समय पार्क में टहला करते थे। लियोपोल्ड सुलेरजित्स्की ने उन्हें उसी तरह भगाया जैसे सब्जी के खेत में घुसे सुअरों को भगाया जाता है। तोल्सतोय की कुछ पांडुलिपियों को गुप्त रूप से सुलेर ने याल्टा भेज दिया था और उन्हें वहां छिपा दिया था।

यदि मैं गलती नहीं कर रहा तो उस समय गास्प्रा में तोल्सतोय का सम्पूर्ण परिवार एकत्र था — बच्चे, दामाद, बहुएं, सब। मुझे उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो यहां बड़ी तादाद में निस्सहाय और बीमार लोग इकट्ठे कर दिये गये हैं। मुझसे यह छिपा न रहा था कि सोफिया आन्द्रियेवना को एक भंवर ने मानो अपने बीच में समेट लिया है, कि "दैनिक जीवन की चक्की" में वह पिसी जा रही हैं, साथ ही बीमार

तोल्सतोय की मानसिक शांति और पांडुलिपियों की सुरक्षा का प्रयत्न भी कर रही हैं, बच्चों की देख-रेख की जिम्मेदारी भी भुगत रही हैं, "बड़ी भक्ति से दुवायें" देने आनेवाले दर्शकों और पेशेवर तमाशबीनों के गुल-गपाड़े को रोक रही हैं और घर के प्रत्येक व्यक्ति के खान-पान का प्रबंध कर रही हैं। साथ ही उन्हें डाक्टरों की आपसी इर्ष्या पर भी मरहम लगाना पड़ता, जिनमें से प्रत्येक का अपना अलग-अलग विश्वास था कि रोगी की चिकित्सा का महान गौरव केवल उसके अधिकार की वस्तु है।

बिना किसी अतिशयोक्ति के यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि इन दुःखद दिनों में भी, दुर्भाग्य के दिनों में जैसा सदा ही होता है, नीचता का बवण्डर उठता और घर के भीतर तमाम कूड़ा-करकट — छोटे-मोटे झगड़े, परेशान करनेवाली छोटी बातें — उड़ कर आ जातीं। लोग जितना समझते थे, तोल्सतोय उतने धनी नहीं थे। वह एक लेखक थे और अपनी लेखनी की कमाई से परिवार के तमाम लोगों का पेट भरते थे, उन लोगों का जो यद्यपि काफी प्रौढ़ हो गये थे, तो भी काम करने का नाम न लेते थे। सोफिया आन्द्रियेवना दांत पर दांत जमाये, अपनी पैनी आंखें सिकोड़े, हर काम को समय के भीतर कर सकने की अपनी क्षमता द्वारा सबको आश्चर्यचकित करतीं, हर व्यक्ति को सन्तुष्ट रखतीं, आपसी झगड़ों में उलझे तुच्छ-बुद्धि के व्यक्तियों की तू-तू-मैं-मैं रोकती हुई सुबह से रात तक छोटी-छोटी बातों के अन्धड़ में डूबी रहतीं।

आन्द्रेई तोल्सतोय की रुग्ण पत्नी घबड़ायी हुई इधर से उधर भागी-भागी फिरती। वह गर्भवती थी और ठोकर खा जाने के कारण उसे गर्भपात का भय था। तात्याना तोल्सतोया का पति — जिसे हृदय-रोग था — कराहता हुआ इधर से उधर लुढ़कता फिरता। सर्गी तोल्स-तोय, चालीस वर्षों की आयु का कांतिहीन निरापद व्यक्ति, निराशा से भरा इधर-उधर ताश की बाजी खेलने के लिए निरर्थक ही साथी ढूंढ़ता फिरता। उसने कुछ संगीत सीखने का भी प्रयास किया था, और एक बार पियानिस्ट गोल्डेनवीजर के सामने अपना गीत भी बजाया था। गीत का स्वरकार त्युतचेव था, और गीत था : "रतिया की बयार

रे, केहिका बिसूरै ! तू केहिका बिसूरै।" गोल्डेनवीजर ने क्या मत प्रकट किया था यह तो मुझे मालूम नहीं, किन्तु डाक्टर अलेक्सिन ने, जिन्होंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी, सर्गी के संगीत पर फ्रांसीसी सानेटों का प्रभाव बताया था।

मैं इस बात को दोहराता हूं कि तोल्सतोय के विशाल परिवार को देखकर मेरे ऊपर एक विचित्र और सम्भवतः गलत प्रभाव पड़ा। मुझे लगा कि ये सभी लोग बीमार हैं, कि ये एक दूसरे से घृणा करते हैं और सब के सब जीवन से ऊबे हुए हैं। यह सच है कि अलेक्जेंड्रा तोल्सतोया को पेचिस तब शुरू हुई जब उसके पिता की तबियत ठीक हो गयी थी। और सोफिया को उन सब की देखभाल करनी पड़ती। उन्हें ऐसी हर चीज को महान लेखक से दूर रखने का प्रयत्न करना पड़ता जिसका प्रभाव उन पर अहितकर होता, क्योंकि वह शांतिपूर्वक जीवन से विदा लेने की तैयारी कर रहे थे।

मुझे याद है कि सोफिया आन्द्रियेवना को "नोवोये व्रेम्या" के एक अंक को अपने पति के हाथों में पड़ने से बचाने के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ा था जिसमें छोटे लेव तोल्सतोय की एक कहानी और उस पर वी. पी. बुरेनिन का एक आलोचनात्मक निबंध छपा था।

लेव ल्वोविच[1] ने उसी पत्र में अपनी कुछ कहानियां प्रकाशित करायी थीं, जिसमें तानेबाज बुरेनिन ने उसका बड़े जोरों से मजाक उड़ाया था और उसे सिंह पुत्र सिंह, दुध-मुहां सिंह, की संज्ञा दी थी। अपने आवश्यकता से अधिक तीखे मजाक में बुरेनिन ने बेचारे लेखक का पता लिखा था : पागलखाना।

तोल्सतोय का पुत्र इस बात पर बहुत चिन्तित था कि उस पर अपने महान पिता की नकल करने का संदेह न किया जाय और इस संदेह को दूर करने के लिए उसने अत्यंत रोमांचकारी "तोल्सतोयवाद-विरोधी" उपन्यास लिखा और उसे यासिन्सकी के भोंड़े अखबार "येझेमेसीयाश्नीये

---

१. तोल्सतोय के पुत्र का नाम था लेव ल्वोविच जिसका शाब्दिक अर्थ है : 'सिंह का पुत्र, सिंह !'

सोचीनीन्ये" ("मासिक-रचनाएं") में छपाया। इसमें उसने कंसकुट के लाभों और संखिया की हानियों को सिद्ध किया था। यह काफी गम्भीर बात है — उपन्यास का उद्देश्य भी यही था। इस पत्रिका के उसी अंक में यासिन्सकी ने तोल्सतोय के उपन्यास 'रिजरेक्शन' की गंदी आलोचना प्रकाशित की। इसमें आलोचक ने उपन्यास के उन अध्यायों पर भी टिप्पणी करना उचित समझा था जो रूसी संस्करण में वर्जित थे। ये परिच्छेद बर्लिन से प्रकाशित संस्करण में ही, जो रूसी संस्करण से पहले प्रकाशित हो गया, छपे थे। सोफिया आन्द्रियेवना ने उचित ही इस समीक्षा को तोल्सतोय की निन्दा समझा।

ये सब बातें मैं बड़ी अनिच्छा से लिख रहा हूं। मैं इन्हें इस कारण लिख रहा हूं कि मैं एक बार फिर यह बताना आवश्यक समझता हूं कि सोफिया जिन हालतों में रहती थीं वे असाधारण रूप से पेचीदा थीं और उन्हें सुलझाने में उन्हें कितनी बुद्धि और बल खर्च करना पड़ता था। सभी महान पुरुषों की भांति तोल्सतोय भी खुले में ही रहते थे। इसीलिए हर राहगीर अपना यह अक्षुण्ण अधिकार समझता था कि वह इस विचित्र तथा सनकी व्यक्ति से किसी न किसी प्रकार का सम्बंध स्थापित करे। इसमें संदेह नहीं कि सोफिया अनेक गंदे और लोभी हाथों को तोल्सतोय तक पहुंचने से दूर रखती थीं और अपने प्रिय विद्रोही पति के आध्यात्मिक घावों को उनकी उत्सुक उंगलियों से कुरेदे जाने से बचाये रहती थीं।

१९०५-१९०६ की कृषि-क्रान्ति के दिनों में सोफिया के व्यवहार को सदा से ही विशेष रूप से कलंकपूर्ण माना जाता है। यह निर्विवाद है कि उन दिनों उन्होंने भी सैकड़ों दूसरे रूसी जमीदारों जैसा ही व्यवहार प्रदर्शित किया और "जंगली व्यक्तियों से रूसी कृषि की सुरक्षा" के लिए जाहिल और हिंसक लोगों के जत्थों को किराये पर रखा। लगता है कि यासनाया पोल्याना के बचाव के लिए उन्होंने काकेशिया के पहाड़ियों को नौकर रखा था।

कहा जाता है कि सोफिया आन्द्रियेवना को, जिनके पति स्वयं अपने को सम्पत्ति के अधिकार से वंचित रखे थे, किसानों को अपनी रियासत लूटने से नहीं रोकना चाहिए था। किन्तु तोल्सतोय के जीवन और

मानसिक शान्ति की रक्षा के जिए यासनाया पोल्याना की, जब वह वहां रह रहे थे, सुरक्षा करना सोफिया का कर्तव्य था। कारण यह कि वही जगह थी जहां तोल्सतोय की आत्मा को शान्ति मिलती थी। उनकी जीवन-शक्ति दिन प्रति दिन क्षीण हो रही थी और वह संसार से विदा लेने की तैयारी कर रहे थे। इसलिए शान्ति इस समय उनके लिए सर्वोपरि आवश्यक थी। केवल पांच वर्ष बाद ही वह यासनाया पोल्याना छोड़ कर चले गये थे।

समझदार लोगों को मेरे शब्दों में संभवतः एक संकेत मिले : क्रान्तिकारी और अराजकतावादी तोल्सतोय को १९०५ की क्रान्ति के दिनों में अपनी रियासत छोड़ देनी चाहिए थी, या बेहतर होता कि वह वहां से चले जाते। निश्चय ही मैं ऐसा कोई संकेत नहीं दे रहा हूं। मैं जो कुछ भी कहना चाहता हूं हमेशा साफ-साफ कहता हूं।

मेरी राय में तो तोल्सतोय को यासनाया पोल्याना से कभी जाना ही नहीं चाहिए था। और, जिन्होंने उन्हें वहां से जाने में सहायता दी, यदि वे उन्हें रोक लेते तो अधिक बुद्धिमानी की बात होती। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि तोल्सतोय के "प्रयाण" ने उनके जीवन के दिनों को कम कर दिया,—उस जीवन के दिनों को जिस का प्रत्येक पल अत्यंत मूल्यवान था।

कहा जाता है कि तोल्सतोय को उनकी मानसिक रूप से रुग्ण पत्नी ने ही घर से निकल भागने पर बाध्य किया। किन्तु मैं जानना चाहूंगा कि उन दिनों तोल्सतोय को घेरे रहनेवाले लोगों में से कौन ऐसा था जिसका मानसिक स्वास्थ्य बिलकुल ठीक था। और, मेरी समझ में नहीं आता कि यदि वे उनकी पत्नी को पागल समझते थे तो सही दिमागवाले इन लोगों ने उनकी चिकित्सा के लिए, उनको अलग करने के लिए, आवश्यक कदम क्यों नहीं उठाये।

सुलेर ईमानदार था और वास्तव में वह सम्पत्ति से घृणा करता था। वह अराजकतावादी था—स्वभाव से ही, न कि शिक्षा से। उसे भी सोफिया आन्द्रियेवना प्रिय न थीं। तो भी १९०५-१९०६ के वर्षों में उनके व्यवहार का उसने इन शब्दों में वर्णन किया है :

"किसानों द्वारा यासनाया पोल्याना की सम्पत्ति पर धीरे-धीरे अधिकार कर लेने के चमत्कार को तोल्सतोय परिवार बिल्कुल ही पसन्द न करता था। स्वयं तोल्सतोय द्वारा लगाये गये देवदार-वन के वृक्षों का काटा जाना भी उन्हें पसन्द न था। मैं समझता हूं कि जंगल कट जाने के कारण तोल्सतोय को दुःख भी हुआ। यद्यपि इस सम्बंध में वह मौन थे तो भी उनके स्वाभाविक दुःख और पीड़ा ने सोफिया को वह काम करने पर बाध्य किया जिसके लिए वह जानती थीं कि उन्हें कलंकित किया जायगा। यह सब समझ सकने की बुद्धि उनमें पर्याप्त मात्रा में थी और उन्होंने इस पर विचार भी किया होगा। किन्तु हर व्यक्ति दुखी था और किसी में भी किसानों का प्रतिरोध करने का साहस नहीं था। अस्तु, यह काम सोफिया ने किया। इस बात के लिए मैं उनका आदर करता हूं। इन्हीं कुछ दिनों में मैं एक दिन यासनाया पोल्याना जाऊंगा और उनसे कहूंगा : "मैं आपका आदर करता हूं।" मेरा तो यह भी विश्वास है कि मौन रूप से तोल्सतोय ने उन्हें ऐसा करने पर संभवतः बाध्य भी किया हो। किन्तु यह सब तब तक महत्वहीन है, जब तक तोल्सतोय भले-चंगे हैं।"

मानव स्वभाव के बारे में मेरा जो ज्ञान है वह मुझे आश्वस्त करता है कि सुलेरजित्स्की का अनुमान सही है। कोई भी इस बात का दावा न करेगा कि तोल्सतोय का सम्पत्ति के अधिकार का विरोध झूठा था। किन्तु मुझे यह भी विश्वास है कि जंगल कटने से उन्हें सचमुच दुःख हुआ होगा। उन्होंने उसे अपने हाथों से लगाया था। वह उनका खुद का उपजाया हुआ था। और यहां पर उनके गहरे-दबे संस्कारों, जिनके प्रति उनका सदा विरोध-भाव रहा है और उनकी तर्क-बुद्धि में, कुछ संघर्ष आ गया था।

मैं इतना और कहूंगा : हम लोग अपूर्व सम्भावनाओं के युग में रह रहे हैं। आज भूमि और श्रम के औजारों के व्यक्तिगत स्वामित्व को मिटाने का साहसिक प्रयोग किया जा रहा है। और जैसा कि अब हम देख रहे हैं, नियति के व्यंग्य के कारण ही वह नीचतापूर्ण, पतित संस्कार

बढ़ रहा है और उसकी शक्ति सुदृढ़ हो रही है। वह ईमानदार व्यक्तियों को भ्रष्ट कर रहा है तथा उन्हें अपराधियों में परिवर्तित कर रहा है।

लेव तोल्सतोय एक महान व्यक्ति थे और इस बात से उनका चमत्कारपूर्ण व्यक्तित्व जरा भी धूमिल नहीं पड़ता कि कोई भी मानवीय बात उनसे परे न थी। न ही इस कारण वह हमारे स्तर पर आ जाते हैं। महान कलाकार यदि पापों में साधारण पापियों से बाजी मार ले जाते हैं तो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उनके लिए पूर्णतया उचित ही है। हमें ऐसे कुछ उदाहरण भी मिलते हैं।

और फिर—यह सब है किस बात के लिए ?

...एक असाधारण, अशांत मानव, एक महान कलाकार के साथ पचास कठिन वर्षों को निभाकर, एक साधारण नारी, एक ऐसी नारी, जो जीवन भर उनकी एक मात्र सच्ची मित्र रही थी, जो उनके काम में उनकी सक्रिय सहायक थी— अत्यधिक थक जाती है। यह सहज ही समझ में आनेवाली बात है।

साथ ही वृद्ध होने पर यह नारी यह देखकर कि महान लेखक, उसका पति, अब इस संसार में अधिक दिन नहीं रुकने वाला है, वह क्रोध सहित यह अनुभव करती है कि अब वह अकेली और परित्यक्त रह गयी है।

कहा जाता है कि पचास वर्षों से जिस स्थिति में वह थीं, उससे हटाये जाने के कारण सोफिया क्रोधवश संकुचित मनोवृत्तिवाले लोगों द्वारा लगायी गयी नैतिक सीमाओं का सम्मान नहीं करती थीं।

समय बीतते-बीतते यही क्रोध कुछ-कुछ पागलपन का रूप धारण कर लेता है।

और कुछ अधिक समय बाद, सभी के द्वारा परित्यक्त, वह एकान्त मृत्यु का आलिंगन करती हैं, और यदि कभी कोई उन्हें याद भी करता है तो सोत्साह उन पर कीचड़ उछालने के लिए ही।

बस इतना ही।

"लाल आर्कीव्स" के चौथे खंड में एक बहुत ही दिलचस्प लेख है। इसका शीर्षक है: "तोल्सतोय के अन्तिम दिन।" अन्य बातों के साथ उसमें पुलिस जनरल ल्वोव की एक रिपोर्ट है, जिसमें कहा गया है:

"कैप्टन सैवित्स्की से बातें करते हुए आन्द्रेई तोल्सतोय ने घोषित किया कि परिवार से, और विशेषत: अपनी पत्नी से, तोल्सतोय का अलग होना, डाक्टरों और तोल्सतोय की पुत्री अलेक्जेंद्रा पर चर्तकाव के दबाव का परिणाम है।"

और आगे:

"यहां-वहां सुनी बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि रोगी के पास तोल्सतोय परिवार के लोगों को जाने की आज्ञा न मिलना उनकी स्वास्थ्य की स्थिति के कारण नहीं था।"

एन्तोन चेखोव

एक बार उन्होंने मुझे अपने कुचुक-क्वाय गांव बुलाया जहां उनका भूमि का एक छोटा-सा अपना टुकड़ा और एक सफेद दुमंजिला मकान था। अपनी इस "जागीर" में मुझे घुमाते हुए वह बड़े उत्साह से कह रहे थे :

"अगर मेरे पास बहुत-सा धन होता तो यहां मैं गांव के बीमार शिक्षकों के लिए एक सैनिटोरियम बनवाता। उसकी इमारत ऐसी होती कि उसमें खूब रोशनी आती। समझे? बहुत सी रोशनी। छत खूब ऊंची होती और खिड़कियां खूब बड़ी-बड़ी। मैं बड़ा शानदार पुस्तकालय बनवाता। हर प्रकार के बाजे होते सैनिटोरियम में, मधुमक्खी-शाला भी होती। तरकारी बोने के लिए एक कछियारी होती। फलों का बागीचा होता। उसमें कृषि-शास्त्र, नक्षत्र-विद्या वगैरा पर भाषण होते। शिक्षकों को सब कुछ जानना चाहिए, भाई! सब कुछ।"

सहसा उन्होंने बातचीत बन्द कर दी, कुछ खांसे और तिरछी निगाहों से मुझे देखकर मुस्कराये। यह वही मीठी, सदय, मृदु मुस्कान थी जिसमें गजब का आकर्षण था और जिसे देखकर कोई भी उनके शब्दों को और भी अधिक ध्यान से सुनने पर बाध्य हो जाता।

"मेरे सपनों की बातें सुनकर तुम्हारा मन ऊबने लगता है क्या? मुझे इन मसलों पर बातें करना बड़ा अच्छा लगता है। काश, तुम्हें मालूम होता कि रूस के देहाती इलाकों को अच्छे, चतुर, तथा सुशिक्षित अध्यापकों की कितनी आवश्यकता है। अध्यापकों के लिए रूस में हमें असाधारण रूप से अच्छी परिस्थितियों का निर्माण करना है और वह भी जल्दी से जल्दी, क्योंकि हम समझते हैं कि लोगों को अगर

चौमुखी शिक्षा नहीं दी गयी तो राज्य उस भवन की तरह ढह जायगा जिसे कच्ची ईटों से निर्मित किया गया हो। अध्यापक को अभिनेता होना चाहिए, कलाकार होना चाहिए। उसे अपने काम से पागलों जैसा प्रेम होना चाहिए। लेकिन हमारे अध्यापक तो खोदाई करनेवाले मजदूरों जैसे अर्ध-शिक्षित व्यक्ति हैं, जो बच्चों को पढ़ाने के लिए गांव के मदरसे को उतनी ही अनिच्छा से रवाना होते हैं जितनी अनिच्छा से देश निकाला दिया जाने पर कोई घर से रवाना होता है। हमारे अध्यापक क्षुधा-पीड़ित हैं, कुचले हुए हैं। उन्हें सदा अपनी नौकरी छिन जाने का डर बना रहता है। सच पूछो तो अध्यापक को गांव का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति होना चाहिए, ऐसा जो किसानों के सभी प्रश्नों का उत्तर दे सके और उनमें अपनी शक्ति से आदर भावना का संचार कर सके, ऐसा जिसकी सब इज्जत करें, जिसे कोई डाट-फटकार न सके... मान-प्रतिष्ठा को कम न कर सके। अपने देश में सभी लोग उसकी बेइज्जती करते हैं— गांव का पुलिसवाला, साहूकार, पंडित, स्कूल का संरक्षक, गांव का मुखिया और वह अफसर जिसे स्कूल इन्स्पेक्टर कहा जाता है, लेकिन जो शिक्षा की हालतों में सुधार करने के बजाय केवल जिले के सरकुलरों को लागू करने में व्यस्त रहता है। जिस व्यक्ति को जनता को शिक्षित करने के लिए उत्तरदायी बनाया गया है उसे नगण्य पारिश्रमिक देना बेहूदगी है। यह बड़ी शर्मनाक बात है कि ऐसा व्यक्ति चिथड़े लपेटे घूमे, सीलन भरे टूटे-फूटे स्कूलों में ठंड से सिकुड़ता रहे, बिना धुआंरों के चूल्हों के पास बैठा जहरीले धुयें का शिकार बने, जब देखो तब सर्दी-जुकाम का मरीज बना रहे और तीस साल तक पहुंचते-पहुंचते रोगों का पुलिन्दा बन जाय — कण्ठमाल भी लो, गठिया भी लो, तपेदिक भी लो! यह हम लोगों के लिए बड़ी लज्जा की बात है। साल के नौ या दस महीने हमारे अध्यापक सन्यासियों का जीवन बिताते हैं। कोई उनसे बोलने वाला नहीं होता! किताबों और मनोरंजन के अभाव में एकान्त जीवन बिताते-बिताते वे ठस-दिमाग हो जाते हैं। और यदि वे कभी कुछ मित्रों को मिलने-जुलने, बोलने-बतलाने के लिए बुलाते हैं तो लोग समझते हैं कि वे सरकार-विरोधी हो गये हैं। 'सरकार-विरोधी' एक ऐसा शब्द है जिसे दिखा-दिखा

कर चालाक व्यक्ति मूर्खों को डराया करते हैं... यह सब बड़ा घृणास्पद है... एक महान और महत्वपूर्ण कार्य करनेवाले मानव का मखौल उड़ाना है। मैं तुम्हें बताऊं कि जब मैं किसी अध्यापक से मिलता हूं तो उसके दब्बूपन और उसकी बेहाली देखकर मैं हतप्रभ हो जाता हूं। मुझे ऐसा लगता है मानो मैं खुद किसी न किसी प्रकार उसकी इस दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार हूं—सच, मुझे ऐसा ही लगता है।"

वह एक क्षण के लिए रुके, फिर अपना हाथ आगे बढ़ाया और धीरे से बोले :

"देखा न ! कितना फूहड़ और गंदा देश है हमारा।"

वेदना की घनी छाया ने उनके नेत्रों को आच्छादित कर लिया और कनपटियों पर झुर्रियों का सुन्दर-सा जाल फैल गया जिससे उनकी दृष्टि और भी गम्भीर हो गयी। उन्होंने अपने इधर-उधर देखा, फिर अपना ही मजाक बनाने लगे :

"देखा न तुमने ! मैंने तो तुम्हें किसी उदारपन्थी समाचार-पत्र का सम्पादकीय लेख ही सुना डाला। अब आओ ! इतने धैर्य के लिए तुम्हें चाय भी पिला दूं... !"

वह बहुधा ऐसा ही करते। अभी-अभी वह उत्साह, गम्भीरता और सच्चाई से बातें करते होते और दूसरे ही क्षण अपनी और अपने शब्दों की खिल्ली उड़ाकर हंसने लगते। और इस सदय, वेदनापूर्ण हंसी के नीचे उस व्यक्ति का संशयवाद सहज ही अनुभव किया जा सकता था जो शब्दों तथा स्वप्नों का मूल्य जानता है। इस हंसी में उनकी आकर्षक विनयशीलता और मनोगत कोमलता भी रहती।

हम लोग चुपचाप घर की ओर लौट चले। नर्म हल्की धूप का सुहाना दिन था। सूर्य की सतरंगी किरणों में नर्तन करती लहरों की प्रतिध्वनि सुनी जा सकती थी। घाटी में कोई कुत्ता किसी बात पर अपनी प्रसन्नता का इजहार करता चिंचिया रहा था। चेखोव ने मेरा हाथ पकड़ा और खांसते हुए धीरे से बोले :

"बात बड़ी लज्जा और दुख की है लेकिन है सच—बहुत से लोग कुत्तों से ईर्ष्या करते हैं...।"

फिर हंसते हुए बोले :

"मैं आज जो कुछ भी कह रहा हूं उसमें बुढ़ापे की झलक है। शायद मैं बूढ़ा हो चला हूं।"

मैंने उन्हें कई बार यह कहते सुना :

"सुनो ! अभी-अभी एक अध्यापक आये हैं... वह बीमार हैं, उनकी पत्नी भी साथ है। क्या तुम उनके लिए कुछ कर सकते हो ? फिलहाल तो मैंने कुछ बन्दोबस्त कर दिया है..."

या :

"सुनो गोर्की ! एक अध्यापक तुमसे मिलना चाहता है। बेचारा खाट पकड़े है। बीमार है। क्या तुम उससे मिलने नहीं जाओगे ?"

अथवा :

"एक अध्यापिका है जिसने कुछ किताबें भेजने ..."

कभी-कभी यह "अध्यापक" मुझे उनके घर पर ही मिल जाता। आम तौर से अध्यापक अपनी दयनीय स्थिति पर खुद ही शर्माता हुआ कुर्सी के नोक पर बैठा, पसीने में तर, एक-एक शब्द को चुनता हुआ धारा-प्रवाह और "विद्वत्ता" से बोलने का प्रयत्न करता होता। अथवा, वह अत्यधिक शर्मीले व्यक्ति के समान बड़ी घनिष्टता का प्रदर्शन करता और सदा इस बात के लिए प्रयत्नशील रहता कि चेखोव उसे मूर्ख न समझने पायें। इसके लिए वह संभवत उसी समय दिमाग में उठे प्रश्नों की चेखोव पर झड़ी बांध देता।

एन्तोन पावलोविच बड़े ध्यान से उसकी उखड़ी-उखड़ी बातों को सुनते। उनके अवसादपूर्ण नेत्रों में एक मुस्कराहट नाच उठती, कनपटी पर झुर्रियां उठ आतीं और वह शांत, निर्मल तथा धीमी आवाज में बड़े सरल और स्पष्ट शब्दों का—जो जीवन के निकट हैं—प्रयोग करते हुए बोलना शुरू करते। अतिथि आश्वस्त हो जाता। बुद्धिमान प्रतीत होने का लोभ छोड़ देने पर उसकी चतुराई निखर आती और वह अधिक दिलचस्प बातें करने लगता।

मुझे ऐसे ही एक अध्यापक की आज भी याद है। लम्बा, दुबला-पतला। रोगियों जैसा पीला चेहरा। लम्बी नुकीली नाक; अफसोस के

साथ ठोड़ी की तरफ झुकी हुई। चेखोव के सामने बैठा, अपनी काली-काली आंखें उनके चेहरे पर गड़ाये, भर्रायी आवाज में वह बड़ी नीरसता से कह रहा था :

"शिक्षण-काल के इस सम्पूर्ण व्यवधान में जीवन की परिस्थितियों से इस प्रकार के जो प्रतिबिम्ब मेरे मन पर पड़े हैं, वे एकत्र होकर एक मानसिक गुत्थी बन गये हैं, जिसके फलस्वरूप अपने आसपास के संसार की ओर तटस्थ होकर देख सकने की न्यूनतम सम्भावना भी अब पूर्णतया लोप हो चुकी है। संसार तो, निस्संदेह, और कुछ नहीं एक भावना मात्र है जो..."

उसने दर्शन की भूमि पर पैर रखा ही था कि शराबी की भांति बर्फ पर फिसलने लगा।

"यह तो बताइये," चेखोव ने शान्त और दयापूर्ण भाव से पूछा, "आपके जिले में वह कौन शक्स है जो बच्चों को पीटता है ?"

अध्यापक कुर्सी पर से उछल पड़ा और क्रोध से हाथ हिलाता हुआ बोला :

"मैं ? कौन कहता है ? मैं ? कभी नहीं ! मैं **पीटता** हूं ?"

वह क्रोध से गुर्रा उठा।

"नाराज न होइये," मुस्कराते हुए चेखोव ने उसे शान्त करने के लिए कहा, "क्या मैंने यह कहा था कि **आप** पीटते हैं ? लेकिन मुझे याद है कि मैंने समाचार पत्र में पढ़ा था कि आपके जिले में कोई अध्यापक है जो बच्चों को..."

अध्यापक बैठ गया, चेहरे पर से पसीना पोछा और राहत की सांस ली। फिर भारी आवाज में बोला :

"बिलकुल ठीक ! है एक आदमी। मकारोव नाम है उसका ! कोई ताज्जुब नहीं। बड़ी बेढंगी बात है, लेकिन है समझ में आनेवाली। उसका ब्याह हो चुका है। चार बच्चे हैं। औरत बीमार है। खुद भी तपेदिक का मरीज है। तनखा सिर्फ बीस रूबल मिलती है... स्कूल तो समझिये काल कोठरी की तरह है। अध्यापक के लिए उसमें सिर्फ एक कमरा है। ऐसी हालतों में तो जरा सी गलती के लिए कोई फरिश्ते

को भी पीट बैठेगा। और आप यकीन मानिये कम्बख्त बच्चे फरिश्ते नहीं होते ...।"

और यही व्यक्ति जो क्षण भर पहले अपने विद्वत्तापूर्ण शब्दों से चेखोव को प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहा था अपनी नुकीली नाक को हिलाता हुआ अब वे शब्द बोलने लगा था जो सरल और भारी थे, जो पत्थरों की तरह थे, ऐसे शब्द जो रूसी गांवों के जीवन के भयानक सत्य पर विशद प्रकाश डाल रहे थे ...

चेखोव से विदा लेते समय शिक्षक ने अपने दोनों हाथों में उनके छोटे खुरदुरे हाथों की उंगलियां दबायीं और कहा :

"जब मैं आपसे मिलने चला था तो यह समझकर रवाना हुआ कि मैं किसी उच्च-अधिकारी से मिलने जा रहा हूं; मेरे पैर कांप रहे थे। मैं फूलकर सुतुर्मुग की तरह बन गया था। मैंने सोचा था कि आपको दिखा दूंगा कि मैं भी कुछ हूं। लेकिन अब मैं आपके पास से ऐसे जा रहा हूं जैसे अपने अच्छे नजदीकी मित्र से मिला हूं, जो सब कुछ जानता-समझता है। यह भी कितनी बड़ी चीज है—सब कुछ समझ लेना। धन्यवाद ! बहुत-बहुत धन्यवाद आपको ! मैं जा रहा हूं। अपने साथ मैं एक सुन्दर मूल्यवान विचार भी लिये जा रहा हूं। विचार है यह कि महान व्यक्ति ज्यादा सरल होते हैं। उनमें ज्यादा समझदारी होती है। जिन छोटे लोगों के बीच हम लोग रहते हैं उनसे कहीं अधिक गरीबों के निकट होते हैं। नमस्कार ! मैं आपको कभी नहीं भूलूंगा !"

उसकी नाक कुछ हिली, सुन्दर मुस्काराहट से उसके होंठ ढीले पड़े, और सहसा उसने कहा :

"बुरे लोग अभागे भी होते हैं, कम्बख्त कहीं के !"

वह चला गया। तो भी चेखव की आंखें उसके पीछे लगी रहीं। वह मुस्कराये और बोले : "आदमी नेक है। अब ज्यादा दिन अध्यापक न रह सकेगा !"

"क्यों ?"

"लोग उसे निकाल बाहर करेंगे ... पत्ता काट देंगे।"

फिर कुछ रुककर, धीमे, सरल स्वर में :

"रूस में ईमानदार आदमी हौवे जैसा होता है। उसका नाम लेकर औरतें छोटे बच्चों को डराती हैं।"

चेखोव की उपस्थिति में, मुझे लगाता है, सभी में अचेतन रूप से यह भावना पैदा हो जाती है कि वे सादगी से बातें करें, अधिक सच्चाई बरतें, अपने से ऊपर न उड़ें। अनेक बार मैंने देखा कि उनके सामने आने पर लोग किताबी शब्दों के भड़कीले लबादे को उतार फेंकते हैं, फैशनेबिल शब्दावली को तिलांजलि दे देते हैं और उन सभी छोटी-सस्ती बातों को — जिनसे रूसी अपने को यूरोपीय दिखाने का प्रयत्न करते हैं, अर्थात् जिनसे अपने को जंगलियों की तरह कौड़ियों तथा मछलियों के दांतों से सजाते हैं — छोड़ देते हैं। चेखोव को मछलियों के दांत और मुर्गों के पर पसन्द नहीं हैं। हर चीज जो भड़कीली, दिखावटी, बनावटी होती और जिसे लोग अपने को "रौबीला" बनाने के लिए धारण करते हैं, उन्हें नापसन्द थी। और मैंने देखा है कि जब भी वह इस प्रकार से सजे-धजे लोगों से मिलते थे तो यह भावना उन्हें वशीभूत कर लेती कि उनका वह भड़कीला और बोझिल ताम-झाम उतारकर उन्हें मुक्त करें — उस ताम-झाम को उतारकर जिसके कारण उनका स्वरूप और उनकी आत्मा विकृत हो गयी है। चेखोव ने जीवन भर आत्मा का जीवन जिया। वह कभी अपने को छोड़कर दूर नहीं भागे। सदा आंतरिक रूप से स्वतंत्र रहे और कभी भी इस बात की चिन्ता नहीं की कि कुछ लोग उनसे क्या चाहते हैं, अथवा अन्य मूर्ख लोग उनसे क्या मांग करते हैं। उन्हें 'उच्च' विषयों पर वार्तालाप का चाव नहीं था — उन विषयों पर जिन्हें रूसी लोग, अपनी आत्मा की सरलता के कारण, बहुत आकर्षक समझते हैं और यह भूल जाते हैं कि भविष्य के स्वप्निल जाल बुनना, विशेष रूप से तब जब इस वक्त पास में साबुत पैजामा भी न हो, बहुत बुद्धिमत्ता की बात नहीं है।

उनकी अपनी सरलता बड़ी सौन्दर्यमय थी। उन्हें वह सब अत्यन्त प्रिय था जो सरल था, सत्य था, अकलुष था। दूसरे लोगों को सरल बनाने का भी उनका अपना ही तरीका था।

उनसे मिलने के लिए एक बार सजी-धजी तीन महिलाएं आयीं।

अपने रेशमी सायों की सरसराहट और केशों में लगे इत्र की सुगन्धि से उन्होंने कमरे को पाट दिया। फिर वे बड़ी सभ्यता से चेखोव के सन्मुख आ बैठीं और राजनीति में गहरी दिलचस्पी का प्रदर्शन करती हुई उनसे "कुछ प्रश्न" पूछने लगीं।

"युद्ध का अन्त क्या होगा, एन्तोन पावलोविच ? आप क्या सोचते हैं ?"

एन्तोन पावलोविच थोड़ा खांसे, कुछ सोचने-विचारने के लिए जरा रुके, फिर धीमे, गम्भीर, सदय स्वर में बोले :

"युद्ध का अन्त, निस्सन्देह, शान्ति में होगा।"

"हां ! हां ! यह तो ठीक है ! लेकिन जीतेगा कौन ? यूनानी लोग या तुर्क ?"

"मेरी समझ से तो जो ज्यादा मजबूत होगा वही जीतेगा !"

"लेकिन इन दोनों में आप किसे ज्यादा मजबूत समझते हैं ?" महिलाओं में से एक ने पूछा।

"जिसे भी ज्यादा अच्छा खाना मिलता है और जो ज्यादा शिक्षित है।"

"अहा ! कैसा वाक्-चातुर्य है !" एक ने खिलकर कहा।

"लेकिन, आपको कौन ज्यादा पसन्द है — यूनानी या तुर्की ?"

एन्तोन पावलोविच ने उसकी ओर निरीह दृष्टि से देखा और होठों पर विनम्र, सौजन्यपूर्ण मुस्कराहट लिये हुए उत्तर दिया :

"मुझे तो फलों का मुरब्बा पसन्द है ? आपको ?"

"मुझे भी ! मुझे भी पसन्द है !" महिला चहकी।

"बड़ा अच्छा स्वाद होता है मुरब्बे का।" दूसरी ने गम्भीरता से कहा।

और तीनों ही फलों के मुरब्बों के बारे में बड़ी स्वच्छन्दता और उत्सुकता से बातें करने लगीं। अब उनके ज्ञान और कौशल की कोई थाह नहीं थी। उन्हें स्पष्ट ही इस बात पर प्रसन्नता थी कि तुर्कों या यूनानियों के बारे में गम्भीर दिलचस्पी का दिखावा करने के लिए, जिनके

बारे में अब तक कभी भी उन्होंने विचार न किया था, अब उन्हें अपने दिमाग पर बेजरूरत जोर न डालना पड़ेगा।

विदा लेते समय तीनों महिलाओं ने चेखोव से वादा किया :

"हम आपके लिए एक अमृतबान भरकर मुरब्बा भेजेंगी।"

जब वे चली गयीं तो मैंने कहा : "बड़ी दिलचस्प बात-चीत हुई।"

एन्तोन पावलोविच धीरे से हंसे।

"हर व्यक्ति को अपनी भाषा में बातें करनी चाहिएं।" उन्होंने कहा।

एक-दूसरे अवसर पर मैंने उनके कमरे में एक सुन्दर तरुण मजिस्ट्रेट को देखा। चेखोव के सामने खड़ा हुआ, अपने घुंघराले बालोंवाले सिर को पीछे की ओर झटककर, वह बड़े विश्वास पूर्ण स्वर में कह रहा था :

"अपनी 'अपराधी' कहानी में, चेखोव साहब, आपने मेरे सामने एक बहुत पेचीदी समस्या खड़ी कर दी है। डेनिस ग्रिगोरीयेव में मैं अगर जान-बूझकर अपराध करने की इच्छा मान लेता हूं तो यह मेरा कर्तव्य हो जाता है कि बिना हिचकिचाहट उसे जेल भेज दूं, क्योंकि समाज का हित इसी में है। लेकिन वह जंगली है। उसे अपने अपराध का कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए मुझे उस पर तरस आता है। किन्तु अगर यह मैं मान बैठता हूं कि वह जो कुछ करता है नासमझी के कारण और उस पर तरस खाने लगता हूं तो मैं समाज के सामने कैसे दावा कर सकता कैसे हूं कि डेनिस ग्रिगोरीयेव फिर पटरियों के वोल्ट न निकालेगा और रेल गाड़ियों को न उलटायेगा। यही है समस्या ? अब बताइए क्या किया जाय ?"

वह रुका, कुर्सी के सहारे लुढ़क गया, और प्रश्नसूचक नेत्रों से चेखोव के चेहरे को टटोलने लगा। उसकी वर्दी एकदम नयी थी और सामने लगे बटन उतने ही आत्म-विश्वास और विवेकहीनता से चमचमा रहे थे जितनी विवेकहीनता से उसके ताजे धुले चेहरे पर टकी आंखें।

"मैं न्यायाधीश होता," चेखोव ने कहा, "तो मैं डेनिस को रिहा कर देता।"

"लेकिन क्यों ? किस आधार पर ?"

"मैं उससे कहता : डेनिस भाई, तुम अभी तक सच्चे अपराधी नहीं बन पाये। चलो, भागो ! पहले जाकर कुछ सीखो।"

वकील हंसा। किन्तु शीघ्र ही उसने पुनः गम्भीर सन्तुलन स्थापित कर लिया और बोला :

"नहीं, आदरणीय एन्तोन पावलोविच जी, जो समस्या आपने उठायी है, उसका हल केवल समाज के हित में ही होना है, उस समाज के हित में जिसके जीवन और सम्पत्ति की रक्षा का भार मेरे कंधों पर है। माना कि डेनिस जंगली है, लेकिन वह अपराधी भी तो है। और यही सच्चाई है।"

"आपको ग्रामोफोन सुनना पसंद है ?" यकायक चेखोव ने पूछा।

"हां-हां ! बहुत !" युवक ने शीघ्र ही उत्तर दिया। "बहुत सुन्दर आविष्कार है।"

"लेकिन उसकी भांय-भांय मुझसे बर्दाश्त नहीं होती।" चेखोव ने दुखी मन से स्वीकार किया।

"क्यों नहीं ?"

"अरे जब देखो तो गाना-गाना-गाना ! कोई अनुभूति नहीं होती उसमें ! उसमें से निकलनेवाले सभी स्वर खोखले और जीवन-हीन होते हैं। क्या आपको फोटोग्राफी का भी शौक है ?"

वकील फोटोग्राफी का प्रेमी निकला। वह तुरन्त ही इसके बारे में बड़े उत्साह से बातें करने लगा। अब उस "सुन्दर आविष्कार" से इतनी समता होते हुए भी—जिसे चेखोव ने बड़ी चतुरता और बारीकी से ताड़ लिया था—ग्रामोफोन में वकील की किंचित दिलचस्पी नहीं थी। एक बार फिर उस वर्दी के नीचे एक जीवनमय और दिलचस्प मानव दिखायी देने लगा जो जीवन की जटिलताओं के प्रति उतना ही नौसिखिया था जितना शिकार के लिए पहले-पहल निकला कुत्ते का पिल्ला।

नवयुवक को दरवाजे तक विदा कर आने के बाद चेखोव ने बुद-बुदाते हुए कहा :

"हुं: ! इस जैसे छोकरे ही न्याय की कुर्सी पर बैठकर इन्सानों के भाग्य का निर्णय करते हैं।"

फिर कुछ ठहरकर : "मुद्दई हमेशा मछली के शिकार के शौकीन होते हैं, खास कर पर्च मछली के शिकार के।"

हर स्थान पर फूहड़पन को अनावरण करने की कला उनमें थी। यह ऐसी कला है जिस पर वही अधिकार प्राप्त कर सकता है जो जीवन के प्रति ऊंचे दायित्व का अनुभव करता हो, एक ऐसे दायित्व का जो मनुष्य में सादगी, सौन्दर्य और सामंजस्य देखने की भावना से उत्पन्न होता है। वह फूहड़पन के बड़े तीखे और निर्मम आलोचक थे।

किसी ने उनकी उपस्थिति में बताया कि एक लोकप्रिय पत्रिका के सम्पादक महोदय ऐसे व्यक्ति हैं जो लगातार दूसरों के प्रति प्यार और सहानुभूति की तो बड़ी-बड़ी बातें बघारा करते हैं, किन्तु उन्होंने अकारण ही एक रेलवे गार्ड को अपमानित किया। अपने मातहतों का अपमान करने की उनमें आदत है।

"यह तो स्वाभाविक है!" चेखोव ने गम्भीरता से कहा : "वह कुलीन वंश का व्यक्ति है, ऊंचे स्वभाव का... बड़े आदमियों के बच्चों के स्कूल में पढ़ा है, उसके पिता छाल के जूते पहनते थे, वह चमड़े का जूता पहनता है।"

जिस लहजे में ये शब्द कहे गये थे, उससे स्पष्ट था कि वह "कुलीन" को पुरानपंथी और हास्यासपद व्यक्ति समझते हैं।

एक पत्रकार के बारे में चेखोव ने कहा : "वह बड़ा योग्य व्यक्ति है। उसकी रचनाएं बड़ी मानवता-प्रेमी, बड़ी सुन्दर होती हैं... मीठी चाशनी में सराबोर। लोगों के सामने अपनी पत्नी को बेवकूफ कहता है। उसके नौकर सीलन भरे कमरे में सोते हैं। सब जुकाम-खांसी से पीड़ित हैं।"

"आपको अमुक व्यक्ति पसन्द है?"

पावलोविच खांसते हुए उत्तर देते हैं : "हां हां! बहुत अच्छा आदमी है! सब कुछ जानता है! पढ़ता भी बहुत है। मेरी तीन किताबें

ले गया था और आज तक नहीं लौटायीं। जरा भुलक्कड़ है। आज वह तुमसे कहेगा कि बहुत अच्छे आदमी हो; दूसरे दिन किसी दूसरे से कहेगा कि तुमने अपनी नौकरानी के पति के रेशमी काले मोजे—जिन पर नीली धारियां पड़ी हुई थीं—चुरा लिये हैं।"

किसी ने उनकी उपस्थिति में शिकायत की कि अमुक 'भारी-भरकम' पत्रिका के 'गम्भीर' हिस्से कठिन और उबानेवाले होते हैं।

"उन लेखों को मत पढ़ो," सम्पूर्ण विश्वास से एन्तोन ने सलाह दी, "वे सहकारी रचनाएं हैं ... ऐसा साहित्य जिसे सर्व श्री क्रुसनोव, चर्नोव और बेलोव (लाल, काला और सफेद) ने लिखा है। एक लेख लिखता है, दूसरा आलोचना करता है और तीसरा दोनों की मूढ़ताओं में सामंजस्य बैठाता है। यह डमी को साथ लेकर ताश खेलने की तरह है। लेकिन ये लोग अपने आप से यह नहीं पूछते कि पाठक को इस सब की क्या जरूरत है।"

एक बार एक महिला मिलने आयीं। स्वस्थ। देखने में अच्छी। भले कपड़े पहने हुए। आते ही वह 'चेखोवी तरीके' से बातें करने लगीं।

"एन्तोन पावलोविच! जीवन कितना नीरस है! सब कुछ कितना धुंधला — इन्सान, आकाश, सागर, यहां तक कि पुष्प भी मुझे धुंधले लगते हैं! किसी चीज की इच्छा नहीं होती — मेरे मन में पीड़ा हुआ करती है। यह एक प्रकार की बीमारी सी है ..."

एन्तोन ने उत्साहपूर्वक कहा: "यह एक बीमारी है! हां जरूर बीमारी है। लेटिन भाषा में इसे ढोंग-ज्वर कहते हैं।"

सौभाग्य से स्त्री लेटिन नहीं समझती थी या न समझने का बहाना कर रही थी।

"आलोचक घोड़-मक्खियों जैसे होते हैं।" उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी से कहा। "ये मक्खियां जमीन जोतनेवाले घोड़ों के रास्ते में रुकावट डालती रहती हैं। घोड़े की मांस-पेशियां सारंगी के तार जैसी तनी होती हैं। यकायक मक्खी घोड़े के पुट्ठे पर बैठ जाती है—भनभनाती हुई। वह डंक चुभाती है। घोड़े की खाल कांप उठती है और वह अपनी पूंछ फटकारता है। मक्खी क्यों भिनभिनाती है? शायद वह स्वयं नहीं जानती? बस

उसका स्वभाव चंचल होता है और वह अपने अस्तित्व का अनुभव कराना चाहती है : 'मैं जीवित हूं ! मैं जीवित हूं !' लगता है वह कह रही है : 'देखो मुझे भिनभिनाना आता है ! ऐसी कोई चीज नहीं जिस पर मैं न भिनभिना सकूं !' मैं अपनी कहानियों की समीक्षा गत पच्चीस वर्षों से पढ़ता आ रहा हूं। मुझे याद नहीं आता कि कभी किसी ने कोई लाभदायक बात कही है या कोई अच्छा सुझाव दिया है। सिर्फ एक समीक्षक ने मुझे प्रभावित किया। वह था स्काबिचेवस्की। उसने भविष्यवाणी की थी कि मैं किसी खंड्ड में शराब पिये हुए मरूंगा ..."

उनकी भूरी, गम्भीर आंखों में सदैव ही एक छिपा हुआ व्यंग्य चमकता रहता था। लेकिन अक्सर ये आंखें प्रखर और कटु हो जाया करतीं। ऐसे क्षणों में उनकी ध्वनि के दोस्ताना और कोमल लहजे में रुखाई आ जाती थी और तब मुझे लगता कि यह विनम्र दयापूर्ण व्यक्ति किसी भी विरोधी शक्ति के मुकाबले खड़ा हो सकता है, मजबूती से खड़ा हो सकता है, वह सिर नहीं झुकायेगा।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता कि दूसरों के प्रति उनके रवैये में निराशा की छाया है जो एक शान्त दुख और ठंडक का रूप ले चुकी हैं।

एक बार उन्होंने कहा : "रूसी भी अजीब इन्सान होता है। वह छलनी की तरह है, जिसमें कोई चीज नहीं टिकती। युवावस्था में वह हर चीज को, जो भी उसे मिली, रट लेता है और तीस वर्ष की आयु होते-होते इनका कुछ भी शेष नहीं रह जाता। कुछ रह जाता है तो बस कूड़े का ढेर। कोई अच्छा जीवन बिताना चाहता है, मानवीय जीवन, तो उसे काम करना चाहिए। प्रेम और विश्वास के साथ काम करना चाहिए। लेकिन इस देश में हम वही नहीं करते। जीवन में दो या तीन बढ़िया मकान बना चुकने के बाद, हमारे यहां का अच्छा राजगीर, जिन्दगी भर के लिए ताश खेलने बैठ जाता है या किसी नाट्यशाला के पीछे चक्कर काटता रहता है। किसी डाक्टर की प्रैक्टिस चल निकली कि बस वह विज्ञान से नाता तोड़ लेता है। "नोवोस्ती तेरापी" ("चिकित्सा-समाचार") के अलावा और कुछ नहीं पढ़ता। ४० वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते उसका दृढ़ विश्वास बन जाता है कि सब बीमा-

जब तक उम्र कम होती है फूहड़पन महत्वहीन व दिलचस्प लगता है। लेकिन धीरे-धीरे यह फूहड़पन व्यक्ति को घेर लेता है। चारकोल की जहरीली गैस की तरह इसका भूरा धुंआ उसके दिमाग और खून में फैल जाता है। वह व्यक्ति जंग खाये हुए सराय के ऐसे पुराने चिन्ह जैसा हो जाता है, जिस पर कुछ लिखा तो मालूम होता है, किन्तु जाना नहीं जा सकता कि क्या लिखा है।

चेखोव शुरू से ही फूहड़पन के भूरे दलदल के गंदे चहबच्चों को इंगित करने लगे थे। उनकी 'मजाकिया' कहानियों को ध्यान पूर्वक पढ़ कर ही समझा जा सकता है कि मजाकिया विवरण और स्थितियों के पीछे लेखक ने कितनी निर्ममता देखी है और उसे किस प्रकार हास्य के नीचे ढंक दिया है।

उनमें एक प्रकार की अकलुष विनयशीलता थी। वह कभी लोगों से चुनौती देकर या जोर से चिल्लाकर नहीं कह सकते थे : "भलेमानुसो —कुछ तो नेक बनो?" उन्हें यह भ्रम था कि लोग अधिक नेक बनने की आवश्यकता का स्वयं अनुभव करने लगेगें। जीवन में जो कुछ भी गंदा है, असुन्दर है, वह उन्हें अप्रिय था। जीवन की असुन्दरता को उन्होंने कवि की आदर्श भाषा में लिखा है। और इसे लिखते समय उनके होंठों पर भली-सी मुस्कराहट बनी रहती थी। कहानियों के सुन्दर आवरण के नीचे कटु निन्दा का भाव कठिनाई से ही दीख पड़ता है।

'अलबियॉन की एक पुत्री' को पढ़कर जनता हंस पड़ती है। वह सम्भवतः कहानी के निराश्रय पात्र के प्रति—जो सबसे अजान और अबोध है—एक खाते-पीते व्यक्ति के घृणास्पद व्यंग्य को नहीं समझ पाती। चेखोव की सभी हास्य कहानियों में मुझे स्वच्छ, सच्चे मानव हृदय की पीड़ा-भरी उसासें सुनाई पड़ती हैं। ये उसासें उन मानवों के प्रति हैं जो अपने आत्म-सम्मान की रक्षा नहीं कर पाते और बिना संघर्ष-पूर्ण प्रतिरोध के अपने आपको पाशविक बल के हाथों में सुपुर्द कर देते हैं, जो दासों की तरह रहते हैं और जिन्हें पेट-पूजा की आवश्यकता के अलावा और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं महसूस होती, जिन्हें सिवा शक्ति-सम्पन्न और धृष्ट द्वारा पिटने के भय के और भय नहीं सताता।

जीवन की छोटी-छोटी बातों के दुखान्त स्वरूप को चेखोव से अधिक स्पष्टता से कोई दूसरा स्वतः न समझ पाता था। उनसे पूर्व दूसरा कोई लेखक इन्सानों के सामने मध्यवर्गी जीवन की गन्दी अराजकता की लज्जाजनक और दयनीय तस्वीर को इतने निर्मम और स्पष्ट रूप में नहीं प्रस्तुत कर सका था।

वह फूहड़पन के शत्रु थे। आजीवन वह उसके विरुद्ध संघर्ष करते रहे, उसके प्रति घृणा जगाते रहे और अपनी अथक निष्पक्ष कलम से उसे उघारते रहे। फूहड़पन के विष को उन्होंने वहां से भी अनावरण किया जहां वह पहले-पहल देखने में बहुत व्यवस्थित, सुविधाजनक और बहुत शानदार लगता था। यह फूहड़पन बदले में उन्हीं पर एक भद्दे तरीके से आ पड़ा। उनका मृत शरीर—कवि का शरीर—घोंघे ढोने-वाले रेल के डिब्बे में रखा गया।

यह गन्दा, हरा डिब्बा मुझे अपने थके हुए शत्रु पर फूहड़पन का विजयपूर्ण कुटिल अट्टहास लगा है। सस्ते बाजारू अखबारों में छपे असंख्य संस्मरण मुझे झूठा शोक लगते हैं—इनके पीछे मुझे उसी फूहड़-पन की निर्मम, बदबूदार सांस का अनुभव होता है जो अपने शत्रु की मृत्यु पर छिपे-छिपे खुशी मनाता है।

चेखोव की किताबों को पढ़ने पर ऐसा लगता है मानो शरद् ऋतु के अन्तिम काल का दुखद दिन हो, जब वायु निर्मल होती है, आकाश की पृष्ठभूमि में नग्न वृक्ष भले लगते हैं, मकान एक साथ इकट्ठा कर दिये मालूम होते हैं और लोग धूमिल तथा थके मालूम होते हैं। हर चीज बड़ी विचित्र, एकाकी, गतिहीन और शक्तिहीन लगती है। उनमें अदृश्य दूरियां—नीली और रिक्त दूरियां हैं—जो पीले आकाश को छूती हैं, और अध-जमे कीचड़ पर तुषारापात करती हैं। किन्तु शरद ऋतु की धूप की तरह लेखक का मस्तिष्क, सुपरिचित रास्तों, टेढ़ी-मेढ़ी गलियों, गंदे घरों को प्रकाशवान करता है—जिनमें दयनीय "छोटे" लोग निष्क्रियता और आलस्य में अपना जीवन काटते हैं। उनके घर एक

निरर्थक, आलस्यपूर्ण कोलाहल से पूर्ण रहते हैं। वह "प्रियतमा" है। बिलकुल भूरे चूहे की तरह। अधीर, मृदु, नम्र नारी। वह अगाध प्यार करती है और उसका प्यार पूर्णतः दासियों की तरह है। उसके गाल पर चांटा भी मार दो तो वह — दब्बू दासी — रोने का साहस न करेगी। उसके निकट ही "तीन बहनों" की ओल्गा खड़ी है। उसमें भी अगाध प्यार की क्षमता है। वह अपने निकम्मे भाई की कलंकिनी फूहड़ पत्नी की भूकों के समक्ष धैर्यपूर्वक झुकती है। उसकी बहनों का जीवन उसी के सामने टूटता है। कुछ कर पाने में असमर्थ, वह केवल रोती है और उसके भीतर से एक भी जीवित और मजबूत शब्द फूहड़पन के विरुद्ध नहीं निकलता।

और वह है आंसू-भरे रैनेवस्काया और वे हैं 'चेरी आरचार्ड' के पहले मालिक लोग—बच्चों की तरह स्वार्थी और बूढ़ों की तरह चिप-चिपे। वे जिन्हें कभी का मर जाना चाहिये था। वे गुर्राते और चीखते हैं। उनके आस-पास जो कुछ होता है उसके प्रति वे अंधे हैं। जीवन में फिर से कुछ न कर सकने योग्य निष्क्रिय लोग और कुछ भी नहीं समझ पाते। निकम्मा विद्यार्थी त्रोफीमोव बड़े भड़कीले शब्दों में काम करने की आवश्यकता बताता है और अपना समय वार्या पर वेहूदी तानेबाजी कसने और उनका मजा लेने में व्यर्थ गंवाता है। और वार्या? वह इन्हीं निकम्मों के कल्याण के लिए व्यस्त रहती है।

"तीन बहनों" का नायक वर्शीनिन तीन सौ वर्षों में अच्छे जीवन के आने का स्वप्न देखता है। वह साफ-साफ नहीं देख पाता कि उसके आस-पास हर चीज छिन्न-भिन्न हो रही है। उसकी आंखों के सामने ही दयनीय बैरन तुसेनबाक की हत्या के लिए मूर्खता और निष्क्रियतापूर्ण वातावरण में सोलियानी तैयार हो गया है।

पाठक के सामने से प्यार के, अपनी ही मूढ़ता और आलस्य के, भौतिक वासनाओं के, लोभ के, दासों का लम्बा जुलूस गुजरता है। जीवन के प्रति अदृश्य भय के ये गुलाम अदृष्ट चिन्ता से हैरान रहते हैं और भविष्य के विषय में वातावरण को और अस्पष्ट बड़बड़ाहट से भरते रहते हैं। वर्तमान में उनकी कोई आवश्यकता नहीं है।

कभी सहसा गोली की आवाज सुनाई देती है। और यह लो — इवानोव या त्रेपलेव की जीवन-लीला समाप्त हुई।

इनमें से अनेक दो सौ वर्षों के भीतर जीवन के वैभवपूर्ण हो जाने के सुन्दर सपने देखते हैं। कोई भी उनसे यह मामूली-सा सवाल पूछने की चिन्ता नहीं करता कि यदि हम कुछ करेंगे नहीं, केवल सपने देखेंगे, तो जीवन को वैभवपूर्ण बनायेगा कौन ?

फिर इस निष्क्रिय भीड़ के सामने से एक महान व्यक्ति गुजरा। अपने देश के इन उदास निवासियों को देखते हुए, अपनी अवसादपूर्ण मुस्कराहट के बीच, निन्दा किन्तु सहृदयता से उसने कहा :

"कैसा निष्क्रिय है तुम्हारा जीवन !" उसके चेहरे पर और मन में गहरा दुख था और ध्वनि में असाधारण ईमानदारी।

बुखार आते पांच दिन बीत गये, लेकिन आराम की इच्छा नहीं है। गीली धरती पर फिनिश वर्षा का छिड़काव हो रहा है। फोर्ट ईनो की बन्दूकें लगातार गड़गड़ा रही हैं। रात में 'सर्च-लाइट' की लम्बी जिह्वा बादलों का मुंह सहलाती है। यह भयंकर दृश्य लगातार उस पैशाचिक क्रूरता की याद दिलाता है जिसे युद्ध कहा जाता है।

मैं चेखोव की पुस्तकें पढ़ता हूं। यदि वह दस वर्ष पूर्व न मर गये होते तो मनुष्य के प्रति घृणा का विष देकर संभवतः युद्ध ने उनकी हत्या कर दी होती। मुझे उनकी शव-यात्रा की याद आयी।

उस लेखक की अर्थी, जिसे मास्कोवाले "स्नेह से प्यार" करते हैं, एक हरे डिब्बे में लायी गयी जिसके दरवाजे पर बड़े अक्षरों में लिखा था "घोंघे"। स्टेशन पर एकत्र भीड़ का एक हिस्सा जनरल केलर की अर्थी के पीछे चलने लगा, जो अभी-अभी मंचूरिया से आयी थी। उस भीड़ को आश्चर्य था कि चेखोव के ताबूत को फौजी बाजे के साथ क्यों ले जाया जा रहा है। जब भूल का पता चला तो कुछ खुशमिजाज लोग हंसने लगे। चेखोव की अर्थी के पीछे सौ से अधिक व्यक्ति नहीं थे। मुझे दो वकीलों की याद है, जो दूल्हों की तरह नये जूते और सुन्दर टाइयां पहने

थे। उनके पीछे चलते हुए मैंने उनमें से एक, वी. ए. मकलाकोव, को कुत्तों की चतुरता के सम्बंध में बातें करते सुना। और दूसरा, जिसे मैं न जानता था, अपनी ग्रीष्म-कुटीर और उसको घेरे हुए सौन्दर्य की सुविधाओं के विषय में चर्चा कर रहा था। छाता लिए कोई स्त्री मोटे फ्रेम का चश्मा लगाये नीले रंग की वेष-भूषा में सुसज्जित एक बूढ़े को आश्वासन दे रही थी :

"ओह, वह बड़े चतुर थे, बड़े भोले..."

बूढ़े व्यक्ति को बहुत जोर की खांसी आयी। उस दिन बहुत गर्मी थी। धूल भी बहुत थी। जुलूस के आगे-आगे एक बलिष्ट सफेद घोड़े पर एक बलवान पुलिस अफसर था। उस महान और कल्पनाशील कलाकार की स्मृति के लिए यह सब बहुत फूहड़ और अत्यधिक अनुपयुक्त था।

चेखोव ने वृद्ध ए. एस. सुवोरिन को एक पत्र में लिखा था :

"अस्तित्व की रक्षा के लिए एक-रस संघर्ष से अधिक उदासीनतापूर्ण और कवित्वहीन और कुछ नहीं है। वह जिन्दगी की खुशी को विनष्ट कर देता है और उसके प्रति उदासीनता ला देता है।"

ये शब्द बिलकुल ही रूसी भाव को व्यक्त करते हैं। मेरी दृष्टि से चेखोव के उपयुक्त नहीं हैं। रूस में, जहां सब चीजों का इतना बाहुल्य है, किन्तु जहां लोगों को काम से प्रेम नहीं है, अधिकांश लोग इसी प्रकार सोचते हैं। वे शक्ति के प्रशंसक हैं, किन्तु वास्तव में उसमें विश्वास नहीं करते। रूस में 'जैक-लन्दन' के समान सक्रिय भाव को व्यक्त करनेवाला लेखक मिलना असम्भव है। उसकी किताबें रूस में सर्व-प्रिय हैं। किन्तु मुझे यह देखने को नहीं मिला कि उन्हें पढ़कर रूसियों में सक्रिय होने का उत्साह पैदा हुआ हो। ये पुस्तकें केवल उनकी कल्पना-शक्ति को उत्तेजित करती हैं। किन्तु चेखोव इन अर्थों में बहुत अधिक रूसी न थे। युवावस्था के प्रारम्भ से ही 'जीवन के संघर्ष' को, खुशियों से दूर और रोज ही रोटी के टुकड़े की चिन्ता के लिए, एक-रसता से चलाना था। अपने लिए और दूसरों के लिए उन्हें रोटी के एक बड़े टुकड़े की जरूरत

थी। खुशियों से दूर इन चिन्ताओं में ही उन्हें अपने यौवन की तमाम शक्ति लगा देनी पड़ी। आश्चर्य है कि वह हास्य-भाव को कैसे बनाये रख सके। जीवन को वह पर्याप्त भोजन जुटाने और शान्ति कायम रखने के लिए अथक प्रयास से अधिक और कुछ न जान सके। जीवन के महान नाटक और उसकी अनेक दुखान्त स्मृतियां उनके लिए साधारण जीवन की मोटी तह से ढंकी हुई थीं और जब वह दूसरों के लिए रोटी कमाने की चिन्ता से मुक्त हुए तभी वह इन नाटकों की सच्चाई के प्रति आकर्षित हो सके।

चेखोव के अतिरिक्त मुझे कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जो इतनी गहराई और स्पष्टता से संस्कृति का आधार श्रम के महत्व को मानता हो। उनकी यह भावना उनके घरेलू जीवन की छोटी-छोटी बातों में, घर के लिए चीजों का चुनाव करने में, वस्तुओं के प्रति प्रेम में, व्यक्त होती थी। यद्यपि यह भावना इन वस्तुओं को संचित करने की इच्छा से कलुषित न हुई थी, तो भी मानव की निर्माण भावना की उपज के रूप में उनकी प्रशंसा करते वह कभी नहीं थकते थे। उन्हें भवन बनाने, बाग लगाने, धरती को सजाने का शौक था—उन्हें श्रम की कविता का अनुभव होता था। उन्हें अपने ही लगाये फलों के वृक्षों और फूलों की क्यारियों को विकसित होते देखने में बड़ा आनंद आता था। ओत्का में अपना भवन बनाते समय, अनेक चिन्ताओं के बीच, उन्होंने कहा :

"हर व्यक्ति अपनी ही धरती के टुकड़े पर अपनी योग्यता भर निर्माण का प्रयत्न करे तो यह दुनिया कितनी सुन्दर हो जाय।"

मैं उस समय अपने नाटक "वासिली बुसलायेव" को लिखने में व्यस्त था। मैंने उन्हें वासिली के ये दम्भपूर्ण शब्द सुनाये :

होता बल और भी अधिक यदि भुजाओं में
अन्तर की श्वासों से हिम भी पिघला देता,
विश्व की सीमायें पद-तल मर्दित कर, भूमि को जोत लेता
गगन चुम्बी अट्टालिका—आच्छादित नगर बसाता मैं,

देवालय धर्मार्थ, बाटिकायें जनहितार्थ, लगाता मैं !
खिल उठता लज्जानत, यौवन-भार-श्लथ रूप धरती का !
बांधता उसे मैं लौह भुजपाश में — पत्नी के समान,
हृदय से लगाकर ही रखता सदा रूपसि को !
बाहों में उठाकर ले जाता फिर, रखता चरणों में सर्वशक्तिमान के,
"देखो प्रभु, देखो," मैं कहता, "इस धरती को,
देखो, रूपगर्विता, लावण्यमयी धरती को !
तुमने तो फेंका था पत्थर सा उठाकर इसे,
मैंने अब बहुमूल्य रत्न है बना दिया !
देखो, अब देखो इसे, देखो मुदित मन
सूर्य के प्रकाश में नरगिस सी खिलती है !
अर्पित कर दूं क्या चरणों में तुम्हारे इसे ?
नहीं, नहीं ! क्षमा करो ! मुझको यह प्रिय है !"

ये पंक्तियां चेखोव को बहुत अच्छी लगीं। खांसते हुए मुझसे और डॉक्टर ए. एन. अलेक्सिन से कहा :

"बहुत सुन्दर... बहुत सुन्दर... सच्ची... मानवीय ... सभी 'दर्शनों का अर्थ' यहीं पर केन्द्रित है।" अपने सिर को दृढ़ता से हिलाते हुए बोले :

"दुनिया में इन्सान रहता है और वह इसे रहने लायक बनाकर छोड़ेगा।" उन्होंने दोहराया : "जरूर बनायेगा।"

खिड़की के बाहर देखते हुए उन्होंने ये पंक्तियां मुझ से फिर सुनीं।

"अंतिम दो पंक्तियां बेकार हैं... विद्रोह की परिचायक... निरर्थक।"

अपने साहित्य-सम्बंधी कार्यों के विषय में वह बहुत थोड़ी और अनमने ढंग से बातें करते थे। यह मैंने उनसे उसी अनूठी भक्ति से कह दिया था जिस भक्ति से वह तोल्सतोय के सम्बंध में बोलते थे। बहुत

ही कम अवसरों पर, जब वह भावावेश में होते, तभी अपनी कहानियों की रूपरेखा बताते थे — सदा ही वह हास्य-कहानी होती थी।

"मैं कहता हूं मैं एक अध्यापिका की कहानी लिखने जा रहा हूं — वह अनीश्वरवादी है, डारविन की भक्त। वह लोगों के पूर्वग्रहों और अंध-विश्वासों के विरुद्ध संघर्ष करने की आवश्यकता में विश्वास करती है और स्वयं आधी रात स्नान-गृह में जाकर काली बिल्ली को इच्छित-हड्डी पाने के लिए पीड़ा पहुंचाती है, जिससे वह अपने प्रिय व्यक्ति के प्यार को उकसा सके और उसे अपनी ओर आकर्षित कर सके। क्या तुम जानते हो कि इस प्रकार की एक हड्डी है ..."

अपने नाटकों को वह "मनोरंजक" बताते थे और उन्हें विश्वास था कि वह सचमुच ही "मनोरंजक नाटक" लिखते हैं। निस्संदेह, सावा मोरोजोव चेखोव के ही शब्दों को दोहरा रहा था, जब उसने निर्द्वंद घोषित किया : "चेखोव के नाटकों को गीत-काव्य के सुखांत रूप में प्रदर्शित करना चाहिए।"

आम तौर पर वह साहित्य के प्रति अधिक ध्यान देते थे, और "नौसिखियों" के प्रति तो वह विशिष्ट रूप से आकर्षित थे। उन्होंने अनूठे धीरज के साथ बी. लजारेव्स्की, एन. ओलीगेर और अनेक लोगों की लम्बी पांडुलिपियां पढ़ी थीं।

वह कहते थे : "हमें और लेखकों की आवश्यकता है। हमारे दैनिक जीवन के लिए, 'चुनिंदा' व्यक्तियों के लिए भी, साहित्य एक नयी वस्तु है। नार्वे में प्रति दो सौ छब्बीस व्यक्तियों में एक लेखक है, और हमारे यहां दस लाख में एक।"

अपनी बीमारी के कारण वह कभी-कभी अपने में ही आत्मसात हो जाते या कहिए उनमें बाहरी लोगों से बचने का भाव आ जाता। ऐसे अवसरों पर उनकी स्थिति बड़ी ही चिंतनीय हो जाती और उनके साथ रहना मुश्किल हो जाता।

एक दिन सोफे पर लेटे हुए, सूखी खांसी के बीच, थर्मामीटर से खेलते हुए उन्होंने कहा :

"सिर्फ मरने के लिए जीने में कुछ मजा नहीं। लेकिन यह जानते हुए जीना कि तुम वक्त से पहले मर जाओगे निरी बेवकूफी है।"

एक दूसरे अवसर पर, खुली खिड़की के सामने बैठे हुए, दूर समुद्र पर निगाहें जमाये, वह यकायक धीरे-धीरे बोले :

"हमें अच्छे मौसम, अच्छी फसल, अच्छे प्यार की कल्पना में, धनी हो जाने या पुलिस अफसर बन जाने की आशा में, जीने की आदत हो गयी है। लेकिन मैंने किसी को ज्यादा अक्लमन्द बनने के लिए उत्सुक नहीं देखा। हम अपने से कहते हैं : नये जार का राज ज्यादा अच्छा होगा और दो सौ वर्षों बाद वह और अच्छा हो जायगा। लेकिन कोई यह कोशिश नहीं करता कि ये अच्छे दिन कल ही आ जायें। समूचे तौर पर, जीवन दिन पर दिन और पेचीदा होता जाता है और अपनी ही स्वेच्छा से चलता है। और, लोग अधिक से अधिक मूर्ख होते जाते हैं, जीवन से और अधिक अलग होते जाते हैं।"

कुछ ठहरकर, माथे पर सिकुड़नें डालते हुए, उन्होंने कहा :

"...किसी धार्मिक जुलूस में लंगड़े-लूले भिखारियों की तरह।"

वह डाक्टर थे। और डाक्टरों की बीमारी उनके मरीजों से अधिक कठिन होती है। मरीज केवल अनुभव करते हैं, किन्तु डाक्टर अनुभव करने के साथ ही, अपने शरीर पर बीमारी के विनष्टकारी प्रभाव को भी अच्छी तरह समझते हैं। यह एक ऐसी बात है, जिसमें ज्ञान के कारण मृत्यु अधिक निकट आती है।

उनकी आंखें बहुत सुन्दर थीं। जब वह हंसते थे तो उनकी आंखों में नारी-सुलभ सौंदर्य आ जाता था; कुछ-कुछ कोमल, मृदु। उनकी ध्वनि-रहित हंसी में कुछ अपना विशिष्ट आकर्षण था। लगता था जैसे सचमुच अपनी हंसी का आनंद ले रहे हैं। यदि कहा जा सके

तो मैं कहूंगा कि इतनी "पवित्र" हंसी वाले किसी और व्यक्ति से मैं जीवन में नहीं मिला।

अशोभन कहानियों पर वह कभी नहीं हंसे।

एक बार उन्होंने अपनी प्रफुल्ल, दयापूर्ण मुस्कराहट के साथ मुझसे कहा :

"तुम जानते हो कि तोल्सतोय तुम्हारे प्रति अपने व्यवहार में इतने चंचल क्यों हैं ? वह ईर्ष्यालु हैं। उन्हें भय है कि सुलेर उनसे अधिक तुम्हें चाहता है। सचमुच वह ईर्ष्यालु हैं। उन्होंने मुझसे कल कहा : 'मैं नहीं जानता कि क्यों मैं गोर्की से अपनेपन से बातें नहीं कर पाता। मुझे सुलेर का उसके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। यह सुलेर के लिए अच्छा नहीं है। गोर्की धूर्त है। वह तो एक धार्मिक विद्यार्थी की तरह है, जिसे वैराग्य की प्रतिज्ञा लेने के लिए बाध्य किया गया है—उसे सारे विश्व से शिकायत है। उसकी आत्मा भेदियों की सी है—वह कहीं दूर से कनान की धरती पर आ गया है, इस धरती से वह अपरिचित है। वह चारों ओर देखता रहता है, हर चीज को लिखता रहता है— जैसे इस सब के विषय में अपने किसी देवता को रिपोर्ट देगा। और उसका देवता एक दैत्य है—जंगल का पिशाच या पानी का पिशाच ! ऐसा, जिसे देखकर देहात की स्त्रियां डरती हैं..."

यह बताते समय चेखोव तब तक हंसते रहे, जब तक उनके मुंह से चीख न निकल पड़ी। फिर अपने आंसू पोंछते हुए बोले :

"मैंने कहा : 'गोर्की भला आदमी है।' लेकिन उन्होंने कहा : 'नहीं, नहीं! यह मुझे न बताओ। उसकी नाक बत्तख की चोंच की तरह है। सिर्फ अभागों और बुरे स्वभाव के लोगों की ही नाकें ऐसी होती हैं। उसे औरतें भी पसंद नहीं करतीं। और, औरतें कुत्तों की तरह होती हैं—वे भले आदमी को पहचान लेती हैं। सुलेर—उसमें निस्स्वार्थ प्रेम की बहुमूल्य देन है। इस मामले में वह प्रतिभावान है। जिसमें प्यार कर सकने की सामर्थ्य है वह कुछ भी कर सकने में समर्थ है।'"

कुछ ठहरकर चेखोव बोले :

"हां, बुड्ढा ईर्ष्यालु है... लेकिन है न बढ़िया आदमी ?"

जब वह तोल्सतोय के सम्बंध में बातें करते तो सदा ही एक अदृश्य मुस्कराहट उनकी आंखों में होती, जो एक साथ ही सुकोमल भी होती और लजीली भी। वह अपनी आवाज धीमी कर लेते, मानो किसी रहस्यपूर्ण और कोमल वस्तु के बारे में बोल रहे हों, ऐसी चीज के बारे में जिसे प्यार और स्नेह से बरतना चाहिए।

वह सदा ही इस बात पर दुःख प्रकट किया करते थे कि तोल्सतोय की बगल में कोई इकरमान न रहता था, जो बूढ़े सन्यासी की प्रखर, अप्रत्याशित और बहुधा अंतर्विरोधी बातों को लिखता जाता।

"तुम्हें यह करना चाहिए।" उन्होंने सुलेर को आश्वासन दिया। "तोल्सतोय तुम्हें इतना चाहते हैं, तुमसे इतनी बातें करते हैं और इतनी विचित्र बातें बताते हैं।"

सुलेर के विषय में चेखोव ने मुझसे कहा :

"बड़ा ज्ञानी है, लेकिन है बच्चा।"

बड़े पते की बात कही थी।

मैंने एक बार तोल्सतोय को चेखोव की एक कहानी—शायद वह "प्रियतमा" थी—की प्रशंसा करते हुए सुना।

"यह किसी धर्मभीरु कुमारी द्वारा बुने गये फीते की तरह है।" उन्होंने कहा। "पुराने जमाने में फीता बुननेवाली लड़कियां हुआ करती थीं, जो जीवन भर नमूनों पर अपने सुख के सपनों को बुना करती थीं। वे अपने सब से प्रिय सपनों को बुनती थीं। उनके फीते प्यार की अस्पष्ट किन्तु पवित्र आकांक्षाओं से भरे पूरे होते थे।"

तोल्सतोय की ध्वनि में सच्चे भाव थे और आंखों में आंसू।

किन्तु उस दिन चेखोव को बुखार था और वह अपना सिर झुकाये बैठे थे। उनके गालों पर लाली के स्पष्ट धब्बे थे। वह अपने चश्मे को साफ कर रहे थे। थोड़ी देर तक वह कुछ न बोले। फिर निश्वास भरते हुए धीरे से और अचकचेपन से कहा :

"उन में छापे की गलतियां हैं।"

चेखोव के विषय में बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किन्तु इसके लिए विशद विवरण की आवश्यकता है। और यह मैं बहुत अच्छी तरह नहीं कर सकता। उनके बारे में तो वैसे ही लिखा जाना चाहिए जैसे उन्होंने अपनी कहानी "स्तपी" लिखी—सुगन्धिपूर्ण खुली हवा की तरह, बिलकुल रूसी कहानी, विचारपूर्ण और उत्सुकता से भरी हुई। अपने ही लिए लिखी गयी कहानी।

उनकी तरह के इंसान को याद करना अच्छा होता है। यह खुशियों के यकायक आ जाने की तरह है। यह जीवन को फिर से स्पष्ट अर्थ प्रदान करना है।

इन्सान विश्व का केन्द्र-बिन्दु है।

और तुम पूछते हो, उनकी बुराइयां, उनकी कमजोरियां ?

हम सब अपने साथी इन्सानों के प्यार के भूखे हैं और जब भूखे होते हैं तो कच्ची रोटी भी अच्छी लगती है।
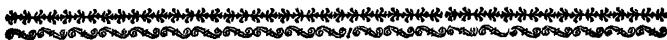
व्लादिमीर कोरोलैंको और उनका युग

मई की एक आलस्यपूर्ण सुबह। हवा तेज थी। मैं जारत्सिन से चल पडा। सितम्बर तक निझनी-नोवगोरोद पहुचने का इरादा था।

रास्ते का कुछ हिस्सा मैंने माल-गाडियो के डिब्बो के बीच, गार्डों के साथ, बफर पर बैठकर तय किया। किन्तु अधिकाश समय गावो मे और मठो मे, अपनी रोटी कमाते हुए, पैदल काटा। ताम्बोव और र्याजान के लिए मैं डॉन प्रदेश से गुजरा। र्याजान से ओका नदी के किनारे-किनारे मॉस्को की दिशा मे घूमा और तोल्सतोय से मिलने के लिए खामोवनिकी गया। सोफिया ने मुझे बताया कि वह ओइत्सको-सर्गीयेवस्काया मठ मे गये है। वह मुझे किताबो के बडलो से भरे एक शेड के सहन मे मिली थी। सोफिया मुझे रसोई तक ले गयी और प्यार से कॉफी का एक गिलास और एक सफेद रोटी दी और बातो-बातो मे बताया कि अनेक "सन्देहास्पद लोफरो" की पहुच तोल्सतोय तक हो गयी है, कि रूस मे निकम्मो की भरमार है। मैंने यह खुद देखा था और निहायत ईमानदारी से मैंने यह माना कि इस चतुर स्त्री की बात सच है।

सितम्बर के अन्तिम दिन थे। शरद ऋतु की तेज बरसात जारी थी। ठूठ भरे खेतो से तेज ठडी हवा गुजर रही थी। जगल उसकी महक से भरे थे। बडा सुन्दर मौसम होता है, किन्तु पैदल यात्रा के लिए सुविधाजनक नही—विशेषत जब जूतो मे बडे-बडे छेद हो। मॉस्को रेलवे के मालगोदाम के एक गार्ड को मैंने इस बात के लिए राजी कर लिया कि जो पशुओ की ट्रक है उसमे मुझे बैठ जाने दे। आठ चरकासी

बैल निझनी के बूचड़खाने के लिए ले जाये जा रहे थे। पांच का तो व्यवहार मेरे साथ अच्छा रहा। लेकिन वाकी को मैं किसी कारण अच्छा न लगा। रास्ते भर वे मुझे हर तरह हैरान करते रहे। अपनी सफलता पर हर बार वे गुर्राते और सन्तोष से रंभाते थे। भद्दी मूंछों-वाला गार्ड पियक्कड़ था। उसके पैर कुछ झुके-झुके से थे। उसने मुझ पर बैलों को खिलाने की ड्यूटी बांध दी। जब भी गाड़ी रुकती, वह घास का एक बोझ ट्रक में फेंक देता और चिल्लाकर कहता :

"उन्हें खिला दे !"

बैलों के साथ मैं चौबीस घंटे रहा। मुझे विश्वास था कि जीवन भर मैं इनसे खराब जानवरों से न मिलूंगा।

मेरे कुर्ते की जेब में कविताओं की एक नोट बुक थी और उसमें एक सुन्दर गद्य-काव्य था : "बूढ़े शाहबलूत का गीत !"

आत्म-श्लाघा की ओर मैं कभी उन्मुख नहीं हुआ और उस समय तक मैं अर्ध-शिक्षित था। मेरे मन में यह विश्वास था कि मैंने बहुत सुन्दर कविता लिखी है। आराम की जिन्दगी से दूर, दस वर्षों के विशद जीवन में, मैंने जितना भी अनुभव-विचार किया था, वह सब इस कविता में रख दिया था। मुझे विश्वास था कि कोई भी शिक्षित व्यक्ति मेरी कविता पढ़कर उसके सौन्दर्य पर आश्चर्य किये बिना न रहेगा। मेरे महाकाव्य का सत्य विश्व के तमाम निवासियों को भौचक्का कर देगा। तुरन्त ही एक बा-ईमान, पवित्र, चिन्ताहीन जीवन की शुरूआत हो जायगी। मैं केवल इतना ही चाहता था।

निझनी में मैं एन. वाई. कारोनिन से मिला। अक्सर मैं उनके यहां जाया करता। हां, मैंने कभी उन्हें अपनी दार्शनिक अभिव्यक्ति का परिचय देने का साहस नहीं किया। बीमार कारोनिन को देखकर मुझ में दया का भाव जाग उठता और मैं अपने भीतर महसूस करता कि यह व्यक्ति दृढ़ता से दुख सहकर किसी महत्वपूर्ण मसले पर विचार कर रहा है।

अपने नथुनों से सिगरेट का धुआं निकालते हुए और फिर लम्बा कश लेते हुए वह कहते : "हो सकता है कि ऐसा ही हो !" और फिर तुरत ही बात खतम करते हुए कहते : "हो सकता है ऐसा न हो।"

उनकी बातचीत पर मुझे बहुत आश्चर्य होता। मुझे न जाने क्यों यह महसूस होता कि इस सताये हुए व्यक्ति को और अधिक दृढ़ता के साथ बोलने का अधिकार है, कि यह भिन्न रूप से बोलने के लिए बाध्य है। इस सबके कारण उनके प्रति मेरे मन में हमदर्दी थी। मैं अपने व्यवहार में सतर्क रहने लगा— जैसे मुझे भय हो गया हो कि कहीं मैं उन्हें दुखी न कर दूं; मेरे कारण उन्हें कष्ट न हो।

मैंने उन्हें कजान में देखा था। देश-निकाले से लौटते समय वह वहां कुछ दिनों के लिए ठहरे थे। उन्होंने मेरे ऊपर एक ऐसे व्यक्ति की अमिट छाप छोड़ी जो जीवन भर किसी ऐसी जगह रहा था जहां वह रहना न चाहता था।

"मैं क्यों यहां आया ?"

एक ठेलेवाले की सराय में एक-मंजिले मकान के अंधेरे कमरे में जाते समय मुझे ये शब्द सुनने को मिले। कमरे के बीच में लम्बा, झुके कंधोंवाला, व्यक्ति खड़ा था। विचारों में डूबा हुआ। वह एक बड़ी जेब-घड़ी को देख रहा था। उसके दूसरे हाथों की उंगलियों में एक जलती सिगरेट थी। वह अपनी लम्बी टांगों से फर्श पर टहलने लगा और एस. जी. सोमोव के प्रश्नों का थोड़े में उत्तर देता रहा।

उसकी अदूरदर्शी, स्पष्ट, बच्चों जैसी आंखें थकी और परेशान मालूम होती थीं। गालों और ठोढ़ी पर दाढ़ी बढ़ आयी थी। उसके चौकोर सिर पर सीधे, लम्बे अर्से से गंदे, पादरी जैसे बाल बढ़ आये थे। उसने अपने पैजामे की जेब में बायां हाथ डाला। जेब में पड़े तांबे के कुछ सिक्कों को खनखनाया। उसके दाहिने हाथ में सिगरेट थी, जिसे वह एक संगीत-निर्देशक की छड़ी की तरह हिला रहा था। उसने कश खींचा। आंखों को घड़ी पर गड़ाये वह सूखी खांसी खांसता रहा। उसके होठों से पीड़ा की ध्वनि निकलती रही। उसके भद्दे हड़ैल शरीर की गति बताती थी कि वह बहुत ज्यादा थका हुआ है। कमरे में धीरे-धीरे दस-बारह व्यक्ति आये — उनमें गम्भीर स्कूली बच्चे, विद्यार्थी, एक बेकर और एक शीशा जड़नेवाला था। एक तपेदिक के रोगी के से जीवन-हीन लहजे में कारोनिन ने देश-निकाले के दौरान में अपने शौर्य की कहानियां सुनायीं।

राजनीतिक निर्वासितों के समाचार बताये। वह बिना किसी की ओर देखे बोल रहे थे, मानो अपने से ही बातें कर रहे हों। खिड़की की देहरी पर बैठे-बैठे वह अक्सर कुछ देर को ठहर जाते और असहाय चारों ओर देख लेते। उनके सिर के ऊपर एक खुला झरोखा था जिसमें से घोड़े की पेशाब तथा लीद की बदबू लिये ठण्डी हवा आ रही थी। कारोनिन के सिर के बाल खड़े हो गये। उन्होंने अपने दुबले हाथों की लम्बी उंगलियों से उन्हें बैठा दिया और प्रश्नों का जवाब देते रहे :

"यह सम्भव है, लेकिन मैं निश्चय के साथ नहीं कह सकता। यह मामला ऐसा ही है। मैं नहीं जानता, मैं कुछ नहीं कह सकता ..."

कारोनिन युवकों को अच्छे न लगते थे। उन्हें तो ऐसे लोगों की बातें सुनने की आदत पड़ गयी थी जो सब कुछ जानते हों और अच्छी तरह बोल सकते हों। कहानी बताने के प्रति सतर्कता पर ही व्यंगात्मक टिप्पणी की गयी : "डरा हुआ खरगोश है!" लेकिन शीशा जड़नेवाले मेरे कामरेड अनातोली का विचार था कि कारोनिन की बाईमान विचारमयता, बच्चों जैसी निगाहें और उनका बार-बार यह कहना कि "मैं नहीं जानता" एक दूसरे प्रकार का डर कहा जा सकता है। जीवन से भली भांति परिचित व्यक्ति की तरह मानो वह डरते हों कि कहीं यह भोली जनता इस कारण गलत रास्ते पर न चली जाय कि उन्होंने कुछ ऐसी बातें कह दी हैं जिनके प्रति वह स्वयं भी निश्चित नहीं। अनातोली और मेरे जैसे लोग, जिन्हें जीवन का सीधा अनुभव है, किताबी लोगों की तरफ अविश्वास की दृष्टि से देखते थे। हम स्कूली लड़कों को अच्छी तरह जानते थे और यह देख रहे थे कि वे इस समय असाधारण रूप से गम्भीर बनने का बहाना कर रहे हैं।

आधी रात के लगभग कारोनिन ने यकायक बातें करना बन्द कर दिया, कमरे के बीच धुएं में आकर खड़े हो गये और हथेलियों से चेहरे को जोर-जोर से रगड़ने लगे, मानो अदृश्य पानी से धो रहे हों। उन्होंने कमर से एक घड़ी निकाली, उसे नाक तक ले गये और जल्दी से कहा :

"बहुत अच्छा, अब मैं जाता हूं। मेरी बच्ची बीमार है। बहुत बीमार है। चलूं।"

अपनी तरफ बढ़ाये हाथों को अपनी गरम उंगलियों से दृढ़तापूर्वक दबाते हुए वह कमरे के बाहर बड़ी शान से चले गये और हम लोगों के बीच आपसी झगड़ा शुरू हो गया—ऐसी बातों का अनिवार्य फल।

निझनी के बुद्धिजीवियों के बीच चलनेवाले तोल्सतोयवादी आन्दोलन के प्रति वह बड़े सतर्क रहे थे। उन्होंने सिम्बिर्स्क गुबर्निया में एक कालोनी बसाने में सहायता पहुंचायी। "वोर्सकाया कालोनी" नामक कहानी में उन्होंने इन योजनाओं के शीघ्र-पतन को दिखाया है।

उन्होंने मुझे सलाह दी: "धरती पर लौटने की कोशिश करो। शायद यह तुम्हारे लिए भला होगा।"

किन्तु आत्म-पीड़ा के आत्मघाती प्रयोगों की ओर मेरा कोई आकर्षण न था। और भी, तोल्सतोयवादी सिद्धान्तों के प्रमुख रचयिताओं में एक—नोवोस्योलोव—से मैं मास्को में मिल चुका था। उसने त्वेर और स्मोलेंस्क आरटेल संगठित किये थे और बाद में वह "प्रावोस्लावनोये अबोझ्रेनीये" के लेखकों में हो गया था और तोल्सतोय का जानी दुश्मन बन बैठा था। वह बहुत लम्बा आदमी था और उसमें काफी शारीरिक बल था। उसके विचारों और व्यवहार के भद्देपन का तो कहना ही क्या। वह अपने भद्देपन से सब को चुनौती देता और इस भद्देपन के पीछे महत्वाकांक्षा की अविचारपूर्ण अभिलाषा थी। उसने कटुतापूर्वक 'संस्कृति' को ठुकरा दिया। इससे मुझे बड़ी खिन्नता हुई। मेरे लिए संस्कृति एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें मैं कठिनता से प्रगति कर रहा था—यद्यपि मेरे सामने असंख्य रुकावटें थीं।

मेरा उसका परिचय 'ल्योपार्डी' और 'फ्लाबर्ट' के अनुवादक ओरलोव के यहां हुआ था। वह 'लिटरेरी पैंथियन-माला' के संगठनकर्ताओं में से था। सांझ भर उस समझदार और सुसंस्कृत व्यक्ति ने 'तोल्सतोयवाद' का जोरदार मजाक बनाया। उस समय मुझे सिद्धांतों के प्रति प्रबल आस्था थी। इस आस्था को मैं वक्ती तौर पर एक शांत कोने में बैठ जाने का अवसर मात्र समझता था, जहां मैं आराम कर सकूं और उस सब पर सोच सकूं जिससे मैं गुजरा हूं।

मैं जानता था कि कोरोलेंको निझनी में रहते हैं। मैंने उनकी

"मकार का सपना" कहानी पढ़ी थी जिसकी ओर, किसी कारण, मैंने ध्यान नहीं दिया था।

बारिश के एक दिन मैं एक मित्र के साथ टहल रहा था। मित्र ने मुड़कर देखा और कहा :

"कोरोलेंको !"

चौड़े कंधोंवाला एक दृढ़काय व्यक्ति खुरदुरा-सा ओवरकोट पहने दृढ़ता से सड़क के किनारे चल रहा था। चूते हुए छाते के नीचे मुझे घुंघराली दाढ़ी दिखायी पड़ी। उन्हें देखकर मुझे ताम्बोव के गोरू बेचने-वालों की याद आ गयी। ये ऐसी जाति के लोग थे जिनको नापसंद करने का आधार मेरे पास था और मैंने उनसे परिचय प्राप्त करने का किंचित भी प्रयास नहीं किया। यह इच्छा पुलिस के एक जनरल द्वारा दी गयी सलाह के बाद भी उग्र नहीं हो सकी। रूस में जिन्दगी कितने दिलचस्प खेल खेलती है, यह उसकी मिसाल है।

मैं गिरफ्तार कर लिया गया था। मुझे निझनी जेल की चार बुर्जों में से एक में रखा गया था। "कोष से ही जीवन का उदय होता है," इस लेख के अतिरिक्त मेरी चक्करदार सेल में और कोई दिलचस्पी की चीज नहीं थी।

लम्बे अरसे तक मैं इन शब्दों की पहेली सुलझाने में उलझा रहा। यह न जानने के कारण कि ये शब्द शरीर-विज्ञान के लिए स्वयं-सिद्ध हैं, मैंने समझा कि ये किसी हास्य-प्रेमी की सनक मात्र हैं।

जांच-पड़ताल के लिए मुझे जनरल पोजनान्स्की के पास लाया गया। मेरे कागजों को अपने पिलपिले, गहरे लाल रंग के, हाथों से थपथपाते और मिनमिनाते हुए उन्होंने कहा :

"इसमें तुम्हारी कुछ अच्छी कविताएं हैं ... और कुल मिलाकर... लिखे जाओ ! बढ़िया पक्तियां हैं... पढ़ने में मजा आता है ...।"

और मुझे भी यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जनरल कुछ सच्चाइयों को ग्रहण करने को तैयार हैं। मैं नहीं समझता था कि मेरी कविताओं के लिए "अच्छा" शब्द उचित था। उस समय बहुत थोड़े

ही ऐसे बुद्धिजीवी निकलते जो जनरल द्वारा की गयी कविता के मूल्यांकन से सहमत होते ।

लेखक स्वेदेन्तसोव गार्डों के अफसर थे और एक जमाने में निर्वासित रह चुके थे। वह अवसादपूर्ण कहानियां लिखते और छपवाते थे। "नरोद्नाया वोल्या" सोसायटी के सदस्यों और विशेषतः वेरा फिग्नर के विषय में उत्साहपूर्वक उन्होंने बताया। लेकिन मैंने फोफानोव की कविता की ये पंक्तियां सुनायीं :

सुन न सका मैं शब्द तुम्हारे
किन्तु शब्द थे बड़े मधुर...

सुनते ही वह बौखला उठे :

"बकवास। शायद उसने उससे सिर्फ समय पूछा था और वह बेवकूफ खुश हो उठा !"

भूरी ट्यूनिक पहने हुए जनरल ठिठुरे-ठिठुरे-से व्यक्ति लगते थे। उनकी ट्यूनिक में बटन नहीं थे और वह फटा पैजामा पहने हुए थे। उनके पिलपिले चेहरे से नम और धुंधली आंखें शोकाकुल और थकी हुई झांक रही थीं। उन्हें देखकर लगता था कि वे उदासीन हैं और दुखी-सी हैं। उन्हें देखकर मुझे उस अर्वाचीन कुत्ते की याद हो आती थी जो इतना बूढ़ा और शांत हो गया था कि अब उसके लिए भूंक सकना भी कठिन था।

कोनी के संग्रहीत भाषणों से मैं जनरल के जीवन की ट्रेजडी को समझ सका। मैं जानता था कि उनकी पुत्री बहुत ही अच्छा पियानो बजानेवाली हैं और वह स्वयं अफीमची हैं। वह निझनी की 'टेकनिकल सोसायटी' के जन्मदाता और अध्यक्ष थे और इस सोसायटी की मीटिंग में उन्होंने 'दस्तकारी उद्योगों' के महत्व को हेय बताया, लेकिन तो भी नगर की मुख्य सड़क पर गुवीर्नया की हाथ से बनी चीजों को बेचने के लिए दूकान खोली थी। उन्होंने पीटर्सबर्ग में अपने देशवासी कोरोलेंको तथा गवर्नर बारानोव की निन्दा लिखकर भेजी थी। बारानोव खुद निन्दाएं लिखने का आदी था।

जनरल के आस-पास की हर चीज उनकी उदासीनता की साक्षी थी। मुड़े-मुड़ाये बिस्तर के कपड़े चमड़ेवाले सोफे पर पड़े थे। सोफे के नीचे से एक गन्दा जूता झांक रहा था और कई सेर सेलखड़ी का ढेर लगा हुआ था। खिड़कियों के सामने लटकते पिजड़ों में रंग-बिरंगी चिड़ियां फुदक रही थीं। अध्ययनशाला के एक कोने में एक बड़ी सी मेज थी जिस पर भौतिक शास्त्र से सम्बंधित यंत्र फैले हुए थे। मेरे सामनेवाली मेज पर एक मोटी सी फ्रांसीसी पुस्तक थी जिसका नाम था "विद्युत का सिद्धान्त" एक और दूसरी किताब थी — सेचेनोव की लिखी हुई — "रिफलेक्सेज आफ दि सेरेब्रल हेमीम्फियर्स।"

बुढ़ऊ छोटी सिगरेटों का कश ले रहे थे। सिगरेटों से निकलते धुएं का बादल यह भी बता रहा था कि तम्बाकू में कोकीन मिली हुई है।

"तुम कैसे क्रान्तिकारी हो?" उन्होंने चिड़चिड़ाकर कहा: "तुम न तो यहूदी हो, न पोल। तुम लिखते हो लेकिन लिखने से क्या। देखो! जब मैं तुम्हें छोड़ दूं तब तुम अपनी पांडुलिपियां कोरोलेंको के पास ले जाना। उसे जानते हो न? नहीं जानते? बड़ा गम्भीर लेखक है, वैसा ही जैसा तुर्गनेव..."

जनरल के चारों ओर उबानेवाली और गला घोंटू बदबू फैली हुई थी। वह मानो अनिच्छा से एक के बाद एक शब्द को खींचकर बोल रहे थे। बहुत उबा देनेवाली बातचीत थी। मैंने मेज की बगल में रखे छोटे से शो-केस को देखा जिसमें धातु के गोलाकार टुकड़ों की लाइन लगी थी।

मेरी आंखों की दिशा देखकर जनरल ऊंची आवाज में बोले:

"क्या इनमें तुम्हारी दिलचस्पी है?"

शो-केस के पास कुर्सी खींचकर उसे खोलते हुए वह बोले:

"ये पदक ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों की याद में लगाये गये हैं। यह बैस्तील की विजय का है, यह अबूकीर में नेलसन की विजय की स्मृति का है। फ्रांस के इतिहास से तुम्हारा परिचय है? यह स्विस यूनियन की याद में है। यह है प्रसिद्ध गलवानी — कितनी बढ़िया चीज है। यह क्यूविएर है — उतनी अच्छी नहीं है।"

उनकी गहरी-लाल नाक पर चश्मा कांप रहा था। नम आंखें जीवनमय हो गयी थीं। वह अपनी उंगलियों के बीच पदक इस प्रकार पकड़े हुए थे जैसे वे शीशे के बने हों।

"बड़ी सुन्दर कला है।" वह बड़बड़ाये और पदकों की धूल उड़ा दी।

मन ही मन मैं पदकों के सौन्दर्य की प्रशंसा करता रहा और देखता रहा कि ये बुड्ढे को बहुत प्रिय हैं।

शो-केस के ढक्कन को एक निश्वास के साथ बन्द करते हुए उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे गानेवाले पक्षी प्रिय हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसके बारे में मैं निश्चयपूर्वक कह सकता था कि मुझे जनरल से अधिक ज्ञान है और हम लोगों में पक्षियों के विषय पर एक बहुत अच्छी बहस हो गयी।

बूढ़े ने मुझे जेल भेजने के लिए एक पुलिसवाले को बुला लिया था। वह दरवाजे पर 'अटेनशन' की मुद्रा में खड़ा था। उसका अफसर अभी भी बातें कर रहा था और दुःख से जीभ चटका रहा था :

"मुझे अभी तक अबाबील नहीं मिल सकी। वह बहुत सुन्दर पक्षी होता है। पक्षी बिलकुल ही भिन्न और बढ़िया होते हैं। अच्छा तुम जाओ।" और जैसे यकायक याद करते हुए उन्होंने कहा : "अरे हां!... तुम्हें लिखना सीखना चाहिए। समझते हो! यह सब कुछ नहीं..."

कुछ दिन बाद मैं फिर जनरल के सामने था और वह क्रोध में बड़बड़ा रहे थे :

"तुम जानते थे कि सोमोव कहां गया है। यह तुम्हें मुझको बता देना चाहिए था। मैं तुम्हें फौरन रिहा कर देता। तुम्हें उस अफसर पर भी नहीं हंसना चाहिए था जो तुम्हारे कमरे की तलाशी ले रहा था..."

लेकिन यकायक वह मेरी ओर झुके और भले स्वभाव से कहा :

"तो तुम अब पक्षियों से नहीं चिढ़ते?"

जनरल से दिलचस्प परिचय होने के दस वर्षों बाद मैं गिरफ्तार हुआ और मुझे निझनी पुलिस स्टेशन पर पूछताछ के लिए रोका गया। एक युवा अफसर ने आकर पूछा :

"आपको जनरल पोजनान्स्की की याद है ? वह मेरे पिता थे। वह तोम्स में मरे। उन्हें आपके भविष्य में बड़ी दिलचस्पी थी। आपकी साहित्यिक सफलताओं से वह परिचित थे और अक्सर कहा करते थे कि आपकी योग्यता पहचाननेवाले प्रथम व्यक्ति वही थे। अपनी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व उन्होंने मुझसे उन पदकों को आपको दे देने के लिए कहा था। आप उन्हें स्वीकृत करना चाहें तो..."

मेरा मन भर आया। जब मैं जेल से निकला तो उन पदकों को मैंने स्वीकार कर लिया और उन्हें निझनी के संग्रहालय की भेंट कर दिया।

...मैं फौज के लिए पास न हो सका। खुशमिजाज मोटा डाक्टर, जो कसाई जैसा लगता था, सैनिकों से ऐसा व्यवहार करता मानो वे बलि के बकरे हों। जांच करते समय वह कहता :

"तुम्हारे फेफड़े में छेद है, टांग की नस फूली हुई है... अनफिट।"

इससे मैं बहुत हैरान हुआ।

बुलाये जाने के कुछ दिन पूर्व मेरी एक फौजी नक्शा-नबीस से जान-पहचान हो गयी थी। उसका नाम पाश्कीन या पश्कालोव जैसा था।

उसने कुश्का की लड़ाई में भाग लिया था। अफगानिस्तान की सीमा पर जीवन कैसा है इसका उसने दिलचस्प विवरण बताया। वसन्त ऋतु में रूसी सरहद का निरीक्षण करने के लिए उसे पामीर भेजे जाने की आशा थी। लम्बा, हृष्ट-पुष्ट, चुस्त शरीर — फेदोतोव की शैली में वह फौजी जीवन के कलापूर्ण छोटे-छोटे तैल-चित्र बनाता। मुझे उसमें कुछ विरोधाभास लगा। अपने में ही संघर्ष सा मालूम हुआ; कुछ ऐसी चीज़ जिसे "असामान्य" कहा जाता है। उसने मुझे निरीक्षण करनेवाली टुकड़ी में भर्ती हो जाने के लिए राजी करने की कोशिश की।

उसने कहा :

"मैं तुम्हें पामीर ले जाऊंगा। तुम विश्व का सर्वश्रेष्ठ दृश्य देख सकोगे — रेगिस्तान। पर्वतमाला में असंगति होती है, रेगिस्तान में सामंजस्य।"

अपनी बडी, भूरी, और चचल आखो को सिकोडते हुए, अपने मृदु स्वर को और धीमा करते हुए, वह रेगिस्तान के सौन्दर्य पर रहस्यमय ढग से बुदबुदाया। भौचक्का होकर मैं सुनता रहा। कैसे कोई छूछेपन, निस्सीम बालू, अटूट मौन, भयकर गर्मी और प्यास की पीडाओ के बारे मे इतने सुखकर ढग से बोल सकता है ?

यह जानकर कि मुझे फौज के लिए पास नही किया गया है, उसने कहा "कोई बात नही। एक वक्तव्य लिख दो कि तुम सर्वे-यूनिट के 'वालटियर' बनना चाहते हो और आवश्यक परीक्षाए पास करने को तैयार हो। तुम्हारे लिए मैं सब इन्तजाम कर दूगा।"

बयान लिखकर मैंने दे दिया। उत्साह से मैं परीक्षा-फल की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिनो बाद पश्कालोव ने कुछ उलझन से कहा

"लगता है राजनीतिक कारणो से तुम पर विश्वास नही किया जा सकता, सो मैं तुम्हारे लिए कुछ नही कर सकता।"

फिर अपनी आखे झुकाकर उसने मृदुता से कहा·

"तुमने यह बात छिपायी! यह बडे दुख की बात है।"

मैंने कहा कि मेरे लिए भी यह "तथ्य" एक खबर ही है। लेकिन मैं समझता हू कि उसने मेरे ऊपर विश्वास नही किया। वह शीघ्र ही शहर से चला गया और क्रिसमस के दिन मैंने मास्को के एक समाचार-पत्र मे पढा कि उसने सार्वजनिक स्नानागार मे अस्तुरे से अपना गला काट लिया।

मेरा जीवन—कठिन और सघर्षमय—चलता रहा। मैं एक शराब के कारखाने मे काम करता था। सील-भरी कोठरी मे शराब के पीपे भरता रहता, बोतलो को धोता और उनमे ढाठे लगाता। सारा दिन उसी मे बीत जाता। मैंने डिस्टिलरी के एक दफ्तर मे काम शुरू किया। लेकिन पहले ही दिन फैक्टरी-मैनेजर की पत्नी के कुत्ते ने मेरे ऊपर हमला किया और मैंने उसकी खोपडी पर ऐसा घूसा मारा कि वह मर गया। मुझे फौरन निकाल दिया गया।

एक दिन, जब मौसम अच्छा न था, मैंने आखिरकार कोरोलेंको को कविता दिखाने का निश्चय किया। तीन दिन से बरफ का तूफान जारी

था। सडकें ऊची बरफ से ढकी हुई थी। मकानो की छतें परतदार बरफ की टोपिया सजाये थी, मानो पक्षियो के घोसले रात की रुपहली टोपिया पहने हो। खिडकियो के दरवाजे बर्फीली चादर से ढके थे और पीले आकाश पर ठडा सूर्य चमक रहा था—चौंधियता हुआ, प्रचड।

व्लादिमीर गालाक्तियोनोविच कोरोलेंको शहर के बाहरी हिस्से मे एक लकडी के मकान की दूसरी मजिल पर रहते थे। ड्योढी के सामने सडक के किनारे एक दृढकाय व्यक्ति अजीब सी टोपी लगाये और मफलर बाधे, घुटनो तक भेड की खाल की जाकेट और व्यात्का के फेल्ट जूते पहने, एक बडे से फावडे को लिये खडा था।

मैं बरफ की एक मोटी तह पर से होकर ड्योढी तक पहुचा।

"किससे मिलना चाहते हो?"

"कोरोलेंको से।"

"मैं ही कोरोलेंको हू।"

तुषार ढकी, घनी और घुघराली दाढीवाले चेहरे मे से दो सरल भूरी आखे मुझे देख रही थी। मैं उनको पहचान न सका क्योकि पहले जब मैं सडक पर मिला था तो मैं उनका चेहरा न देख सका था। अपने फावडे के मुट्ठे पर झुके वह चुपचाप मेरे आने का कारण सुनते रहे। फिर अपनी आखो को मिचमिचाते हुए उन्होने याद किया

"मैं तुम्हारा नाम जानता हू। तुम वही तो नही जिसके बारे मे दो साल पहले एम ए रोमास नाम के व्यक्ति ने मुझे लिखा था?"

सीढियो पर चढते हुए उन्होने पूछा

"तुम्हे ठड नही लग रही? बहुत हल्के कपडे पहने हो।"

फिर धीमी आवाज मे, मानो अपने से ही कह रहे हो:

"रोमास बडा मजबूत आदमी है। चतुर युक्रेनियन है। जाने कहा चला गया।"

बागीचे की ओर, कोनेवाले छोटे से कमरे मे, जो फर्नीचर से भरा था, दो मेजे, किताबो की अलमारिया और तीन कुर्सिया थी। रूमाल से गीली दाढी पोछते और मेरी मोटी-सी पाडुलिपि के पृष्ठ पलटते हुए वह बोले

"इसे पढ़ूंगा। तुम लिखते कैसा हो—देखने में कितना सरल और स्पष्ट, लेकिन पढ़ने में कठिन!"

पांडुलिपि उनके घुटनों पर थी। तिरछी निगाहों से वह कभी मेरी ओर, कभी पृष्ठों को देखते। मैं अचकचाहट अनुभव कर रहा था। "इसमें एक शब्द 'टेमेढ़ाढ़ा' लिखा हुआ है। यह गलती से हो गया मालूम पड़ता है। ऐसा कोई शब्द नहीं है। इसे 'टेढ़ामेढ़ा' होना चाहिए।

'गलती' शब्द कहने से पहले वह कुछ ठिठके। मुझे लगा कि कोरोलेंको उन लोगों में से हैं जो अपने पड़ोसी के अभिमान की रक्षा करना जानते हैं।

"रोमास ने मुझे लिखा था कि किसानों ने उसे बारूद से उड़ा देने की कोशिश की और फिर आग लगा दी। क्या यह सच है?"

वह पांडुलिपि के पन्ने भी पलटते जा रहे थे।

"विदेशी शब्दों का प्रयोग बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही करना चाहिए। आम तौर से उन्हें प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। रूसी भाषा स्वयं काफी समृद्ध है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों और अर्थों की बहु-रूपता को व्यक्त करने के साधन उसमें हैं।"

रोमास और गांवों के बारे में पूछते हुए उन्होंने यह बात यों ही कह दी थी। फिर अचानक बोले: "तुम्हारा चेहरा कितना कठोर है," और मुस्कराते हुए कहा, "क्या तुम्हारा जीवन भी बहुत कठोर है?"

उनका बोल वोल्गा के लोगों की तरह किंचित भी कर्कश न था। लेकिन मैंने देखा कि उनमें और वोल्गा के नाविक में एक अजीब समानता थी। यह समानता न केवल उनके मजबूत ढांचे और उनकी तेज निगाहों के कारण थी, वरन् उनकी उस हंसमुख सरलता के कारण भी जो उन लोगों की विशेषता है जो छिपे हुए बलुआ किनारों और चट्टानों के बीच बहती नदी की धारा के समान जीवन को गतिशील मानते हैं।

"कभी-कभी तुम रूखे शब्दों का प्रयोग करते हो। मेरा विचार है, तुम उन्हें बहुत सख्त समझते हो। लोगों का यही खयाल है?"

मैंने बताया कि मैं जानता हूं कि मेरा रुझान रुखेपन की तरफ है, किन्तु सच तो यह है कि मुझे कभी मृदु शब्दों और भावनाओं को प्राप्त

करने का अवसर ही नहीं मिला। न ही मुझे ऐसा स्थान ही मिला जहां मैं इन शब्दों और भावनाओं को प्राप्त कर सकूं।

कुछ ढूंढ़ती सी निगाहों से उन्होंने मुझे देखा और मृदुता से कहते गये :

"तुम लिखते हो : 'मैं संसार में विरोध व्यक्त करने आया हूं और चूंकि यह ऐसा ...,' 'चूंकि यह...' से काम नहीं चलेगा। यह बोलने का भद्दा तरीका है। 'चूंकि यह ऐसा है !' तुम्हें बुरा नहीं लगता है ?"

यह सब कुछ मेरे लिए नया था, लेकिन मैंने शीघ्र ही उनके कथन की सत्यता स्वीकार कर ली।

इसके बाद मेरी कविता में कोई 'मन्दिर के ध्वंसावशेषों पर चील की तरह' बैठा हुआ मिला।

"इस तरह 'बैठने' के लिए यह बहुत उपयुक्त जगह नहीं है। उतनी शानदार नहीं, जितनी अशोभन।" कोरोलेंको ने मुस्कराते हुए कहा।

फिर उन्होंने एक के बाद एक 'गलती' पायी। मैं उनकी संख्या से भौचक्का रह गया। मेरे गाल जलते हुए अंगारों की तरह चमकने लगे। मेरी यह हालत देखकर कोरोलेंको हंसने लगे और मुझे उस्पेन्सकी की कुछ गलतियां बतायीं। यह उनकी उदारता थी। किन्तु मैं अब न कुछ कह सकता था, न समझ सकता था। जिस लज्जा का अनुभव मैं कर रहा था, उसके कारण मैं भाग जाना चाहता था। यह सर्वविदित है कि लेखक और अभिनेता पालतू कुत्तों की तरह भावुक होते हैं।

मैं वहां से चला आया और कई दिनों तक रंजीदगी और पस्ती की स्थिति में रहा।

मुझे लगा कि यह लेखक दूसरों से भिन्न है। वह किंचित भी ध्वस्त व मोहक कारोनिन की तरह न थे। विचित्र स्तारोस्तिन का नाम लेना व्यर्थ है। न उनमें और रंजीदा स्वेदेंतसोव-इवानोविच में ही कोई समानता थी, जिन्होंने मुझसे एक बार कहा था : "कहानी को चाहिए कि पाठक को उद्वेलित कर दे। उसे एक छड़ी की तरह होना चाहिए जिससे पाठक अनुभव कर सके कि वह कैसा पशु है।"

इन शब्दों और मेरे अपने भावों में कुछ मेल था। कोरोलेंको पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वजनदार मानवीय शब्दों में मुझे रूप के अर्थ, शब्दों के सौंदर्य के बारे में बताया। उनके शब्दों में निहित सरल और विशद सत्य से मैं स्तम्भित रह गया। एक दर्द के साथ मैंने अनुभव किया कि लेखन सरल चीज नहीं। मैं उनके पास दो घंटे से अधिक रहा और इस बीच उन्होंने मुझे बहुत कुछ बताया। तो भी मेरी कविता के मूल-तत्व के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। मैं यह अनुभव कर चुका था कि मैं इस सम्बंध में कुछ अच्छा न सुन सकूंगा।

लगभग पन्द्रह दिन बाद लाल बालों वाला द्रियागिन, जो बुद्धिमान और प्रसन्नचित्त व्यक्ति था, मेरी पांडुलिपि वापस ले आया और बोला :

"कोरोलेंको साहब समझते हैं कि उन्होंने आपको डरा दिया है। कहते हैं कि आपमें कुछ प्रकृति-प्रदत्त शक्ति है, लेकिन लेखक को सच्चाई से लिखना चाहिए। उसे दार्शनिकता न लानी चाहिए। वह कहते हैं आप में हास्य की क्षमता है, यद्यपि कुछ रूखापन लिये हुए, लेकिन यह अच्छा है। वह कहते हैं कि आपकी कविता में भड़भड़ाहट है।"

पांडुलिपि के कवर पर तिरछे अक्षरों में पेन्सिल से लिखा था :

"तुम्हारे गीतों से तुम्हारी योग्यता को परखना कठिन है, किन्तु मेरा विचार है कि तुममें कुछ योग्यता है। कुछ ऐसी चीजों के बारे में लिखो जिनका तुमने स्वयं अनुभव किया हो और मुझे दिखाओ। मैं कविता का पारखी नहीं। तुम्हारी कविता समझने में मुझे कठिनाई होती है, हालांकि कुछ पंक्तियां ऐसी हैं जो मजबूत हैं और अच्छी हैं। वी. के।"

विषय-वस्तु के बारे में एक शब्द भी न था। इस विचित्र व्यक्ति को इसमें क्या मिला ?

पांडुलिपि के बीच से कागज के दो पन्ने गिर पड़े—एक में 'पर्वतारोही से पर्वत की पुकार' शीर्षक कविता थी और दूसरे में 'शैतान ने गोल पहिये से क्या कहा'। मुझे इस समय अच्छी तरह याद नहीं कि शैतान और पहिये के बीच किस बात पर बहस हुई थी और 'पर्वत की पुकार' में मैंने क्या कहा था। मैंने कविताएं और पांडुलिपि फ़ाड़,

डालीं और उन्हें चूल्हे में डाल दिया। फिर बैठकर सोचने लगा कि "मैंने जो स्वयं अनुभव किया है उसके बारे में" का क्या अर्थ है।

अपनी कविता में जो कुछ मैंने लिखा था, सभी अनुभव किया था।

और वे कविताएं ! वे तो पाडुलिपि में धोखे से चली गयी थीं। वे मेरा कुछ भेद लिये हुए थीं। मैंने उन्हें कभी किसी को न दिखाया था। खुद भी मैं उन्हें न समझ पाया था। मेरे दोस्तों के बीच फ्रेंक्वा कोप्पी, जां रिचेपिन, थामस हुड और ऐसे ही अन्य कवि पुश्किन से से अधिक मूल्यवान समझे जाते थे। फोफानोव के गीतों का तो कहना ही क्या। नेक्रासोव कविराज थे। युवक गण नाद्सन की प्रशंसा करते थे, किन्तु पुरानी पीढ़ी के लोग उसे गिरी निगाहों से देखते थे।

संभ्रान्त व्यक्ति, जिनका मैं मन में आदर करता था, मुझे एक गम्भीर व्यक्ति समझते थे। सप्ताह में दो बार मुझसे 'घरेलू उद्योगों' 'जनता की आवश्यकताएं और बुद्धिजीवियों के कर्तव्य' आदि पर बातें करते थे। वे पूंजीवाद की छुतिहर बीमारी के बारे में भी बातें करते थे, जो उनकी दृष्टि में कभी भी — किसान, समाजवादी रूस में — प्रवेश न पा सकेगी। अब हर व्यक्ति जान जायेगा कि मैंने बे-सिर-पैर की कविताएं लिखी हैं। मुझे उन लोगों के लिए दुःख था जो मेरे प्रति अपने दयापूर्ण और गम्भीर रवैये को बदलने के लिए बाध्य होंगे।

मैंने निश्चय किया कि न तो कविता लिखूंगा और न गद्य। और सचमुच निझनी में दो वर्ष तक मैंने कुछ नहीं लिखा, यद्यपि कभी-कभी लिखने की प्रबल इच्छा होती थी।

अत्यधिक दुःख के साथ मैंने अपनी बुद्धिमत्ता को सबको पवित्र करनेवाली लपट में होम कर दिया।

कोरोलेंको बुद्धिजीवी उग्रवादियों के गुट से अलग रहते थे। इनके बीच मुझे काले कौवों के परिवार में अपने गौरया होने का अनुभव होता।

ये लोग जिस लेखक की सब से अधिक प्रशंसा करते थे वह था— एन. एन. ज्लातोव्रात्सकी। इसके सम्बंध में वे कहते थे :

"ज्लातोव्रात्सकी आत्मा को पवित्र करता है और उसे ऊचा उठाता है।"

युवको को शिक्षा देनेवाले एक शिक्षक ने इस लेखक के विषय मे निम्नाकित सिफारिश की थी

"ज्लातोव्रात्सकी को पढो। मैं उसे व्यक्तिगत रूप से जानता हू। वह ईमानदार आदमी है।"

उस्पेन्सकी बहुत ध्यान से पढा जाता था, यद्यपि उसके विषय मे यह सन्देह था कि वह अविश्वासी है। देहातो मे इस रवैये को अक्षम्य समझा जाता था। उन्होनें कारोनिन, मचतेत्, जासोदिम्सकी को पढा था और पोतापेको को भी देखा था

"वह ठीक मालूम होता है"

मामिन-सिबिर्याक भी पसन्द किया जाता था, यद्यपि उसके बारे मे कहा जाता था कि उसकी 'प्रवृत्तिया' 'हवाई' है।

तुर्गनेव, दोस्तोयेव्स्की, लेव तोल्सतोय — इन सबको वे छूते न थे। धार्मिक मसीहे तोल्सतोय के बारे मे उन्होने कहा

"वह बेवकूफ बनाता है।"

मेरे दोस्त यह न जानते थे कि कोरोलेको के विषय मे क्या कहें। वह निर्वासित रह चुके थे और उन्होने "मकार का सपना" लिखा था। अलबत्ता, इन दोनो के ही कारण उनका पक्ष बहुत मजबूत था, लेकिन उनकी कहानियो मे कुछ सदेहास्पद था — कुछ ऐसा कि गावो और किसानो के साहित्य मे डूबे लोग उसके आदी न थे।

कोरोलेको के विषय मे वे कहने थे "वह अपने मस्तिष्क से लिखता है लेकिन लोगो को केवल आत्मा के द्वारा ही समझा जा सकता है।"

"रात मे" नामक सुन्दर कहानी तो विशेषत नापसद थी। उसमे लेखक की "आत्मतत्व ज्ञान" की प्रवृत्ति दिखाई पडती थी — और यह अति निंदनीय अपराध माना जाता था। वी जी के चक्र के एक सदस्य, शायद बोग्दानोविच, ने इस कहानी पर एक दुष्टतापूर्ण प्रहसन लिखा था।

सोमोव किंचित सनकी व्यक्ति था और नौजवानो पर उसका काफी प्रभाव था। उसने कहा, "ब-ब-बेहूदा। जन्म की शारीरिक प-प-प्रक्रिया का वर्णन कहानी का विषय नही हो सकता — त-त-तिलचट्टो को खीचकर लाना अर्थहीन है। उसने त-त-तोल्सतोय की नकल की है — हा अवश्य की है।"

लेकिन अब तक नगर के सभी चक्रो मे कोरोलेको के नाम की चर्चा हो चली थी। सास्कृतिक जीवन मे वह उल्लेखनीय व्यक्ति बन चुके थे और वह चुम्बक की तरह लोगो की हमदर्दी, उनका विरोध और ध्यान आकर्षित करते थे।

जो लोग कुछ अच्छी बात न कह सकते थे, वे कहते थे कि "कोरोलेको प्रसिद्धि चाहता है।" उस समय स्थानीय बैंको मे होनेवाली गम्भीर चोरियो का पता लगा था। इस साधारण घटना के बहुत ही नाटकीय फल देखने मे आये थे। मुख्य अपराधी, "शेर-दिल और हृदय-वेधक" की मृत्यु जेल मे हो गयी थी। उसकी पत्नी ने तेजाब मे ताबा मिलाकर पी लिया था। अतिम सस्कार के शीघ्र बाद ही उसके एक आशिक ने उसकी कब्र पर अपने गोली मार ली। इस मामले मे फसे दो और व्यक्ति एक के बाद एक मर गये। अफवाह यह थी कि उन्होने भी आत्म-हत्या कर ली है।

जब ये दु खद घटनाए हो रही थी, उसी समय कोरोलेको "वोल्झ-स्की वेस्तनीक" मे बैंको से सम्बंधित लेख लिख रहे थे। कुछ लोगो ने कहना शुरू किया कि कोरोलेको ने "अखबारी लेखो के द्वारा इन्सानो की हत्या की है।" लेकिन मेरा सरक्षक लानिन जोरो से तर्क करता था कि "कलाकार के लिए कोई भी सासारिक बात अनहोनी नही है।"

चूंकि सभी जानते हैं कि दूसरो की निंदा से अधिक आसान और कुछ नही है — इसलिए कोरोलेको के लिए टुच्ची बुद्धि के व्यक्ति हर तरह की निंदा की बाते कहा करते थे।

मद-गति से गुजरनेवाले उन वर्षो मे जीवन की गति भी बहुत धीमी थी — और वह वर्तुलाकार चक्रो मे अपने अदृश्य लक्ष्य की ओर बढ़ती जा रही थी। और इन चक्रो मे उस व्यक्ति का चित्र स्पष्टतर

होता जाता था, जो नाविक की तरह लगता था। जब स्कोप्तसी का मुकदमा चल रहा था तब वी. जी. सार्वजनिक स्थान पर बैठकर अपराधियों के मृत्यु की तरह पथराये चेहरों के स्केच बनाया करते थे। वह जेम्स्तवो असेम्बली में जाते थे, धार्मिक जुलूसों में जाते थे — हर छोटी से छोटी बात के प्रति आकर्षित होते थे।

उनके आसपास जीवन के विविध व्यवसायों से सम्बंधित काफी व्यक्ति एकत्र हो गये थे। प्रखर बुद्धिवाला एनेंस्की, लेखक और डाक्टर येल्पातेव्स्की, हंसमुख, मजाकिया और इन्सानियत को प्यार करनेवाला बोग्दानोविच, विचारपूर्ण और चुटीला, "क्रान्ति का सौजन्यपूर्ण व्यक्तित्व" इवानचिन पिसारेव, जेम्स्तवो बोर्ड का अध्यक्ष सावल्येव, तीन शब्दोंवाली, सबसे छोटी और वाक-चातुर्य से पूर्ण घोषणा, — जिसे पहली मार्च १८८१ के बाद उसने निझनी नोवगोरोद के मकानों की दीवारों पर पोस्टरों में लिखकर चिपकाया था — "एक संविधान मांगो" का लेखक कारेलिन।

कोरोलेंको के चक्र को लोग मजाक में "गम्भीर चिन्तकों का समाज" कहा करते थे। अक्सर इसके सदस्य दिलचस्प भाषण दिया करते थे। मुझे संत जस्ट पर दिये गये कारेलिन के भाषण की याद है। मुझे "नयी कविता" पर दिये गये येल्पातेव्स्की के भाषण की भी याद है — उस समय फोफानोव, फ्रग, कोरिंफसकी, मेद्वेद्स्की, मिन्स्की, मेरेजकोवस्की की कविताएं इसी रोशनी में समझी-देखी जाती थीं। जेम्स्तवो के गणना-अधिकारी द्रियागिन, किसल्याकोव, प्लातनिकोव, कांस्तन्तिनोव, शेमित और रूस के देहातों में कुछ इन्हीं की बराबरी के गम्भीर जांच-पड़ताल करनेवाले इन "गम्भीर चितकों" में थे। इनमें से प्रत्येक ने किसानों के विशद जीवन की अध्ययन-प्रणाली पर गहरा प्रभाव डाला। रहस्यमय जीवन में गहरी दिलचस्पी रखनेवाले हर एक छोटे चक्र का अपने आप में केन्द्र था। उनमें से हर एक से कुछ न कुछ सीखने को मिलता था। गांवों के जीवन के प्रति यह गम्भीर, बहुत ही निष्पक्ष रवैया, मेरे लिए बहुत लाभदायक था। इसका प्रभाव समाज के उन अंगों पर भी पड़ा जो पहले सांस्कृतिक प्रभाव से अछूते थे।

कैस्पियन के बहुत बड़े मछली-व्यापारी मारकोव के यार्डमैन पीमेन व्लासियेव, मेरे मित्र थे। साधारण, चपटी नाकवाले रूसी किसान थे वह। उनका ढांचा मानो जल्दी में, असावधानी से, गढ़ दिया गया था। एक दिन अपने मालिक के अवैधानिक इशारों को बताते हुए उन्होंने रहस्यमय ध्वनि में धीरे-धीरे कहा :

"वह ऐसा कर डालेगा। लेकिन, मैं जानता हूं, वह कोरोलेंको से डरता है। पीटर्सबर्ग से एक अजीब किस्म का आदमी आया है, उसे लोग कोरोलेंको कहते हैं। वह एक विदेशी राजा का भतीजा है। मामले की देखभाल के लिए उसे विदेश से किराये पर लाया गया है। लोग गवर्नर पर विश्वास नहीं करते। इस कोरोलेंको ने कुलीन वर्ग के दिलों में भगवान का डर बैठा दिया है।"

पीमेन अपढ़ और महान कल्पनाशील व्यक्ति था। उसे भगवान में असाधारण मोहक विश्वास था और वह विश्वासपूर्वक शीघ्र ही "सभी झूठों" के अन्त की राह देखा करता था।

"मत चिन्ता करो, मित्र ! शीघ्र ही झूठों का अन्त हो जायेगा। वे एक दूसरे को खा जायेंगे और अपने को डुबो लेंगे।" वह जब यह कहता तो उसकी बुझी-सी भूरी आंखें अजीब तरह से नीली पड़ जातीं और खुशी से चमकने लगतीं। लगता कि वे अभी नीली किरणों के आंसू बहाने लगेंगी।

वह और मैं एक शनिवार को स्नान-गृह गये और बाद में चाय के लिए एक सराय में पहुंचे। यकायक मेरी आंखों की ओर दया से अपनी आंखें उठाकर पीमेन ने कहा :

"एक मिनट रुको।"

उसके जिस हाथ में चाय का प्याला था — वह हाथ हिला। उसने प्याला रख दिया और जैसे कुछ सुनने के लिए झुका।

"पीमेन, यह क्या ?"

"देखो दोस्त ! अभी-अभी एक दैवी विचार ने मेरी आत्मा में प्रवेश किया है और उसका अर्थ है कि जल्दी ही भगवान मुझे बुलायेंगे।"

"अरे हटो ! तुम बिल्कुल स्वस्थ हो।"

गभीरता और प्रसन्नता के साथ उसने कहा : "शात। एक शब्द भी न बोलो। मैं जानता हू।"

अगले बृहस्पतिवार के दिन उमे एक घोडे ने कुचल डाला।

निझनी-नोवगोरोद के १८८६ से १८९६ के दस वर्ष बिना किसी अतिशयोक्ति के "कोरोलेको युग" कहे जा सकते हैं। लेकिन यह बात अनेक बार छप चुकी है।

एक डिस्टिलरी के मालिक जारुबिन ने १९०१ मे मुझे एक किस्सा बताया। जारुबिन नगर के "चरित्रो" मे से था और "बेतहाशा" दिवालिया था। अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे वह पक्का तोल्सतोय वादी था और सयम का हामी था। उसने कहा

"कोरोलेको के युग मे ही मैं यह समझा कि जैसे मुझे रहना चाहिए, वैसे नही रहता हू।"

जीवन को सुधारने की शुरूआत करने मे उसने थोडी देर कर दी थी। "कोरोलेको युग मे" वह पचास वर्ष का था। तो भी उसने अपने जीवन को बदल दिया, या रूसी तरीके पर, मोड दिया।

उसने मुझे बताया "मैं बीमार पडा और मेरा भतीजा सेम्योन मुझे देखने आया। वह, जिसे देश निकाला मिला है, तुम जानते हो, उस समय वह विद्यार्थी था। उसने पूछा 'क्या मैं आपको कुछ पढकर सुनाऊ?' उसने मुझे 'मकार का सपना' पढकर सुनाया। पुस्तक इतनी अच्छी थी कि मैं रो पडा। एक इन्सान दूसरे पर दया भी कर सकता है। उसी क्षण से मैं बदल गया। मैंने अपने सबसे प्यारे मित्र को बुलाया और कहा 'अबे सुन कुतिया की औलाद! ले, यह किताब पढ!' उसने किताब पढी और कहा कि यह तो प्रभु-निन्दा है। मैं बहुत नाराज हुआ और मैंने उसे बता दिया कि मैं उसे क्या समझता हू। बदमाश! और हम एक-दूसरे के पक्के शत्रु हो गये। उसके पास मेरे कुछ रुक्के थे और वह मुझे हैरान करने लगा। लेकिन मैंने कुछ परवाह न की। मैंने अपना व्यापार छोड दिया। मेरी आत्मा ने उसे ठुकरा दिया। मैं दिवालिया घोषित कर दिया गया और मैंने अपने तीन वर्ष जेल

में बिताये। जेल में मैंने अपने आप से कहा : 'खूब बेवकूफ बना यार।' जब मैं रिहा हुआ तो कोरोलेंको के पास गया कि उससे कहूं कि वह मुझे पढ़ा दे। लेकिन वह नगर में न था। तब मैं अपने लेव के पास, लेव तोल्सतोय के पास, गया। 'ऐसी बात है।' मैंने कहा। 'अच्छा।' वह बोले। 'बहुत ठीक।' सो यह बात है। और गोरीनोव कैसे ठीक हुआ? वही कोरोलेंको। मैं ऐसे अनेक लोगों को जानता हूं जो उसकी आत्मा पर जीते थे। हम लोग व्यापारी हो सकते हैं और ऊंचे महलों में रहते हैं, लेकिन सत्य हम तक भी पहुंच जाता है।"

इस प्रकार के विवरणों की मेरे निकट बहुत अधिक कीमत है। इनसे वे राहें प्रकाश में आती हैं, जिनके द्वारा कभी-कभी जंगली जातियों की नैतिकता और जीवन में संस्कृति की आत्मा प्रवेश पा जाती है। फूले हुए हरियाये चेहरे में मुरझाई हुई छोटी आंखोंवाला जारुबिन विचारशील बूढ़ा था। गुरिया के दानों की तरह उसकी पुतलियां काली और उभरी हुई थीं। उसकी छोटी-छोटी आंखों में कुछ हठीलापन था। 'कानून के रक्षक' के रूप में उसने अपनी प्रतिष्ठा बना ली थी। यदि किसी पुलिसवाले ने किसी व्यक्ति से गलत तरीके से एक कोपेक ले लिया, तो वह इसके विषय में शिकायत भेजता। दो न्यायालयों में उसकी शिकायत निराधार बता दी गयी थी। बूढ़ा पीटर्सबर्ग गया; सिनेट में। उसने एक आज्ञा-पत्र ढूंढ़ निकाला जिसमें पुलिस को नागरिकों से धन लेने को मना किया गया था। अब वह निझनी-नोवगोरोद लौटा और उस आज्ञा को लेकर "निझेगोरोद्स्की लिस्तोक" के कार्यालय में गया और उसे छापने को कहा। लेकिन गवर्नर की एक आज्ञा के अनुसार सेंसर ने उसे प्रफ से ही हटवा दिया। जारुबिन गवर्नर के पास गया और पूछा :

"क्या तू कानून को मान्यता नहीं देगा यार?" (वह सभी को 'तू' कहकर सम्बोधित करता।)

आज्ञा छप गयी।

लंबा काला कोट पहने, रुपहले बालों पर एक भद्दा हैट लगाये, मखमल लगे ऊंचे बूट पहने वह नगर की सड़कों पर टहलता रहता था। एक भारी ब्रीफ-केस उसकी बगल में रहता जिसमें वह 'संयम सोसायटी'

के नियम रखता। उसमे नागरिको की शिकायतो और पिटीशनों का ढेर था। वह गाडीवानो को गदी जुबान छोड देने के लिए समझाता। सडक पर होनेवाले सभी झगडो मे दखल देता। पुलिस वालो के व्यवहार के प्रति विशिष्ट रूप से सतर्क रहता और अपने कामो को "सत्य की खोज" बताता।

उस समय के प्रसिद्ध पादरी क्रोस्तादस्की निझनी-नोवगोरोद पधारे। गिरजे के सामने उनके प्रशसको की भारी भीड एकत्र हो गयी। जारुबिन आया और उसने पूछा "क्या हो गया, यारो?"

"ये लोग क्रोस्तादस्की के दर्शन की राह देख रहे हैं।"

"बादशाही गिरजो के अभिनेता की राह बेवकूफ कही के"

उससे कोई बोला नही। एक भक्त ने उसकी बाह पकडी, उसे अलग खीचकर ले गया और शीघ्रता से कहा.

"परमात्मा के नाम पर जितनी जल्दी हो सके भाग जा!"

साधारणत नगर के लोग उसे आदरपूर्ण कुतूहल से देखते थे। कुछ उसे "बेवकूफ" समझते। लेकिन अधिकाश उस बूढे को अपना रक्षक मानते। उससे कुछ अनहोनी घट जाने की आशा करते—कुछ भी, जहा तक भी वह म्युनिस्पल अधिकारियो को अरुचिपूर्ण हो।

१९०१ मे मैं जेल भेज दिया गया। जारुबिन तब तक मुझे न जानता था। उसने पब्लिक प्रोसीक्यूटर, उतिन, से मुझसे मिलने की आज्ञा मागी।

उतिन ने पूछा "आप बदी के रिश्तेदार हैं?"

"मैंने उसे देखा तक नही। मैं यह भी नही जानता कि उसकी शक्ल-सूरत कैसी है।"

"तो आपको उससे मिलने का कोई अधिकार नही।"

"क्या आपने नया टेस्टामेट पढा है? उसमे क्या कहा गया है? अगर हुजूर नया टेस्टामेट नही जानते तो लोगो पर मुकदमा कैसे चलायेगे?"

लेकिन पब्लिक प्रोसीक्यूटर का अपना टेस्टामेट था, जिसके आधार पर उसने बूढे की विचित्र प्रार्थना को ठुकरा दिया।

जारुबिन अलबत्ता उन रूसियों में से था—और ऐसों की कमी नहीं है— जो अपने पेचीदे जीवन के अन्त में, जब उनके पास खोने को और कुछ नहीं रह जाता, "सत्य के पुजारी" बन जाते हैं और केवल झक्की बनकर रह जाते हैं।

एक दूसरे व्यापारी बुगरोव के शब्द सचमुच अत्यधिक महत्व के हैं—और लाभदायक भी। यह लखपती, दानी, विश्वासी और बहुत ही चतुर व्यक्ति, निझनी-नोवगोरोद में एक सर्वशक्तिमान राजकुमार की भूमिका अदा करता था। एक बार कवि की भावुकता से उसने शिकायत की:

"हम व्यापारी लोग न तो बुद्धिमान हैं, न मजबूत, न चतुर। अभी तक हमने उचित रूप से कुलीन-वर्ग से पीछा नहीं छुड़ाया। अब हमें जेम्स्तवो के सदस्य और कोरोलेंको जैसे चरवाहे दबा रहे हैं। कोरोलेंको तो विशेषकर अरुचिकर व्यक्ति है। लगता बड़ा सीधा है, लेकिन उसे सभी जानते हैं और वह सभी जगह पहुंच जाता है..."

यह राय मैं १८६३ तक, जब मैं रूस और काकेशिया की लंबी यात्राओं से निझनी लौट रहा था, सुनता रहा। इस युग में—तीन वर्षों में—कोरोलेंको का महत्व एक सार्वजनिक व्यक्तित्व और लेखक के रूप में बढ़ गया था। अकाल के विरुद्ध संघर्ष में उनकी भूमिका, गरम-मिजाज बरानोव के खिलाफ उनका सफल और दृढ़ विरोध, जेम्स्तवो की कार्यवाहियों पर उनका प्रभाव, इन सब बातों की दूर-दूर तक चर्चा थी। मेरा खयाल है कि तब तक उनका "भूखा वर्ष" प्रकाशित हो चुका था।

कोरोलेंको के विषय में निझनी के एक नितांत मौलिक व्यक्ति द्वारा दिया गया निर्णय मुझे याद है:

"किसी संस्कृत देश में, अधिकारियों के विरोधी इस नेता ने, निर्वाण-सेना या रेड-क्रास जैसी किसी चीज का संगठन किया होता। बहुत ही महत्वपूर्ण, अन्तरराष्ट्रीय और उत्तम कार्य होता। किन्तु रूसी जीवन की सौजन्यपूर्ण स्थिति में वह शायद अपनी शक्ति को छोटी-छोटी बातों में गंवायेगा। यह दयनीय बात है— इतनी मूल्यवान देन नियति ने

हम गरीब भिखारियों के हिस्से डाली है। नितांत ही मौलिक, हमारे लिए एक नयी चीज। उनकी तरह के, या उनके ही समान, किसी और व्यक्ति को मैं अपने इतिहास में सोच नहीं पाता।"

"और उनकी साहित्य-सृजन शक्ति के सम्बंध में आपका क्या विचार है ?"

"मेरा विचार है कि वह अपनी शक्ति के सम्बंध में स्वयं ही आश्वस्त नहीं हैं, और यह बहुत बुरा है। अपने मन और मस्तिष्क के सभी गुणों की दृष्टि से वह एक सुधारक हैं — लेकिन मेरा विचार है कि इस कारण ही वह स्वयं अपनी कला-सम्बंधी दैवी देन को समझ नहीं पाते, यद्यपि सुधारक के उनके गुणों और उनकी कलात्मक देन के मिल जाने से उनमें अधिक आत्म-विश्वास और साहस होना चाहिए था। मुझे भय है कि वह "गौण रूप में" अपने को एक लेखक समझते हैं, न कि "पहले और सर्वप्रथम लेखक।"

बोबोरिकिन के "पतन की ओर" के एक चरित्र के प्रतिरूप की तरह ही ये शब्द एक पियक्कड़, चतुर, लोक-व्यवहार में निपुण व्यक्ति द्वारा कहे गये थे। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो किसी के विषय में भली बात न कहता था। कोरोलेंको के विषय में इसीलिए उसकी राय मुझे मूल्यवान लगी।

लेकिन हम लोग १८८९-९० की बात फिर करेंगे।

मैं कोरोलेंको से दुबारा नहीं मिला, क्योंकि मैंने लिखने का प्रयास छोड़ देने का निश्चय कर लिया था। कभी-कभी मैं उनसे कुछ देर तक सड़क पर मिल जाता था, किसी दोस्त के यहां, किसी मीटिंग आदि में। ऐसे स्थानों में वह झगड़ों को शान्ति से सुनते और चुप रहते। उनकी शान्ति मुझे बहुत हतोत्साह करती थी। ऐसा लगता जैसे मेरे पैरों के नीचे जमीन कांप रही है। जहां भी मैं होता मुझे लगता कि एक तूफान उमड़ रहा है। हर व्यक्ति जोश में आकर बहस करता — यह व्यक्ति किस आधार पर खड़ा है ? मुझमें उन तक जाने का साहस न होता था। मुझमें साहस न होता कि मैं पूछ लूं : "वह कौन सी चीज है जिसके कारण आप इतने शान्त रहते हैं।"

मेरे मित्र कुछ नयी किताबें लाये — रेदकिन की मोटी-मोटी किताबें, शेगलोव की उनसे मोटी "सामाजिक व्यवस्थाओं का इतिहास," मार्क्स की "पूंजी," संविधानों पर लोखवित्सकी की पुस्तक, क्ल्युचेव्स्का, कोर्कुनोव, सर्गेयेविच के छपे हुए भाषण।

नवयुवकों का एक हिस्सा मार्क्स की लौह तर्क-प्रणाली पर मुग्ध था। उनमें से अधिकांश वोरगेट का उपन्यास "शिष्य", सेंकेविच का "रूढ़ियों से मुक्त", देदलोव का "सशेन्का" और "नये इन्सान" का कहानियां पढ़ते थे। इन लोगों में व्यक्तिवाद की ओर बढ़ने की खुला आकांक्षा नई चीज थी। इस नई प्रवृत्ति का बहुत चलन था। युवक इसे शीघ्र ही अमल में लाते थे। सामाजिक प्रश्नों के हल के लिए 'बुद्धि-जीवियों के कर्तव्य' की मजाकिया और कटु लहजे में आलोचना करते थे।

इनमें से कुछ नये लोग मार्क्सवादी प्रणाली के डिटर्मिनिज्म में अपना समर्थन पाते थे।

त्रोइत्स्की एक प्रबल और पटु आलोचक था। वह यारोस्लावल के स्कूल में रहा था और बाद में उसने फ्रांस में डाक्टरी की।

उसने कहा : "ऐतिहासिक आवश्यकता उतनी ही रहस्यमय है जितनी चर्च द्वारा प्रचारित भाग्य-निर्भरता। वह उतनी ही पीड़ाजनक और निरर्थक है, जितना प्रारब्ध में विश्वास। भौतिकवाद मानसिक दिवा-लियापन है, जो जीवन के बहुरूपी तत्वों को अपने में मिला नहीं सकता और उन्हें भोड़ें तरीके से एक साधारण कारण बताकर संतुष्ट हो जाता है। सरलीकरण प्रकृति के विरुद्ध और उसके विपरीत है। उसके विकास का विधान सरलता से पेचीदगी की ओर है। सरलीकरण की हमारी मांग बचकानी बीमारी है। इससे यही पता चलता है कि हमारा मस्तिष्क अभी भी शक्तिहीन है और पूर्ण रूप से तत्वों की अराजकता में सामंजस्य लाने के अयोग्य है।"

कुछ ऐसे भी थे जो अहम् सम्बंधी एडम स्मिथ की रूढ़िवादी धारणा में अपना समर्थन पाकर बड़े प्रसन्न थे। यह ऐसा सिद्धान्त था जिससे ये पूर्णत संतुष्ट थे और वे साधारण, भद्दे अर्थों में, "भौतिकवादी" थे। उनमें से अधिकांश निम्नांकित भोलेपन से तर्क करते :

"यदि मानवता को प्रगति-पथ पर ले जानेवाली कोई ऐतिहासिक आवश्यकता है तो प्रत्येक वस्तु हमसे स्वतंत्र ही विकसित हो जायेगी।"

और वे अपनी जेबों में हाथ डालकर लापरवाही से सीटी बजाते रहते। शाब्दिक संघर्षों के दौरान में केवल तमाशबीनों की तरह वे खड़े देखते रहते, मानो मुर्गों की भयंकर लड़ाई को दूर से देखनेवाले कौवे हों। "शौर्यशाली भूतकाल के रक्षकों" के प्रति नवयुवक कटुता से हंसते। मेरी भावनाएं इन "रक्षकों" के पक्ष में थीं। ये लोग सनकी भले ही रहे हों, लेकिन इनकी आत्माएं असाधारण रूप से पवित्र थीं। "जनता" के प्रति उत्साह के कारण मैं उन्हें संतों की तरह मानता था—वह उनके प्यार, उनकी चिन्ता और प्रयत्नों का विषय थी। उनमें शौर्यपूर्ण और हास्यास्पद क्या था—मैं समझता था। लेकिन मुझे उनकी काल्पनिकता पसंद थी यानी उनका सामाजिक आदर्शवाद। में समझता था कि वे "जनता" को बहुत सुहावने रंगों से सजाते थे और वे जिस "जनता" की बातें करते थे, उसका कोई अस्तित्व न था। इस पृथ्वी पर तो धैर्यशाली, चतुर, अदूरदर्शी, स्वार्थी किसान भरे हैं, जो उस हर वस्तु को शंका और विरोध की दृष्टि से देखते हैं जो उनके हित की नहीं है। इस पृथ्वी पर अंधविश्वासों और पूर्वग्रहों से पूर्ण बदमाश अशिक्षित लोग भी भरे हैं, जो किसानों की पूर्व-धारणाओं से भी अधिक विषाक्त हैं और पृथ्वी पर लम्बे बालोंवाला मजबूत व्यापारी भी रहता है, जो धीरे-धीरे, सावधानी से, लापरवाही वाली पशु-जिन्दगी का निर्माण करता है।

विरोधी तथा दिन पर दिन और बढ़ती जानेवाली रायों की अव्यवस्था में, मस्तिष्क और भावना के इन संघर्षों में—ऐसे संघर्षों में, जिनमें सत्य विकृत होकर निकलता है—विचारों की इस विभीषिका में, मुझे कुछ भी "प्रिय और निकट" न लगा।

ऐसी हर आंधी के बाद घर लौटने पर मैं कुछ विचारों और सूत्रों को लिख लेता था—वे जो अपने स्वरूप या तत्व में मुझे मार्के के लगते थे। उनमें मैं बोलनेवालों की मुद्राओं, बातचीत के लहजे, उनके चेहरों की छाप, आंखों की चमक, आदि सभी दर्ज कर लेता था। मुझे सदैव ही इस बात पर चिंता और हैरानी होती थी कि वे एक-

दूसरे पर शाब्दिक घूंसा मारकर प्रसन्न होते हैं। जो सौंदर्य और शुभ की, मानवता और न्याय की, बातें करते हों, उन्हें झगड़ालू बातचीत के प्रपंच में पड़ते देखकर आश्चर्य होता था। वे एक-दूसरे के सम्मान पर अक्सर हमला करते, चोट पहुंचाते और बेलगाम चिड़चिड़ाहट और झगड़ालूपने का प्रदर्शन करते।

स्कूल द्वारा प्राप्त किया गया विचारने का अनुशासन, या कहिए कि उसकी टेकनीक, मुझमें न थी। मैं मसाला एकत्र करता रहता था, जिस पर गम्भीरतापूर्वक श्रम करना पड़ता था और इसके लिए एक दूसरी चीज, फुरसत की, आवश्यकता थी, जो मुझे प्राप्त न थी। जीवन, जिसके विषय में काफी अच्छी तरह जानने का दावा मैं कर सकता था और उन किताबों में, जिनमें मुझे पूर्ण विश्वास था, विरोध देखकर मेरा ध्यान बंट जाता था। मैं समझ रहा था कि दिन पर दिन मैं अधिक बुद्धिमान हो रहा हूं, लेकिन यही चीज थी जो मुझे बिगाड़ रही थी। लापरवाही से भरी गयी किश्ती की तरह मुझमें एक खतरनाक डगमगाहट आ गयी थी। संगीत के इन स्वरों में बेसुरा अलापने के भय से मैं भी उनके स्वर में स्वर मिलाता और यद्यपि मेरा स्वयं का अपना बुलन्द स्वर था तो भी मैं—औरों की भांति ही—मध्यम अलापता। यह मेरे लिए बहुत कठिन स्थिति थी, यह मुझे एक ऐसे व्यक्ति की भांति गलत दशा में डाल देती थी, जो अपने आसपास के लोगों के लिए सौहार्द-पूर्ण भावना का व्यवहार करने की इच्छा से अपने प्रति झूठा हो।

कजान, बोरिसोग्लेब्स्क, जारित्सिन की तरह ही यहां भी बुद्धि-जीवियों के मेरे अध्ययन ने मुझे चिंता और परेशानी में डाल दिया था। एक बौद्धिक रेगिस्तान के बीच, अधिकांश शिक्षित लोगों को, केवल अपने जीवन-यापन के लिए, अपनी मूल्यवान शक्ति लगानी पड़ती थी। वे एक कठिन, अभावपूर्ण तथा अपमानजनक जीवन बिताते थे। यही बात मुझे सबसे ज्यादा परेशानी में डाल देती थी। मैं देखता था कि विभिन्न प्रकार की योग्यताओं से पूर्ण ये व्यक्ति अपने ही देश में बिराने-से थे। वे संदेह तथा घृणा के वातावरण में रहते थे और यह दुर्गंधिपूर्ण तथा घिनौना वातावरण जीवन की छोटी-छोटी 'मूर्खताओं' से भरा था।

मैं फिर चकराया। आखिर यह क्यों है कि बुद्धिजीवी जनता में धंसने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। उनकी आत्मिक निर्धनता में, उनके अजीब उतावलेपन में, एक दूसरे के प्रति उनकी हृदयहीन निर्ममता में, उनके जीवन मुझे बिल्कुल ही निरर्थक लगते थे।

मैं बड़े प्रयत्नों से, जो कुछ भी दयापूर्ण, निस्पृह, सुन्दर, असाधारण लगता था, बटोर लेता था। मुझे इन में इन्सानियत के चिन्हों की याद आज भी कभी-कभी आ जाती है। लेकिन मेरी आत्मा सूखी थी और किताबों का दमलेवा जहर अब मुझे संतुष्ट न कर पाता था। मुझे तर्कसंगत वस्तु चाहिए थी—शौर्यपूर्ण करिश्मा, बगावत।

यही काल था जब मेरी और कोरोलेंको की एक स्मरणीय बातचीत हुई।

ग्रीष्म की रात थी। वोल्गा के ऊंचे तट, ओत्कोस में एक बेंच पर मैं बैठा था। यहां से मैं वोल्गा प्रदेश के सुनसान चरागाहों का सुन्दर दृश्य देख रहा था और पेड़ों की डालों के बीच से बहती नदी को भी। यकायक कोरोलेंको बेंच पर मेरी बगल में आ गये। मैं न तो उस ओर ध्यान ही दे सका था, न कुछ देखा ही था। उनकी उपस्थिति का ज्ञान मुझे तभी हुआ जब उन्होंने अपने कंधे से कुहनियाकर कहा: "बड़े गम्भीर विचारों में लीन थे। मैं तुम्हारा हैट उतार लेना चाहता था। लेकिन सोचा, कहीं तुम डर न जाओ।"

वह दूर, नगर के दूसरे किनारे पर, रहते थे। रात के दो बजे थे। स्पष्टतः वह थकावट से चूर वहां आ बैठे थे। घुंघराले बालोंवाला सिर खुला था। वह रूमाल से चेहरे को पोंछ रहे थे:

"इतनी रात हो गयी है तब भी तुम बाहर क्यों हो?"

"आप भी तो बाहर हैं!"

"हां, मुझे कहना चाहिए था कि हम दोनों इतनी रात गये बाहर क्यों हैं? तुम कैसे हो? क्या कर रहे हो?"

कुछ महत्वहीन बातों के बाद उन्होंने कहा:

"कहते हैं कि तुम स्क्वोर्तसोव के चक्र में हो? कैसा आदमी है वह?"

स्क्वोर्तसोव उस युग में मार्क्सवादी विचारधारा के श्रेष्ठ प्रणेताओं में से था। "पूंजी" के अलावा वह कभी कुछ न पढ़ता था और इस बात पर उसे गर्व था। स्त्रूवे की "आलोचनात्मक टिप्पणियां" निकलने के एक या दो वर्ष पूर्व उसने वकील शेगलोव की बैठक में एक लेख पढ़ा था और स्त्रूवे जैसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। किन्तु जैसा कि मुझे भली भांति स्मरण है, उसके विचार अधिक शक्तिपूर्ण रूप से व्यक्त किये गये थे। इस लेख के कारण स्क्वोर्तसोव एक नास्तिक की स्थिति में हो गया। लेकिन इस कारण युवकों का एक चक्र बनने में कोई रुकावट न हुई। बाद में, इस चक्र के अनेक सदस्यों ने सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के संगठन के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्क्वोर्तसोव सचमुच "इस दुनिया के लिए न बना था।" वह एक सन्यासी की भांति, जाड़े और गरमी में एक पतला कोट तथा फटे जूते पहने, अर्द्ध-निर्धनता का जीवन बिताते हुए, लगातार ही "अपनी आवश्यकताओं को घटाता" जाता था। वह हफ्तों केवल शक्कर पर ही जीवन बिताता था और दिन में ६ औंस शक्कर खाता था; न कम, न ज्यादा। "तर्कसंगत भोजन" के इस प्रयोग से उसका शरीर टूट गया था और फलतः उसे गुर्दे की बीमारी हो गयी थी।

देखने में वह नाटा और महत्वहीन जान पड़ता था। किन्तु उसकी हल्की-हल्की नीली आंखों से उस भाग्यवान व्यक्ति की मुस्कराहट झांकती थी, जिसे उस संपूर्ण सत्य का ज्ञान हो गया है जो अन्य सब के लिए अभी अगम्य है। उन सबके प्रति उसमें एक हल्की घृणा का भाव था जो उससे मतभेद रखते थे। वह उन पर रहम खाता था और कभी हमलावर न होता था। सस्ते तंबाकू की बनी मोटी सिगरेटों को १६ इंच लंबे बांस के होल्डर में लगाकर पीता था। इस होल्डर को वह कटारी की तरह अपनी कमर में रखता था।

स्क्वोर्तसोव को मैंने युवक विद्यार्थियों के ऐसे दल के बीच देखा, जो किसी असाधारण सौंदर्यशील नवागांतुक युवती के प्रति अपने सामूहिक प्यार का प्रदर्शन कर रहे थे। स्क्वोर्तसोव उन छैला युवकों के साथ स्पर्धा करने लगा और उस नवयुवती के प्रति आकृष्ट रहा। अपने सिगरेट

होल्डर को हाथ में लिए, धुएं के बादलों के बीच, वह असाधारण रूप से घृणास्पद लग रहा था। वह एक कोने में खड़ा था। उसकी आकृति स्टोव के सफेद टाइलों पर पड़ रही थी। पांडित्यपूर्ण शान्ति के साथ वह प्राचीन विश्वासी पुरोहित के लहजे में कविता, गायन-वादन, नाटक और नृत्य की निन्दा में भारी-भरकम शब्दों की बौछार किये जा रहा था।

रूढ़िवादियों की तरह उसने कहा :

"सुकरात ने बहुत पहले कहा था कि मन-बहलाव की चीजें हानिकर होती हैं।"

महीन सफेद गॉज का ब्लाउज पहने सुन्दर नवयुवती अपने मोहक पैरों को नचाती हुई, उसकी बातें सुन रही थी। अपनी सुन्दर आंखों से उस सन्यासी को बोझिल नम्रता से देख रही थी। निस्संदेह यह निगाह भी एथेन्स की उन सुन्दरियों जैसी थी जो चपटी नाकवाले सुकरात की ओर निहारा करती थीं।

मूक भाषा में यह निगाह पूछती :

"तुम्हारा बोलना कब बन्द होगा और तुम जाओगे कब ?"

उसने युवती को यह साबित करके बतला दिया कि कोरोलेंको खतरनाक आदर्शवादी और रहस्यवादी है और साहित्य—जिसे वह कभी पढ़ता नहीं—केवल नरोदवाद की सड़ती हुई लाश को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न था। इसको पूरी तरह साबित करने के बाद उसने अन्ततः सिगरेट होल्डर को अपनी पेटी में खोंसा और विजयी की भांति विदा हुआ। नवयुवती उसकी ओर देखती बड़ी नजाकत से, थकी सी, सोफे पर लेट गयी और बुदबुदायी :

"भगवान बचाये। यह आदमी नहीं है। यह तो कुहासे भरे दिन की तरह है।"

कोरोलेंको हंस दिये और चुपचाप मेरी बातें सुनते रहे। आंखें सिकोड़े नदी की ओर देखते हुए उन्होंने अन्त में कहा :

"किसी विश्वास का चयन करने में शीघ्रता मत करो। मैं चयन करने की बात कह रहा हूं, क्योंकि मुझे लगता है कि आज-कल लोग प्रयत्न करके विश्वास की ओर नहीं आते किन्तु उसे चुन लेते हैं। देखो

न, भौतिकवाद, जो अपनी सरलता के कारण बहुत आकर्षक लगता है, कितनी तेजी से अपनाया जा रहा है। यह बात विशेषकर उन लोगों के लिए सही है जो अपने विषय में सोच नहीं सकते हैं। छैला लोग स्वेच्छा से उसे चुन लेते हैं। उन्हें कोई भी नई चीज पसन्द है, चाहे फिर वह उनकी प्रकृति, आकांक्षाओं और इच्छाओं के अनुरूप हो या न हो।"

वह अक्सर विचारपूर्वक, सोचते हुए, बोलते; जैसे अपने से ही बातें कर रहे हों। बीच-बीच में वह बोलना बन्द कर देते और कहीं दूर, नदी के किनारे लगे पानी खींचनेवाले पाइप की आवाज और जल की कल-कल ध्वनि, सुनने लगते।

उन्होंने कहा कि जीवन के तारतम्य को समझाने के प्रत्येक तर्क-संगत प्रयत्न का स्वागत करना चाहिए और उसे गम्भीरता से समझने की कोशिश करनी चाहिए, किन्तु हमें याद रखना चाहिए कि "जीवन असंख्य तथा विचित्र रूप से उलझी हुई वक्र रेखाओं से बना है" और यह कि "जीवन के चतुष्कोणी तर्क-संगत चौखटे को समझना अत्यधिक कठिन है।"

ठंडी सांस भरते, हैट से हवा करते हुए, उन्होंने कहा :

"इन अनेक पेचीदगियों को, मानवीय कार्यवाहियों की टेंढ़ी-मेढ़ी रेखाओं को और उनके सम्बंधों को किसी व्यवस्था में रख सकना असम्भव है।"

मुझे उनकी बातचीत की सरलता, उनका सौजन्य और विचारपूर्ण तर्क पसन्द था। किन्तु मार्क्सवाद के विषय में वह जो कुछ कहते थे वह दूसरे शब्दों में, तत्व रूप में, मुझे मालूम था। जब एक क्षण को उन्होंने बोलना बन्द किया तो मैंने उनसे तुरन्त ही पूछा कि वह इतने शान्त कैसे हो गये।

उन्होंने अपना हैट पहना, मेरे चेहरे को ध्यान से देखा और मुस्कराते हुए उत्तर दिया :

"मैं जानता हूं कि मुझे क्या करना है और मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि जो मैं कर रहा हूं वह उचित है। लेकिन तुम मुझसे यह पूछते क्यों हो ?"

अब मैंने उन्हें अपनी चिन्ताओं और बेचैनी के बारे में बताया। वह कुछ थोड़ा सा आगे को खिसककर इस तरह झुके जिससे मेरा चेहरा अच्छी तरह देख सकें। फिर ध्यानपूर्वक मेरी बातें सुनते रहे।

बाद में धीरे से कहा :

"तुमने जो कहा उसमें बहुत कुछ सच्चाई है। तुम्हारी निरीक्षण-शक्ति बहुत तीव्र है।"

मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए वह प्रसन्नता से हंसे।

"मैंने कभी यह न सोचा था कि ये प्रश्न तुम्हें परेशान करेंगे। तुम्हारे विषय में लोगों ने कुछ और ही बताया था। लोग तुम्हें खुशमिजाज, उद्दंड व्यक्ति बताते हैं—यह भी कि तुम बुद्धिजीवियों के विरुद्ध हो...।"

फिर वह बुद्धिजीवियों के प्रति बहुत ही सशक्त शब्दों का प्रयोग करने लगे। हर जगह और सदा ही बुद्धिजीवी जनता से अलग रहे हैं, लेकिन यह इसलिए कि अपने पवित्र उद्देश्य के कारण वे सदा ही अग्रिम पंक्ति में रहते हैं।

"वे सभी सार्वजनिक उफानों के फेन की तरह हैं—सभी नव-निर्माणों की आधार-शिला। सुकरात, जियारदानो ब्रूनो, गैलीलियो, राबेसपियर, हमारे दिसंबरवादी, पेरोव्स्काया और झेल्याबोव—वे सभी जो देश-निकाले की स्थिति में भूखों मर रहे हैं और वे लोग जो आज रात भी किताब पर झुके न्याय के संघर्ष के लिए जेल जाने की तैयारी कर रहे हैं, ये सभी जीवन-शक्तियों के सबसे अधिक कार्यशील तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सभी जीवन के सबसे प्रखर और प्रभावशाली अस्त्र हैं।"

बातों की तेजी में वह उठ खड़े हुए और बेंच के सामने टहलते हुए कहते रहे :

"मानवता ने अपने इतिहास का निर्माण उसी समय शुरू किया, जब पृथ्वी पर प्रथम बुद्धिजीवी का आविर्भाव हुआ। प्रोमेथियस सम्बंधी पौराणिक कथा उस इन्सान की कहानी है, जिसने अग्नि के उत्पादन

की राह निकाली थी। और इस प्रकार उसने एक ही बार में इन्सान और पशु के भेद को स्पष्ट कर दिया। तुमने बुद्धिजीवियों की बुराइयों — किताबीपन, जीवन से अलगाव— को सही रूप से पकड़ा है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या ये बुराइयां हैं? कभी-कभी उचित रूप से देखने के लिए निकट आना नहीं, वरन दूर जाना आवश्यक होता है। तुमसे बड़ा और अधिक अनुभवी होने के नाते मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि अच्छे गुणों की ओर अधिक ध्यान देना ही बड़ी चीज है। हम सभी लोग बुराइयां निकालने को उत्सुक रहते हैं। यह बहुत आसान है। ऐसा नहीं कि यह बात एक-दूसरे के फायदे की न हो। लेकिन बुरा आदमी होने पर भी, मेधावी होने के नाते, वाल्तेयर ने गलत रूप से अपराधी बनाये व्यक्ति का पक्ष लेकर महान काम किया। मैं उन भयंकर अंध-विश्वासों की बात नहीं करता जिनका उसने विनाश किया। किन्तु एक ऐसे उद्देश्य के लिए जो लगता हो कि हारा हुआ उद्देश्य है, इतनी दृढ़ता से खड़ा होना —सचमुच कमाल की बात थी। वह समझता था कि इन्सान का पहला कर्तव्य है कि वह इन्सान बने। न्याय आवश्यक है। छोटी-छोटी चिनगारियों को समेटकर जीवन जब एक महान लपट का रूप ले लेगा, तभी पृथ्वी से गंदगी और झूठ का विनाश होगा। तभी जीवन अपने दुखपूर्ण पीड़क स्वरूप को बदल सकेगा। अपना विचार किये बिना, दूसरों का विचार किये बिना, सभी बातों का विचार किये बिना, जीवन में न्याय का आविर्भाव करो। यही हमको करना है।"

स्पष्टतः वह थके हुए थे। बड़ी देर से बातें कर रहे थे। आकाश की ओर देखते हुए, बैठकर, उन्होंने कहा :

"बहुत देर हो गयी है, या कहो, सबेरा हो रहा है। देखो, उजाला होने लगा है। लगता है पानी बरसेगा। घर चलने का वक्त हो गया।"

मैं पास ही रहता था, वह मील दो मील की दूरी पर। मैंने उन्हें घर तक पहुंचा आने की बात कही और हम लोग बादलों से ढंके काले आकाश के नीचे उनींदे नगर की सड़कों पर चलने लगे।

"तुम कुछ लिख रहे हो?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं ?"

"मेरे पास समय नहीं है।"

"बहुत बुरी बात है। अगर तुम चाहते तो अवश्य समय निकलाते। मेरा विश्वास है, मुझे लगता है, तुम में योग्यता है। भाई, तुम कुछ उखड़े-उखड़े से हो।"

वह बेचैन उस्पेन्सकी के विषय में बातें करने लगे। किन्तु यकायक जोर से पानी बरसने लगा। समूचा नगर मानो रुपहले जाल के नीचे ढंक गया हो। कुछ मिनटों के लिए हम लोगों ने एक फाटक के पास आसरा ढूंढ़ा। लेकिन यह देखकर कि पानी देर तक बरसेगा, हम लोगों ने एक दूसरे से विदा ली।

ब्लादिमीर कोरोलेंको

तिफलिस से लौटकर जब मैं निझनी-नोवगोरोद आया तो कोरोलेंको पीटर्सबर्ग में थे ।

हाथ में कोई काम न होने के कारण मैंने कुछ कहानियां लिखीं और उन्हें रीन्हार्द के "वोल्झस्की वेस्तनिक" अखबार को भेज दिया। कोरोलेंको के लेखों के कारण यह अखबार वोल्गा-क्षेत्र में काफी प्रभावशाली हो गया था ।

मेरी कहानियों में लेखक का नाम एम. जी. या जी. वाई. होता था। कहानियां शीघ्र ही प्रकाशित हो गयीं। रीन्हार्द ने एक प्रशंसा का पत्र भेजा और बहुत सा रुपया भी। लगभग ३० रूबल। किसी कारणवश, जो अब मुझे याद नहीं, लेखक के भेद को मैंने वासिल्येव और लानिन जैसे निकट मित्रों से भी छिपाये रखा, क्योंकि इन कहानियों का महत्व मैं स्वयं ही बहुत कम आंकता था। मैंने यह सोचा भी न था कि वे मेरे भाग्य को बदल देंगी। लेकिन रीन्हार्द ने लेखक की असलियत कोरोलेंको से प्रकट कर दी और वह जब पीटर्सबर्ग से लौटकर आये तो मुझे पता लगा कि उन्होंने मुझे मिलने के लिए बुलाया है।

वह अब भी नगर के बाहर शिल्पकार लेम्के द्वारा निर्मित लकड़ी के घर में रहते थे। जब मैं पहुंचा तो वह सड़क के बगल में स्थित एक छोटे कमरे में चाय पी रहे थे। खिड़कियों और सभी कोनों में फूल रखे थे और सब जगह किताबें तथा अखबार फैले थे।

उनकी पत्नी और बच्चे चाय पी चुके थे और बाहर टहलने जा रहे थे। वह मुझे पहले से अधिक दृढ़ और आश्वस्त लगे और उनके बाल भी और अधिक घुंघराले लगे।

"हम अभी तुम्हारी कहानी 'सिस्किन' ही पढ़ रहे थे। तो तुम्हारी चीजें अब छपने लगीं? बधाई। मुझे दीखता है तुम रूपक लिखने पर कटिबद्ध हो। हां, रूपक, बुद्धिमानी से लिखा जाय तो, अच्छा हो सकता है। हठ कोई ऐसा दुर्गुण नहीं है।"

सिकुड़ी आंखों से मुझे देखते हुए उन्होंने कुछ और दयापूर्ण शब्द कहे। उनकी भवें और गरदन ग्रीष्म की धूप से काली पड़ गयी थीं और उनकी दाढ़ी सफेद हो गयी थी। नीली सूती कमीज और चमड़े की पेटी पहने, ऊंचे बूटों में काले पैंट को बांधे, वह ऐसे लग रहे थे जैसे कोई बहुत दूर से आया हो और अभी-अभी चल देनेवाला हो। उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण आंखों में एक विशेष चमक थी।

मैंने उन्हें बताया कि मैंने और बहुत सी कहानियां लिखी हैं और उनमें से एक 'कॉकेशस' में प्रकाशित भी हुई है।

"तुम कोई अपने साथ नहीं लाये? तुम्हारी कहानियां बहुत मौलिक हैं। तुम जो लिखते हो, वह हमेशा संबद्ध नहीं होता। उसमें कुछ असमानता होती है। लेकिन कहानियां होती दिलचस्प हैं। कहते हैं कि तुम बड़े घुमक्कड़ हो। मैं भी खूब घूमता हूं। सारी गरमी मैं वोल्गा में घूमता रहा। कर्जनेत्स और वेत्लुगा तक गया। तुम कहां थे?"

जब मैंने उन्हें अपनी घुमाई का संक्षिप्त विवरण दिया, तो उन्होंने समर्थन में कहा:

"वाह वाह! तुम तो खूब घूमे। इसीलिए तुम इन वर्षों में—कितने?—तीन वर्षों में, परिपक्व हो गये हो और तुमने काफी शक्ति भी एकत्र कर ली होगी।"

मैंने हाल ही में उनकी कहानी "नदी की क्रीड़ा" पढ़ी थी। उसके विवरण और सौंदर्य ने मुझे मुग्ध कर लिया था। लेखक के प्रति कृतज्ञता का भाव मुझमें जागा और मैं उत्साहपूर्वक उस कहानी के विषय में बातें करने लगा।

मेरा विचार है कि नाविक त्यूलिन के रूप में कोरोलेंको ने असाधारण कुशलता से और जीवन के प्रति सच्चाई बरतते हुए "समय की आवश्यकता के अनुसार शूर" किसान का चित्रण किया है। उस

तरह का व्यक्ति अपनी पत्नी को अधमरा कर देने या अपने किसी पड़ोसी की खोपड़ी तोड़ देने के फौरन बाद ही किसी महान उदारता का काम कर डालने की क्षमता रखता है। अपनी मृदु मुसकानों से वह मुग्ध कर सकता है, खिले फूलों जैसे सुरम्य शब्दों से मोह सकता है और फिर सहसा, अकारण ही, कुछ ऐसी बात भी कह सकता है जिससे लगे कि किसी ने मुंह पर गंदा जूता मारा है। कोजमा मिनिन की भांति उसमें जनता के आन्दोलन संगठित करने की क्षमता थी। साथ ही उसमें शराबी बन जाने और मिट जाने की भी क्षमता थी।

बिना टोके हुए, ध्यान से मुझे देखते हुए, कोरोलेंको मेरी उलझी-उलझी बातों को सुनते रहे — और मैं बहुत व्यग्र रहा। अक्सर अपनी आंख बंद करते हुए, वह हाथ से मेज को ठोकते थे। कुछ देर बाद वह उठे और दीवाल के सहारे खड़े हो गये। प्रसन्नता से, मजाकिया लहजे में, उन्होंने कहा :

"तुम अतिशयोक्ति कर रहे हो — बस हमको यही कहना चाहिए कि कहानी अच्छी है। इतना काफी है। मैं इस बात से इनकार नहीं करूंगा कि वह मुझे खुद भी पसंद है। किन्तु आमतौर पर किसान किस प्रकार का है और त्यूलिन किस प्रकार का है — इस सम्बंध में मैं कुछ नहीं जानता। लेकिन तुम बहुत अच्छा बोलते हो, स्पष्ट और निष्कपट। तुम्हारी भाषा बहुत ही शक्तिशाली है — यह तुम्हारी प्रशंसा के लिए है। और ऐसा लगता है कि तुमने बहुत कुछ देखा है और सोचा है। इस पर मैं तुम्हें आत्मा से बधाई देता हूं। हां, आत्मा से।"

उन्होंने मेरी ओर अपना खुरदुरा हाथ बढ़ाया जो पतवार या कुल्हाड़ी के ठट्ठों से भरा था। उन्हें लकड़ी चीरने तथा हर तरह के शारीरिक श्रम का शौक था।

"हां बताओ तुमने क्या-क्या देखा ?"

अपनी यात्राओं के दौरान में मिले हुए बहुत से सत्य के शोधकों के विषय में मैंने उन्हें बताना शुरू किया। ये लोग सैकड़ों की संख्या में नगर से नगर, मठों से मठों, रूस की टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर घूमा करते हैं।

खिड़की से सड़क की ओर देखते हुए कोरोलेंको ने कहा :

"उनमें से अधिकांश लोफर हैं; असफल हीरो — अपने आप पर आसक्त। क्या तुमने ध्यान दिया है कि ये सभी बुरे स्वभाव वाले हैं? इनमें से अधिकांश 'पवित्र सत्य' की खोज में नहीं हैं। वे बस आराम की जिन्दगी और पिछलगुवे बनने का अवसर चाहते हैं।"

इतनी शान्ति से कहे गये उन शब्दों ने तुरन्त ही मेरे सामने उस सत्य को स्पष्ट कर दिया, जिसे मैं स्वयं ही अनुभव कर रहा था।

"उनमें से कुछ अच्छी खासी बकवास कर सकते हैं। उनके पास भाषा का भंडार है। अक्सर उनकी बातें रेशम से भी अधिक चिकनी होती हैं।" कोरोलेंको कहते रहे।

यही "सत्य के शोधक" प्रिय नरोदवादियों के जीवन-वृत्तात्मक साहित्य के चरित्र होते थे और कोरोलेंको उन्हें लोफर की संज्ञा दे रहे थे —उन्हें बुरे स्वभाववाला बता रहे थे। यह लगभग प्रभु-निन्दा की भांति था। लेकिन कोरोलेंको के मुंह से निकले शब्दों ने इस व्यक्ति के प्रति आत्मिक स्वतंत्रता सम्बंधी मेरी धारणा को पुष्ट किया।

"तुम कभी वोल्हीनिया या पोदोलिया नहीं गये हो? बड़ी रमणीक जगह है।"

जब मैंने बन्हें क्रोंस्तादस्की से हुई जबरन बातचीत का हवाला दिया तो उन्होंने उत्सुकता से पूछा :

"उनके बारे में तुम्हारी क्या राय है? वह किस प्रकार के व्यक्ति हैं?"

"ऐसे व्यक्ति जो सचमुच सीधे-सादे गांव के पादरियों की तरह विश्वास करते हैं — अच्छे, स्वच्छ हृदय से। मैं तो ऐसा समझता हूं कि उनकी सर्वप्रियता स्वयं आतंकित करती रहती है। उनको देखकर ऐसा लगता है मानो वह बहुत अव्यवस्थित हैं, जैसे वह कोई काम अपनी इच्छा से न कर रहे हों। वह सदा ही अपने भगवान से पूछते रहते हैं: 'मालिक, क्या यह सही है?' और हर समय जैसे उन्हें डर लगा रहता है कि यह सही नहीं है।"

कोरोलेंको ने विचारमग्न होकर कहा : "बात सुनने में बहुत विचित्र लगती है।"

फिर उन्होंने मुझे लुकोयानोव के किसानों और कर्जनेत्स के अविश्वासियों से हुई बातचीत बतानी शुरू की। इस विवरण में वह अपने परोक्ष, संयत मजाक के द्वारा उनकी अज्ञानता और बातचीत की चतुराई को बता रहे थे और बड़े कौशल से किसान की सामान्य बुद्धि तथा अपरिचितों के प्रति उसके अविश्वास का चित्र खींच रहे थे।

"कभी-कभी मैं सोचता हूं कि दुनिया में कहीं भी इतनी विभिन्न आत्मिक जिंदगी नहीं है, जितनी हमारे रूस में। यदि यह कहना बहुत बड़ी बात है, तो भी यह तो कहा ही जा सकता है कि जो लोग विचार करते हैं और विश्वास करते हैं, उनके चरित्र हमारे देश में असंगत रूप से विभिन्न हैं।"

गांवों के आत्मिक जीवन सम्बंधी निकट अध्ययन की आवश्यकता के बारे में उन्होंने गंभीरतापूर्वक बताया।

उन्होंने घोषणा की: "हमारे जाति-सम्बंधी शोधकों द्वारा यह खोज कभी पूर्ण न हो सकेगी। हमें इसे थोड़ा दूसरी तरह समझना चाहिए — ज्यादा निकट से, गहराई से। गांव की धरती पर, जहां से हम सब की उत्पत्ति है, बहुत से निरर्थक झाड़ी-झंखाड़ भी उगते हैं। इस धरती में बीज बोने के लिए शक्ति से कम चतुरता की आवश्यकता नहीं है। इसी ग्रीष्म में मेरी एक युवक से बातचीत हुई। वह मूर्ख नहीं था। उसने पूरी गंभीरता से मुझे आश्वासन दिया कि हमारे गांव में कुलकों का विकास एक प्रगतिवादी चिन्ह है क्योंकि कुलक पूंजी एकत्र करते हैं और रूस को एक पूंजीवादी देश बनने की आवश्यकता है। गांवों में यदि इस प्रकार का प्रचार पहुंचा ..."

वह हंसे।

मुझे घर से विदा करते हुए, उन्होंने फिर मेरे लिए शुभ कामनाएं प्रकट कीं।

"आप क्या सोचते हैं — मैं लिख सकता हूं?" मैंने पूछा।

"हां, हां, तुम लिख सकते हो।" कुछ अचकचाकर उन्होंने कहा। "क्यों, तुम तो लिख ही रहे हो और तुम्हारी चीजें छप रही

हैं। और क्या चाहते हो ? यदि तुम चाहते हो तो अपनी पांडुलिपि ले आया करो, हम चर्चा कर लेंगे।" उन्होंने आगे कहा।

उनके पास से मैं आत्म-विश्वास की भावना लेकर लौटा — जैसे कोई बहुत गरमी और थकावट के बाद जंगल के बीच बहती नदी के ठंडे पानी में नहाया हो।

कोरोलेंको के लिए मेरे मन में और भी अधिक आदर की भावना पैदा हुई। लेकिन कुछ कारणों मैं उनकी ओर खिंच न सका। और इससे मुझे चिंता होती थी। निस्संदेह इसका कारण था यह कि मैं उस समय शिक्षकों से ऊबा हुआ था और उनसे छुटकारा चाहता था। ऐसी चीजों के विषय में, जो मुझे हैरान किये हुए थीं, मैं कुछ ऐसे लोगों से बातें करना चाहता था जिनसे हमदर्दी के साथ दोस्ताना, सीधी-सादी बात, हो सके। लेकिन हर बार जो अनुभव मैं अपने शिक्षकों के पास लेकर जाता, उन्हें वह अपने तरीके से बनाने और संवारने लगते थे — उन्हीं राजनैतिक और विचारात्मक दूकानों के फैशनों की तरह जिनके वे दर्जी होते। मैं समझता था कि वे सचमुच ही और किसी तरह से सीने और संवारने के अयोग्य थे। लेकिन मुझे लगता कि वे मेरी चीज बरबाद कर देंगे।

पन्द्रह दिनों के बाद मैं "मछुवा और परी" नामक अपनी कहानी लेकर कोरोलेंको के पास गया। मैं अपने साथ हाल ही में लिखी हुई कहानी "बूढ़ी इजरगिल" भी ले गया। कोरोलेंको घर पर नहीं थे। मैंने पांडुलिपियां उन्हीं के यहां छोड़ दीं। दूसरे दिन मुझे उनका एक नोट मिला: "शाम को बातचीत के लिए आना। व्लादिमीर कोरोलेंको।"

वह मुझे सीढ़ियों पर कुल्हाड़ी लिए हुए मिले।

कुल्हाड़ी नचाते हुए उन्होंने कहा: "यह मत समझना कि यह मेरी आलोचना का औजार हैं। मैं कुछ अल्मारियां रख रहा था। लेकिन कुछ सजा तो तुम्हें मिलनी ही है।"

प्रसन्नता से उनका चेहरा चमक रहा था। आंखें मुसकरा रही थीं। रूस की स्वस्थ, दृढ़ देहाती नारी की भांति, उनमें ताजी पकी रोटी जैसी कोई चीज थी।

"मैं रात भर लिखता रहा—और खाने के बाद सो गया। जब जागा तो लगा कि कुछ करना चाहिए।"

पन्द्रह दिन पहले जिस व्यक्ति को मैंने देखा था—यह उससे बिल्कुल भिन्न था। मुझमें किंचित भी यह भाव नहीं था कि यह शिक्षक या उपदेशक है। मेरे सामने एक बढ़िया आदमी ऐसे खड़ा था, जैसे समूची दुनिया के प्रति उसकी दोस्ताना दिलचस्पी हो।

मेरी पांडुलिपियां मेज पर से उठाते हुए और अपने घुटनों पर फैलाते हुए उन्होंने शुरू किया: "हां, मैंने तुम्हारी लोक कहानी पढ़ ली है। यह यदि किसी नवयुवती ने लिखी होती, जो अपना समय मुसेट की कविता पढ़ने में लगाती है और वह भी प्रिय वृद्धा श्रीमती मिसोवस्काया के अनुवाद में, तो मैं उससे कहता: 'कहानी खराब नहीं है। लेकिन ज्यादा अच्छा हो कि तुम शादी कर डालो। समझीं?' लेकिन तुम्हारे जैसे भयानक संकोची के लिए इतनी सुकोमल कविताएं लिखना अपमानजनक है, अपराध तो है ही। तुमने यह कब लिखी?"

"जब मैं तिफलिस में था।"

"ओह, यह बात है! पूरी चीज पस्ती से भरी है। याद रखो, प्यार के प्रति निराशावादी रवैया बीमारी है। यह सभी व्यवहारों के विरुद्ध सिद्धांत है। हम तुम्हें—तुम निराशावादियों को—जानते हैं; तुम्हारे बारे में पहले भी सुना है।"

मेरी ओर उन्होंने पलक झपकायी, थोड़ी खुशी झलकी, फिर गंभीरतापूर्वक कहते रहे:

"इस प्रकार के शोक गीत की अलग-अलग पंक्तियां छपवानी चाहिएं, हैं बहुत मौलिक—मैं तुम्हारे लिए यह करूंगा। 'बूढ़ी इजरगिल' थोड़ी अच्छी है। कुछ ज्यादा ठोस—लेकिन तुम्हारी दूसरी... एक और रूपक! इनसे कुछ भला नहीं होने का। कभी जेल गये हो? गये हो! तो फिर वहीं पहुंच जाओगे।"

कुछ ठहरकर पांडुलिपि के पन्ने उलटते हुए उन्होंने कहा:

"यह भी बहुत विचित्र है! यह रोमांसवाद है, और इसका अंत कबका हो चुका है। मुझे बड़ा संदेह है कि इस मुर्दे को फिर से जिलाना

उचित है? मुझे लगता है कि तुम अपनी रचनाएं अपने अनुरूप नहीं लिखते। तुम यथार्थवादी हो, रोमांसवादी नहीं—यथार्थवादी। विशेषकर एक स्थान है—उस पोल के बारे में—जो बिल्कुल व्यक्तिगत लगता है। तुम्हें नहीं लगता?"

"आप सही हो सकते हैं।"

"हां! तो तुमने देखा? मैं तुम लोगों के बारे में कुछ जानता हूं। हर व्यक्तिगत चीज से छुटकारा ले लो। वह असह्य है। मेरा मतलब है, जो बिल्कुल ही वैयक्तिक हो उससे।"

वह सरलता और प्रसन्नतापूर्वक बोल रहे थे और खुशी से उनकी आंखें चमक रही थीं। मैं आश्चर्य से उनकी ओर देखता रहा—जैसे मैंने उन्हें पहले कभी न देखा हो। पांडुलिपि मेज पर फेंकते हुए वह मेरी ओर घूमे और मेरे घुटने पर अपना हाथ रखा।

"सुनो! मैं तुमसे साफ-साफ बात कर सकता हूं? मैं तुम्हें जानता नहीं—तुम्हारे बारे में बस सुना-सुना है। और, कुछ तो मैं देख ही रहा हूं। तुम्हें जैसे रहना चाहिए वैसे रह नहीं रहे हो। तुम सही वातावरण में नहीं हो। मेरा विचार है कि तुम्हें या तो यहां से चले जाना चाहिए या किसी चतुर लड़की से शादी कर लेनी चाहिए।"

"लेकिन मेरी शादी हो चुकी है।"

"यही तो बात है।"

मैंने उनसे कह दिया कि इस विषय पर मैं बात करना नहीं चाहता।

वह चुटकियां लेने लगे और फिर अचानक परेशान होकर कहा:

"अरे, तुम्हें मालूम है कि रोमास गिरफ्तार हो गया था? बहुत अरसा हुआ? मुझे तो कल ही मालूम हुआ। स्मोलेन्स्क में? वह वहां कर क्या रहा था?"

"नरोद्नाए प्रावो" ("जन अधिकार") छापाखाना, जिसे रोमास घर में ही चलाता था, पुलिस द्वारा बंद कर दिया गया था।

विचार-मग्न कोरोलेंको ने कहा: "चंचल व्यक्ति है वह। वे अब उसे फिर भेज देंगे। वह है कैसे—अच्छी तरह? वह तो बहुत स्वस्थ व्यक्ति था।"

चौड़े कंधों को सिकोड़ते हुए उन्होंने ठंडी सांस ली।

"इस सब की जरूरत नहीं है। इस प्रकार कुछ हो नहीं सकता। आस्तीर्येव के मामले से सीखना चाहिए। वह सिखाता है — साधारण 'वैधानिक' काम करो, रोजमर्रा के सांस्कृतिक उद्देश्य के लिए। निरंकुशता के दांत टूट रहे हैं — लेकिन वह अभी भी सशक्त है, उसकी जड़ें गहरी हैं और बढ़ रही हैं। वह हमारे उखाड़े उखड़ने का नहीं। हमें चाहिए कि पहले उसे कमजोर करें। और इस के लिए वर्षों तक 'वैधानिक' काम की आवश्यकता है।"

इस सम्बंध में वह बड़ी देर तक बातें करते रहे। यह स्पष्ट था कि यह ऐसा विषय है जिसमें उन्हें जीवित आस्था थी।

अवदोत्या सेम्योनोवना आ गयीं। बच्चों ने शोर मचाया। मैं उनके लिए अपने दिल में नेक भाव लिये चल दिया।

सभी जानते हैं कि सूबों में दीवारें शीशे की होती हैं — तुम्हारे विषय में सभी जानते हैं, यह भी कि बुधवार को दो बजे तुम क्या सोच रहे थे, और शनिवार को अर्द्ध-रात्रि सर्विस के समय क्या सोच रहे थे। हर कोई तुम्हारे छिपे इरादों को जानता है। मसीहों के अन्दाज में की गयी उनकी भविष्यवाणियों को आप पूरा न करें तो वे बुरा मानते हैं।

हां, यह सच है कि सारा नगर जानता था कि कोरोलेंको मुझे चाहते हैं। फलतः, मुझे सभी तरफ से कुछ इस तरह की सलाह सुननी पड़ती :

"होशियार रहना, गोर्की ! उस जैसे लोग तुम्हारा सिर फेर देंगे। बड़े चतुर होते हैं वे।"

संकेत उस समय की एक प्रसिद्ध कहानी की ओर था जिसे पी. डी. बोबोरिकिन ने लिखा था। "होश आने पर" — कहानी एक ऐसे क्रान्तिकारी की कहानी थी, जिसने जेम्स्तवो में वैधानिक कार्य करना शुरू किया था और जिसका पहले तो छाता खो गया, फिर पत्नी ने उसे छोड़ दिया।

"तुम जनवादी हो। तुम्हें जनरलों से कुछ नहीं सीखना है। तुम जनता के सपूत हो।" वे मुझसे कहते।

किन्तु एक लम्बे अर्से से मैं अनुभव कर रहा था कि मैं जनता का सौतेला बेटा हूं। ज्यों-ज्यों समय बीता—मेरी यह भावना और भी पुष्ट होती गयी। और—जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं—नरोदनिक भी मुझे जनता के सौतेले बेटे लगने लगे। जब मैंने उनसे यह बात कही तो वे बुरा-भला कहने लगे :

"देखा न ! चढ़ने लगा जहर !"

यारोस्लावल लिसियम के विद्यार्थियों के एक दल ने मुझे एक पार्टी में बुलाया। मैंने उन्हें कुछ पढ़कर सुनाया। उन्होंने मेरी नजर बचाकर, मेरे बियर के गिलास में, वोद्का उड़ेल दी। वह समझे कि मुझे पता नहीं चलेगा। लेकिन मैंने उनकी यह हरकत देख ली थी। वे चाहते थे कि मैं नशे में धुत हो जाऊं। लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वे ऐसा **क्यों** चाहते हैं। उनमें से एक, जो मरीज सा लगता था और घमंडी भी था, मुझे समझाने लगा :

"तमाम विचारों और आदर्शों पर लानत भेजो, यार। यही सबसे बड़ी चीज है। समझे ? सीधा लिखो। विचारों को गोली मारो।"

ऐसी सलाहों से मैं ऊब चुका था।

प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति के समान कोरोलेंको भी साधारण लोगों की घृणास्पद हरकतों के लक्ष्य थे। कुछ लोग तो ऐसे थे जो जनता के प्रति उनके मैत्रीपूर्ण व्यवहार के सच्चे प्रशंसक थे और लेखक को व्यर्थ ही अपने छोटे-छोटे व्यक्तिगत झगड़ों में घसीटने का प्रयत्न करते रहते थे; किन्तु कुछ दूसरे ऐसे थे जो उन पर निन्दा की हल्की बौछार करते थे। मेरे अपने मित्र उनकी कहानियों को अधिक पसन्द नहीं करते थे।

"हरे ! हरे ! तुम्हारा कोरोलेंको तो सचमुच ईश्वर में विश्वास करता है।" वे कहते।

किसी कारण ये लोग "मूर्ति के पीछे-पीछे" कहानी की विशेष रूप से निन्दा करते थे। वे इस कहानी को "जातिवाद" का प्रचार समझते थे।

और तो और, पावेल याकुश्किन ने भी इस कहानी के सम्बंध में ऐसा ही लिखा था। ये लोग जोर देकर कहते कि कहानी का प्रधान नायक, जो मोची है, उस्पेन्सकी की रचना "रास्तेरीवा गली की नैतिकता" से चुराया गया है। इन आलोचकों को देखकर मुझे वोरोनेज के उस पादरी की याद आ जाती थी जिसने मिक्लुखो-मकलाई की यात्राओं का विस्तृत विवरण सुनने के बाद क्रोध से पूछा :

"तुम कहते हो कि वह रूस में एक पपुवा-द्वीपवासी लाया। पपुवावाला ही क्यों ? वह भी एक ही क्यों ?"

एक बार सारी रात देहाती इलाके में घूमने के बाद जब मैं सुबह लौटा, तो उनकी ड्योढ़ी पर ही कोरोलेंको से मुठभेड़ हो गयी।

"अरे ! तुम कहां से टपक पड़े ?" आश्चर्य से उन्होंने पूछा। "मैं घूमने जा रहा था। बड़ा सुन्दर प्रभात है। आओ चलो मेरे साथ।"

देखने से मालूम होता था कि वह रात भर सोये नहीं हैं। आंखों में ललाई और रूखापन था। थकी सी लगती थीं। दाढ़ी उलझी हुई थी; कपड़े अस्त-व्यस्त।

मैंने "वोल्गार" में तुम्हारी कहानी "बूढ़े बाबा आर्किप" पढ़ी। बुरी नहीं है। पत्रिकाओं में छपने लायक है। प्रकाशित करने से पहले मुझे क्यों नहीं दिखा ली। तुम अब कभी आते क्यों नहीं ?"

मैंने बताया कि उन्होंने जिस ढंग से मुझे तीन रूबल उधार दिये थे, यानी चुपचाप, हाथ बढ़ाकर, मेरी ओर पीठ किये हुए, वह मुझे बुरा लगा था। मेरे मन को चोट पहुंची थी। पैसा उधार लेना बुरा है। यह मैं जानता हूं। लेकिन मुझे बेहद जरूरत थी, तभी मांगा था।

भौंहें सिकोड़कर वह कुछ सोचने लगे।

"मुझे याद नहीं। तुम कहते हो तो ऐसा ही हुआ होगा। लेकिन तुम्हें ऐसी छोटी सी चीज के लिए मुझे माफ कर देना चाहिए था। शायद मेरा दिमाग ठिकाने न रहा हो। इधर कुछ दिनों से मेरा मन उखड़ा-उखड़ा सा रहता है। यकायक मैं कुछ सोचने लगता हूं और सोचते-सोचते किसी कुएं में भी गिर जाऊं तो ताज्जुब नहीं। मुझे उस

समय कुछ दिखाई नहीं देता। मेरी समूची शक्ति कुछ सुनने के प्रयास में लगी रहती है।"

मेरी बांह पकड़कर उन्होंने मेरी आंखों में देखा।

"उसे भूल जाओ। बुरा मानने की जरूरत नहीं। समझे? मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं। यह भी कोई बुरी बात नहीं कि तुमने बुरा माना। हम लोग आसानी से बुरा नहीं मानते। यह बुरी बात है। भूल जाओ। उसे भूल जाओ। मुझे तुमसे कुछ कहना है। तुम बहुत लिखते हो और बहुत जल्दी में लिखते हो। तुम्हारी कहानियों में बहुत से स्थल अपूर्ण होते हैं, उलझे हुए होते हैं। 'आर्किप' में वर्षा का वर्णन न तो कविता में है, न संगीतमय गद्य में। यह बुरा है।"

वह मेरी अन्य कहानियों के बारे में बहुत देर तक और विस्तार से बातें करते रहे। स्पष्ट ही, उन्हें मेरी जो भी रचना मिल जाती थी उसे बड़े ध्यान से पढ़ते थे। मेरे ऊपर इसका गहरा असर पड़ा।

"हमें चाहिए कि हम लोग एक-दूसरे की सहायता करें।" मेरे धन्यवाद का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा। "हम लोगों जैसे बहुत से लोग नहीं हैं। फिर, हम सब की अपनी-अपनी मुश्किलें भी हैं।"

धीमे स्वर में उन्होंने पूछा :

"सुना है तुमने ? क्या यह सच है कि रोमास के मामले में इस्तोमिना नाम की किसी लड़की का हाथ था ?"

मैं इस लड़की को जानता था। मैं उसे तब से जानता था जब आत्महत्या करने के लिए वह एक नाव पर से वोल्गा में कूद पड़ी थी और मैं उसे पानी के बाहर खींच लाया था। उसको बचा लेना बहुत आसान था, क्योंकि डूबने के लिए उसने बहुत उथली जगह चुनी थी। वह सूखी-साखी, निर्जीव सी लड़की थी; झूठ बोलने की कुछ शौकीन, कुछ-कुछ हिस्टीरिया की मरीज। बाद में शायद सारातोव में वह स्तोलिपिन परिवार में गवर्नेस हो गयी और एप्तेकार्स्की टापू में उनके घर जब किसी मैक्सीमीलिस्त ने बम फेंका था तो वह भी मर गयी।

जो कुछ मुझे कहना था वह सुन चुकने के बाद कोरोलेंको ने क्रोध से कहा :

"इस तरह के खतरनाक मामलों में बच्चों को फंसाना अपराध है। मैं उस लड़की से चार साल पहले मिला था; शायद और भी पहले। उसके बारे में मेरे विचार तुमसे भिन्न हैं। प्यारी सी लड़की थी वह। जीवन के प्रत्यक्ष अन्यायों से पीड़ित। किसी गांव में अच्छी अध्यापिका हो सकती थी। कहते हैं, पुलिस जांच-पड़ताल के दौरान में उसने सब-कुछ क़ुबूल दिया। लेकिन वह जानती ही क्या रही होगी? राजनीति की वेदी पर बच्चों की बलि देने का औचित्य मेरी समझ में नहीं आता।"

वह तेजी से कदम बढ़ाने लगे। मैं लंगड़ाता हुआ कुछ पीछे रह गया। मेरे पैरों में सूजन थी।

"क्या बात है?"

"गठिया हो गया है।"

"अभी से? मेरी समझ में उस लड़की के बारे में तुमने जो कुछ कहा है, सब गलत है। लेकिन तुम चीजों को बताते अच्छी तरह हो। सुनो! कोशिश करके पत्रिका के लिए कोई लम्बी चीज लिखो। अब इसका वक्त आ गया है। वह प्रकाशित होगी और मैं समझता हूं कि तुम भी अपने काम को और गम्भीरता से लोगे।"

मुझे याद नहीं कि फिर कभी उन्होंने मुझ से इतने प्यार से बातें कीं या नहीं जितने प्यार से उस सुहानी सुबह, उन हरे मैदानों में जो दो दिनों की लगातार बारिश के बाद और भी हरे हो उठे थे।

यहूदी कब्रिस्तान के पासवाले गलियारे के एक किनारे हम लोग बहुत देर तक बैठे रहे। वृक्षों की कोपलों और हरी दूब पर नीलम जैसी ओस की बूंदों का हम लोग आनन्द लेते रहे। वह मुझे यहूदियों के सुख-दुख के बारे में "सीमा के भीतर" बताते रहे। उनकी आंखों के नीचे थकावट की छाया बढ़ती गयी।

नगर लौटते-लौटते नौ बज चुके थे। मुझ से विदा लेते हुए उन्होंने फिर याद दिलायी :

"तुम एक लम्बी कहानी लिखने का यत्न करोगे! ठीक है न?"

मैं घर गया और फौरन ही "चेलकाश" लिखने बैठ गया। ओदेसा का एक आवारा था वह; निकोलायेव नगर के अस्पताल में मेरे वार्ड का

मेरा पड़ोसी। मैं लगातार दो दिन तक लिखता रहा। पांडुलिपि की पहली प्रति मैंने कोरोलेंको के पास भेजी।

एक-दो-दिन बाद उन्होंने मुझे बधाई दी।

"बुरी नहीं है। काफी अच्छी कहानी है। मानो पूरी चट्टान से मूर्ति तराशी गयी हो...।"

उनकी प्रशंसा से मैं बड़े असमंजस में पड़ गया।

उस शाम अपने छोटे से अध्ययन-कक्ष में कुर्सी पर बैठे हुए उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा :

"कतई बुरी नहीं है। तुम्हें पात्रों का निर्माण करना आता है। तुम्हारे पात्र अपने-आप बोलते हैं, अपने-आप काम करते हैं। उनका अपना स्वयं का अस्तित्व होता है। उनके विचारों की धारा में हस्तक्षेप न करने में तुम सफल होते हो। उनकी भावनाएं तुम से स्वतंत्र हैं। ऐसा हर व्यक्ति नहीं कर सकता। सबसे अच्छी बात यह है कि तुम्हारे पात्र ऐसे हैं जैसे कि वे तुम्हें देखने को मिले हैं। मैंने कहा न, तुम यथार्थवादी हो।"

लेकिन कुछ ठहरकर वह जरा मुस्कराये और बोले :

"लेकिन साथ ही साथ, तुम रोमान्टिक भी हो। देखो ! अभी पन्द्रह मिनट ही हुए हैं और तुम्हारी यह चौथी सिगरेट है।"

"मैं बहुत परेशान हूं।"

"तुम्हें परेशान नहीं रहना चाहिए। तुम सदा ऐसे ही रहते हो और शायद इसीलिए तुम ज्यादा पीते हो। पीते हो न ? बिलकुल पीपल के पत्ते हो तुम। तुम्हें सिगरेट नहीं पीनी चाहिए। इसमें तुम्हें मजा तो कुछ आता नहीं। तुम्हें हुआ क्या है ?"

"मैं नहीं जानता।"

"और तुम्हारे शराब पीने की बात। क्या वह सही है ?"

"सब झूठ।"

"और तुम्हारे दूसरे बहुत से आमोद-प्रमोद भी तो हैं ?"

उन्होंने हंसते हुए मेरी तरफ ध्यान से देखा और मेरे बारे में चतुरता से गढ़ी एक गप्प दोहरा दी।

फिर उन्होंने ये स्मरणीय शब्द कहे :

"जैसे ही कोई अपने को जरा सा उल्लेखनीय बना लेता है, लोग उसके सिर पर ठोकर मारते हैं — सिर्फ उसकी मजबूती परखने के लिए ... यह एक विद्यार्थी ने कहा था। लेकिन मजाक अलग, इसकी चिन्ता न करो कि लोग तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं। हम लोग 'चेलकाश' को ('रुस्कोये बोगात्स्तोवों') 'रूसी रत्न' के मुख पृष्ठ पर छापेंगे। यह थोड़ा सम्मान होगा। इसमें कुछ व्याकरण संबंधी गलतियां हैं, जो मजा किरकिरा कर देती हैं। मैंने उन्हें सुधार दिया है। बस उनके अलावा मैंने उसे और कहीं नहीं छुआ है। देखोगे ?"

मैंने इन्कार कर दिया।

अपनी हथेलियों को रगड़ते हुए छोटे कमरे में टहलते-टहलते उन्होंने कहा :

"तुम्हारी सफलता पर मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

मैंने उनकी प्रसन्नता में निहित आनन्ददायक ईमानदारी का अनुभव किया। इस व्यक्ति के लिए मेरे पास अगाध प्रशंसा के भाव थे, जो साहित्य के विषय में बिलकुल वैसे ही बोलता था जैसे किसी नारी के विषय में, जिसे वह हमेशा से शांत, दृढ़ प्यार करता हो। इस नाविक के साथ अकेले बैठकर मुझे जो प्रसन्नता हुई उसे मैं कभी नहीं भूल सका। मैं चुपचाप उनकी आंखें देखता रहा। उनमें दूसरों की सफलता पर प्रसन्नता की इतनी चमक थी।

दूसरों के लिए लोग बहुत कम खुशी का अनुभव करते हैं, किन्तु तो भी धरती पर इससे बड़ी खुशी और कोई नहीं।

कोरोलेंको मेरे सामने आकर खड़े हो गये और अपने भारी-भरकम हाथों को मेरे कंधों पर रखते हुए बोले :

"देखो ! तुम यहां से चले क्यों नहीं जाते ? मिसाल के लिए तुम समारा जा सकते हो। 'समारा गजट' में मेरा एक मित्र है। तुम चाहो तो मैं उसे लिख सकता हूं कि वह तुम्हें काम दे दे। लिखूं ?"

"क्यों ? क्या मैं किसी की राह में रोड़ा हूं ?"

"दूसरे लोग तुम्हारे लिए रोड़े हैं ?"

स्पष्ट था कि वह मेरे पीने, 'स्नानगृह के आमोद-प्रमोदों,' मेरे 'भयानक' तौर-तरीकों, जिनमें मुख्यत: मेरी निर्धनता थी, की कहानियों पर विश्वास करते थे। उनकी बार-बार की इस सलाह से कि मैं नगर छोड़ दूं, मेरी भावनाओं को चोट पहुंची। लेकिन साथ ही मुझे 'बुराइयों के गढ़े' से निकालने की उनकी इच्छा का मेरे मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

कुछ भावावेश से मैंने उन्हें अपनी जीवन-कथा बतायी। चुपचाप मेरी बातें सुनते-सुनते कभी उनकी भौंहों पर बल पड़ जाते, कभी वह अपने कंधे सिकोड़ लेते।

"लेकिन तुम खुद समझ सकते हो कि यह सब असम्भव है।" उन्होंने कहा, "इन वाहियात बातों से तुम्हें क्या लेना है? नहीं। तुम मेरी बात सुनो। तुम यहां से चले जाओ। हां, चले जाओ। जीवन का कोई दूसरा ढर्रा अपना लो..."

मैंने उनकी सलाह मान ली।

बाद में, जब मैं "समारा गजट" में 'येगुदिल ख्लामिदा' के नाम से नित्य प्रति गंदी कहानियां लिखता, तो कोरोलेंको मुझे पत्र लिखते और मेरी कहानियों का उपहास करते। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से और सख्ती से उनकी आलोचना की। उनकी भावना सदा मैत्रीपूर्ण रही।

एक घटना मुझे बहुत अच्छी तरह याद है। मैं एक कवि से बेहद ऊब गया था। उसका नाम भी "व्यथित जी" जैसा ही था। वह सदा एक-एक गज लम्बी कविताएं पत्रिका के लिए भेजा करता। व्याकरण की दृष्टि से सभी इतनी अशुद्ध कि पूछिए मत। तत्व की दृष्टि से एकदम कोरी। उन्हें प्रकाशित करना असम्भव था। अस्तु, नाम कमाने की भूख ने उस आदमी में एक मौलिक सूझ को जन्म दिया। उसने अपनी कविताएं गुलाबी कागज पर छपवायीं और उन्हें चाय, मिठाई के डिब्बों आदि-आदि पर चढ़ाने के लिए दुकानदारों के पास भेज दिया। अब तो ग्राहकों को खरीद के सामान के साथ-साथ घाते में कुछ फीट कविताएं भी मिलने लगीं जिनमें म्युनिसिपल अधिकारियों, कुलीनों के मार्शल, नगर-प्रशासक और पादरी की तारीफों के पुल बांधे जाते थे।

ये सभी लोग अपनी-अपनी करनी के कारण काफी उल्लेखनीय थे। किन्तु पादरी इनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय था। उसने एक तातारी लड़की को जबर्दस्ती ईसाई बना लिया था। फलतः, जिले भर में दंगे की स्थिति पैदा हो गयी थी। ख्लिस्तो नामक एक धार्मिक सम्प्रदाय के विरुद्ध उसने मूर्खता से एक मुकदमा चला दिया था, जिसमें, मैं भली भांति जानता हूं, बिल्कुल ही निरपराध व्यक्तियों को सजा दी गयी थी। उसकी सबसे गौरवपूर्ण सफलता थी यह: एक दिन, जब वह खराब मौसम में अपने इलाके में घूम रहा था तो उसकी गाड़ी एक छोटे गांव के निकट टूट गयी और उसे एक किसान के घर शरण लेनी पड़ी। उस किसान के घर, देव-प्रतिमा के बगल में प्लास्टर की बनी 'जोव' की मूर्ति देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने जांच-पड़ताल की तो मालूम हुआ कि दूसरी झोपड़ियों में भी 'जोव' की मूर्तियां हैं और 'वीनस' की भी। लेकिन यह कोई न बताता था कि ये मूर्तियां आयीं कहां से।

समारा के रहनेवाले इन नास्तिकों के विरुद्ध मुकदमा चलाने के लिए यह काफी मसाला था। प्राचीन रोम के देवताओं की पूजा? ओफ! बेचारे किसान जेल में डाल दिये गये। वे वहां तब तक पड़े रहे जब तक कि जांच-पड़ताल से साबित न हो गया कि उन्होंने व्यात्का के फौजी सेटलमेंट के एक व्यक्ति को लूट लिया था और उसकी हत्या कर डाली थी। यह व्यक्ति प्लास्टर की चीजें बेचता था। उसकी हत्या करने के बाद इन लोगों ने मैत्रीपूर्ण ढंग से उसकी बिक्री की तमाम चीजें आपस में बांट ली थीं। बस यही सारा किस्सा था।

संक्षेप में यह कि मैं गवर्नर से, पादरी से, पूरे नगर से, संसार से, अपने से— और इनके अलावा और भी बहुत-सी चीजों से— असंतुष्ट था, और इसलिए, क्रोध तथा असंतोष की अवस्था में, मैंने उस कवि को खूब खरी-खोटी सुनायीं जो उन लोगों की प्रशंसा करता था जो मुझे इतने घृणित लगते थे।

कोरोलेंको ने शीघ्र ही मेरे पास एक लम्बा डाट-फटकार भरा पत्र भेजा और बताया कि गाली देते समय भी कुछ सीमाओं का ध्यान रखना

चाहिए। यह पत्र अच्छा था, लेकिन जब पुलिस मेरे कमरे में आयी तो वह उसे अपने साथ लेती गयी और वह भी कोरोलेंको के दूसरे पत्रों की तरह खो गया।

पुलिस के सम्बंध में भी एक बात कहूंगा।

१८९७ के वसन्त के प्रारम्भ में ही मैं निझनी नोवगोरोद में गिरफ्तार किया गया और तिफलिस भेज दिया गया। मेतेखी कॉसल में कैप्टन कोनिस्सकी, जो बाद में पीटर्सबर्ग पुलिस का प्रधान हुआ, ने जांच-पड़ताल के दौरान में कहा :

"कोरोलेंको ने तुम्हें कितने अच्छे पत्र लिखे थे! और जानते हो, वह इस समय रूस के अग्रतम लेखक हैं?"

यह कैप्टन अजीब तरह का था। ठिगना, चतुर, अपने भावों पर विश्वास न रखनेवाला। झुकी हुई भयानक नाक, जो उसके चेहरे से बिल्कुल अलग मालूम होती। जागृत आंखें, जिनकी पुतलियां, लगता, उसकी नाक के पीछे छिप गयी हैं।

"मैं कोरोलेंको की तरफ का ही रहनेवाला हूं। वोल्हीनिया का। मैं उन्हीं पादरी कोनिस्सकी के वंश का हूं जिन्होंने, तुम्हें याद हो तो, महारानी कैथराइन द्वितीय के सामने सूर्य पर भाषण दिया था। मुझे उन पर गर्व है।"

मैंने नम्रतापूर्वक उससे पूछा कि उसे अपने पूर्वजों पर अधिक गर्व था या देहातवालों पर।

"दोनों पर। बेशक, दोनों पर।"

ऐसा लगा कि उसकी दोनों आंखें कहीं नाक के पीछे जा छिपी हैं। लेकिन उसने नथुने फुलाकर तेजी से हवा बाहर निकाली और उसकी आंखें फिर अपने उचित स्थान पर लौट आयीं। चूंकि मैं अस्वस्थ था और मुझमें चिड़चिड़ाहट भी आ गयी थी, इसलिए मैंने कहा कि मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसे आदमी पर गर्व करने में क्या तुक है जिस पर हमेशा पुलिस की आंखें लगी रहती थीं।

"हममें से सभी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छा का पालन

करते हैं।" उसने धार्मिक की तरह उत्तर दिया। "हां, फिर ? तो तुम्हारा कहना है ... लेकिन हमें मालूम है कि ..."

हम लोग गढ़ी के दरवाजे पर जमीन के नीचे बने एक छोटे से कमरे में बैठे थे। दीवार में बहुत ऊंचे, बिल्कुल छत के करीब, एक खिड़की थी। कागजों से भरी मेरी मेज पर सूर्य की तिरछी गर्म किरणें पड़ रही थीं। मैं यह देखकर घबरा उठा कि ये किरणें कागज के टुकड़े पर पड़ रही हैं जिस पर मैंने साफ-साफ अक्षरों में कुछ शब्द लिखे थे।

उस अभागे कागज की ओर देखकर मैंने सोचा :

"मुझसे इन शब्दों का अर्थ पूछा गया तो क्या उत्तर दूंगा ?"

१८९५ से १९०१ तक, ६ वर्ष, मैं कोरोलेंको से नहीं मिला। इस दौरान में हम लोगों में केवल पत्र-व्यवहार जारी रहा।

१९०१ में मैं पहली बार सीधी रेखाओं और अनिश्चित प्रकृति के लोगों के नगर पीटर्सबर्ग गया। मैं तो "फैशन" बन गया। मुझे "प्रसिद्धि" प्राप्त हो चुकी थी। यही मेरे लिए भारी परेशानी भी बन गयी। मेरी प्रसिद्धि की जड़ें काफी गहरी पहुंच चुकी थीं। मुझे याद है कि जब मैं अनिचकोव पुल को पार कर रहा था तो दो व्यक्ति तेजी से मेरे पास आये। दोनों शायद नाई थे। मेरे चेहरे को देखते हुए एक अपने मित्र से दबी हुई घबड़ायी आवाज में बोला :

"अरे देख रे। यह तो गोर्की है।"

दूसरा निश्चल खड़ा रहा। मुझे सिर से पैर तक जांचा। फिर मुझे आगे बढ़ने का रास्ता देते हुए उत्साह से बोला :

"धत्तेरे की ! रबड़ के जूते पहनता है।"

अनेकों अन्य समारोहों के अलावा "नचालो" ("प्रारम्भ") के सम्पादक मण्डल के साथ मेरा फोटो खींचा गया। इस दल में शत्रुओं का गुर्गा, उकसावा भड़कानेवाला दलाल, एम. गुरोविच भी था।

निस्संदेह, आकर्षक मुसकानोंवाली महिलाओं से भी मुझे मिलना पड़ता था और इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता होती। नवयुवतियों की प्रशंसा और उल्लास से भरी निगाहें देखकर बड़ा आनन्द आता। और,

अन्य किसी युवक की ही भांति, सहसा प्रसिद्धि प्राप्त हो जाने पर, मैं भी मुर्गे की तरह तन गया था।

किन्तु किसी रात जब मैं बिलकुल अकेला होता, मुझे लगता कि मैं एक अपराधी हूं, जो अभी पकड़ा नहीं गया। भेदियों, जजों और प्रासीक्यूटरों से घिरा। और ये सब लोग ऐसा व्यवहार करते मानो वे अपराध को दुर्भाग्य समझते हों — नौजवान की गलती। बस गलती मानी नहीं कि उन्होंने क्षमा किया।

लेकिन उनके अन्तरतम में यही इच्छा रहती है कि अपराधी को पकड़ लें और विजय-भाव से उसके सामने ही चिल्ला उठें : "ले, तुझे पकड़ लिया।"

बहुधा मैं अपने को ऐसे शिक्षार्थी की स्थिति में पाता जिसकी ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में सार्वजनिक परीक्षा ली जा रही हो।

"तुम किस धर्म को मानते हो?" सम्प्रदायवादी और धर्म-धुरंधर पंडित मुझ से पूछते।

विनम्र प्रकृति का होने के कारण मैं इन परीक्षाओं को चलने देता। अपने धैर्य पर मुझे स्वयं ही आश्चर्य होता। और जब इन प्रश्नों की यंत्रणा से मैं थक जाता तो मेरा मन होता कि सेंट आइजक गिरजे के बुर्ज से होता हुआ एडमिरैलिटी के 'स्टीपल' पर चढ़ जाऊं या ऐसी ही कोई मजाकिया हरकत कर बैठूं।

इन सब बातों के पीछे कहीं कुछ असत्य भी छिपा होता — रूसियों में कुछ घमण्ड होता है। यह गुण, या इसे जांच का तरीका कहा जाय, विभिन्न रूपों में व्यक्त होता है। यह मुख्यतः अपने पड़ोसी की बुद्धि पर आक्रमण जैसे प्रयास के रूप में सामने आता है, जैसे किसी मेले में विशेष आयोजन के द्वारा यह दिखाया जाता हो कि जादू किसे कहते हैं और थामस की तरह, जिसे ईश्वर के बारे में सन्देह हो गया था, घावों में उंगलियां डाली जाती थीं।

पथरीले नगर पीटर्सबर्ग में भी कोरोलेंको ने अपने लिए एक लकड़ी का पुराना घर ढूंढ़ लिया था। इसका फर्श रंगीन था। प्रादेशिक नगर

की सभी सुविधाओं से यह भरा-पूरा था, उस युग की सभी सुगंधियों से परिपूर्ण। कोरोलेंको के बाल सफेद हो चले थे। कनपटी के बाल बिलकुल ही सफेद हो गये थे। आंखों के नीचे झुर्रियां पड़ गयी थीं। निगाहें थकी-थकी और सूनी सी लगती थीं। नेत्रों की शान्ति, जो मुझे बहुत प्रिय थी, कहीं खो गयी थी। उसका स्थान एक ऐसे मनुष्य की व्यग्रता ने ले लिया था जिसकी आध्यात्मिक शक्ति पर पूरा जोर पड़ रहा हो। लगता था कि मुलतान की घटना* ने उन्हें बहुत झकझोर दिया था...।

"मुझे अनिद्रा की बीमारी है। शांति नहीं मिल पाती। और तुम? क्या अब भी उतनी ही सिगरेटें पीते हो? तपेदिक के बावजूद! तुम्हारे फेफड़ों का क्या हाल है? मैं काले सागर जाने का विचार कर रहा हूं। तुम भी साथ चलो!"

वह मेरे सामने मेज पर बैठ गये और समोवार के पीछे से मेरी ओर ध्यान से देखते हुए मेरी रचनाओं के बारे में बातें करने लगे।

"'फोमा गोर्दिएव' के मुकाबले 'वारेन्का ओलेसावा' जैसी चीजें तुम ज्यादा अच्छी लिख लेते हो। उस उपन्यास को पढ़ जाना कठिन है। ठंसा पड़ा है मसाले से; लेकिन तरतीब और खूबसूरती नहीं है।"

उन्होंने इतने जोर से अंगड़ाई ली कि रीढ़ की हड्डी चरचरा उठी। पूछा :

"तो?... क्या तुम मार्क्सवादी हो गये हो?"

जब मैंने बताया कि हां, करीब-करीब मार्क्सवादी हो गया हूं, तो वह कुछ उदासी से मुस्कराये और बोले :

"मेरे लिए तो यह पहेली है; समाजवाद—बिना आदर्शवाद का! मेरी समझ में नहीं आता। मैं नहीं मानता कि समान भौतिक हितों का ज्ञान किसी नैतिक व्यवस्था के निर्माण के लिए पर्याप्त अधार-शिला है। और, नैतिकता के बिना हम लोग रह नहीं सकते।"

---

* व्यात्का गुर्बनिया के स्तारी मुलतान नामक गांव के उदमुर्त किसानों पर जारशाही पुलिस का मुकदमा। इसमें कोरोलेंको ने किसानों का समर्थन किया था। —अनु०

चाय की चुस्कियां लेते हुए पूछा :

"पीटर्सबर्ग कैसा लगा ?"

"यहां के रहनेवाले उतने दिलचस्प नहीं जितना कि नगर है।"

"यहां के लोग ..."

थकी आंखों को उंगलियों से मलते हुए उन्होंने भौहें ऊपर तानीं :

"... यहां के लोग मास्कोवालों या वोल्गा प्रदेश के निवासियों से बढ़-चढ़कर योरपीय हैं। लोग कहते हैं कि मास्को में अपनी निजी वैयक्तिकता है — मैं नहीं जानता। लगता है, उसकी यह वैयक्तिकता गंदे, बदबूदार रूढ़िवाद के अलावा और कुछ नहीं है। उनके यहां स्लावोफिल, काल्कोव और इसी तरह के लोग हैं। हमारे यहां दिसम्बरवादी, पेत्राशेव्स्कियान और चर्नेशेव्स्की हैं।"

"और पोबेदोनोस्तसेव ?" मैंने पूछा।

"मार्क्सवादी हैं," वह कहते चले गये और "सभी तरह के प्रगतिशील, या कहिये सभी तरह के क्रान्तिकारी विचारवाले हैं। लेकिन कुछ भी कहो, पोबेदोनोस्तसेव है बुद्धिमान। तुमने उसकी 'मास्कोव्स्की स्बोर्निक' ('मास्को-मिसलैनी') पढ़ी है ? उसे 'मास्को' भी कहते हैं।"

इसके तुरंत बाद ही वह भावोद्वेग से उत्तेजित हो साहित्यिक-चक्रों के आपसी झगड़ों और नरोदनिकों और मार्क्सवादियों के झगड़ों का विनोदपूर्ण विवरण देने लगे।

इनके बारे में थोड़ा-बहुत मैं पहले से ही जानता था। कारण यह कि जिस दिन मैंने पीटर्सबर्ग में पैर रखे उसी दिन मैं एक ऐसे मामले में खींचा गया, जिसकी कड़वी अनुभूति आज भी मुझ में व्याप्त है। सच पूछिये तो इस घटना के बारे में कुछ चर्चा करने के उद्देश्य से भी मैं कोरोलेंको के यहां गया था।

घटना कुछ इस प्रकार है :

"जिस्न" ("जीवन") पत्रिका के सम्पादक वी. ए. पौसे ने एन. जी. चरनेशेव्स्की की स्मृति में साहित्यिक संध्या का आयोजन किया। इसमें कोरोलेंको, एन. के. मिखाइलोव्स्की, पी. एफ. मेलशीन, पी. बी. स्त्रूवे, एम. आई. तुगान-बारानोव्स्की और कुछ अन्य दूसरे मार्क्सवादी

तथा नरोद्निक आमंत्रित थे। लेखकों ने स्वीकृति दे दी थी और पुलिस ने अनुमति।

पीटर्सबर्ग में आने के दूसरे ही दिन मेरे पास दो छैल-चिकनिया विद्यार्थी और एक रंगीली नवयुवती आये। इन लोगों ने मुझे बताया कि चर्नेशेव्स्की की स्मृति में होनेवाली गोष्ठी में पौसे का भाग लेना वे उचित नहीं समझते। कारण यह कि: "विद्यार्थी पौसे से असंतुष्ट हैं और वह पत्रिका में काम करनेवालों का शोषण करते हैं।" मैं पौसे को साल भर से जानता था। मैं यह भी जानता था कि उसमें मौलिकता है और योग्यता भी। किन्तु मैं उसे इतना योग्य और मौलिक न समझता था कि वह "जिस्न" में काम करनेवालों का शोषण कर सके। मैं जानता था कि उन लोगों के साथ उसके दोस्ताना सम्बंध हैं, वह खुद घोड़े की तरह काम करता है और उसकी थोड़ी सी तनखाह पर एक बड़ा परिवार भुखमरी की हालत में पलता है। जब मैंने इन युवकों को यह बात बतायी तो उन्होंने पौसे की अनिश्चित राजनीतिक स्थिति के बारे में बताया —नरोद्निकों और मार्क्सवादियों के बीच की सी कुछ चीज। इसे वह खुद अच्छी तरह समझता था, इसीलिए वह अपने लेखों को 'विल्दे' के छद्म नाम से लिखता था। नैतिकता और विश्वास के इन रक्षकों को मेरी बात पर बड़ा क्रोध आया और वे चले गये और यह कहते गये कि वे सभी निमंत्रित व्यक्तियों के पास जायेंगे और उन्हें समारोह में भाषण न देने के लिए राजी कर लेंगे।

बाद में यह स्पष्ट हुआ कि इस घटना को पौसे के विरुद्ध व्यक्तिगत हमला न समझना चाहिए बल्कि "राजनीतिक विचार की दो प्रवृत्तियों में होनेवाले संघर्ष की एक कड़ी" समझना चाहिए। युवक मार्क्सवादी यह समझते थे कि यह उचित न होगा कि नरोदवाद जैसी "सड़ी-गली और मरणासन्न" विचारधारा के प्रतिनिधि उनकी विचारधारा के सार्वजनिक रूप से समीप आयें। यह सब ज्ञान एक लम्बे-चौड़े पैम्फ्लेट रूपी वक्तव्य में प्रदर्शित किया गया था और उसे पढ़ते समय ऐसा लग रहा था कि मानो मैं कोई विदेशी भाषा पढ़ रहा हूं। अपरिचित व्यक्तियों से यह वक्तव्य प्राप्त करने के बाद मुझे स्त्रूवे का एक नोट मिला कि

उन्होंने समारोह में भाग न लेने का निर्णय कर लिया है और थोड़ी ही देर बाद दूसरा नोट, जिसमें बताया गया था कि उन्होंने अपना पहला निर्णय बदल दिया है। और दूसरे दिन ईवान बारानोव्स्की ने समारोह में भाग लेने से इन्कार कर दिया और स्त्रूवे का एक और नोट मिला जिसमें कहा गया था कि वह निश्चित रूप से अब समारोह में भाग नहीं लेंगे। लेकिन पहले दोनों ही की तरह इसमें भी कोई कारण न बताया गया था।

यह सुनकर कोरोलेंको बहुत हंसे और हास्यपूर्ण लहजे में कहा :

"ऐसे ही हैं ये लोग ! पहले तुमसे कहेंगे : बोलो, और जब तुम प्लेटफार्म पर खड़े होगे तो नंगा करके तुम्हारी खूब ठुकाई करेंगे।"

टहलते हुए और पीछे की ओर हाथों को मोड़े हुए वह विचारपूर्ण लहजे में धीरे-धीरे कहते रहे :

"बड़ा खराब जमाना है। कुछ अजीब और नैराश्यपूर्ण वातावरण है। नौजवानों के भावों का पता नहीं लगता। लगता है कि उनमें नकारवाद जोर पकड़ रहा है और सोशलिस्ट अवसरवादी सिर उठा रहे हैं। जारशाही रूस को बरबाद कर रही है। समझ में नहीं आता कि उसकी जगह कौन लेगा।"

इसके पहले कभी मैंने कोरोलेंको को इतना परेशान और थका हुआ न देखा था। यह बहुत दुख की बात थी।

उस समय जेम्स्तवो के कुछ लोग आ गये। मैंने विदा ली। कुछ दिनों बाद वह कहीं छुट्टी पर चले गये। मुझे याद नहीं कि फिर मैं कभी उनसे मिला या नहीं।

उनसे मेरा मिलना बहुत कम होता था। मैंने कभी भी उनको लगातार समझने का प्रयत्न नहीं किया।

कोरोलेंको की सभी बातों का मेरे ऊपर यही प्रभाव पड़ा कि वह महान मानवतावादी हैं। सुसंस्कृत रूसियों में मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जिसमें उनसे अधिक न्याय और सत्य की आकांक्षा हो, जिसमें सत्य को जीवन में अवतरित करने की उनसे अधिक लालसा हो।

तोल्सतोय की मृत्यु के बाद उन्होंने मुझे लिखा था :

"तोल्सतोय ने विचारकों और विश्वासी लोगों की संख्या इतनी बढ़ा दी है कि इससे पहले किसी ने इतनी नहीं बढ़ायी थी। मुझे लगता है तुम्हारी यह बात सच नहीं है कि वृद्धि सक्रिय लोगों की कीमत पर की गयी है। मानवीय विचारधारा सदैव ही सक्रिय रहती है। उसे जगा भर दो और वह सत्य तथा न्याय की आकांक्षाओं की ओर स्वयं बढ़ चलती है।"

मेरा निश्चित मत है कि कोरोलेंको की सांस्कृतिक रचनाओं ने सत्य के प्रति रूसियों की सुषुप्त भावना को जागृत किया। न्याय के उद्देश्य के लिए उन्होंने असाधारण मनोबल से संघर्ष किया। उनमें भावनाओं और विचारों का सामंजस्य था, और वे गहन धार्मिक भावनाओं का रूप ले चुकी थीं। लगता था कि उन्होंने न्याय को देखा और अनुभव किया है, जो मानव के सुन्दरतम सपनों की तरह उसकी आत्मा द्वारा निर्मित ज्योति के समान है, और जो कोई निश्चित स्वरूप लेने के लिए प्रयत्नशील रहता है। अपनी कलात्मक क्षमता की बलि देकर भी उन्होंने जीवन की बुराइयों के विभिन्न रूपों के विकराल दानव से वीरतापूर्ण संघर्ष किया। क्रान्तिकारी विचारों की विभिन्नताएं उनके हृदय को दुखी और पीड़ित करती थीं। सौन्दर्य और न्याय की मोहक भावुकता से पूर्ण इस मानव का हृदय उन्हें एक ही में मिलाने के लिए प्रयत्नशील था। उनका अदम्य विश्वास था कि देश की निर्माण-शक्तियां जल्द ही फूलें-फलेंगी और सुषुप्ति से जागृत इन्सानों की चेतना विश्व का एक महान करिश्मा होगी।

१९०८ में उन्होंने लिखा :

"आज जो कुछ किया जा रहा है उसका फल यह होगा कि कुछ वर्षों में एक ज्वालामुखी फूटेगा। वे बड़े भयानक दिन होंगे। यह ज्वालामुखी तभी फूटेगा जब मनुष्यों की आत्मा जीवित रहे। और, उनकी आत्मा जीवित है।"

१८८७ में उन्होंने अपनी कहानी "ग्रहण के समय" का अन्त एन. बर्ग की इन पंक्तियों से किया था :

अब प्रभात होगा अपनी इस पुण्य धरा पर,
अरुण-शिखा-ध्वनि गूंज रही है इस धरती पर।

जीवन भर, वह इस प्रभात को शीघ्रतर लाने की चेष्टा करते रहे। और उनका जीवन एक शूर-वीर का जीवन था। इस प्रभात को जल्दी लाने के लिए उन्होंने जो प्रयत्न किये, वे अतुलनीय हैं।

मिखाइल कोत्सुबिंस्की*

गोंकोर्ट बन्धुओं ने लिखा है : "पूर्णता दुर्लभ है।" कोत्सुबिस्की उन दुर्लभ लोगों में से थे, जिनसे प्रथम मिलन के समय ही आपको लगता कि यही वह व्यक्ति है जिससे मैं मिलना चहता था; यही है वह व्यक्ति जिसके बारे में मैं इतनी सुकोमल भावनाएं संजोये था।

सौन्दर्य और शुभ के आत्मिक संसार में वह बड़ी सुगमता से विचरते। पहले मिलन के बाद से ही मन में भावना जागती कि इस आदमी से जितनी ही बार मिलो अच्छा है, जितनी ही देर तक बातें कर सको, सुन्दर है।

यद्यपि ऐसी कोई बात नहीं जिस पर उन्होंने विचार न किया हो, तो भी वह नेकी के सर्वाधिक निकट हैं। बुराई के प्रति उनमें तीव्र घृणा है, मानो उनके रक्त में ही मिली हो। नेकी और शुभ के प्रति उनकी कोमल सौन्दर्य भावना बड़ी तीक्ष्ण और सुविकसित है। उसे वह एक कलाकार के रूप में प्यार करते हैं। उसकी सर्वजयी शक्ति में

---

* मिखाइल मिखाइलोविच कोत्सुबिस्की (१८६४-१९१३)—प्रसिद्ध यूक्रेनी लेखक थे। उनकी प्रसिद्ध रचना है—"फाता मोर्गाना।" इसमें १९०५-०७ के काल में यूक्रेन के किसान आन्दोलन का बड़ा सजीव चित्रण है। —अनु०

विश्वास करते हैं। उनमें शुभ के प्रति उस नागरिक की भावना है जो शुभ के सांस्कृतिक महत्व को, उसकी व्यापकता को, समझता है, उसके ऐतिहासिक मूल्य को समझता है। एक बार जब मैं उन्हें एक बड़े पैमाने की जनवादी प्रकाशन संस्था की स्थापना की बातें बता रहा था, तो उन्होंने बड़ी कोमल आवाज में ये विचारपूर्ण शब्द कहे :

"एक वार्षिक पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए। इसका नाम होना चाहिए : 'मानवतावादी मूल्यों का लेखा-जोखा !' मानवता की समृद्धि को बढ़ाने के लिए पिछले वर्ष किये गये सभी प्रयत्नों का इसमें लेखा-जोखा होगा। यह बड़ी अनुपम पत्रिका होगी — ऐसी जिसमें लोग अपने-आपसे और एक-दूसरे से परिचित हो सकेंगे। तुम जानते ही हो कि हम लोग शुभ के मुकाबले अशुभ से अधिक परिचित हैं। और इस पत्रिका के अंक जनवाद के लिए तो असाधारण महत्व के होंगे ..."

उन्हें जनवाद तथा जनता के बारे में बातें करने का बहुत चाव था और वह जो कुछ कहते उसमें सदा ही बहुत कुछ भला और लाभदायक होता।

एक सांझ मैंने उन्हें कैलाब्रियन की कथा सुनाई। १८४६ में फर्डीनैंड बौम्बा के विरुद्ध सिसली के संघर्ष के समय कैलाब्रियन धर्म-भीरु रुगेरो सेत्तिमों के पास गया और उसके सन्मुख यह प्रस्ताव रखा :

"श्रीमान, यदि यह नियोपालिटन आततायी विजयी होता है तो अवश्य ही आपका सिर काट लेगा, काट लेगा न ? तो फिर श्रीमान्, आप अपने एक सिर के एवज में तीन सिर दे दें — मेरा, मेरे भाई का, मेरे बहनोई का। श्रीमान, बौम्बा से हम सब घृणा करते हैं। हां, आपकी ही तरह घृणा करते हैं। लेकिन हम लोग साधारण आदमी हैं। स्वाधीनता के लिए उतनी बुद्धिमानी और चतुरता से हम लोग संघर्ष नहीं कर सकते, जितनी चतुरता से आप। मेरा विचार है कि ऐसा करने से जनता का बड़ा लाभ होगा। और बौम्बा भी, निस्सन्देह, बड़ी खुशी से एक की जगह तीन सिर काटने को राजी हो जायगा। उस दुष्ट को लोगों की हत्या करने में आनन्द आता है। स्वाधीनता के लिए हम लोग खुशी-खुशी अपना जीवन अर्पित कर देंगे।"

मिखाइल मिखाइलोविच को यह कथा बहुत अच्छी लगी। उनकी आंखें प्यार से चमक उठीं। उन्होंने कहा :

"जनवाद सदैव ही रोमान्टिक होता है। यह बड़ी अच्छी बात है। मानव ज्ञान की अगाध परिधि में सर्वाधिक मानवीय भावना रोमान्टिसिज्म ही है। मुझे लगता है कि लोग इसके सांस्कृतिक महत्व को भली प्रकार नहीं समझते। इसमें अतिशयोक्ति अवश्य होती है। किन्तु यह अतिशयोक्ति शुभ की ओर होती है। शुभ के लिए मनुष्यों की कितनी प्यास है, यह इससे प्रमाणित हो जाता है।"

एक घटना और याद आ रही है : एक बड़ी जर्मन कुतिया ने अभी-अभी पिल्ले दिये थे। पिल्ले सब मरे हुए पैदा हुए थे। कुतिया पीड़ा से अधमरी हो रही थी और पास ही खड़ी एक दूसरी कुतिया की, जिसके अभी बच्चे नहीं हुए थे, दया को उकसा रही थी।

इस सुन्दर नन्हे जानवर ने अपनी सहृदयता से हमें चकित कर दिया। वह जर्मन कुतिया के चारों ओर चक्कर लगा रही थी, उसके आंसू चालू थे और खुद भी रो रही थी। सहसा भागकर वह रसोई घर में गयी। वहां से हड्डी का एक टुकड़ा उठाया और भागती हुई जर्मन कुतिया के पास ले आयी। फिर वह चारों ओर खड़े लोगों के पास दौड़ आयी, और, मानो प्रार्थना करती हुई सी, भूंक-भूंककर उन तक उछलने लगी, जैसे सहायता मांग रही हो। उसकी सुन्दर आंखों से अब भी आंसू बह रहे थे। दृश्य दिल हिला देनेवाला और भावुकता पूर्ण था।

"गजब है भाई! गजब है!" कोत्सुबिंस्की भाव-विभोर होकर बोले। इस कुतिया की भावनाओं को मैं एक ही ढंग से समझ सकता हूं। वह यह कि इन्सानों ने अपने चारों ओर इन्सानियत का इतना सबल और प्रभावपूर्ण वातावरण तैयार कर दिया है कि वह एक पशु की प्रकृति को भी बदल सकता है और इसमें भी मानव-आत्मा का कुछ अंश आ गया है।

मानवता, सौन्दर्य, जनता, यूक्रेन — ये ही कोत्सुबिंस्की की बातचीत के प्रिय विषय थे। ये विषय उनसे उतने ही अभिन्न थे जितना उनका मन, मस्तिष्क, उनकी सुन्दर, प्यारी आंखें।

उन्हें फूलों से प्यार था। उनके बारे में उन्हें उतना ही विस्तृत

ज्ञान था जितना किसी वनस्पति-शास्त्र वेत्ता को। तो भी उनके बारे में वह सदैव कवि की भाषा में बोलते। हाथ में फूल लिए, उसे सहलाते हुए और उसके बारे में बातें करते हुए उन्हें देखना बड़ा सुखकर था।

"देखो! बहुरंगे पुष्पों की वह झाड़ी मधुमक्खी की तरह गर्व से फूल गयी है। ऐसा लगता है मानो कहना चाहती हो कि यहां कीड़ों-भुनगों के आने की जरूरत नहीं। ओह! कितना ज्ञान है हर जगह, कितना सौन्दर्य!"

दिल की कमजोरी के कारण उन्हें काप्री के ऊंचे-नीचे रास्तों और धूप में तपती चट्टानों पर घूमने में, जहां हवा बेहद गर्म होती और फूलों की सुगन्धि से लदी होती, बड़ी कठिनाई होती। लेकिन वह अपने पर दया न करते। खूब घूमते। यहां तक कि कभी-कभी बहुत थक जाते।

और यदि उनसे कोई पूछता: "आप आखिर इतना क्यों घूमते हैं कि थक जायें?" तो वह, उचित सलाह को ठुकराकर, उत्तर देते: "मुझे वह सब देखना है जो देखने लायक है। अब इस धरती पर ज्यादा दिन तो रहना नहीं है—लेकिन मुझे इससे प्यार है।"

वह अपनी मातृभूमि यूक्रेन को विशेषतः प्यार करते थे और वहां भी सदा पुदीने की महक की कल्पना कर लेते जहां वह पैदा भी न होता था।

एक दिन एक मछुवे की झोपड़ी की सफेद दीवार से लगी पीले गुलाबी फूलों की एक बेल को देखकर वह खिल उठे। मुस्कराते हुए हैट उतारकर उन्होंने फूलों का अभिनन्दन किया। यूक्रेनी भाषा में वह कह रहे थे:

"नमस्कार मित्रो! इस अनजाने देश में कैसे आ पहुंचे?"

फिर जरा शर्माकर उन्होंने इसे मजाक का रूप दे दिया:

"लगता है कि मैं कुछ भावुक हो चला हूं। तुम्हें भी शायद अपने यहां के सफेद वनों वाले बर्च वृक्षों की याद आती होगी, जिनकी सन्टी से तुम पीटे जाते थे। आती है न? अरे भैया, हम सब इन्सान हैं। और जो इन्सान नहीं, उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए।"

काप्री से उन्हें प्यार हो गया था।

"मेरी तबियत अच्छी नहीं है।" उन्होंने लिखा। "जब मैं काप्री में रहता हूं तब मेरी तबियत ठीक रहती है। वहां प्रकृति का कुछ ऐसा साज-सरंजाम है, मेरी आत्मा पर उसका कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता है, कि मेरा स्वास्थ्य सुधरने लगता है।"

किन्तु मैं समझता हूं कि यह बात सही नहीं है। उस टापू का गर्म वातावरण उनके लिए अच्छा न था। इसके अतिरिक्त उनका यूक्रेनी हृदय सदा अपनी मातृभूमि के लिए ललकता रहता। वह उसके दुख से दुखी और उसकी पीड़ाओं से पीड़ित रहते।

कभी-कभी जब वह कुछ झुके हुए, 'जुक' के चित्र में चित्रित मुद्रा में, नंगे सिर, धीरे-धीरे टहलते होते तो कोई भी कह सकता था: इस समय इन्हें अपने चर्नीगोव क्षेत्र की याद आ रही है।

और बात भी ऐसी ही थी। एक दिन थककर जब वह अपने सफेद कमरे में लौटे तो आराम कुर्सी पर लेटते हुए बोले:

"बड़ी विचित्र बात है! आर्का नेचुरेल की राह में बिलकुल अपने गांव की तरह की एक झोपड़ी है! बिलकुल वैसी ही है—बुढ़ऊ दादा हुक्का लिये दरवाजे पर बैठे रहते हैं और खांसा करते हैं। एक औरत है और काली आंखोंवाली एक लड़की भी! बिलकुल उसी तरह के हैं। बस, पर्वत, चट्टान और समुद्र नहीं है यहां। बाकी सब कुछ वैसा ही है। धूप तक वैसी ही है।"

और फिर धीमे स्वर में वह अपनी मातृभूमि के भविष्य के बारे में, उसके निवासियों के बारे में, जिन्हें बहुत प्यार करते थे, उनके साहित्य के बारे में और अवैध "प्रास्विता" की सेवाओं के बारे में बताने लगे। उनकी बातें सुनते समय लगता था कि वह लगातार इन बातों के बारे में सोचा करते हैं, और उन्हें जो कुछ मालूम है, वह पूरी तरह मालूम है, सही-सही मालूम है।

१६११ के जून माह में उन्होंने कार्पेथियन्स के क्रीवोरीवना स्थान से लिखा:

"मैं अपना पूरा समय एक गुजुल टट्टू पर बैठकर पहाड़ों पर घूमने में बिताता हूं। यह टट्टू किसी बैले नर्तकी के समान ही चंचल और

चपल है। मैं ऐसे-ऐसे जंगली स्थानों पर गया हूं जहां कम ही लोग पहुंचे हैं। मैं हरे-भरे पवर्तीय मैदानों में भी गया हूं जहां गुजुल कबीले अपने टट्टुओं के साथ समूची गर्मी बिताते हैं। काश, तुम जानते होते कि यहां प्रकृति कितनी वैभवशाली है, जीवन कितना निराडम्बर है। गुजुल लोग बड़े दिलचस्प जीव हैं। वे कल्पना के धनी हैं और उनकी मानसिक दृष्टि बहुत ही मौलिक है। वे मूर्ति-पूजक होते हैं। मृत्यु के दिन तक वे अपना समूचा जीवन जंगलों, पहाड़ियों और नदियों में रहनेवाली प्रेतात्माओं से संघर्ष करने में बिताते हैं। ईसाइयत को वे केवल मूर्ति-पूजा को परिष्कृत करने के लिए मानते हैं। ओह ! न जाने कितनी परियों की कहानियां, कितनी परम्पराएं, कितने विश्वास, कितने प्रतीक इनमें प्रचलित हैं। मैं इनके बीच से आवश्यक वस्तुएं इकट्ठी कर रहा हूं, सुन रहा हूं, सीख रहा हूं।"

अपने अगले पत्र में, जो उन्होंने चर्नीगोव से लिखा था, उन्हें मानना पड़ा कि,

"मैं पहाड़ों पर चढ़ने के लोभ का संवरण नहीं कर सका। नतीजा यह कि स्वास्थ्य खराब हो गया है। लेकिन, वाह ! कितना मजा आया ! और यही बात असली है।"

एक ओर जब कि जीवन के ज्ञान और उसके सौन्दर्य को समेटने के लिए वह अपने स्वास्थ्य तक की चिन्ता करना छोड़ देते थे, वहां दूसरी ओर, अपनी कवित्व शक्ति के प्रति वह बहुत उदासीन थे। अपने प्रति वह इतने कठोर थे कि कुछ कहना नहीं। मुझसे वह बार-बार यह कहा करते थे: "मुझे अपने से बड़ा असंतोष है।" १६१० में उन्होंने लिखा था: "मेरी कहानियां अक्सर मुझे बेजान, नीरस व निरर्थक लगती हैं। कभी-कभी मैं साहित्य और अपने पाठकों के प्रति अपराधी सा अनुभव करता हूं।"

मुझे लगता है कि ये विचार सदैव ही उनके मस्तिष्क में रहते हैं और उनके दुखी मन को कुरेदा करते हैं।

"क्या तुम्हें मेरी 'समोत्नी' पसन्द है ?" उन्होंने पूछा।

"आपके तीनों गद्य-काव्यों में से वह सबसे अच्छी है। वैसे, मेरी राय में, वे तीनों ही अच्छे हैं।"

वह दुखी मन से मुस्कराये।

"आज सुबह मैंने उसे फिर पढ़ा। मैं बड़े पशोपेश पड़ गया। आखिर उसकी किसे जरूरत है? किसी की उसमें दिलचस्पी होगी ही क्यों? ऐसा रोना-धोना क्यों? हर कोई एकाकी है। फिर, कोई इस अभिशाप के बारे में इस तरह लिखे ही क्यों?"

फिर अपने प्रति क्रुद्ध होकर उन्होंने कहा :

"और उसके अन्त में हर्ष-ध्वनि है — वह भी सच्ची नहीं, केवल अपने मन को सन्तोष देने के लिए मैंने डाल दी थी। आखिर उसमें हर्ष की बात है ही क्या? तुम एकाकी हो तो इसका मतलब यही है कि तुम्हारी किसी को आवश्यकता नहीं है।"

हम लोग अक्सर इस विषय पर बातें करते रहते थे और वह सदा ही अपनी कटु आलोचना किया करते :

"इसे सुनो! यह अच्छी है :"

मलिन वेश ओ धरती माता? आंसू से भींगा आन्चल,
तेरी सकरुण मूर्ति देखकर, उठती अन्तर में हलचल!
किन्तु एक दिन आयेगा, दुख के बादल छंट जायेंगे,
अहे, मुक्ति के प्रखर तेज से, दुःख-दैन्य कट जायेंगे!!

वह हंसे और इन पंक्तियों का उपहास करने लगे।

एक बार किसी ने उनसे कहा :

"आपकी 'हंसी' भी कितनी सच्ची और सशक्त रचना है।"

उन्होंने उपेक्षा से अपना हाथ हिलाया :

"चुराई हुई चीज है। कुशलता से नहीं निभायी गयी है। सच्चे जीवन में हंसी कहीं अधिक भयानक तथा न्यायपूर्ण होती है।"

उनके इस तरह के वाक्य कभी-कभी चिड़चिड़ाहट पैदा करते, किन्तु बहुधा उनसे हृदय को पीड़ा ही होती थी। इनमें सच्ची और महान यंत्रणा की ध्वनि सुनायी पड़ती।

वह अपने प्रति जितने ही निर्मम थे, दूसरों के प्रति उतने ही

उदार। दूसरों की ऐसी रचनाओं में भी, जो बहुत अच्छी न होतीं, वह प्रशंसा योग्य कोई न कोई शब्द या वाक्य ढूंढ़ ही लेते।

एक शाम जब वह समुद्र और वह टापू विचित्र मौन में डूबे हुए थे, मानो किसी अद्भुत वस्तु की मौन प्रतीक्षा कर रहे हों, उन्होंने कहा :

"सुनो गोर्की ! मैंने इतना देखा है, इतना अनुभव किया है कि ... कल्पनाओं, विचारों, गीतों का एक संसार बन गया है मेरा। और ये इतने सरल और कोमल हैं कि आंसू भर आते हैं, मेरी आत्मा में टीस सी उठने लगती है। काश, मैं उन्हें इस धरती और इसके निवासियों पर वर्षा की बूंदों की तरह बिखेर सकता ! लेकिन ओफ ! मुझे यही नहीं मालूम कि यह किया कैसे जाय।"

लिख नहीं सके, किन्तु सचमुच वह महान अलौकिक पुस्तकें लिख सकते थे। उन्होंने बहुत कुछ सोचा था; बहुत कुछ, जो सौन्दर्यशाली था, मौलिक था। वह नहीं लिख सके, क्योंकि हमारे परिचय के तीन वर्षों में उनके हर पत्र में यही उपरोक्त भावना व्याप्त थी। यह भावना दिनोंदिन बढ़ती ही गयी।

"मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे भीतर कुछ न कुछ गड़बड़ है। मेरा हृदय दिन पर दिन कमजोर होता जाता है। कभी-कभी तो मुझे जबर्दस्ती लेट रहना पड़ता है। लिखते-लिखते मैं थक जाता हूं, और फिर, कोई काम करने की शक्ति नहीं रह जाती।"

"इन जाड़ों में मैं कुछ नहीं कमा पाया। इसका मतलब यह है कि एक भारी कठिनाई सामने आ खड़ी हुई है। और हर समय पैंसठ लिरावाली चार कमरोंवाली कोठी और एक सहृदय मकान मालकिन अपनी मुस्कान सहित मुझे आकर्षित करती रहती है।"

अन्त में, ६ अक्तूबर, १९१२ को उन्होंने लिखा :

"प्यारे गोर्की ! मेरी हालत खराब होती जा रही है। मैं लगातार बीमार रहता हूं। बीमारी सख्त है और लगातार बनी रहती है। सबसे बुरी बात यह है कि मैं काम नहीं कर पाता। अब एक ही अन्तिम उपाय रह गया है। वह यह कि लम्बे अर्से के लिए अस्पताल चला जाऊं। इसलिए, कुछ दिनों बाद मैं कीव पहुंच रहा हूं।"

ओब्राज्त्सोव के अस्पताल से उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से लिखा :

"आखिर वे मुझे कीव ले आये और हृदय की बीमारी के मरीज के रूप में अस्पताल में भर्ती करा दिया। फिर भी अजीब बात है कि कभी-कभी मुझे लगता है कि बीमार होना कितना अच्छा है। तरह-तरह के लोग मुझे देखने आते हैं और मुझे वे ऐसी चीजें भेंट करते हैं जो मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं —फूल, पुस्तकें और वे स्वयं। वही सूर्य जो तुम्हें गर्मी देता है, मेरी खिड़की से भी झांकता है और कुछ अधिक गर्म तथा दयालु मालूम होता है।"

उन्हें लोगों को प्रिय शब्दों से विभूषित करने में आनन्द आता था और प्रसिद्ध यूक्रेनी संगीतज्ञ लाइसेंको की एक दिन पूर्व हुई मृत्यु की वेदना से पीड़ित होने के बावजूद उन्हें ये शब्द मिल गये थे ...

वह जानते थे कि वह जल्दी ही मरनेवाले हैं। बिना भय, सरलता-पूर्वक, वह लगातार इसकी चर्चा करते रहते थे। लेकिन उनमें वह अल्हड़-पन भी न था जो कुछ लोगों को झूठा सन्तोष देता है।

एक बार उन्होंने कहा था :

"मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है और प्राप्त की जायगी। मैं जिस प्रकार इस बात पर विश्वास करता हूं कि मैं शीघ्र ही मर जाऊंगा, उसी प्रकार मेरा विश्वास है कि एक दिन तर्क और इच्छा-शक्ति मृत्यु पर विजयी होंगी। और लाखों-लाख लोग मरेंगे, किन्तु समय रहते मृत्यु इच्छा पर आधारित सरल क्रिया मात्र बन जायेगी। शून्य में प्रवेश करने के लिए हम उतनी ही चेतना से तैयार रहेंगे जैसे कि इस समय सोने के लिए। मृत्यु तभी विजित होगी जब अधिकतर इन्सान स्पष्टता से जीवन के मूल्य को समझ लेंगे, उसके सौन्दर्य का अनुभव कर लेंगे, जब उन्हें काम करने और जीवित रहने में आनन्द का अनुभव होने लगेगा।"

वह उच्च आत्मिक संस्कृति के व्यक्ति थे। उन्हें प्रकृति विज्ञान का अच्छा ज्ञान था। मृत्यु के विरुद्ध संघर्ष के लिए जो कुछ भी किया जा रहा था, उसका उन्होंने बहुत ध्यान से अध्ययन किया था। किन्तु मृत्यु की, स्वरूप के निरन्तर परिवर्तित होने की, कविता को वह बहुत अच्छी तरह से समझते थे।

सुन्दर हरी घास और पुष्पों से आच्छादित काप्री की भूरी चट्टानों की ओर बार-बार कृतज्ञता से देखते हुए उन्होंने कहा :

"जीवन-शक्ति कितनी महान है। हम लोग इसके आदी हो गये हैं और मृत्यु पर जीवन की, सक्रिय पर निष्क्रिय की, विजय की ओर ध्यान नहीं देते। लगता है कि हम यह भी नहीं जानते कि सूर्य निर्जीव चट्टानों से फूलों और फलों का निर्माण करता है। हम यह नहीं देखते कि हर स्थान पर जीवन की विजय होती है। हमें मैत्रीपूर्ण मुस्कराहट के साथ विश्व का अभिनन्दन करना चाहिए ..."

वह जानते थे कि मुस्कराना कैसे चाहिए — हर चीज के प्रति कैसे स्नेह से मुस्कराना चाहिए।

तोल्सतोय की मृत्यु के बारे में उन्होंने मुझे लिखा :

"यह पढ़कर मुझे दुख हुआ कि तोल्सतोय की मृत्यु से तुम्हें अत्यधिक पीड़ा हुई। मुझे भी बहुत पीड़ा हुई। किन्तु क्या इसके लिए मुझे लज्जित होना चाहिए ? मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महानता इस धरती पर विद्यमान है और इस सम्बंध में जीवन से अधिक मृत्यु ने अपनी गति का प्रदर्शन किया।"

कोत्सुबिस्की की मृत्यु पर मुझे एक भारी व्यक्तिगत अभाव का अनुभव हुआ। मेरा एक सच्चा मित्र नहीं रहा। एक सुन्दर, दुर्लभ पुष्प झड़ गया। एक दयावान तारा बुझ गया। उनकी स्थिति बहुत कठिन थी। रूस में ईमानदार व्यक्ति होना आसान काम नहीं है।

हमारे युग में अच्छे व्यक्ति कम हैं। आइये, उनकी याद की मधुर पीड़ा में हम सिर झुकायें; उन प्रकाशवान आत्माओं के सौन्दर्य की याद में, जो मानवता को लगन से प्यार करते थे, उन दृढ़ मानवों की याद में, जो जन्म-भूमि की समृद्धि के लिए काम करना जानते थे।

हमारी स्मृति के समस्त ईमानदार व्यक्ति चिरजीवी हों !

निकोलाई गारिन-मिखाइलोव्स्की

दुनिया में जब-तब ऐसे लोग जन्म लेते रहते हैं जिन्हें मैं प्रसन्नचित्त शहीद कहूंगा।

मेरी समझ में ईशू-मसीह को इन शहीदों का अग्रज नहीं गिना जा सकता; उन्हें नये टेस्टामेन्ट ने कुछ पण्डित-सा बना दिया है। असीसी के फ्रैंसिस को सम्भवतः इन शहीदों का पूर्वज माना जा सकता है। वह जीवन को प्यार करने की कला में बड़े कुशल थे। वह दूसरों को प्यार करने की शिक्षा देने के लिए प्यार नहीं करते थे, वरन् सौन्दर्यमय प्यार की कला और आनन्द के पण्डित होने के नाते वह अपनी प्रसन्नता में दूसरों को साझीदार बनाये बिना नहीं रह सकते थे।

मैं कहूंगा कि यह प्यार से जन्मी प्रसन्नता ही थी, न कि दयाभाव, जिसने जां हेनरी दुनान्त को 'रेड-क्रास' नामक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की नींव डालने के लिए बाद्ध किया, और जिसने डा. गाज जैसे सुप्रसिद्ध व्यावहारिक मानवतावादी व्यक्ति उत्पन्न किये। डा. गाज—जार निकोलाई प्रथम के भीषण युग में प्रकट हुए थे।

किन्तु, जीवन में अब शुद्ध दया-भाव के लिए कोई स्थान नहीं है। हमारे युग में वह केवल लज्जा ढकने का आवरण मात्र है।

प्रसन्नचित्त शहीद महान व्यक्ति नहीं होते, अथवा वे महान व्यक्ति नहीं मालूम होते, क्योंकि साधारण समझ से कटु-सामाजिक सम्बंधों की

पृष्ठभूमि में उन्हें पहचान पाना कठिन है। वे इस साधारण समझ के बावजूद जीवित हैं। उनके जीवन को किसी भी प्रकार औचित्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता। वे जो कुछ हैं, केवल अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर।

मुझे ऐसे छः शहीदों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनमें से सबसे अधिक याद मुझे समारा के भूतपूर्व सरकारी वकील याकोव तीतेल की है। वह एक अ-दीक्षित यहूदी थे।

यहूदी, और सरकारी वकील ! तीतेल के लिए यह लगातार अप्रसन्नता तथा अवसाद का कारण बना रहा। उनके इसाई उच्चाधिकारी कानून-विभाग की श्वेत स्वच्छता पर उन्हें कालिमा का धब्बा समझते थे और "महान सुधारों के युग" के बाद से लगातार उन्हें इस पद से हटाने का प्रयत्न करते रहे। तीतेल ने, जो अभी भी समृद्धि के पथ पर हैं, अपने "संस्मरणों" में न्याय-मन्त्रालय से अपने अनवरत युद्ध की कहानी कही है। हां, वह अब भी जीवित हैं और अभी-अभी उनकी सत्तरवीं या अस्सीवीं वर्षगांठ मनायी गयी थी। किन्तु वह सदा ए. पेशेखोनोव और वी. म्याकोतीन के आदर्शों पर चलते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे सदा अपनी आयु कम बताते थे।

तीतेल की वृद्धावस्था कभी भी उन्हें उस काम से नहीं रोक सकी, जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन होम किया। १८९५-९६ में समारा की गति-विधि के अनुसार वह आज भी प्रसन्नतापूर्वक और अजेय बल से अपने देश-भाइयों को प्यार करते हैं और उनकी सहायतार्थ हर सम्भव प्रयत्न करते हैं।

नगर के सबसे दिलचस्प और जिन्दादिल लोग—जो उस नगर में बहुत ज्यादा न थे—उनके घर पर एकत्र हुआ करते थे। उनसे मिलने सभी तरह के लोग आते थे—जिला न्यायालय के अध्यक्ष और दिसम्बरवादियों के वंशज, चतुर और संस्कृत व्यक्ति अन्नेनकोव से लेकर मार्क्सवादी पत्र "समार्स्की वेस्तनिक" के सम्पादक-मंडल के सदस्य तथा उसके विरोधी "समारा गजट" के सम्पादक मण्डल के सदस्य—जो "वेस्तनिक" के विरोधी थे। ये विरोधी थे विचारों के कारण नहीं वरन् केवल विरोधी बनने के लिए। वहां उदारपंथी वकील भी आते और

अनिश्चित पेशोंवाले नौजवान भी, जिनके विचार और उद्देश्य बड़े खतरनाक होते। इस सरकारी वकील के यहां ऐसे "मुफ्त" के मेहमानों का पहुंचना बड़ा विचित्र लगता —इस कारण और भी अधिक कि वे अपने विचारों और उद्देश्यों को छिपाने का कोई प्रयत्न न करते थे।

जब कोई नया व्यक्ति उनके यहां पहुंचता तो तीतेल उसे अपने अन्य मित्रों से परिचित कराने का कष्ट न करते, न ही कोई नवागन्तुक की ओर ध्यान देता। सभी आश्वस्थ थे कि याकोव तीतेल से मिलने जो कोई भी आयेगा, ठीक ही ठाक व्यक्ति होगा। वहां अपनी बात कहने की निस्सीम स्वतंत्रता थी। तीतेल स्वयं भी जोरदार प्रत्युत्तर देनेवाले थे। कभी-कभी तो वह क्रोध से अपना पैर पटककर प्रतिरोधी की जुबान बन्द कर देते। उनका मुंह लाल हो जाता। घुंघराले सफेद बाल मानो खड़े हो जाते। मूंछें फड़कने लगतीं। यहां तक कि उनकी वर्दी के बटन भी क्रोध से गुर्राते मालूम होते। लेकिन इस सबसे किसी को डर न लगता था। कारण यह कि तीतेल की सुन्दर आंखें इस समूचे दौर में प्यार-भरी मुस्कराहट से चमकती रहतीं।

याकोव ल्वोविच और उनकी पत्नी येकातरीना दमीत्रीयेवना का मेहमान-नवाजी में कोई मुकाबला न था। वे अपनी बड़ी मेज पर गोश्त की खूब बड़ी प्लेट और तले हुए आलू सजा देते। मेहमान पेट भर खाते, बियर या गहरे बैंगनी रंग की शराब पीते—वह शराब शायद काकेशस की होती जिसमें की मैंगनीज का स्वाद आता। और यद्यपि एक बूंद भी गिर जाने पर सफेद मेजपोश पर अमिट दाग पड़ जाता तो भी यह शराब किसी को नशे से धुत्त न करती।

रात के खाने के बाद मेहमान वाक्युद्ध में व्यस्त हो जाते जो बहुधा पेट-पूजा के दौरान में ही शुरू हो जाता था।

तीतेल के घर में ही मेरी मुलाकात निकोलाई मिखाइलोव्स्की गारिन से हुई।

रेलवे इंजीनियर की वर्दी पहने एक व्यक्ति मेरे पास आया, मेरी आंखों में देखा और बड़े ही दोस्ताना लहजे में बोला :

"तुम गोर्की हो न ? काफी अच्छा लिखते हो। लेकिन जब 'ख्लामिदा' लिखता है तो खराब लिखता है। तुम्हीं ख्लामिदा भी हो ! हो न ?"

मैं खुद जानता था कि येगुदिल ख्लामिदा खराब लिखता है और मुझे इस का रंज भी था। शायद इसीलिए मुझे इंजीनियर पसन्द नहीं आया। लेकिन वह निस्संकोच कहता रहा :

"तुम हलके लेख नहीं लिख सकते। उसके लिए लेखक को व्यंग्य-कार होना आवश्यक है—और तुम व्यंग्यकार हो नहीं। तुममें हास्य-रस की क्षमता है, लेकिन बहुत सुघड़ नहीं। तुम चतुरतापूर्वक उसका उपयोग भी नहीं कर पाते।"

कोई अपरिचित व्यक्ति जब एक साथ ही कई सच्ची और खरी-खरी बातें कह बैठता है तो सुनकर प्रसन्नता नहीं होती। आप चाहते हैं कि वह गलत कह रहा हो। लेकिन मानना यह पड़ता है कि वह सच कह रहा है।

वह मेरे पास ही खड़े थे। बोलने की गति तेज थी, मानो उन्हें बहुत कुछ कहना हो, लेकिन डर लगा हो कि पता नहीं सब-कुछ कहने का समय मिले या नहीं। वह मुझसे नाटे थे, इसलिए मैं उनके पतले चेहरे को भली भांति देख सकता था। चेहरे पर दाढ़ी करीने से संवारी हुई थी। पके बालों के नीचे नुकीली भौहें थीं। आंखों में तारुण्य की आभा थी। मैं इन आंखों के भाव को न ताड़ सका। मुझे उनमें मैत्री का भाव तो लगा, किन्तु प्रतिरोध और विरोध भी।

"क्या मैंने जो कहा वह तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?" उन्होंने पूछा। फिर मानो अप्रसन्न करनेवाली बातें कहने के अपने अधिकार को पुख्ता करने के लिए उन्होंने कहा : "मेरा नाम गारिन है। मेरी कोई चीज पढ़ी है तुमने ?"

मैंने "रुस्काया मिस्ल" ("रूसी विचार") में "नये गांवों" पर उनके अविश्वासपूर्ण "रेखा-चित्र" पढ़े थे। किसानों के बीच लेखक के जीवन के सम्बंध में भी मैंने मजेदार कहानियां सुनीं थीं। मुझे रेखा-चित्रों को पढ़ने में बड़ा आनन्द आया था। नरोदनिक समीक्षकों ने

उनकी अत्यन्त कटु आलोचना की थी। गारिन के बारे में जो कुछ मैंने सुना था, उससे स्पष्ट था कि उनमें कल्पना-शक्ति की प्राकृतिक देन है। उन्होंने कहा : "मेरे रेखा-चित्र न कला हैं, न कहानियां।" उनकी तरुण आंखों की निरुद्देश्य दृष्टि बतला रही थी कि उनका ध्यान कहीं और है।

मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सही है कि उन्होंने एक बार पोस्ते के बीजों के साथ चालीस देसियातिन भी बोये थे।

"चालीस ही क्यों ?" गारिन ने पूछा। उनकी भवें जरा चढ़ गयीं। वह ध्यान से हिसाब लगाने लगे।

"एक मकड़ी मारो तो चालीस पापों से मुक्ति। मास्को में चालीस गुणे चालीस गिरजे। एक स्त्री बच्चा जनने के बाद गिरजे में चालीस दिन तक प्रवेश न पा सकी। मृतात्मा के लिए चालीस दिनों तक सर्विस होती है। चालीसवां भालू भी सबसे ज्यादा खतरनाक होता है। यह चालीस की बकवास आई कहां से ? तुम्हारी क्या राय है इस बारे में !"

लेकिन स्पष्ट ही उन्हें मेरा उत्तर जानने की दिलचस्पी न थी। कारण कि फौरन ही उन्होंने अपने छोटे स्वस्थ हाथ से मेरा कन्धा थपथपाया और प्रशंसापूर्वक कहा :

"यार ! तुमने पोस्ते को बहार के दिनों में देखा होगा।"

फिर वह मेरे पास से चले गये और उस वाक्युद्ध में कूद पड़े जो मेज के इर्द-गिर्द चल रहा था।

इस मिलन से गालिन के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ी नहीं ! मुझे लगा जैसे उनमें कुछ कृत्रिमता है। मेरी समझ में नहीं आया कि वह चालीस के चक्कर में क्यों पड़ गये ? इस शाहाना रवैये और 'जनवादिता' को समझने में मुझे काफी अरसा लगा। वैसे, पहले मैं यही समझता था कि यह सब बनावट है।

वह छरहरे बदन के, खूबसूरत व्यक्ति थे और तेजी से, किन्तु बड़ी सौम्यता से, चलते थे। उन्हें देखकर लगता था कि यह तेजी स्नायुओं की कमजोरी से नहीं वरन् शक्ति के बाहुल्य के कारण है। उनके बातचीत के लहजे से लगता कि वह लापरवाही से बोल रहे हैं लेकिन वास्तव में उनकी शब्दावली मौलिक और कुशलता से चुनी हुई होती। चेखोव जिससे

चिढ़ते थे, उसी प्रारम्भिक वाक्य-खण्ड के प्रयोग के गारिन पण्डित थे। किन्तु उनमें मैंने कभी भी वकीलों जैसी निज-वाक्पटुता-प्रशंसा-भावना नहीं देखी। उनकी बातचीत में सदा ही शब्दों के लिए कम और विचारों के लिए अधिक स्थान रहता था।

प्रथम परिचय में वह मिलनेवाले पर जो प्रभाव डालते थे वह सदा ही उनके लिए अनुकूल न होता। नाटककार कोसोरोतोव ने उनकी शिकायत करते हुए कहा था :

"मैं उनसे चर्चा करना चाहता था साहित्य पर किन्तु वह भाषण देने लगे कन्द-मूल खाने की संस्कृति पर। फिर गेरुई (पौधों का एक प्रकार का रोग—अ.) पर बातें करनी शुरू कर दीं।"

जब लियोनिद आन्द्रीयेव से पूछा गया कि उनकी राय गारिन के बारे में क्या है, तो उन्होंने उत्तर दिया :

"बड़ा भला है। चतुर है। दिलचस्प आदमी है। लेकिन वह असल में इंजीनियर है। और, गोर्की, जब कोई आदमी इंजीनियर हो तो समझना चाहिए कि बुरा हुआ। मैं इंजीनियरों से बहुत डरता हूं—बहुत खतरनाक होते हैं। इससे पहले कि हम समझ पायें कि कहां खड़े हैं, वह एक पहिया जड़ देते हैं। और बस; ढुलक चले हम। अज्ञात पटरियों पर। गारिन में दूसरों को अपनी पटरी पर लाने की बड़ी चतुरता है—वह बड़ा जिद्दी और हमलावर है।"

निकोलाई ने समारा से लेकर सर्गीयेव्स्क के गन्धक के सोतों तक एक रेलवे लाइन का निर्माण किया। इस काम के दौरान में उनके बारे में अनेक कहानियां थीं।

एक विशेष प्रकार के इंजिन की आवश्यकता पड़ने पर गारिन ने यातायात मन्त्रालय को लिखा कि इस प्रकार का इंजिन जर्मनी से खरीदा जाय। किन्तु या तो यातायात मन्त्री ने या वित्ते ने इस तरह की खरीद पर रोक लगा दी और सोर्मोवो या कोलोन्मा से इंजिन मंगाने का सुझाव दिया। मुझे अब याद नहीं कि कितनी पेचीदा और साहसी तिकड़मों से गारिन ने वह इंजिन जर्मनी से खरीदा और छिपाकर उसे समारा ले गये।

निस्संदेह, इससे हजारों रूबल धन और उससे भी अधिक कीमती समय की बचत हुई।

किन्तु गारिन ने समय और धन की बचत के बारे में उतनी डींग नहीं मारी जितनी इस बात की कि इंजिन समारा कैसे पहुंचाया।

"इसे कहते हैं सफलता !" वह कहते। "ठीक है न ?"

सफलता वास्तव में व्यापार के हित में उतनी नहीं थी जितनी रास्ते की रुकावटों पर पार पाने में, या और भी सरलता से कहा जाय तो, सरकार को उल्लू बनाने में। प्रत्येक मेधावी रूसी की भांति गारिन में भी कुछ-कुछ शैतानी के बीज थे।

उनकी परोपकारिता में भी विशिष्ट रूसीपन था। वह अपना धन ऐसे फेंकते थे मानो बोझा हो; मानो इन्द्र-धनुषी रंग के कागजों से—जिनके लिए लोग इतनी खींचा-तानी करते थे—उन्हें चिढ़ हो। उनकी पहली पत्नी काफी अमीर थीं—जहां तक मुझे याद है, वह अलेक्जान्दर तृतीय के निकट मित्र, जनरल चेरेविन, की पुत्री थीं। किन्तु उन्होंने अपनी पत्नी के लाखों रूबल बहुत थोड़े समय में ही कृषि-सम्बंधी प्रयोगों पर खर्च कर डाले, और १८९५-९६ से अपनी ही कमाई पर गुजर-बसर करने लगे। वह हर काम शाहाना अन्दाज से करते। मित्रों का वे स्वादिष्ट भोजन और मंहगी शराब से आदर-सत्कार करते। खुद इतना कम खाते-पीते थे कि यह समझ पाना कठिन था कि उनमें शक्ति का अजेय भंडार कहां से आता है। उन्हें लोगों को उपहार देने तथा प्रसन्न करने का शौक था। किन्तु यह सब वह लोगों को अपने पक्ष में करने के लिए न करते थे। यह करने के लिए उनमें बुद्धि का सौन्दर्य और अदम्य शक्ति ही काफी थी। जीवन उनके लिए छुट्टी के दिन की तरह था और वह, अचेतन रूप से, दूसरों का रवैया भी अपनी ही तरह का बनाने का प्रयत्न करते थे।

अचानक एक बार मैं स्वयं उनके एक व्यावहारिक मजाक का भागी बन गया। इतवार की सुबह एक बार मैं "समारा बजट" के दफ्तर में बैठा अपने एक लेख की प्रशंसा कर रहा था जिसे सेन्सर ने बूटों से उसी तरह रौंदा था जैसे कोई घोड़ा धान के खेत को रौंदता है कि दरबान, जो बिल्कुल गम्भीर व्यक्ति था, भीतर आया और बोला :

"कोई आपसे मिलने आया है। कहता है कि आपके लिए सिज-रान से कुछ घड़ियां लाया है।"

मैंने दरबान से कह दिया कि मैं न तो कभी सिरजान गया हूं, न कभी घड़ियां खरीदी थीं।

वह बाहर गया, कुछ बड़बड़ाया, फिर लौटकर आया :

"वह यहूदी कहता है कि आपके लिए कुछ घड़ियां लाया है।"

"उसको भीतर बुला लो।"

एक ठिगना-सा बूढ़ा यहूदी, फटा-पुराना कोट पहने, अजीब तरह का हैट लगाये अन्दर आया और मुझे अविश्वासपूर्ण निगाहों से देखने लगा। उसने मेरी मेज पर कैलेन्डर से फाड़े कागज का एक टुकड़ा रखा जिसमें गारिन ने लिखा था : "पेश्कोव गोर्की"। कुछ और भी लिखा था। किन्तु लिखावट ख़राब होने की वजह से मैं पढ़ न सका।

"क्या यह परचा इंजीनियर गारिन ने दिया है?"

"मैं क्या जानूं? मैं अपने खरीदारों से उनके नाम नहीं पूछता।" बूढ़े ने कहा।

मैंने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा :

"घड़ियां दिखाओ।"

लेकिन वह चौंककर पीछे हटा और मेरी ओर इस प्रकार देखते हुए मानो मैं नशे में हूं, बोला :

"शायद पेश्कोव गोर्की कोई और सज्जन हैं।"

"नहीं और कोई नहीं है। मुझे घड़ियां दे दो और जाओ।"

बूढ़ा यहूदी, "अच्छा, अच्छा!" कहता हुआ कंधे सिकोड़ता चला गया। मुझे कोई घड़ी-वड़ी न दी। एक मिनट बाद दरबान और वह आदमी एक बड़ा-सा बक्सा लेकर आये और उसे फर्श पर रख दिया। निश्चय ही वह भारी नहीं था। वृद्ध ने कहा :

"रसीद पर दस्तखत कर दो।"

"यह क्या है?" बक्से की तरफ देखते हुए मैंने पूछा।

"मैंने बताया न—घड़ियां।" यहूदी ने लापरवाही से कहा।

"क्या बहुत बड़ी है?"

"घड़ियां, दस घड़ियां !"

"दस घड़ियां ?"

"यही तो मैंने बताया न !"

यह सब कुछ बड़ा हास्यास्पद था। यहूदियों के सभी उपहास अच्छे नहीं होते, विशेषकर तब और भी जब कोई बात समझ में न आये या जब आपको ही उनमें कोई भोंड़ी भूमिका अदा करनी हो। मैंने वृद्ध से पूछा कि इस सबका क्या अर्थ है :

"जरा सोचो तो कि तुम कह क्या रहे हो ! लोग समारा से सिज-रान घड़ियां खरीदने नहीं जाते। या जाते हैं ?"

लेकिन बूढ़ा यहूदी अब नाराज हो चला था।

"यह सब सोचना मेरा काम नहीं है।" उसने कहा। "मुझसे कहा गया—यह करो। और मैंने कर दिया। 'समारा गजट' ? बिल्कुल ठीक। 'पेश्कोव गोर्की ?' यह भी ठीक। रसीद पर दस्तखत कर दीजिए। और आप मुझसे क्या चाहते हैं ?"

मैं और कुछ चाहता भी नहीं था। बूढ़ा आदमी सोच रहा था कि शायद उसे किसी घोटाले में घसीटा जा रहा है। उसके हाथ कांपे। वह जिस ढंग से मेरी ओर देख रहा था, उससे मुझसे ऐसा लगा मानो मैंने उसे कोई हानि पहुंचाई है। मैंने उससे जाने को कहा और दरबान से बक्से को प्रूफवाले कमरे में रख आने को कह दिया।

चार-पांच दिन बाद निकोलाई गारिन थके-मांदे, किन्तु प्रसन्न-चित्त, मेरे यहां आये। इंजीनियर की वर्दी उनके बदन पर सजी थी, मानो उनके शरीर का अभिन्न अंग हो।

"तो आपने ही मुझे वे घड़ियां भेजी थीं ?" मैंने पूछा।

"हां, हां ! भेजी थीं ! फिर ?"

और मेरे चेहरे को उत्सुकता से देखते हुए उन्होंने पूछा :

"उनका तुम क्या करोगे ? मेरे लिए वे किसी काम की नहीं।"

फिर उन्होंने मुझे यह कहानी सुनाई : वोल्गा के तट पर बसे छोटे से सिजरान नगर में संध्या समय टहलते हुए उनकी मुलाकात मछली का शिकार करनेवाले एक यहूदी लड़के से हो गयी। वह बोले :

"लेकिन उसकी तकदीर अच्छी न थी। समझे भाई? शिकार कांटे में फंसता और निकल जाता। गड़बड़ी क्या थी? पता चला कि वह कांटे से नहीं, बल्कि पीतल की पिन से, शिकार कर रहा है।"

लड़का अलबत्ता बहुत सुन्दर और बुद्धिमान था। यद्यपि गारिन विशेष दयावान न थे, बहुत सीधे भी नहीं, तो भी उन्हें अक्सर "बहुत बुद्धिमान" व्यक्ति मिल जाया करते। लोगों को वही दिखाई पड़ता है जो वह देखना चाहते हैं।

"जीवन के दुखों से परिचित," वह कह रहे थे, "वह अपने बाबा के साथ रहता था। बाबा घड़ी बनाता था। लड़का ग्यारह वर्ष की उम्र से ही इस कला को सीख रहा था। लगता था कि उस पूरे शहर में वह और उसका बाबा, यही दो यहूदी थे। होते-करते एक दिन मैं उसके साथ उसके बाबा के यहां गया। छोटी सी टूटी-फूटी दूकान। बूढ़ा, लैम्पों की बत्तियां और समोवारों के पम्प ठीक करता था। धूल, गंदगी, गरीबी; अक्सर मुझे भावुकता का दौरा आ जाता है। सोचा, उन्हें पैसे दूं? बेहूदा बात। सो, मैंने उसका पूरा सामान खरीद लिया और पैसे बच्चे को दे दिये। कल ही उसे मैंने कुछ किताबें भेजी हैं।"

एन. जी. ने पूरी गम्भीरता से आगे कहा :

"उन घड़ियों का तुम्हारे लिए कोई उपयोग न हो तो मैं अपने पास मंगा सकता हूं, ब्रांच-लाइन पर काम करनेवाले मजदूरों में बंट जायेंगी।"

हमेशा की तरह ये सब बातें उन्होंने जल्दी-जल्दी कहीं, किन्तु उनकी बातों में थोड़ा अचकचापन था—दाहिने हाथ को झटकर उन्होंने बात समाप्त की।

कभी-कभी "समारा गजट" में उनकी लघु-कथाएं प्रकाशित होती थीं। उनमें से एक—"प्रतिभावान"—एक यहूदी लिबरमान की सच्ची कहानी थी। यहूदी ने अपने आप ही "डिफरेंशियल कैलकुलस" सोचकर निकाला था। अर्ध-शिक्षित मरीज; बारह वर्षों तक वह आंकड़ों से संघर्ष करता रहा। अन्त में उसने सचमुच "डिफरेंशियल कैलकुलस" का पता लगा लिया। किन्तु यह जानकर कि उससे बहुत पहले ही इस

सिद्धान्त को खोज निकाला गया था, वह दुख के मारे और फेफड़ों के फट जाने के कारण समारा स्टेसन के प्लेटफार्म पर मर गया।

कहानी बहुत अच्छी तरह न लिखी गयी थी, लेकिन सम्पादक के दफ्तर में बैठकर निकोलाई ने यह कहानी बड़े नाटकीय ढंग से सुनायी थी। उनका कहानियां सुनाने का ढंग बहुत बढ़िया था। अक्सर वह लिखने से कहीं अच्छी तरह सुनाते थे। वह जिन परिस्थितियों में काम करते थे वे एक लेखक के लिए उपयुक्त न थीं। आश्चर्य है कि एक खानाबदोश की जिन्दगी गुजारते हुए भी वह "त्योमा का बचपन", "स्कूली बच्चे", "विद्यार्थी", "क्लोतिल्दा" और "दादी" जैसी कहानियां लिख सके।

"समारा गजट" के लिए जब उनसे लिबरमान की कहानी लिखने को कहा गया तो बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने कहा कि यूराल जाते समय कहीं ट्रेन पर वह इस कहानी को लिखेंगे। कहानी का आरम्भ तार लिखने के कागजों पर किया गया था। समारा स्टेशन से उसे एक गाड़ीवान "समारा गजट" के दफ्तर में लाया था। उसी रात कहानी के आरम्भ के सम्बंध में एक बहुत लम्बा तार मिला, जिसमें सुधार बताये गये थे। एक-दो दिन बाद दूसरा तार मिला जिसमें कहा गया था: "कहानी मत छापो। मैं उसे नये सिरे से लिखकर भेज रहा हूं।" लेकिन कहानी का दूसरा रूप उन्होंने कभी नहीं भेजा। कहानी का अन्तिम अंश शायद एकातरीनबर्ग से प्राप्त हुआ था।

उनके हाथ की लिखावट बिल्कुल न पढ़ी जा सकती थी। उसे एक तरह से फिर से लिखना पढ़ता था। इस प्रकार कहानी भी थोड़ी-बहुत बदल जाती थी। पांडुलिपि लगभग फिर से नकल करके कम्पोजीटर को दी जाती थी जिससे कि वह उसे आसानी से समझ सके। स्वभावतः निकोलाई जब पत्रिका में अपनी कहानी पढ़ते तो भवें चढ़ाकर स्वयं से पूछते:

"भला यह सब मैंने क्यों लिखा?"

"दादी" कहानी के बारे में उन्होंने बताया:

"एक बार सफर करते हुए जब मैं घोड़े बदलने के लिए एक सराय में रुका तो वहीं रात में इसे लिखा था। वहां पर कुछ व्यापारी

शराब पी रहे थे और चिड़ियों की तरह चहचहा रहे थे। मैंने वहीं बैठकर कहानी लिख डाली।"

मंचूरिया और "कोरिया की लोक-कथाओं" की उनकी किताब की पांडुलिपियां मैंने देखी हैं। हर तरह के कागज के टुकड़े मिल जायेंगे उनमें। ऐसे फार्म जिन पर "रोलिंग स्टाक और ट्रैफिक का सर्विस डिपार्टमेंट" छपा था; दफ्तर के लेजर से फाड़े गये रूलदार कागज भी थे; एक कनसर्ट का बिल था; यहां तक कि दो चीनी विजिटिंग कार्ड भी थे। सभी अधूरे शब्दों और इशारों में लिखे गये थे; सभी टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट से भरे थे।

मैंने पूछा: "आप यह सब कैसे पढ़ लेते हैं?"

"बड़ा आसान है। यह सब मेरा ही लिखा हुआ तो है!"

और वह बड़ी आसानी से कोरिया की एक सुन्दर कहानी पढ़ने लगे। लेकिन मुझे लगा कि वह पांडुलिपि से उतना नहीं पढ़ रहे, जितना 'अपनी याद' से।

मेरा विचार है कि एक लेखक के रूप में उनका रवैया अपनी तरफ सही न था। किसी ने उनकी उपस्थिति में "त्योमा का बचपन" की प्रशंसा की।

उन्होंने निश्वास भरते हुए कहा:

"छोटी बात है। बच्चों के बारे में सभी अच्छा लिख लेते हैं। उनके बारे में खराब लिखना बहुत मुश्किल है।"

और ऐसे अवसर पर, जैसा वह अक्सर करते, उन्होंने विषय बदल दिया।

"लेकिन कलाकारों के लिए बच्चों का चित्र खींचना कठिन है। वे सदा ही गुड़ियों की तरह लगने लगते हैं। वान डाइक की 'इनफैन्ता' भी गुड़िया ही है।"

गुसेव ने, जो एक अच्छे प्रबन्ध-लेखक थे, उन्हें फटकारा:

"तुम इतना कम लिखते हो—यह बहुत बुरी बात है!" लेकिन गारिन ने मजा लेते हुए कहा:

"हो सकता है कि कम इसलिए लिखता हूं कि मैं इंजीनियर ज्यादा हूं, लेखक कम। और इंजीनियरी भी मेरा सच्चा धंधा नहीं है। मुझे तो नीचे से ऊपर की ओर निर्माण करना चाहिए—न कि दाहिने से बायें और पूरब से पश्चिम। मुझे तो भवन-निर्माण-कला की तरफ जाना चाहिए था।"

तो भी रेलवे के अपने काम के बारे में वह बड़े ही उत्साह से, एक कवि की भांति, बताया करते थे।

वह अपनी कहानियों की विषय-वस्तु पर भी अच्छी तरह और उत्साहपूर्वक बातें करते थे।

मुझे दो अवसर याद हैं।

एक बार निझनी नोवगोरोद और कजान के बीच स्टीमर से सफर करते हुए उन्होंने मुझे बताया कि वह चीनी दैत्य 'चिग च्यू-तुंग' की पौराणिक कथा के अधार पर एक लंबा उपन्यास लिखना चाहते हैं। यह दैत्य जनता की भलाई करना चाहता था। इस पौराणिक कथा का रूसी लेखक जोतोव एक बार रूसी साहित्य में उपयोग कर चुके हैं। गारिन का नायक एक भले दिलवाला कारखानेदार था। वह बहुत धनी था; लेकिन जीवन से ऊबा हुआ। वह जनता की भलाई करना चाहता था। वह दयावान व कल्पनावादी था और राबर्ट ओवेन बनने का स्वप्न देखता था। उसने बहुत सी बेतुकी चीजें भी कीं। व्यवहारिक व्यक्तियों ने उसे सताया और 'एथेन्स के टाइमन' जैसी मानसिक स्थिति में वह मरा।

एक अन्य अवसर पर, एक रात पीटर्सबर्ग में उन्होंने मुझे एक बड़ी मनोहर कहानी सुनाई, जिसे वह लिखना चाहते थे।

"बस तीन पन्ने; ज्यादा नहीं।"

जहां तक मुझे याद है कथानक इस प्रकार था :

जंगल में रहनेवाला एक आदमी जिसके सभी विचार अन्तर्मुखी हो गये थे, अपने एकाकी जीवन से पीड़ित था और सभी व्यक्तियों को अपना शिकार समझता था। रात में वह अपनी झोपड़ी को लौट रहा है। उसे एक और यात्री मिल जाता है और दोनों साथ चलने लगते हैं। रास्ते में दोनों के बीच सन्देह-पूर्ण चतुर वार्ता होती है। हवा में गड़गड़ाहट

है; प्रकृति में तनाव। तेज हवा चल रही है। पेड़ एक दूसरे के पीछे छिपे हुए। एक भयानक खड़खड़ाहट है। यकायक उस जंगली को लगता है कि दूसरा यात्री उसकी हत्या करना चाहता है। वह कोशिश करता है कि अपने साथवाले से कुछ पीछे चले। लेकिन यात्री यह नहीं चाहता। इसीलिए वह उसी के बराबर चलने लगता है। दोनों मौन हो जाते हैं। जंगली अपने-आप से कहता है कि वह कुछ भी करे यात्री उसकी हत्या कर देगा; उसके भाग्य में यही है। दोनों झोपड़ी पर पहुंचते हैं। जंगली यात्री को खाना खिलाता है। खुद भी खाता है। प्रार्थना करने के बाद वह सोने के लिए लेट जाता है। लेकिन जिस चाकू से उसने रोटी काटी थी, उसे वह मेज पर ही छोड़ देता है। लेटने से पहले वह चूल्हे के पास कोने में रखी बन्दूक की भी परीक्षा करता है। जंगल में जोरों से गड़-गड़ाहट होती है। बिजली की चमक और भी भयावह लगती है। जोरों से वर्षा होने लगती है। झोपड़ी जोरों से हिलने लगती है, मानो उखड़ रही हो, और हवा में उड़ रही हो। यात्री चाकू की तरफ देखता है, बन्दूक की तरफ देखता है, उठता है और अपनी टोपी लगा लेता है।

जंगली पूछता है : "कहां चले ?"

"मैं तो जाता हूं। तुम भाड़ में जाओ।"

"क्यों ?"

"तुम मेरी हत्या करना चाहते हो। मैं खूब समझता हूं।"

जंगली उसे पकड़ लेता है।

"अरे ! बस, हो गया। जाओ नहीं। मैं समझता था तुम मेरी हत्या करना चाहते हो।"

"मैं जा रहा हूं। चूंकि हम दोनों ने एक ही बात सोची, इसका मतलब है कि हममें से एक को मरना ही चाहिए।"

यात्री चला जाता है। जंगली फिर अकेला रह जाता है। वह अपनी बेंच पर बैठता है और दुखी होकर रोने लगता है।

एक क्षण रुककर गारिन ने कहा :

"शायद मुझे उसे रुलाना न चाहिए। लेकिन उसने मुझे बताया : 'मैं बहुत बुरी तरह रोया था।' मैंने उससे पूछा : 'किसलिए ?' उसने

कहा : 'निकोलाई, मैं नहीं जानता। मुझे बड़ा दुःख लगा।' या शायद मुझे चाहिए कि मैं यात्री को वहीं रह जाने दूं और कहूं : 'साथी, देखो हम लोग कैसे हैं!' या इसी प्रकार की कोई और बात। या, शायद मुझे चाहिए कि उन दोनों को करवटें बदलकर सो जाने दूं।"

यह स्पष्ट था कि इस विषय से वह बहुत प्रभावित थे और उसकी दुखद गहराइयों से भी अच्छी तरह परिचित थे। जल्दी-जल्दी बोलते हुए उन्होंने धीमी आवाज में यह सब सुनाया। मुझे लगा जैसे वह जंगली को, यात्री को, काले वृक्षों की डालों के बीच बिजली की नीली कौंध को —सभी को देख रहे हों; बादलों की गड़गड़ाहट और वायु के रुदन तथा वृक्षों की सरसराहट को सुन रहे हों। यह तो और भी अजीब बात थी कि उनका जैसा सुसंस्कृत व्यक्ति, जिसके नारियों जैसे हाथ थे, चेहरा सुन्दर था और जो सदैव ही प्रसन्नचित और सक्रिय रहता था—उसके भीतर ऐसी नैराश्यपूर्ण भावनाएं बस गयी थीं! यह उनके अनुरूप न था। जैसा वह काम कर रहे थे, वह हल्का और आनन्दपूर्ण था। गारिन लोगों से मुस्करा-मुस्कराकर बातें करते थे और अपने को ऐसा मजदूर समझते थे जिसकी सारी दुनिया को जरूरत है। उनमें प्रसन्न और आश्वस्त व्यक्ति का आत्म-विश्वास था, और वह जानते थे कि वह सदा ही अपना रास्ता ढूंढ़ निकालेंगे। मैं अक्सर उनसे मिलता था। किन्तु यह मिलन बहुत ऊपरी-ऊपरी होता, क्योंकि वह सदा ही कहीं न कहीं जाने की जल्दी में होते। मुझे तो वह सदा ही खुश दिखाई पड़े। कभी थके, विचारमग्न या व्यस्त नहीं।

साहित्य के सम्बंध में वह लगभग सदा अनिश्चिततापूर्वक बातें करते थे। एक अचकचाहट का-सा भाव उनमें होता और वह धीरे-धीरे बोलते। बहुत दिन बाद जब मैंने उनसे पूछा : "क्या आपने उस जंगली की कहानी लिख डाली?" तो उन्होंने उत्तर दिया :

"नहीं, वह मेरा विषय नहीं है। वह चेखोव के लिए अधिक उपयुक्त है। ऐसे विषय के लिए उनके कवित्वपूर्ण हास्य की आवश्यकता है।"

मेरा विचार है कि वह अपने को मार्क्सवादी इसीलिए समझते थे कि वह इंजीनियर थे। वह मार्क्स की विचारधारा की शक्ति के प्रति आकर्षित हुए थे। किन्तु जब उनके कानों में मार्क्सवादी दर्शन की आर्थिक निर्णयात्मकता की प्रतिध्वनि पहुंचती—और एक जमाने में इसका बहुत चलन था—तो वह बड़ी दृढ़ता से उसके विरुद्ध तर्क करते; उतनी ही दृढ़ता से जितनी दृढ़ता से आगे चलकर उन्होंने बर्नस्टीन के इस सिद्धांत के विरुद्ध तर्क किया कि "आन्दोलन ही सब-कुछ है, अंतिम उद्देश्य कुछ नहीं।"

वह चिल्ला उठते: "यह अधःपतन है। कोई धरती पर सदा ही सड़कें बनाता जाय ऐसा नहीं हो सकता।"

विश्व को पुनर्संगठित करने की मार्क्स की योजना उनको अपनी विशदता के कारण बहुत ही प्रभावित करती। वह महान सामूहिक श्रम से निर्मित भविष्य की कल्पना करते थे, जिसके निर्माण में वर्ग संघर्ष की शृंखलाओं से मुक्त समूची मानवता लगी हो।

वह प्रकृति से कवि थे। इस बात का अनुभव तब हो जाता था जब वह किसी ऐसी चीज पर बोलते जिसे या तो वह प्यार करते हों या जिस पर उनका विश्वास हो। किन्तु वह श्रम के कवि भी थे। उनका निश्चित झुकाव व्यावहारिकता, सक्रियता, की ओर था। वह अक्सर बड़े ही साहसिक और मौलिक वक्तव्य देते। उदाहरण के लिए उनका निश्चित मत था कि उपदंश (गर्मी) का निदान टाइफाइड के कीटाणुओं के इंजेक्शन द्वारा किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि वह अनेक ऐसे व्यक्तियों को जानते हैं जिनका गर्मी का रोग टाइफस की बीमारी से दूर हो गया था। उन्होंने इस विषय पर लिखा भी था। "विद्यार्थी" नामक उनकी पुस्तक का एक पात्र इसी तरह अच्छा हुआ था। इस विषय में वह लगभग देवदूत की ही तरह प्रमाणित हुए क्योंकि लकवे का निदान प्लासमोडियम इंजेक्शनों द्वारा किया जा रहा है। अनेक औषधि-विशेषज्ञ "पैरा-थेरापी" की शक्ति के बारे में अधिकाधिक बातें करने लगे हैं।

गारिन को कीटाणुनाशक पौधों को लगाने के सम्बंध में बातें करने का शौक था। किन्तु यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूं तो अमरीका में एक

ऐसे ही पौधे की खोज हो गयी थी जिसने आलू में लगनेवाले कीटाणुओं को मार दिया था और वहां उसका उपयोग भी हो रहा था।

गारिन में सर्वतोमुखी रूसी प्रतिभा थी और रूसी तरीके से ही वह अपनी प्रतिभा को बिना सोचे-समझे बहाया करते थे। किन्तु उनके मुख से सदैव पौधों को कीड़ों से बचाने की बातें सुनकर या रेलवे स्लीपरों को जंग से बचाने और वायु-ब्रेक लगाने आदि के बारे में बातें सुनकर बड़ा आनन्द आता था।

गारिन की मृत्यु के बाद उत्तरी रेलवे लाइन के निर्माता सावा मामन्तोव एक बार जब काप्री द्वीप में आये तो उन्होंने बताया :

"वह प्रतिभावान थे और उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। वह इंजीनियर की वर्दी भी एक प्रतिभावान व्यक्ति की तरह पहनते थे।"

और मामन्तोव प्रतिभा को पहचानते थे। अपना सारा जीवन उन्होंने प्रतिभावान लोगों के बीच ही बिताया था। शालियापिन, व्रूबे, विक्टर वैसनेत्सोव और बहुत से लोग जिन्हें उन्होंने पैरों पर खड़ा किया था, ऐसे ही व्यक्ति थे। वह स्वयं भी असाधारण प्रतिभा के व्यक्ति थे जिनसे ईर्ष्या करने का मन होता था।

मंचूरिया और कोरिया से लौटने के बाद गारिन को जारित्सा के पास एनिचकोव पैलेस में निमंत्रित किया गया। निकोलाई द्वितीय उनकी यात्राओं की कहानी सुनना चाहते थे।

दरबार में स्वागत के बाद आश्चर्य से अपने कंधे हिलाते हुए गारिन ने कहा :

"क्यों ? ये सब तो निरे प्रादेशिक हैं !"

दरबार में अपनी उपस्थिति के बारे में उन्होंने यह बताया :

"मैं यह नहीं छिपाऊंगा कि दरबार में जाने से पहले मैंने अपने आपको खूब सजाया-संवारा, पैर मजबूत किये। मुझे कुछ संकोच भी हो रहा था। तेरह करोड़ इन्सानों के राजा से परिचय—यह कोई साधारण परिचय न था! मैं यह सोचने के लिए विवश था कि इस तरह का व्यक्ति किसी न किसी रूप से महत्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक होगा।

पास ही में पैदल सेना का एक सुन्दर-सा अफसर था जो बैठा हुआ मुस्करा रहा था, और धूम्रपान कर रहा था। अफसर मुझसे सवाल करता जाता था, किन्तु किसी ऐसी चीज के बारे में नहीं जिसमें किसी जार की दिलचस्पी हो और जिसके राज्यकाल में महान साइबेरियन रेलवे का निर्माण हुआ हो। आखिर समूचा रूसी प्रदेश प्रशान्त तट तक फैला हुआ है और वहां उसे न दोस्त मिलते हैं और न दोस्ती का व्यवहार। शायद मेरे लिए यह सोचना मेरी सरलता का प्रमाण था कि जार को मुझ जैसे नगण्य व्यक्ति से ये सब बातें न कहनी चाहिएं। लेकिन फिर मुझे उनसे मिलने को निमंत्रित ही क्यों किया गया था और चूंकि अब मुझे निमंत्रित कर ही लिया गया था तो उसके प्रति गम्भीरता क्यों न बरती जाय? यह क्यों पूछा जाय कि 'कोरियाई हमें चाहते हैं या नहीं?' मैं इसका क्या जवाब देता? यद्यपि यह कोई बहुत बुद्धिमानी की बात न थी, तो भी मैंने एक प्रश्न द्वारा इसका उत्तर दिया : 'आप किन लोगों के बारे में पूछ रहे हैं?' मैं भूल गया था कि मुझे चेतावनी दी गयी थी कि मुझे प्रश्न नहीं पूछने हैं; सिर्फ जवाब देना है। किन्तु मैं करता क्या! उनके प्रश्न ही इतने मूर्खतापूर्ण थे। यह सब मन को बड़ा उबानेवाला था। स्त्रियां तो बिलकुल बोल ही नहीं रही थीं। वृद्धा जारित्सा ने पहले अपनी एक भौंह उठाई और फिर दूसरी — जैसे भौचक्की हो। उसके पास ही सहारा देनेवाली एक सुन्दर नवयुवती भी अकड़ी बैठी थी—उसकी आंखें पत्थर जैसी थीं, वह चोट खाई सी लग रही थी। उसको देखकर मुझे एक अनब्याही प्रौढ़ा स्त्री की याद आयी जो चौंतीस वर्ष की हो जाने पर प्रकृति पर इसलिए नाराज थी कि उसने स्त्रियों पर बच्चे उत्पन्न करने का भार डाला है और उसके न कोई बच्चा हुआ था और न किसी से प्रेम-सम्बंध ही। जारित्सा से उसका मिलान करते ही मेरा मन उखड़-सा गया। संक्षेप में, सब-कुछ बड़ा जी उबानेवाला था।"

यह सब उन्होंने बहुत जल्दी-जल्दी बताया मानो इस प्रकार के अरुचिकर विषय पर बात करते हुए वह बेहद परेशानी का अनुभव कर रहे हों।

कुछ दिनों बाद उन्हें अधिकृत रूप से सूचना मिली कि जार ने उन्हें व्लादिमीर की उपाधि से विभूषित किया है। किन्तु इसे वह कभी प्राप्त न कर सके, क्योंकि कजान कैथेड्रल के सामने प्रदर्शनों में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों और दूसरे व्यक्तियों पर हुए हमलों के विरोध में अन्य लेखकों के साथ हस्ताक्षर करने के कारण उन्हें पीटर्सबर्ग से निष्कासित कर दिया गया।

उनके दोस्त उन्हें चिढ़ाते थे : "निकोलाई, तुम्हारी उपाधि तो हाथ से निकल गयी।"

वह क्रोध में उत्तर देते : "भाड़ में जाय उपाधि। मुझे जरूरी काम करने हैं और मुझे यहां से निकाला जा रहा है। कितनी मूर्खता की बात है! चूंकि आप मुझे अच्छे नहीं लगते, इसलिए आप हमारे नगर में रह नहीं सकते, काम नहीं कर सकते। दूसरे नगर में भी तो मैं वैसा ही रहूंगा, जैसा यहां हूं, या नहीं?"

कुछ देर बाद वह समारा गुबर्निया में जंगल लगाने की आवश्यकता बताने लगे जिससे पूरब की ओर बालू के प्रसार को रोका जा सके।

उनके मस्तिष्क में सदैव विशाल योजनायें भरी रहती थीं और शायद वह बार-बार इसी शब्दावली का प्रयोग करते थे : "इन्सान को संघर्ष करते रहना चाहिए।"

वोल्गा छिछली न हो जाये इसके लिए संघर्ष! प्रदेशों में "विर्जेविये वेदोमोस्ती" ("सट्टा-बाजार समाचार") की प्रसिद्धि हो इसके लिए संघर्ष! नालियां और नहरें बढ़ें! एक शब्द में, संघर्ष चलता रहे।

"और निरंकुशतावाद के विरुद्ध," पेत्रोव नामक मजदूर ने जो गैपन का माननेवाला था, कहा। निकोलाई ने एक प्रश्न द्वारा इसका उत्तर दिया :

"क्या तुम इसलिए असंतुष्ट हो कि तुम्हारा शत्रु मूर्ख है? क्या तुम चाहोगे कि वह चतुर और ज्यादा मजबूत हो?"

शेलगुनोव नामक एक अंधे मजदूर ने जो पुराना क्रान्तिकारी था और शुरू-शुरू में सोशल-डेमोक्रैट बननेवाले मजदूरों में से था, पूछा :

"यह बात किसने कही है? बहुत बढ़िया बात है।"

१६०५ की गर्मियों में कुम्रोकाला में गारिन मेरे पास पन्द्रह हजार रूबल — या शायद वे पचीस हजार हों — पार्टी फण्ड के लिए, क्रासीन को देने के लिए, लाये। वहां जिस तरह के समाज में वह दाखिल हुए, उसमें सभी रंगों के लोग थे। ग्रीष्म-कुटीर के एक कमरे में रुतेनबर्ग, येवनो अजेफ और तातारोव से सलाह कर रहे थे। ये दोनों ही उकसावा भड़कानेवाले एजेन्ट थे, जिनका अभी तक पर्दाफाश न हुआ था। दूसरे कमरे में मेंशेविक साल्तीकोव, बिन्वाय से "आस्वोबोजदेनिये" ("मुक्ति") को पीटर्सबुर्ग कमेटी के पास भेजने की टेकनीक पर बात कर रहे थे, और, यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूं तो, वहां पर ओचकी, दूसरा उकसावा भड़कानेवाला, बैठा था जिसका अभी तक भण्डा न फूटा था। मेरे गांव का पड़ोसी पियानो बजानेवाला गाब्रीलोविच चित्रकार रेपीन के साथ बागीचे में टहल रहा था। पेत्रोव, शेलगुनोव और गारिन बरामदे की सीढ़ियों पर बैठे थे। अपनी आदत के अनुसार गारिन जल्दी में थे, अपनी घड़ी की ओर देख रहे थे, और वह तथा शेलगुनोव गैपन के प्रति पेत्रोव के विश्वास को तोड़ने का प्रयास कर रहे थे। फिर गारिन मेरे कमरे में आये जिसके दरवाजे से फाटक दिखलाई पड़ता था।

वहां से हमने भारी-भरकम, मोटे होंठोंवाले, सुअर जैसी आखों-वाले अजेफ को, जो गहरे नीले रंग का सूट पहने था, और खाते-पीते घराने के लम्बे बालोंवाले तातारोव को देखा जो कैथेड्रल का छद्मवेशी पादरी मालूम होता था। वे स्टेशन की ओर जा रहे थे। उनके पीछे दुबला, मुंह लटकाये साल्तीकोव और नम्र वेन्याय थे। मुझे याद है कि उकसावा भड़कानेवालों की तरफ आंख मारते हुए रुतेनबर्ग ने कहा था :

"हमारे लोग ज्यादा सम्मानित हैं।"

गारिन ने निश्वास भरते हुए कहा : "यहां तुमने कैसे लोग जमा कर रखे हैं? तुम्हारी जिन्दगी बहुत दिलचस्प है।"

"लेकिन, यह आपके लिए ईर्ष्या की चीज नहीं है।"

"मेरे लिए? मैं चारों ओर भागता रहता हूं, जैसे शैतान का कोचवान हूं। जिन्दगी गुजरती जाती है। मैं जल्द ही साठ का हो जाऊंगा। फिर, अभी मैंने किया ही क्या है।"

"'त्योमा का बचपन,' 'स्कूली बच्चे,' 'विद्यार्थी,' 'इंजीनियर' युग परिवर्तन का कार्य ..."

"तुम बड़े दयालु हो।" वह हंसे। "लेकिन तुम अच्छी तरह जानते हो कि इनमें से कोई भी किताब न लिखी गयी होती तो कुछ भी न बिगड़ता।"

"आप यह सब बिना लिखे रह सकते थे ?"

"हां-हां ! मैं बिना लिखे रह सकता था ! और, यह जमाना किताबें लिखने का नहीं है ...।"

मेरा विचार है कि वह मुझे पहली बार श्रान्त और खिन्न मालूम हुए, किन्तु यह इस कारण कि वह अस्वस्थ थे और उन्हें बुखार था।

उन्होंने यकायक कहा : "गोर्की ! वे तुम्हें शीघ्र ही गिरफ्तार कर लेंगे। मैं भविष्य-द्रष्टा हूं। इसी नाते मैं यह भी बताता हूं कि मुझे भी वे शीघ्र समाधिस्थ कर देंगे।"

किन्तु थोड़ी ही देर बाद, चाय पीते समय, फिर आश्वस्त हो गये और उन्होंने कहा :

"रूस सभी देशों में सबसे ज्यादा खुशहाल है। यहां कितना अधिक काम करने को है, कितनी शानदार सम्भावनाएं हैं, कितने पेचीदा काम हैं ! मैंने कभी किसी से ईर्ष्या नहीं की। लेकिन मुझे भविष्य के उन लोगों से ईर्ष्या है जो मेरे मरने के तीस-चालीस वर्ष बाद रूस में होंगे। अच्छा, अलविदा ! मैं चला।"

यह हमारा अन्तिम मिलन था। जैसे वह जी रहे थे, वैसे ही "चलते-फिरते" मर गये। वह किसी साहित्यिक सम्मेलन में भाग ले रहे थे। अपने प्रभावशाली भाषण के बाद वह पास के कमरे में गये और सोफे पर लेट गये।

इस प्रतिभाशाली और अक्षुण्ण शक्तिवाले व्यक्ति का देहावसान दिल पर लकवा मार जाने से हुआ।

मिखाइल प्रिशविन

मिखाइल मिखाइलोविच ! आपके सम्बध मे लिखना आसान नही है, क्योकि यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसमे आप जैसा महान कौशल हो और मै जानता हू कि वह मुझमे नही है।

इसके अतिरिक्त, प्रिशविन जैसे मौलिक कलाकार की कृतियो पर स्पष्टीकरण की टिप्पणी लिखना मुझ गोर्की के लिए कुछ भद्दा सा लगता है—उन प्रिशविन की कृतियो पर जो पिछले २५ वर्षो से रूसी साहित्य की महान सेवाये कर रहे है। लोग कहेगे कि मैं प्रिशविन के पाठको को अज्ञानी समझता हू, उन्हे कुछ समझ सकने मे अयोग्य मानता हू।

आपके सम्बध मे लिखने मे मुझे एक तरह से आत्मविश्वास की कमी का अनुभव होता है, क्योकि आपके एक पाठक के नाते मैंने आपकी किताबो से बहुत कुछ सीखा है, यद्यपि मैने लिखना आपसे पहले शुरू किया था। यह मत सोचियेगा कि यह बात मैं केवल नम्रता के वशीभूत होकर, या झूठे सौजन्य के कारण, कह रहा हू। यह सत्य है ! यह मैंने सीखा है ! मैं अब भी सीख रहा हू—केवल आपसे ही नही, जो कला के पूर्ण पण्डित है, वरन ऐसे लेखको से भी जो मुझसे आयु मे पैंतीस वर्ष छोटे है, जिन्होने अभी-अभी लेखन-कार्य शुरू किया है, जिनकी प्रतिभा और योग्यता मे अभी सामजस्य नही आ पाया है किन्तु जिनका स्वर दृढ, ताजा व नवीन है।

मैं केवल इसीलिए नहीं सीखता हूं कि "सीखने में कभी देर-सवेर का प्रश्न नहीं उठता है," वरन इसलिए भी कि सीखना इन्सान के लिए स्वाभाविक और आनन्दप्रद होता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि एक कलाकार दूसरे कलाकार से ही कौशल सीख सकता है।

मिखाइल मिखाइलोविच! मैंने आपसे "काला अरब," "कोलो-वोक," "निडर पक्षियों का देश" और आपकी दूसरी अनेक कहानियों के समय से ही सीखना शुरू कर दिया था। आपकी भाषा की पवित्रता और सरल शब्दों के स्वाभाविक प्रयोग की उस दक्षता ने आपकी ओर आर्कषित किया था, जिसके फलस्वरूप आप जिस विषय पर लिखते थे उसे लगभग सर्वांगीण रूप को व्यक्त कर देते थे। हमारे अनेक लेखकों में यह शक्ति उतनी नहीं है जितनी आप में।

किन्तु आपकी रचनाओं को फिर से पढ़ने पर मुझे एक और महत्वपूर्ण विशेषता मिली है जो आपकी अपनी विशेषता है और जिसे मैंने किसी अन्य रूसी लेखक में नहीं पाया है।

हममें से बहुत से लोग ऐसे हुए हैं, और हैं, जो मनमोहक शब्दों में प्राकृतिक दृश्यों का चित्र खींच सकते हैं। तुर्गनेव, अक्साकोव के "शिकारी के शब्द-चित्र" और तोल्सतोय के सुन्दर शब्द चित्र! चेखोव ने तो, लगता है, मानो अपनी 'स्तपी' को रंगीन गुरियों से पिरोया हो। सर्गेयिव त्सेन्सकी जब क्रीमिया के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन करता है तो लगता है मानो चोपिन बांसुरी बजा रहा हो। और, हमारे शब्द कला-कारों के प्रकृति-वर्णनों में और भी कुशलता, शक्ति और दिल को छू लेने की क्षमता है।

एक लम्बे अर्से तक मैं प्रकृति के प्रति गाये गये इन गीतों की प्रशंसा किया करता था। किन्तु कुछ वर्षों बाद इन्होंने मेरे भीतर एक आश्चर्य और विरोध की भावना उत्पन्न कर दी। मैं अनुभव करने लगा कि प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन में प्रयोग की गयी जादूभरी भाषा के पीछे लेवियाथन को मोहने का — उस भयानक और वीभत्स जन्तु को मोहने का, जो निरर्थक ही बिना रुके अंडे दिया जाता है और फिर उन्हें खा जाता है — अचेतन प्रयत्न छिपा हुआ है। मुझे इसमें मनुष्य का पतन

दिखाई पड़ा — जब वह जीवन की कुछ पहेलियों को हल करने में असफल हो जाता है। प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति दासता की वृत्ति में मुझे मनुष्य की 'बर्बरता' का बोध हुआ — यह एक ऐसा सौन्दर्य है, जिसका आविर्भाव मनुष्य की कल्पना द्वारा ही हुआ है।

आखिर, रेगिस्तान में तो कोई सौन्दर्य है नहीं। सौन्दर्य तो अरब-वासी की आत्मा में है। फिनलैंड के कठोर दृश्यों में सौन्दर्य नहीं है! यह तो किसी फिनलैंडवासी का आविष्कार है, जो उसने अपने महान देश की आत्मा को दिया है। किसी ने कहा है :

"लेवितन ने रूसी दृश्यों में जो सौन्दर्य ढूंढ़ निकाला, उसे उससे पूर्व किसी ने न देखा था।"

और कोई देख भी न सकता था, क्योंकि उनमें सौन्दर्य था ही नहीं। लेवितन ने उसे 'ढूंढ़ा' भी नहीं, वरन् धरती के लिए यह उसकी मानवीय देन थी। उससे पूर्व रूजदेल, लॉरिन और बीसियों दूसरे चित्र-कारों ने धरती पर सौन्दर्य बरसाया था। 'कौस्मौस' के लेखक हम्बोल्त जैसे वैज्ञानिकों ने भी धरती को उदारतापूर्वक सजाया। भौतिकवादी हैकेल ने जेलीफिश व जल-वनस्पति के झंखाड़ में 'रूप के सौन्दर्य' को ढूंढने का प्रयास किया। वह उसे मिला और उसने हम लोगों को लगभग इस बात पर राजी कर लिया कि वे सचमुच सुन्दर हैं। तो भी अर्वा-चीन हेलेनें, सौन्दर्य की देवियां, जेलीफिश को एक गन्दा जानवर मानती थीं। इन्सान ने चकाचौंध पैदा कर देनेवाले बर्फ के तूफान के रुदन और चिल्लाहट के विषय में बोलना सीख लिया है, उसे खतरनाक समुद्री लहरों के सौन्दर्यपूर्ण नृत्य, भूचालों एवं तूफानों के विषय में आकर्षक शब्दों में बातें करना आ गया है। और इसके लिए इन्सान की जितनी प्रशंसा की जाय कम है, क्योंकि यह सब उसने अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर किया है। अपनी कल्पना के द्वारा उसने विश्व के निर्जन प्रदेशों को अपने लिए रहने लायक स्थान बनाया है, धरती को अपने लिए और सुविधाजनक बनाने का प्रयास किया है और उसकी छिपी हुई शक्तियों को आत्मसात करने का प्रयत्न किया है।

और मिखाइलोविच ! आप समझ रहे हैं न, कि मैंने आपकी रचनाओं में प्रकृति के प्रति मानव की दासता नहीं देखी। सच्ची बात तो यह है कि आप प्रकृति के विषय में लिखते ही नहीं, आप तो उससे भी विशाल — धरती, हमारी महान माता, के विषय में लिखते हैं। धरती माता के प्रति प्यार, और उसके प्रति ज्ञान की जितनी सामंजस्यपूर्ण एक-रूपता मुझे आपकी रचनाओं में मिली है उतनी किसी दूसरे रूसी लेखक की रचनाओं में नहीं।

जंगल और दलदल, मछली और चिड़ियां, पौधे और पशु, कुत्ते और कीड़े — आपकी धारणा का विश्व असाधारण रूप से विशद और समृद्ध है, इनके विषय में आपका ज्ञान पूर्ण है। और इनसे भी अधिक उल्लेखनीय हैं वे सरल शब्द जिनमें धरती और तमाम दूसरे जीवों के लिए आपका प्यार निहित रहता है। 'दि बूट्स' में आपने लिखा है : "इस बात से अधिक कठिन और कोई बात नहीं कि यह लिखा जाय कि शुभ क्या है।" लेकिन मेरा विचार है, यह शायद इसलिए कि, जैसा आपने स्वयं उस कहानी में कहा है, "हम शब्दों के प्रभाव को शारीरिक अनुभव की तरह ही तीव्र बनाना चाहते हैं।"

"वेरेन्देई का वसन्त" में मुझे आप एक सुन्दर बालक जैसे लगते हैं, जो किसी को रिझाने की कोशिश में हो। और "धरती के भेदों" के सम्बंध में आपके शब्द भविष्य के मानव के शब्द लगते हैं जो मानो धरती का शहंशाह हो, उसकी खुशियों और अचरजों का निर्माता हो। और आपकी लेखनी की यह नितान्त मौलिक विशेषता है। मेरे लिए यह नवीन और असीम महत्व की बात है।

साधारणतः लोग धरता से कहते हैं :

"मैं तेरा हूं।"

आप उससे कहते हैं :

"तू मेरी है।"

और यह सच है। धरती हमारी उससे अधिक है — जितना हम उसे समझने के आदी हैं। महान रूसी वैज्ञानिक वेर्नाद्स्की ने दृढ़ता और योग्यता के साथ यह नयी धारणा स्थापित की कि हमारी धरती की

पथरीली और धातु युक्त सतह पर उपजाऊ भूमि ऐसे तत्वों से बनी है जिनमें जीवित तत्व लगे हैं। इन तत्वों ने समय के अपरमित युग में धरती की कठिन गैर-उपजाऊ तह को विनष्ट कर दिया है—जैसे कि आज भी पहाड़ी पौधे और कुछ अन्य पौधे खनिज को नष्ट करते रहते हैं। पौधों और बैक्टीरिया ने न केवल धरती की कठिन तह को विनष्ट किया, वरन् उस समूचे वातावरण को भी निर्मित किया है, जिसमें हम रहते और सांस लेते हैं। आक्सिजन पौधों की क्रिया से उत्पन्न होती है। जिस उपजाऊ धरती से हमें रोटी मिलती है, वह असंख्य मृत कीड़ों, पक्षियों और पशुओं, तथा पेड़ों की पत्तियों और फूलों की पंखुरियों से निर्मित है। लाखों, करोड़ों इन्सानों ने धरती को अपने खून से सींचा है! धरती सचमुच हमारी ही है।

महान धरती माता के साथी और बेटे! आपकी पुस्तकों के पृष्ठों से धरती के हमारे शरीर के अभिन्न अंग होने का भाव स्पष्टतः ध्वनित होता है!

यह बात अस्वाभाविक, व्यभिचार की भांति, लगती है। लेकिन यह सत्य है कि धरती से पैदा इन्सान उसे अपने श्रम से उपजाऊ बनाता है और अपनी कल्पना के सौन्दर्य से उसे सजाता है।

यह विश्व? विश्व-विज्ञानवेत्ता, खगोल शास्त्री, भू-विज्ञान शास्त्री—सभी इस विश्व को कौशल और श्रम से पूर्ण बनाने में लगे रहते हैं। कलाकार के मस्तिष्क और मन के लिए इस धरती की पूर्णता और भी अधिक निकट तथा महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक दुर्घटनाएं उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितनी कि सामाजिक उथल-पुथल! हमारी धरती इस कारण और भी अवसादपूर्ण तथा अंधकारमय नहीं हो जाती कि आकाश गंगा का कोई सूर्य बुझ गया है, जिसके विषय में हम कुछ नहीं जानते थे। वह सूर्य तो फिर प्रकाशमय हो जायेगा। किन्तु इस धरती को फिर से दूसरा पुश्किन नहीं मिलेगा!

हमारे लिए विश्व की भेद भरी बातें उतनी महत्वपूर्ण और दिलचस्प नहीं हैं, जितनी कि यह पहेली कि—किस जादू से अकार्बनिक-पदार्थ कार्बनिक हो जाता है और कार्बनिक पदार्थ विकसित होकर जीवन-

मय हो जाता है; कैसे यही जीवन लोमोनोसोव और पुश्किन, मेन्देलेयेव और तोल्सतोय, पाश्चर, मार्कोनी और ऐसे ही हजारों महान विचारकों तथा कवियों को जन्म देता है — ऐसे इन्सानों को, जो एक दूसरी प्रकृति — हमारे मानवीय विचारों और हमारी इच्छा —की रचना करते हैं।

मिखाइल मिखाइलोविच ! आपकी रचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानवों के प्रति आपका रवैया मित्रतापूर्ण है। यह बात निस्संकोच और बिना शर्त बहुत कम कलाकारों के बारे में कही जा सकती है। इन्सानों के लिए आपकी भावना, धरती के प्रति आपके प्यार की सरसता से, आपके 'भू-प्रेम' और 'भू-आशावाद' से, जागृत होती है।

मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि आप शेष मानवता से कुछ ऊंचे हैं। लेकिन इस ऊंचाई से मानवता के सम्मान में किंचित भी ठेस नहीं लगती। यह बात इन्सानों के लिए आपकी तीव्र, सच्ची और प्रगाढ़ मित्रता से ही पूरे रूप से उचित लगती है — फिर वे इन्सान चाहे कैसे भी क्यों न हों, जरूरत ने उन्हें बुरा बना दिया हो या कमजोरी ने उन्हें अच्छा बना दिया हो; पीड़ा के प्रति अपनी घृणा के कारण चाहे वे उत्पीड़क ही क्यों न बन गये हों, या तथ्यों के सामने सिर झुकाने की आदी हो गये हों। आपके इन्सान धरती के इन्सान हैं और धरती से उनके सम्बंध अच्छे हैं। दूसरे लेखकों के इन्सानों से भौतिक और शारीरिक रूप से वे इस धरती के अनुरूप हैं; वे धरती मां के सर्वाधिक सच्चे बेटे हैं। वे सच्चे अर्थों में 'पवित्र मानवता' के जीवित कण हैं। आपको सदा ही और सम्पूर्ण गहराई से इन्सानियत की आश्चर्यजनक और पीड़ापूर्ण प्रगति का ध्यान रहता है — पाषाण युग से वायुयान युग तक की बातें भी।

लेकिन जिस बात की मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूं वह यह कि आप यह जानते हैं कि इन्सानों को इस बात से आंका और नापा जाय कि उनमें क्या अच्छा है न कि क्या बुरा। अधिकांश लोग यदि कभी इस सरल ज्ञान को प्राप्त कर भी पाते हैं तो बड़ी कठिनाई से। हम यह नहीं समझना चाहते कि इन्सानों में जो कुछ शुभ है, वह उनके करिश्मों में सर्वाधिक श्रेष्ठ है। सच बात तो यह है कि इन्सान के 'शुभ'

होने का कोई कारण नहीं, और प्रकृति के नियम, सामाजिक अस्तित्व की स्थितियां, उनमें दया और इन्सानियत के भावों को नहीं बढ़ातीं। तो भी, आप और मैं ऐसे अनेक लोगों को जानते हैं, जो सचमुच अच्छे हैं। उन्हें अच्छा किस चीज ने बनाया? केवल उनकी अपनी इच्छा ने। मुझे और कोई कारण नहीं दिखायी देता। इन्सान जैसे हैं उससे अच्छा बनना चाहते हैं, वे अपनी इस इच्छा को पूरा कर लेते हैं। इस धरती पर सबसे अधिक पेचीदा चीज—इन्सान—से ज्यादा सुन्दर और आश्चर्यमय क्या है, जो अन्दरूनी संघर्षों से परिपूर्ण होते हुए भी अपने भीतर भयावह कल्पनाशक्ति का निर्माण कर लेता है और जिसमें अपने ऊपर हंसने की दैत्यों जैसी क्षमता होती है। मैंने अनेक लोगों से इन्सानों का अध्ययन करना और उनके विषय में सोचना सीखा है, और, मुझे लगता है, एक कलाकार के नाते आपके परिचय ने भी मुझे यह सिखाया है। कैसे? मैं नहीं कह सकता। किन्तु यह क्षमता मुझमें उस परिचय के बाद से और अधिक बढ़ गयी है।

जो कुछ रूसी लोग भुगत चुके हैं और जिस सबके बीच से वे गुजर रहे हैं उसे एक भिन्न दृष्टि से, अर्थात् ज्यादा ध्यान देकर, सम्मान से, समझने की आवश्यकता है। मैं भली भांति यह बात जानता हूं कि वे अभी भी फरिश्ते नहीं बने हैं और मैं उन्हें बनाना भी नहीं चाहता। मैं तो उन्हें केवल ऐसे श्रमशील व्यक्ति बनाना चाहता हूं, जिन्हें अपने काम से प्रेम हो और जो उसकी महती महत्ता से पूर्णतः अवगत हों।

हम लोगों के लिए, जो नये जीवन के निर्माण के लिए प्रयत्नशील हैं, एक-दूसरे के प्रति नैकट्य भाव का अनुभव करना बहुत महत्वपूर्ण है। जिस युग में हम रह रहे हैं उसकी कटुता, और जो काम हमने उठाया है उसकी विशालता, हमसे यही मांग करती हैं। यदि कोई लेखक है तो लिखना उसका धर्म है।

निस्संदेह, किन्हीं-किन्हीं बातों में मैं गलत हूं और किन्हीं को मैंने अतिरंजित कर दिया है। किन्तु यदि ऐसा हुआ है तो यह मैंने पूर्णतः जानबूझ कर किया है, क्योंकि सभी जानते हैं कि मैं एक विचारशील व्यक्ति हूं और कुछ अर्थों में अहंकारपूर्ण भी। मेरा विचार है कि जिस

प्रकार की गलती मैं कर रहा हूं वैसी गलती से कोई नुकसान नहीं है, क्योंकि मेरी गलतियां अपने को और दूसरों को सुन्दर झूठों से आत्म-तुष्ट करने की इच्छा से पैदा नहीं हुई, वरन् वे इस दृढ़ विश्वास से जन्मी हैं कि वे उस सत्य के पक्ष में हैं जो अनिवार्यतः जन्म लेगा। जनता को केवल उसी की आवश्यकता है। और, धरती के बेटे होने के नाते, निश्चय ही उन्हें उससे प्रोत्साहन मिलेगा।